सर्वश्रेष्ठ कौन ?

राहुल आर्य

सर्वश्रेष्ठ कौन ?

ओ३म्

प्रकाशक : Thanks Bharat

झज्जर, हरियाणा

WhatsApp : 7015123619

E-Mail : thanksbharatmaa@gmail.com

Website : www.thanksbharat.com

प्रथम संस्करण : जुलाई 2020

मूल्य : ₹ 151.00

(केवल डिजिटल संस्करण)

SARVSHRESHTH KAUN ? *by* **Rahul Arya**

निवेदन

आज ई-बुक्स अर्थात् डिजिटल पुस्तकों का युग चल रहा है। बड़ी बड़ी वेबसाइट ऑनलाइन पुस्तकें लांच कर रही है। लोगों को घर बैठे सरलता से उनके फोन, लैपटॉप, टेबलेट आदि में पुस्तकें पढ़ने को मिल जाती है। किन्तु उन ऑनलाइन वेबसाइटों पर सत्य से अवगत करवाने वाली सामग्री का अभाव है। इतिहास और धर्म के नाम पर मनघडंत पुस्तकें, किस्से व अश्लील कहानियां नौजवानों के सामने परोसी जाती है। एक प्रकार से युवाओं के विचारों पर अनजानी शक्तियों का पूरा नियंत्रण हो चुका है। ऐसी ताकतों को चुनौती देने हेतु Thanks Bharat युग परिवर्तक सामग्री को अपने स्वयं के पुरालेख संग्रह (archieve) से आप तक पहुँचाने हेतु प्रतिबद्ध है। भविष्य में धीरे धीरे संग्रह को बढ़ाया जायेगा। भविष्य में राहुल आर्य द्वारा लिखित अनेकों अमूल्य ज्ञान से भरी हुई पुस्तकों को आप प्राप्त कर सकेंगे। अतः अधिक से अधिक लोगों को इस वेबसाइट www.thanksbharat.com से जोड़ने का प्रयास करें। सभी देश-धर्म और मानवता के हितैषी लोगों का वेबसाइट पर साइन-अप अवश्य करवाने का परिश्रम करें ताकि वो नई नई पुस्तकों से ज्ञान के भंडार को प्राप्त कर सकें। राष्ट्र की उन्नति देश के सभी बच्चों तक ज्ञान पहुंचाए बिना संभव नहीं है। अतः इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु Thanks Bharat Trust में यथासामर्थ्य सहयोग अवश्य देवें। देश का दुर्भाग्य है कि विनाशकारी ताकतों के पास अकूत संपत्ति है और सृजनात्मक विचारों वाले के पास केवल पवित्र उद्देश्य है। बताने की आवश्यकता नहीं है कि बम फोड़ने के लिए भी धन की

आवश्यकता है और बम फोड़ने वालों को समाप्त करने के लिए भी। अतः कोई भी अच्छा-बुरा कार्य धन के अभाव में सफल नहीं होता है। आप राहुल आर्य द्वारा लिखी गयी अमूल्य पुस्तकों को घर घर पहुँचाने में हमारा पूरा साथ दें ताकि देश की युवा पीढ़ी बुद्धिमान तथा ज्ञानी बनकर विधर्मियों के विरुद्ध बलवान हो सकें। सभी लोगों को थैंक्स भारत वेबसाइट से राहुल आर्य की पुस्तकें क्रय करने का आग्रह करें। एक बार राहुल आर्य की पुस्तकों को जिसने पढ़ लिया उसके सामने कोई भी देशद्रोही, विधर्मी, कुतर्की कभी खड़ा होने का सामर्थ्य नहीं कर पायेगा। धर्म तथा इतिहास आदि से सम्बंधित आपका ज्ञान नई नई ऊंचाईयां छुएगा।

Name	**Thanks Bharat**
Account No	**15870200003803**
IFSCODE	**FDRL0001587**
UPI ID	**thanksbharat@upi**
Phonepe/Google Pay/Paytm	**7015123619**

ओ३म्

यदि यह पुस्तक आपको बिना शुल्क चुकाये प्राप्त हुई है तो समाजहित में इस पर अंकित साधारण मूल्य अवश्य चुकाएं। इससे आपका स्वाभिमान और श्रद्धा भी बनी रहेगी और यह पुस्तक गली कुचों में बिखरती हुई नहीं घूमेगी। आपके सहयोग से राहुल आर्य के साहस, उत्साह और ताकत में भी वृद्धि होगी और समाज परोपकार का कार्य अनवरत रूप से चलता रहेगा। एक अंतिम प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पीडीएफ आदि में शेयर न करें बल्कि थैंक्स भारत वेबसाइट द्वारा शुल्क चुकाकर ही सभी को लेने हेतु कहें तथा हमारे पुरुषार्थ को सफल बनाएं। यदि संभव हो तो इस पुस्तक को आप प्रिंट करवाकर भी अपने पास रखें उसमें अधिक खर्च नहीं आता है।

विषय सूचि

भूमिका

आजकल आपको यदा कदा सुनने को मिल ही जाता होगा कि धर्म एक प्रकार का रोग है। कोई कहता है धर्म तो अफीम की तरह एक नशा है और धर्म का मनुष्यों की उन्नति में कोई प्रयोग नहीं है। संसार में फैले इस भ्रम का कारण धर्म को न जानना है। ऐसा नहीं है कि लोग धर्म को नहीं जानते क्योंकि किसी ने उनको समझाया नहीं। कड़वा सच ये है कि लोग स्वयं जानना नहीं चाहते और भेड़ चाल में एक-दूसरे की सुनकर ये सब बातें करते चले जाते है। ऐसे लोग सोचते है कि इस्लाम भी एक धर्म है, ईसाईयत भी एक धर्म है, बोद्ध-जैन, यहूदी, पारसी, हिन्दू आदि सभी अलग अलग धर्म है और सभी एक-दूसरे को नीचा दिखाने की शिक्षा देते है। इन सभी में आपसी मतभेद है जिसके कारण करोड़ों लोग मर चुके है। अतः ये लोग धर्म को एक रोग और नशा मानते चले जाते है।

कुछ लोग एक कहावत कहते है कि **"धर्म तो एक प्रकार का जहर है जिसको लेने वाले की मृत्यु निश्चित है।"** मैं अपने ऐसे सज्जनों से पूछना चाहता हूँ कि क्या दुनिया के 18 % नास्तिक लोग नहीं मरते है ? Christopher Hitchens अपनी पुस्तक God Is Not Great के दूसरे अध्याय Religion Kills में बार बार यह कहते है कि "Religion has poisoned everything."[1] वास्तव में धर्म और रिलिजन एक नहीं है। इनमें इतना ही अंतर है जितना एक सभ्य मनुष्य और एक खूंखार जानवर में

[1] C. Hitchens, 'God is not Great', *How Religion Poisons Everything*.

होता है। आज संसार में धर्म नहीं बल्कि रिलिजन ही चल रहे है। आज किसी भी रिलिजन को मानने वाला तर्क और प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध नहीं कर पा रहा है कि ईश्वर है या नहीं ? है तो कहाँ है ? क्यों, कैसा व किसलिए है ? संसार क्यों, कैसे, किसने और कब बनाया है ? सुख-दुःख क्या है ? पुनर्जन्म होता है या नहीं ? स्वर्ग-नरक क्या है ? जीसस, अल्लाह व श्रीकृष्ण आदि अनेकों रिलिजन के भगवानों में से किस भगवान ने संसार बनाया है ? रिलिजन के नाम पर हत्याएं क्यों हो रही है ? निर्दोषों की हत्याएं व बच्चियों का बलात्कार क्यों हो रहा है ? भूख-गरीबी के कारण लोग मर रहे है कहाँ है भगवान ? मरने के बाद क्या होता है ? भूत-प्रेत व शैतान क्या व क्यों होते है ? मूर्तियों में भगवान कैसे आ जाता है ? रिलिजन की कौन सी पुस्तक कब व किसके द्वारा लिखी गयी ?

ऐसे अनेकों रहस्यमय प्रश्न है जिनके उत्तर न तो रिलिजन वाले दे पाते है और ना ही रिलिजन को न मानने वाले दे पाते है। रिलिजन मानने वाले बिना जाने केवल मानते ही रहते है इसीलिए इनसे रिलिजन के नाम पर कुछ भी करवाया जा सकता है। इसी प्रकार रिलिजन को न मानने वाले भी ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम नहीं और केवल रिलिजन का विरोध करके समस्याओं का समाधान खोज रहे है।

आपने देखा होगा एक छोटा बच्चा बहुत से प्रश्न पूछता रहता है। जो भी वस्तु आदि उसे दिखाई देती है अथवा महसूस होती है वो तुरंत उसके बारे में पूछने लग जाता है। यदि उस बच्चे को प्रश्न पूछने पर डांटने लग जायेंगे तो वह बच्चा प्रश्न पूछना छोड़ देगा और एक बहुत ही संकुचित बुद्धि वाला हो जायेगा। जब वह बड़ा होगा तो उसका आसानी से दुरूपयोग किया जा सकता है। जब तक सारे संसार को मानव धर्म का नहीं पता होगा तब तक

रिलिजन के नाम पर लोगों को बहकाया जाता रहेगा। रिलिजन के नाम पर ऐसे ही लोग मरते रहेंगे। अतः रिलिजन से सम्बंधित सभी रहस्यमयी प्रश्नों के तर्क व प्रमाण के आधार पर ठीक ठीक उत्तर व जानकारियां ही इस समस्या का समाधान है।

मेरा मानना है कि जो भी लेखक आज ईश्वर और धर्म पर अपनी लेखनी चला रहे है वो इस्लाम और ईसाइयत के अंधविश्वासों के कारण हुई करोड़ों लोगों की हत्याओं का दर्दनाक इतिहास पढ़ चुके है। ऐसे लेखकों को याद रखना चाहिए कि **रक्त बहने से पहले स्याही (ink) बहती है।** रिलिजन के नाम पर हुई हत्याएं और अत्याचार उन रिलिजन की पुस्तकों के कारण हुए है। जो गलती रिलिजन पर स्याही बहाने वालों ने की थी वही गलती आज रिलिजन का विरोध करने के लिए स्याही बहाने वाले कर रहे है।

वास्तव में एक बुराई को समाप्त करने के लिए दूसरी बुराई की शुरुआत कोई समाधान नहीं है। रिलिजन के मानने वालों के कारण पिछले 1000 वर्षों में जितनी हत्याएं हुई है उससे अधिक हत्याएं रिलिजन को न मानने वालों ने पिछले 100 वर्ष में कर दी है। 20 नवम्बर 2017 को The Harvard Crimson में छपे एक आर्टिकल के अनुसार :-

“The stories of survivors paint a more vivid picture of communism than the textbooks my classmates have read. While we may never fully understand all of the atrocities that occurred under communist regimes, we can desperately try to ensure the world never repeats their mistakes. To that

end, we must tell the accounts of survivors and fight the trivialization of communism's bloody past.

My father left behind his parents, friends, and neighbors in the hope of finding freedom. I know his story because it is my heritage; you now know his story because I have a voice. One hundred million other people were silenced."[2]

यह सर्वविदित है कि जोसेफ स्टालिन ने अकेले अपने जीवन काल में प्रत्यक्ष रूप से लगभग तीन करोड़ लोगों को मरवाया था। David Satter लिखते है कि "The Bolshevik plague that began in Russia was the greatest catastrophe in human history."[3] अर्थात् क्रांति के नाम पर रूस में हुई बोल्शेविकों की करतूत मानव इतिहास की सबसे बड़ी तबाही थी।

इतिहासकार Frank Dikötter अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Mao's Great Famine में लिखते है कि -

"What comes out of this massive and detailed dossier is a tale of horror in which Mao emerges as one of the greatest mass murderers in history, responsible for the deaths of at

[2] L. M. Nicolae, '100 Years. 100 Million Lives. Think Twice', *The Harvard Crimson* 20 November 2017, thecrimson.com

[3] D. Satter, '100 Years of Communism—and 100 Million Dead', *WJS|OPINION* 6 November 2017, wjs.com

least 45 million people between 1958 and 1962. Between two and three million victims were tortured to death or summarily killed, often for the slightest infraction. When a boy stole a handful of grain in a Hunan village, local boss Xiong Dechang forced his father to bury him alive. The father died of grief a few days later. The case of Wang Ziyou was reported to the central leadership: one of his ears was chopped off, his legs were tied with iron wire, a ten kilogram stone was dropped on his back and then he was branded with a sizzling tool – punishment for digging up a potato."[4]

माओ की ग्रेट लीप फॉरवर्ड नीति के कारण ऐसा भयंकर अकाल पड़ा था कि लोगों के पास जो भी पशु थे सबको मार कर खा गये, यहाँ तक की कच्चे मनुष्य तक चबा डाले गये थे। माओ ने कहा कि चूहे, मच्छर, मक्खियाँ व पक्षी आदि मानव के दुश्मन है। अतः इन सबको मार देना चाहिए। पक्षियों के मारने से फसलों पर लगने वाले हानिकारक कीड़ों को नष्ट करने का कोई उपाय नहीं था। इन सबके दूरगामी परिणाम हुए। माओ के मूर्खतापूर्ण परीक्षणों के कारण करोड़ों लोग मारे गये। इसी कारण चीन ने 2 दशकों तक जनगणना भी नहीं की।

---

[4] I. Somin, *The Washington Post* 3 August 2016, washingtonpost.com

मैंने ये सब आंकड़े इसलिए दिए है क्योंकि ये सब हत्याएं कम्युनिस्ट विचारधारा ने की है। यह विचारधारा कट्टर नास्तिकतावादी है। मैंने केवल आपको संक्षेप में कुछ आंकड़े दिए है। इस नास्तिक विचारधारा ने पिछले 100 वर्ष में विश्वभर में प्रत्यक्ष रूप से 12-15 करोड़ लोगों की जान ली है। ये लोग अच्छे-बुरे को नहीं मानते है। ऐसे लोग अपने से बड़ा और ताकतवर किसी को नहीं समझते है। कम्युनिस्ट विचारधारा एक प्रकार से ऐसे निरंकुश शासकों को जन्म देती है जो अपने ही देश के लोगों को कीड़े-मकोड़े समझने लग जाते है। किसी के जीने-मरने से इनको कोई अंतर नहीं पड़ता है। मई-जून 1989 में चीन की राजधानी में तानाशाही के विरुद्ध हुए एक अहिंसक प्रदर्शन में हजारों विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इस प्रदर्शन को क्रूरतापूर्वक कुचल दिया गया। विद्यार्थियों पर रोड रोलर चलवाया गया ताकि फिर से कोई आवाज न उठा सके। इस प्रदर्शन में 10,000 से अधिक लोग मारे गये थे।[5]

अतः अंधाधुंध रिलिजन का विरोध करना किसी समस्या का समाधान नहीं है। आज विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है। विज्ञान के बहुत से प्रयोग और लाभ मनुष्यों को हुए है। किन्तु इसी विज्ञान के कारण भयंकर हथियार भी बने है जिनसे करोड़ों लोग मारे जा चुके है। इसका ये अर्थ नहीं निकाला जा सकता है कि विज्ञान खराब है। प्राचीन समय पर विज्ञान ने बहुत उन्नति की थी किन्तु विज्ञान का दुरूपयोग नहीं हुआ। इस पुस्तक में आपको आश्चर्यजनक प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के बारे में विस्तृत जानकारी मिलेगी। ज्ञान-विज्ञान तो सदा मनुष्य की उन्नति, शांति-समृद्धि के लिए होता है। जो

[5] ‘Tiananmen Square protest death toll 'was 10,000'', *BBC News* 23 December 2017, bbc.com

लोग व ताकतें विज्ञान का अपने स्वार्थ व लाभ के लिए दुरूपयोग करती है वे हानिकारक है। इसी प्रकार मानव धर्म का दुरूपयोग करके आज अनेकों रिलिजन बन गये है। इसका ये अर्थ नहीं है कि मानव धर्म खराब है। रिलिजन की समस्या को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए सही मानव धर्म को जानना होगा।

इस पुस्तक के पढ़ने वाले को हजारों धार्मिक रहस्यों का ठीक ठीक उत्तर प्राप्त होगा ऐसा मेरा मत है। संभवतः यह आपके जीवन की पहली पुस्तक होगी जिसमें धर्म और ईश्वर से सम्बंधित प्रश्नों के सरल भाषा में उत्तर प्राप्त होंगे। यह निश्चित जान लीजिये कि इस पुस्तक से प्राप्त ज्ञान आपको ना किसी धर्मस्थल पर प्राप्त होगा और ना ही वर्तमान के पाखंडी धर्म-गुरुओं के पास प्राप्त होगा।

राहुल आर्य

1 सर्वश्रेष्ठ भगवान कौन सा ?

आज संसार में हजारों रिलिजन हैं और सबका अपना अपना भगवान भी है। सभी अपने भगवान को दूसरों के भगवान से महान और शक्तिशाली सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। धीरे धीरे सभी की भावनाएं और श्रद्धाएँ अपनी अपनी मान्यता पर दृढ हो जाती हैं। उसके बाद अपनी मान्यता पर मनुष्य पक्षपाती हो जाता है और दूसरे की मान्यता पर सिद्धांतवादी और तर्कवादी हो जाता है। यह सदियों से इस संसार का चलन रहा है। जंगलों में रहने वाले तथा भिन्न भिन्न टापुओं पर रहने वाले लोगों के भी अपने अपने भगवान है। सभ्यताएँ बदल जाती हैं किन्तु मान्यताएँ हजारों वर्ष तक मनुष्य समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती हैं। यदि किसी समय पर किसी ने गलत मान्यता समाज में चला दी तो वह सैकड़ों हजारों वर्षों तक मानवता को कष्ट पहुंचाती रहती है। इसी प्रकार यदि किसी समय पर किसी ने अच्छी मान्यताएं और परम्पराएं समाज में दी तो वह सदियों तक मानवता और प्राणिमात्र का भला करती है। प्रत्येक पीढ़ी के मनुष्यों का यह दायित्व होता है कि अच्छी परम्पराओं और मान्यताओं का प्रचार करता रहे और बुरी परम्पराओं और मान्यताओं को संसार से समाप्त करने हेतु कार्य करें।

यह कार्य केवल सत्य को जानकार ही किया जा सकता है। जो बातें, मान्यताएं आदि तर्क, तथ्य तथा विज्ञान के आधार पर सत्य हों उनको मानकर तथा विपरीत बातों और मान्यताओं को त्यागकर ही संसार को सुखमय बनाया जा सकता है। 21वीं सदी में मानवता की रक्षा का यही

एकमात्र मार्ग है। इस अध्याय में भगवान से सम्बंधित अत्यंत गूढ़ प्रश्नों पर विचार करके सत्य-असत्य का निर्णय किया जायेगा। सदियों से मानवता जिन प्रश्नों के कारण कष्ट झेल रही है उन सभी प्रश्नों का हल करना ही होगा।

सबसे बड़ा प्रश्न है कि आखिर किसके भगवान ने संसार बनाया है ? किसका भगवान शक्तिशाली है ? क्या ये भगवान मानने की परम्परा सत्य है अथवा यह मनुष्यों के डर का परिणाम है ? कुछ लोग अल्लाह को, कुछ जीसस को, कुछ यहोवा को, कुछ साईं को तथा कुछ नास्तिक प्रकृति को ही भगवान मानते है। आखिर कौन है ये भगवान ?

1.1 संसार को रचने वाला है भी या नहीं ?

हम जानते हैं कि किस व्यक्ति अथवा किस देश ने कौन सी महान वस्तु बनाई है किन्तु मनुष्य यह नहीं जानता कि यह संसार किसने बनाया है। आज यह प्रश्न मनुष्य समाज के लिए सबसे बड़ी अबूझ पहेली बन गया है। यह प्रश्न भले ही एक हो किन्तु इसका सही उत्तर आज का मनुष्य नहीं खोज पा रहा है। किसी भी प्रश्न का एक ही ठीक उत्तर होता है किन्तु इस प्रश्न पर संसार के करोड़ों लोगों ने लाखों उत्तर खोज निकाले हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग अपनी प्रत्येक नई पुस्तक में इस प्रश्न का उत्तर बदल देते थे अथवा यूँ कहें कि बात को गोल-गोल घुमाते रहते थे। इससे समझ में आता है कि यह संसार की सबसे बड़ी पहेली बन चुकी है। वास्तव में इस पहेली का तार्किक उत्तर ना तो आज दुनिया में चल रहे रिलिजन दे पा रहे हैं और ना ही वर्तमान विज्ञान के पास इसका उत्तर है।

अल्बर्ट आइंस्टीन लिखते हैं कि **“Scientific research is based on the idea that everything that takes place is determined by laws of nature.”**[6] अर्थात् विज्ञान केवल प्रकृति के नियमों पर कार्य करती है।

इसका सीधा अर्थ निकलता है कि प्रकृति के नियमों पर आधारित विज्ञान कैसे उन नियमों के बनने अथवा बनाने वाले के बारे में बता सकती है ? यही बात वर्तमान समय के बड़े वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग लिखते है कि **“The laws of physics can explain the universe.”**[7] इसमें स्पष्ट लिखा है कि वैज्ञानिक भौतिकी के नियमों (laws of physics/nature) से ब्रह्मांड के रहस्यों को जान सकते है।

यह बात सच है कि विज्ञान के नियमों से अनेक रहस्य सुलझाए जा सकते हैं किन्तु विज्ञान के नियम स्वयं उन्हीं नियमों के बनाने वाले के बारे में जानकारी नहीं दे सकते है। यह तो वही बात हो गयी कि कोई हवाई जहाज के सामने खड़ा होकर उससे पूछे बता तेरा बनाने वाला कहाँ है और कैसा है ? उसने तुझे क्यों बनाया ? इन प्रश्नों का उत्तर हवाई जहाज से नहीं मिल सकता है। हाँ, यदि हवाई जहाज के बनाने वाले ने यह ज्ञान किसी मनुष्य को अथवा पुस्तक आदि द्वारा दिया हो तो हम अवश्य उत्तर पा सकते है। दुर्भाग्य से आज संसार को ऐसे किसी ज्ञान अथवा पुस्तक का पता ही नहीं है जो संसार के बनाने वाले से सम्बंधित प्रश्नों के ठीक ठीक तार्किक और वैज्ञानिक उत्तर दे सके। वास्तव में स्टीफन हॉकिंग जानता था कि प्रकृति

[6] A. Einstein, *The Human Side* 1981, p. 32-33.

[7] L. Johnston, ‘ABC News Interview with S.W. Hawking’, *The Washington Post* 14 March 2018, washingtonpost.com

के नियमों से उन्हीं नियमों के बनाने वाले के बारे में गूढ़ रहस्य पूछना मूर्खता होगी क्योंकि यह संभव ही नहीं है जब तक हम स्वयं उस निर्माता से मिल न लेवें।

अतः प्रकृति के नियमों से सब कुछ जान लेने का दावा करने वाले उन नियमों के बनाने वाले के बारे में कुछ नहीं जानते है।

भौतिकी के बड़े वैज्ञानिक Marcelo Gleiser[8] विज्ञान के नाम पर ऐसे झूठे दावों का सच बताते हुए कहते है कि

"I get upset by misstatements, like when you have scientists—Stephen Hawking and Lawrence Krauss among them—claiming we have solved the problem of the origin of the universe, or that string theory is correct and that the final "theory of everything" is at hand. **Such statements are bogus.**"[9]

अतः स्टीफन हॉकिंग की ब्रह्माण्ड के रहस्य बताने वाली थ्योरी को बड़े बड़े वैज्ञानिकों ने झूठा बताया है। मैं स्टीफन हॉकिंग की सभी बातों को झूठा नहीं बता रहा हूँ और ना ही उनकी योग्यता का अपमान कर रहा हूँ किन्तु यह कहना कि सबकुछ जानने का तरीका निकाल लिया है, यह बात असत्य है।

[8] Marcelo Gleiser, a theoretical physicist, is the 2019 recipient of the Templeton Prize.

[9] L. Billings, Interview: '*Atheism Is Inconsistant with the Scientific Method, Pricewinning Physicist says',* 20 March 2019, scientificamerican.com

सज्जनों पूरा विज्ञान और वैज्ञानिक इस बात को लेकर आपस में बंटे हुए है। ऐसे बंटे हुए विज्ञान और प्रकृति के नियमों पर आधारित विज्ञान से संसार की रचना करने वाले का पता नहीं लगाया जा सकता है। इसके लिए हमें तर्क के साथ साथ ठोस प्रमाणों की आवश्यकता है। अब ईश्वर है या नहीं इस विषय से सम्बंधित अनेकों प्रश्नों के निष्पक्ष भाव से उत्तर खोजते है।

प्रश्न : यदि संसार को बनाने वाला होता तो कभी अवश्य दिखाई देता किन्तु अब तक किसी ने नहीं देखा है। अतः संसार की रचना करने वाला नहीं है।

रिलीजियस उत्तर : किसी भी रिलिजन को मानने वाले इस प्रश्न का साधारण सा उत्तर यही देते हैं कि भगवान सबको दिखाई नहीं देते है। भगवान केवल अपने भक्तों और उस पर श्रद्धा रखने वालों को ही दिखाई देते है। कुछ लोग मानते हैं कि भगवान केवल उसके पैगम्बरों और अवतारों को ही दिख सकते हैं।

समीक्षा : इस उत्तर में तर्क और प्रमाण का सर्वथा अभाव है। विज्ञान के युग में अंधश्रद्धा का कोई स्थान नहीं है। बिना जाने किसी सुनी सुनाई बात को मान लेना मानव समाज के हित में नहीं है। आज प्रत्येक रिलिजन वालों की भगवान से सम्बंधित अपनी अपनी मान्यताएं हैं। इन अलग अलग मान्यताओं के कारण मानव समाज अलग अलग रिलिजन में बंट गया है। सभी अपने को दूसरे से श्रेष्ठ समझते है और बस फिर इन रिलिजन वालों में लड़ाई प्रारंभ हो जाती है। इसी अंधश्रद्धा के कारण करोड़ों लोगों का कत्लेआम हो चुका है। अतः संसार को बनाने वाले के बारे में तर्क और

प्रमाणों से ठीक ठीक जानकारी निकाल कर ही सभी मनुष्यों की एक मान्यता बनाई जा सकती है।

वैज्ञानिक उत्तर : जो लोग कहते है कि संसार का बनाने वाला नहीं है क्योंकि वह दिखाई नहीं देता है ऐसे लोग विज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ (अनजान) कहे जा सकते है। आँखों से तो आँखों में लगाया हुआ काजल भी दिखाई नहीं दे सकता है फिर संसार बनाने वाला कैसे दिखाई दे सकता है। दूध में चीनी मिला देने पर वह आँखों से दिखाई नहीं देती है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उसमें अब चीनी नहीं है।

ऐसे ही दिखाई न देने पर किसी पदार्थ का होना या न होना सिद्ध नहीं हो सकता है। यदि आँखों से नहीं दिखने वाले पदार्थों को मानने से इंकार करें तो अणु-परमाणु, वायु, आकाश, गुरुत्वाकर्षण, भूख-प्यास, सुख-दुःख आदि को मानने से भी इंकार करना पड़ेगा क्योंकि ये सब भी प्रत्यक्ष आँखों से दिखाई नहीं देते है। कोई पदार्थ दिखाई नहीं देता तो यह नहीं कहा जा सकता है कि उसकी सत्ता ही नहीं है।

वस्तु के विद्यमान होते हुए भी उसका प्रत्यक्ष न होने में आठ कारण होते है। अर्थात् अत्यंत समीप होने, अत्यंत दूर होने, ढका हुआ होने, इन्द्रियों(कान, नाक, आँख, त्वचा, मुख आदि) के दुर्बल होने, मन का ध्यान उधर न होने, समान आकार वाले पदार्थों में मिल जाने, किसी शक्तिशाली पदार्थ से दब जाने तथा अत्यंत सूक्ष्म होने के कारण पदार्थों के होते हुए भी उनका साक्षात् नहीं होता है। इसलिए यह कहना कि जब तक संसार बनाने वाला दिख नहीं जाता हम उसको नहीं मानेंगे, यह अज्ञानता की बात है।

वास्तव में संसार के प्रत्येक अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ को वैज्ञानिक प्रमाण तथा युक्ति द्वारा सिद्ध करते है। हम सभी जानते है कि संसार की प्रत्येक वस्तु परमाणुओं के मिलने से बनी होती है। प्रश्न उठता है कि क्या परमाणु को देखा जा सकता है ? इसका उत्तर 5 वर्ष पूर्व बीबीसी में छपे एक आर्टिकल में भौतिकी के विद्वान देते हुए लिखते है कि -

"From mountains to stars and human beings, everything we see around us is made of bundles of tiny atoms. Atoms are so much smaller than the wavelength of visible light that the two don't really interact. To put it another way, atoms are invisible to light itself. Even the most powerful light-focusing microscopes can't visualise single atoms."[10]

अर्थात् परमाणु को आँखों से तो क्या किसी माइक्रोस्कोप से भी नहीं देखा जा सकता है। जब परमाणु को देखने के लिए कोई यन्त्र नहीं हो सकता है तो जिन प्रोटोन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रान से परमाणु बना है उनको देखने की बात करना ही मुर्खता होगी विशेषकर इलेक्ट्रान की। अब ये तीनों तत्त्व भी क्वार्क (Quarks) से बने होते है।

क्वार्क के विषय में कहा जाता है कि **"Quarks — the building blocks of matter — are not only impossible to see, but they are extremely difficult to measure."**[11] अर्थात् इसको

[10] C. Baraniuk, '*BBC Agency'*, 20 November 2015, bbc.com

[11] J. Kennell, '*The Science Explorer'*, 8 January 2016, thescienceexporer.com

देखना तो असंभव है ही बल्कि इसका पता लगाना व मापना भी अत्यंत दुष्कर है। ऐसा नहीं है कि क्वार्क ही संसार का सबसे छोटा तत्त्व है। जिन तत्वों से क्वार्क बना है और संचालित होता है उनका पता लगाना तो अभी बाकी है।

अब प्रश्न ये उठता है कि जब वैज्ञानिकों ने भी इन सूक्ष्म तत्वों को नहीं देखा तो वो इनका प्रयोग करके इंटरनेट, टीवी जैसी तकनीक कैसे बना पायें ? Paul Brindza के शब्दों में **"Scientists made numerous conjectures and some theoretical predictions about what the nature of atomic structure really was."** अर्थात् अनुमान प्रमाण से उन तत्वों के गुणों का पता लगाकर तथा प्रकृति के नियमों से वैज्ञानिक लोग उन तत्वों को प्रयोग में लेते हैं।

इन सब बातों से एक बात तो साफ है कि अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ को आँखों से ही नहीं बल्कि सबसे उन्नत इलेक्ट्रोन वाले माइक्रोस्कोप से भी नहीं देखा नहीं जा सकता है। उन सूक्ष्म तत्वों को जानने के लिए उनके गुणों और कार्यों का पता लगाना पड़ता है। यही एकमात्र प्रक्रिया है किसी भी सूक्ष्म तत्त्व के बारे में जानने की कि वह उपस्थित है या नहीं।

अब आपको सोचने में अधिक समय नहीं लगेगा कि यदि कोई संसार को बनाने वाला है तो वह संसार के सबसे सूक्ष्म तत्वों से भी अनेकों गुना सूक्ष्म होना चाहिए ताकि वह सूक्ष्म तत्त्व के अंदर होकर उसे संचालित कर सके। और सूक्ष्म तत्वों को भी बना कर फिर उन तत्वों से संसार को बना सके। अब ये अणु-परमाणु, इलेक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रॉन आदि सब जगह है अर्थात् सर्वत्र संसार की सभी वस्तुओं में है। यदि कोई संसार को बनाने वाला है भी

तो वह सर्वत्र सब जगह होना चाहिए किन्तु आज लोग भगवान को मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों में ढूंढते है। आप आसानी से समझ गये होंगे कि रिलिजन के नाम पर लोगों को विज्ञान से दूर किया जा रहा है।

भारत में एक महाविद्वान श्रीकृष्ण जी हुए है जिन्होंने गीता का ज्ञान दिया था। भारत के आर्य लोग मानते है कि यह गीता ज्ञान लगभग 3150 ईसा पूर्व दिया गया था।

गीता में श्रीकृष्ण जी कहते है कि -"सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं"[12] अर्थात् संसार को रचने वाला अत्यंत सूक्ष्म है इसलिए उसका ज्ञान इन्द्रियों से नहीं उसके गुणों और कार्यों को जानने से ही हो सकता है। आइये विज्ञान के इसी सिद्धांत के आधार पर संसार को बनाने वाले की खोज करते है।

1.2 भगवान की खोज

यदि कोई आपसे कहे कि आपके कपड़े, आपकी गाड़ी, आपका फोन, आपका घर आदि सब अपने आप बन गया तो क्या आप मानेंगे ? बिलकुल नहीं, क्योंकि ये सब पदार्थ किसी ने बनाएं हैं। एक कपड़े सिलने वाली छोटी सी सुई भी अपने आप नहीं बन सकती है। हमारे पास उपस्थित मोबाइल फोन के बनाने वाले को हमने नहीं देखा है किन्तु फिर भी हम जानते है कि यह किसी ने अवश्य बनाया है। इस बात से दो सिद्धांत हम जान गये होंगे -

1. कोई भी जड़ पदार्थ (वस्तु) अपने आप नहीं बन सकता है।

[12] गीता, अध्याय 13, श्लोक 15।

2. किसी भी जड़ पदार्थ को बनाने के लिए किसी बुद्धिमान चेतन की आवश्यकता होती है।

अतः कोई भी पदार्थ जो व्यवस्थित है उसको व्यवस्था में लाने वाला अवश्य ही कोई होता है। एक बस, एक रेलगाड़ी, एक हवाईजहाज आदि को बनाने के लिए छोटे छोटे पदार्थों को बनाकर, फिर उनको जोड़कर ही एक व्यवस्थित वस्तु बनाई जाती है। अतः बिना रचयिता के कोई भी रचना नहीं हो सकती है अथवा यूँ कहें कि रचना को देखकर रचयिता का अनुमान लगता है। जैसे कंप्यूटर को देखकर उसको बनाने वाला कोई है इस बात का पता लगता है। चाहे हमने उसके बनाने वाले को देखा हो या नहीं।

अब इसी सिद्धांत से मनुष्य शरीर, जीव-जंतुओं, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह-उपग्रह तथा पूरे ब्रह्मांड के विषय में सोचने का प्रयत्न करें। यह पूरा ब्रह्मांड व इसकी छोटी से छोटी रचना अत्यधिक व्यवस्थित तथा नियमों में बंधी हुई है। जैसे दिवार के पीछे से उठते हुए धुंए को देखकर ना दिखने वाली अग्नि का अनुमान लगता है वैसे ही ब्रह्मांड को देखकर इसके बनाने वाले का अनुमान लगता है।

संसार के बड़े वैज्ञानिकों में से एक स्टीफन हॉकिंग लिखते हैं कि **"One can't prove that God doesn't exist."**[13] अर्थात् भगवान नहीं है यह कोई सिद्ध नहीं कर सकता है या यूँ कहें कि इस व्यवस्थित संसार व नियमों को बनाने वाला अवश्य कोई है।

---

[13] L. Johnston, 'ABC News Interview with S.W. Hawking', *The Washington Post* 14 March 2018, washingtonpost.com

भगवान जैसी किसी सत्ता में विश्वास न करने वाले लोग प्रसिद्ध जीवविज्ञानी चार्ल्स डार्विन आदि का उदाहरण देते हुए तर्क देते हैं कि यह समस्त प्राणी जगत एक कोष्ठ (cell) वाले अमीबा (Amoeba) से धीरे धीरे लाखों वर्षों में बना है। प्रकृति ही है जिसमें लाखों वर्षों तक विकास होते रहने से ही सूर्य, चन्द्र, ग्रह-उपग्रह, पृथ्वी आदि अपने आप उत्पन्न हो गये है।

डार्विन ने 1859 ई. में अपनी "The origin of Species by means of Natural selection" पुस्तक से वैज्ञानिकों में हलचल मचा दी थी। इस सिद्धांत के अनुसार अमीबा से पहले छोटे कीड़े, फिर मछली, मेंढक, सर्प, पक्षी और इसी क्रम से कुत्ता, बिल्ली, गधा, घोड़ा, बकरी, जिराफ, गाय, बैल फिर बन्दर, फिर वनमानस और अंत में मनुष्य उत्पन्न हुआ। इस विषय को लेकर मैंने एक जीवविज्ञान की प्रोफ़ेसर से प्रश्न किया था कि यदि बकरी से जिराफ बना तो जिराफ से कुछ क्यों नहीं बना अथवा बकरी आज भी उपस्थित क्यों है ? मैंने आगे पूछा कि यदि बन्दर से मनुष्य बना तो जैसे बन्दर 1000 वर्ष पूर्व थे वैसे ही आज क्यों है ? उन बंदरों में उन्नति अब क्यों नहीं होती है ? बन्दर से मनुष्य बना तो मनुष्य से आगे कुछ क्यों नहीं बना ? प्रोफ़ेसर के पास इसका उत्तर नहीं था और उन्होंने इसको एक थ्योरी कहकर टाल दिया।

वास्तव में सब संसार अपने आप बन गया ऐसा कहना तर्क, बुद्धि और सिद्धांतों के विरुद्ध है। यदि संसार ऐसे बना तो टायर से अपने आप गाड़ियाँ क्यों नहीं बनी जबकि टायर तो हजारों वर्ष पूर्व बन चुका था। इंजन से अपने आप हवाई जहाज क्यों नहीं बना ? यह थ्योरी तो रिलिजन वालों की चमत्कारी कहानियों से भी अधिक मूर्खतापूर्ण लगती है। चार्ल्स डार्विन भी

इस बात को समझते थे। डार्विन 1879 ई. में भगवान से सम्बंधित अपने विचार बताते हुए कहते है कि -

"I have never been an atheist in the sense of denying the existence of a God."[14] अर्थात् मैं कभी भी भगवान के अस्तित्व को नकारने के अर्थ में नास्तिक नहीं रहा हूँ।

वास्तव में पाश्चात्य देशों में ईसाइयत व बाइबिल का बोलबाला था। बाइबिल में ईसाईयों का भगवान यहोवा और उसका पुत्र ईसा साधारण मनुष्यों की भांति युद्ध करते और सामान लूटते हुए दिखते हैं। यहोवा एक साधारण मनुष्य जैसे कर्म करता था। अतः बड़े बड़े वैज्ञानिकों का ऐसे भगवानों से विश्वास उठ गया क्योंकि उनको विज्ञान ने अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान दे दिया था। इन वैज्ञानिकों को पता चल चुका था कि संसार की रचना ऐसे रिलिजन वाले भगवानों ने नहीं की है। अतः ये वैज्ञानिक भगवान के अस्तित्व को तो मानते थे क्योंकि ऐसा व्यवस्थित और आश्चर्यजनक ब्रह्मांड बिना रचयिता के नहीं बन सकता किन्तु आजकल दुनिया में जो भगवान है उनको नकारते थे।

इसीलिए अल्बर्ट आइन्स्टीन एक डच यहूदी दार्शनिक Baruch Spinoza की प्रशंसा करते हुए लिखते है कि -

"I believe in Spinoza's god, who reveals Himself in the lawful harmony of the world, not in a god who concerns

[14] 'Did History's Most Famous Scientists Believe In God?', *Forbes* 26 June 2018, Forbes.com

himself with the fate and the doings of mankind."[15] अर्थात् मैं स्पनोजा के भगवान में विश्वास करता हूँ जो स्वयं को दुनिया के व्यवस्थित नियमों वाले सद्भाव व सामंजस्य में प्रकट करता है, न कि उस ईश्वर में जो अपने आप को भाग्य और मानवजाति के कार्यों से चिंतित करता है।

इसी प्रकार सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड केल्विन लिखते है कि –

"Science positively affirms Creative Power. We are absolutely forced by science to believe with perfect confidence in a Directive Power, in an infiuence other than physical and electrical forces." [16] अर्थात् विज्ञान निश्चयात्मक रूप से सृष्टिकर्ता की सत्ता को स्वीकार करता है। हम विज्ञान द्वारा शासक शक्ति को मानने पर विवश हो गये हैं। एक ऐसी शक्ति जो भौतिक और वैद्युतिक शक्तियों से भिन्न है।

इन सभी तर्क, तथ्य, प्रमाणों और वैज्ञानिकों के कथनों से सिद्ध होता है कि संसार को एक अद्भुत, अलौकिक शक्ति ने व्यवस्थित रूप से रचा है और इसको चलाने के लिए नियमों की व्यवस्था की है। जिस प्रकार एक स्कूल का प्रधानाचार्य स्कूल को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए नियमों को बनाता है।

---

[15] Einstein's response to Herbert Goldstein's 1929 telegram asking "Do you believe in God?".

[16] Science and Religion, p. 48.

मनुष्य इतिहास के सबसे प्राचीन और गूढ़ प्रश्नों में से एक प्रश्न यही है कि संसार को बनाने वाला है भी या नहीं। वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तकों में से एक है। उसमें लिखा है कि -

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।[17]

अर्थात् संसार में ईश्वर के विषय में लोगों की भिन्न भिन्न मान्यताएं है। कुछ लोग कहते है कि यदि ईश्वर है तो दिखता क्यों नहीं ? कुछ लोग उसको भयंकर तो कुछ शांत कहते है। कुछ लोग कहा करते है कि संसार का निर्माता कोई नहीं है।

इससे अगले मन्त्र में संसार की रचना करने वाले के विषय में कहा गया है कि -

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥[18]

भावार्थ : हे विद्वान लोगों ! जिससे सर्वप्रथम सब ज्ञान-विज्ञान उत्पन्न होता है, जिसने आकर्षण शक्तियुक्त सब ग्रह आदि की व्यवस्था करने वाला सूर्यलोक बनाया है वह संसार का रचयिता सूर्य का भी सूर्य है यह जानना चाहिए।

अब विचार करना चाहिए कि जिस ईश्वर की बात संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक में की गयी है क्या वो ईश्वर मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों आदि

[17] ऋग्वेद, मंडल 2, सूक्त 12, मन्त्र 5।
[18] ऋग्वेद, मंडल 2, सूक्त 12, मन्त्र 6।

धर्मस्थलों में है ? इसका बहुत ही सुन्दर और सुलझा हुआ उत्तर वेदों में दिया गया है –

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ [19]

भावार्थ : संसार का बनाने वाला सर्वव्यापक है । वह सबके ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ, अन्दर-बाहर आदि सब जगह उपस्थित है । अतः अन्याय से कभी किसी का कोई भी द्रव्य (पदार्थ) नहीं लेना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबकुछ देख रहा है । यह सब मेरा नहीं है बल्कि कुछ समय के लिए मिला है, इस भाव के साथ पवित्र जीवन जीना चाहिए । जो मनुष्य सबको देखने वाले ईश्वर से डरकर पापकर्म नहीं करते उन पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है ।

वैसे मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जो हिन्दू आज संसार में वेदों को अपना धर्मग्रन्थ मानते है वे लोग भी मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद बातों को इकठ्ठा करके अलग अलग अनेकों रिलिजन बनाएं बैठे हैं । आज भारत के अधिकांश लोगों को तो चारों वेदों के नाम तक नहीं पता है । किसी भी अनपढ़ और मूर्ख व्यक्ति को भगवान मान बैठते है । उसके उपरांत अपने नए रिलिजन को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए लड़ने-झगड़ने लग जाते है । इसी प्रकार ईसाईयों में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के नाम पर, मुस्लिमों में सिया-सुन्नी आदि पंथों और फिरकों के नाम पर, बौद्धों-जैनियों में हीनयान-महायान और श्वेताम्बर-पीताम्बर के नाम पर, सिखों में अकाली-नामधारी-

[19] यजुर्वेद, अध्याय 40, मन्त्र 1 । (ईशोपनिषद में इस मन्त्र की बहुत सुन्दर व्याख्या है ।)

उदासी और सुतरहसाई के नाम पर लड़ाई झगड़े होते रहें है। इन सभी रिलिजन के लोगों की भगवान की मान्यता अवैज्ञानिक और अंधविश्वास वाली है। आगे चलकर संसार के सभी रिलिजन का तुलनात्मक व निष्पक्ष अध्ययन विस्तार पूर्वक करेंगे।

निष्कर्ष : भले ही हमने संसार बनाने वाले को नहीं देखा हो किन्तु उसके बनाये हुए संसार को देखकर उसकी सत्ता का पता चलता है। संसार का बनाने वाला अवश्य कोई है क्योंकि संसार व्यवस्थित है तथा नियमों में बंधा हुआ है। इसी लिए वैज्ञानिक भी मानते है कि संसार अपने आप नहीं बन सकता है क्योंकि अपने आप तो एक सुई भी नहीं बनती है तो इतना बड़ा संसार कैसे बनेगा ? अब आगे विचार करेंगे कि संसार बनाने वाला कैसा है ?

1.3 संसार बनाने वाला कितना बुद्धिमान है ?

फल-सब्जी आदि काटने वाला एक चाकू और ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने वाले सेटलाइट दोनों ही मनुष्य ने बनाएं हैं। यदि आपसे कोई प्रश्न करे कि चाकू बनाने में अधिक बुद्धि का प्रयोग होता है अथवा सेटलाइट बनाने में ? एक साधारण व्यक्ति भी उत्तर दे सकता है कि सेटलाइट बनाने में अधिक बुद्धि का प्रयोग होता है। इससे एक सिद्धांत आप समझ गये होंगे कि जिस वस्तु की संरचना (बनावट) जितनी अधिक जटिल (मुश्किल) होगी उसको बनाने में उतनी ही अधिक बुद्धि का प्रयोग होता है। जैसे एक साधारण पेन बनाने में जितनी बुद्धि का प्रयोग होता है उससे कई गुना अधिक बुद्धि का प्रयोग एक सुपर कंप्यूटर अथवा मोबाइल फोन आदि बनाने में होता है।

इसका कारण यह है कि कंप्यूटर की संरचना अधिक जटिल है। प्रकृति के बहुत से पदार्थों, सूक्ष्म तत्वों व नियमों को मिलाकर कंप्यूटर बनता है जबकि पेन केवल प्लास्टिक, रबर, स्याही व लोहा आदि का प्रयोग करके बन सकता है । इसीलिए अधिक जटिल संरचना वाला पदार्थ अधिक आश्चर्यजनक कार्य करता है।

अब जो पदार्थ मनुष्य ने नहीं बनाएं उनकी संरचना पर विचार करें। पृथ्वी पर अलग अलग रंगों के फूल-पौधे, अलग अलग स्वाद के फल व फसलें होती है। कैसे पौधे अपना भोजन मनुष्य की भांति स्वयं बना लेते है। उसी जल से जीव अपनी प्यास बुझाते है और उसी से बिजली बन जाती है। जो अग्नि जीवन देती है वही अग्नि जीवन ले भी लेती है। वायु सारे संसार को चलायमान बनाएं रखती है। उपग्रह अपने ग्रहों के और ग्रह अपने सूर्य के चारों ओर नियम से घूम रहे हैं। हमारी ही आकाशगंगा जिसका नाम मिल्की-वे है, उसमें असंख्य सौरमंडल है और उनमें भी पृथ्वी आदि ग्रह हैं जहाँ जीवन है। फिर इस ब्रह्मांड में ऐसी ऐसी असंख्य आकाशगंगाएँ हैं और उनमें असंख्य सूर्य और पृथ्वी जैसे ग्रह हैं । यह आश्चर्यजनक संसार कितना विशाल है इसका ठीक ठीक अनुमान भी मनुष्य नहीं लगा पाया है। ब्रह्मांड तो बहुत दूर है मनुष्य अपने शरीर के विषय में ही अब तक बहुत कम ज्ञान जुटा पाया है।

मनुष्य के शरीर में संसार का सबसे चमत्कारिक हिस्सा मनुष्य का मस्तिष्क है । संसार में जहाँ भी मनुष्य देखेगा एक अद्भुत कलाकार की कलाकारी दिखाई देगी और विचार उठेगा कि जिसने यह संसार बनाया है उसके पास असीम बुद्धि है।

सन् 1914 ई. में लन्दन में आयोजित विज्ञान सप्ताह (science week) में भाषण देते हुए प्रोफ़ेसर फलेमिंग कहते है कि –

“This universe is not merely a thing. It is a thought and thought implies and necessitates thinker. Hence there is in this universe a Supreme thinker or intelligence of which our own intelligence is but a faint copy.”[20]

अर्थात् ऐसा व्यवस्थित और नियमों में बंधा हुआ संसार केवल मात्र एक वस्तु नहीं है। यह एक विचार का परिणाम है। यह विचार एक विचारक की उपस्थिति को सिद्ध कर रहा है। इसलिए संसार में एक सर्वोच्च विचारक अथवा महाबुद्धिमान् है और हमारी अपनी बुद्धि उसका एक धुंधला सा प्रतिबिम्ब मात्र है।

निष्कर्ष : इस प्रकार तर्क व प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध हो रहा है कि जिसने यह संसार बनाया है वह महाबुद्धि वाला है। मनुष्य उसके अपार ज्ञान की कल्पना भी नहीं कर सकता है। एक शब्द में कहें तो वह सर्वज्ञ है अर्थात् सब कुछ जानता है।

1.4 संसार का रचयिता कहाँ रहता है ?

अब आप जानते हैं कि इस संसार को किसी ने बनाया है और जिसने बनाया है वह महाबुद्धिमान् है। अब प्रश्न उठता है कि वह रचयिता कहाँ रहता है ? संसार में लोगों की अलग अलग मान्यताएं हैं। कुछ लोग उसे मंदिर में मानते

[20] O. Joseph a.o., *Science and Religion By Seven Men of Scienc* 1914.

हैं, कुछ मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों आदि में ढूंढते हैं। कुछ जीवित रहते भगवान बन बैठते है।

मैं इस एक स्थान पर बैठकर पुस्तक लिख रहा हूँ। मुझे नहीं पता अब मेरे कमरे के बाहर क्या क्या गतिविधियाँ हो रही हैं। हाँ, मैं कैमरों से मोटी मोटी चीजें अवश्य देख सकता हूँ किन्तु एक समय पर एक ही देख पाऊंगा। मुझे नहीं पता मेरे कमरे के बाहर कितनी चीटियाँ, कीड़े-मकोड़े घूम रहे है। कितने अणु-परमाणु मेरे आस पास है। कौन सी चिड़ियाँ चहक रही है और कौन सी चुप बैठी है। मैं अपने कमरे के बाहर का सब कुछ कभी नहीं जान सकता हूँ क्योंकि मैं एक स्थान विशेष पर बैठा हुआ हूँ। मनुष्य तो उसके पास रहने वाले मित्र अथवा पत्नी के बारे में भी नहीं बता सकता है कि उसके मन में क्या चल रहा है। इसीलिए सबसे अधिक नुकसान सदा करीबी लोग ही पहुंचाते हैं। अतः अप्राप्त स्थान में कर्ता की क्रिया होना संभव नहीं है। हम जानते है कि रचयिता सब कुछ जानने वाला है। एक स्थान या कुछ स्थानों पर रहने वाला सब कुछ कभी भी जान ही नहीं सकता है। यह अवैज्ञानिक बात है कि रचयिता चौथे अथवा सातवें आसमान पर रहता है जैसा कि इसाई व मुस्लिमों की मान्यता है। जो एक स्थान विशेष पर रहता है वह सबकुछ जान ही नहीं सकता है। सबकुछ केवल वही जान सकता है जो एक ही समय में सब स्थानों पर उपस्थित होवे। अर्थात् संसार के प्रत्येक परमाणु, इलेक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रॉन तथा क्वार्क और उससे भी सूक्ष्म तत्वों में उपस्थित होवे।

रचयिता सब कुछ तभी जान सकता है जब वह प्रत्येक वस्तु, जीव-जंतु, कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों, मनुष्यों, सूर्य-चन्द्र, ग्रह-उपग्रहों तथा पूरे ब्रह्मांड में एक ही समय में उपस्थित होवे। अतः जिसने यह अद्भुत संसार रचा है

वह रचयिता सब जगह सदा उपस्थित रहता है और सब स्थान पर रहने वाले को सर्वव्यापक कहते है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि रचयिता सब जगह है तो मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्मस्थलों में भी तो है। ऐसा कहने वालों से मैं पूछ सकता हूँ कि ईश्वर तो कीचड़ और गन्दगी में भी है। अतः ये लोग उसकी पूजा कीचड़ में घुसकर क्यों नहीं करते हैं ? मेरे ऐसा पूछने पर कुछ लोग कह सकते है कि यह अपनी अपनी श्रद्धा का विषय है कि कौन व्यक्ति कैसे व कहाँ ईश्वर को पाना चाहता है। यदि ऐसे लोगों की बात सच मान ली जाए तो अल्लाह के नाम पर हत्याएं करने वाले आतंकवादी गलत कैसे हुए ? वास्तव में यह अपनी अपनी श्रद्धा का विषय नहीं है अन्यथा एक रिलिजन वाले दूसरे रिलिजन वालों से विचारों में मतभेद के कारण सदा लड़ते रहेंगे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियों ने कहा था कि -

“I do not feel obliged to believe that the same God who has endowed us with senses, reason, and intellect has intended us to forgo their use.”[21] अर्थात् मैं यह नहीं मानता हूँ कि वही ईश्वर जिसने हमें इंद्रियों, कारण और बुद्धि से संपन्न किया है, उसने हमें उनका उपयोग करने से रोक दिया है।

अतः यह अपनी अपनी श्रद्धा का नहीं बल्कि बुद्धि का विषय है। पहले बुद्धिपूर्वक हमें किसी भी बात को अच्छे से प्रमाणों के आधार पर जानना चाहिए और फिर श्रद्धापूर्वक मानना चाहिए। ऐसा नहीं होता है कि

[21] ‘Did History’s Most Famous Scientists Believe In God?’, *Forbes* 26 June 2018, Forbes.com

गुरुत्वाकर्षण बल भारत के लोगों पर काम करेगा और अमेरिका के लोगों पर काम नहीं करेगा। जिस प्रकार सृष्टि के नियम सबके लिए समान है उसी प्रकार सृष्टि का बनाने वाला भी सबके लिए समान है।

मैंने जब ऊपर कीचड़ में भी रचयिता के होने की बात की तो कुछ लोगों को लगा होगा कि वह कैसा ईश्वर जो कीचड़ में भी रहता है। वास्तव में कीचड़, गन्दगी, सुगंध, दुर्गन्ध, मीठा-खट्टा आदि केवल उन जीवों के लिए है जिनके पास आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा आदि इन्द्रियां है। अधिक धुम्रपान करने वालों की कुछ वर्षों बाद सूंघने की शक्ति कम हो जाती है तो उस व्यक्ति को अधिक दुर्गन्ध वाले स्थान पर भी परेशानी नहीं होगी। जो लोग बाहर की गंदगी से घृणा करते हैं क्या उन्होंने कभी सोचा है कि मनुष्य शरीर के अन्दर कितनी गंदगी भरी हुई रहती है। वास्तव में, रचयिता के लिए कुछ भी गन्दा या अच्छा नहीं होता है क्योंकि उन्हीं सूक्ष्म तत्वों से अच्छी चीजें बनती है और उन्हीं सूक्ष्म तत्वों से बुरी चीजें बनती है। अतः जो लोग कहते हैं कि कीचड़ व गंदगी में रहने वाला कैसा ईश्वर, उनको विज्ञान का कुछ भी पता नहीं है। ऐसे लोग नहीं जानते कि जिन मूल तत्वों से उनका शरीर बना है उनसे ही संसार के अन्य सभी पदार्थ बने है। अतः ईश्वर के लिए सब पदार्थ एक समान है क्योंकि वह सभी पदार्थों को बनाने वाला है। उसको सभी पदार्थों की मूल संरचना पता है क्योंकि वह एक ही समय में सब स्थानों पर व्यापक है।

निष्कर्ष : जिसने संसार रचा है वह सर्वत्र सर्वव्यापक है क्योंकि एक स्थान विशेष पर रहने वाला सब कुछ नहीं जान सकता है। यह अनंत ब्रह्माण्ड केवल वही बना सकता है जो संसार के प्रत्येक सूक्ष्म तत्व के अन्दर उपस्थित हो।

1.5 रचयिता का आकार कैसा है ?

बाइबिल के अनुसार संसार के रचयिता ने अपने जैसे दिखने वाले मनुष्य बनाए हैं ।[22] अर्थात् बाइबिल के अनुसार रचयिता का आकार मनुष्य जैसा हुआ। इसी प्रकार अल्लाह कहते हैं कि “मैंने अपने दोनों हाथों से दुनिया के सबसे पहले मनुष्य अर्थात् आदम को बनाया।”[23]

अब आप सोच रहे होंगे कि संसार के रचने वाले का शरीर और उसके हाथ-पैर आदि अंग कितने बड़े होंगे। इन लोगों में एक समय ऐसा भी था जब बारिश होती थी तो ये कहा करते थे कि भगवान ने पेशाब किया है। ऐसी ही स्थिति न्यूनाधिक सभी रिलिजन वालों की है।

अब आइये तर्क, तथ्य तथा विज्ञान के आधार पर विचार करते हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि जिस वस्तु का कोई आकार होता है वह वस्तु एक समय पर एक ही स्थान पर रहती है। जैसे ईसा का पिता यहोवा चौथे और अल्लाह सातवें आसमान पर रहते है। हमारे शरीर का एक निश्चित आकार और बनावट है तथा यह भार से युक्त है इसीलिए यह एक समय पर सब स्थानों पर उपस्थित नहीं हो सकता है।

आप यह भी जानते ही है कि जो सब जगह नहीं है वह इस अद्भुत संसार को बना नहीं सकता है। इससे यह बात आप समझ गये होंगे कि संसार का रचने वाला बिना किसी आकार और भार के है अर्थात् निराकार है। सर्वव्यापक वही हो सकता है जो निराकार है अथवा निराकार ही सर्वव्यापक

---

[22] Bible, Genesis, Chapter 1, verse 26-27.

[23] कुरान, सूरा साद 38, आयत 75।

हो सकता है। अतः आकार वाला पदार्थ ना सर्वज्ञ हो सकता है और ना ही सर्वव्यापक हो सकता है। हम पहले ही सिद्ध कर चुके है कि संसार का रचयिता सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। अतः निराकार ने ही संसार को रचा है।

जब तक कोई तत्त्व ब्रह्मांड के प्रत्येक परमाणु, क्वार्क व इनसे भी अत्यंत सूक्ष्म पदार्थों (जिनको मनुष्य नहीं जानता) के अन्दर नहीं होगा तब तक ये तत्त्व अपने आप ऐसा व्यवस्थित संसार नहीं बना सकते है क्योंकि ये जड़ पदार्थ है। इनमें अपने आप इकट्ठे होकर एक व्यवस्थित संसार बनाने की बुद्धि नहीं है।

अतः ब्रह्मांड का रचयिता इन सभी सूक्ष्म पदार्थों के अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, दायें-बायें, आगे-पीछे आदि सब जगह है। तभी वह इन सूक्ष्म पदार्थों से रचना करता है। आप यह बात तो समझते ही होंगे कि इलेक्ट्रान, क्वार्क आदि अति सूक्ष्म पदार्थों के अन्दर वही उपस्थित हो सकता है जो उनसे भी अधिक सूक्ष्म होवे। वही इन सूक्ष्म पदार्थों को संचालित करता है, इनसे संसार के सभी पदार्थ रचता है, प्रकृति के नियम बनाता है।

कुछ विज्ञान से अनभिज्ञ (अनजान) व्यक्ति प्रश्न खड़ा कर सकते हैं कि बिना हाथ पैरों के संसार कैसे बन सकता है। सज्जनों, कार्य करने के लिए हाथ-पैर की आवश्यकता मनुष्य आदि प्राणियों को पड़ती है। रचयिता तो उन सूक्ष्म तत्वों के भी अन्दर है जिनसे मिलकर यह शरीर और हाथ-पैर आदि अंग बने है।

अब कुछ लोग कह सकते है कि संसार रचने वाला वैसे तो निराकार है किन्तु कभी कभी मनुष्य का शरीर धारण करके आकार वाला बन जाता है।

यह कथन एकदम बुद्धि के बाहर का है। यह तो वही बात हो गयी कि कोई मनुष्य मुट्ठी बंद करके कहे कि मेरी मुट्ठी में आकाश आ गया है। आकाश तो मुट्ठी के अन्दर, बाहर सब जगह है। जो पहले ही वहां है तो कहाँ से वो आयें ?

इस बात को एक आकार वाले मनुष्य के उदाहरण से समझने का प्रयास करें। जब बच्चा स्कूल से पढ़कर घर पहुँचता है तो उसकी माँ कहती है कि "आ गये बेटा।" उसकी माँ ने ऐसा इसलिए कहा कि बच्चा पहले घर नहीं था। वह पहले स्कूल में था। इसलिए वह अब स्कूल से घर आया। आप जानते हैं कि जिस वस्तु का आकार होता है वह एक समय पर सब जगह नहीं हो सकती है। इसलिए जब वह स्थान बदलती है तो कहते हैं कि यह आई, गयी, चली, चलाई, उड़ी, उड़ाई आदि।

अब विचार करिए कि संसार का रचयिता तो सब जगह है, सब शरीरों और वस्तुओं में उपस्थित है। अतः ऐसा कहना कि ईश्वर निराकार है किन्तु वह शरीर धारण करके उसमें आ जाता है, ठीक नहीं। ईश्वर तो पहले ही सब शरीरों में है तो कहाँ से वो आया ? जो जहाँ नहीं होता वहां वो आता है लेकिन यदि पहले ही वह वहां है तो कहाँ से वो आता है ? रचयिता को ब्रह्मांड में किसी भी जगह कुछ करने के लिए कहीं आना जाना नहीं पड़ता है क्योंकि वह तो सब जगह है।

यह आश्चर्यजनक है कि ईश्वर के सम्बन्ध में तर्क और विज्ञान के द्वारा आज हम जो जान रहें है वह संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेदों में पहले से ही लिखा हुआ है। यजुर्वेद के अध्याय 40 में आठवां मंत्र आता है जिसमें

संसार के बनाने वाले को “अकायम्” कहा गया है जिसका अर्थ है कि रचयिता आकार रहित अर्थात् निराकार है। उसका कोई शरीर नहीं है।

इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि आज 21वीं सदी का मनुष्य ही अधिक बुद्धिमान नहीं है बल्कि हजारों वर्ष पूर्व के मनुष्यों को भी संसार के गूढ़ रहस्यों के बारे में गहन जानकारियां प्राप्त थी। बाद के समय में स्वार्थी लोगों ने अलग अलग रिलिजन बनाकर रचयिता से सम्बंधित चमत्कारी कहानियां बना ली।

अब तक संसार बनाने वाले के विषय में हमने जो भी जानकारी इकट्ठी की है वह निम्न है -

1. हम यह सिद्ध कर चुके हैं कि यह संसार एक रचना है। कोई भी रचना बिना रचयिता के नहीं हो सकती है।
2. संसार का रचयिता सब कुछ जानने वाला अर्थात् सर्वज्ञ है।
3. सर्वज्ञ वही हो सकता है जो सर्वव्यापक अर्थात् सब जगह हो।
4. सर्वव्यापक वही हो सकता है जिसका कोई आकार न होवे।
5. अब जो निराकार और सर्वव्यापक है उसे विराट् अर्थात् सबसे बड़ा कहा जा सकता है क्योंकि वह एकमात्र ऐसा है जो सब जगह एक ही समय में उपस्थित है। अतः उससे बड़ा संसार में कुछ भी नहीं है। इसीलिए उसे विराट् कहते हैं।

निष्कर्ष : जिनको ये बातें सरल नहीं लग रही हों वह केवल इतना स्मरण रखें कि बिना बनाने वाले के एक कच्छा तक नहीं बन सकता है तो यह महान संसार कैसे बनेगा। अतः यह संसार किसी ने बनाया है। इस संसार

की रचना बहुत ही अद्भुत व आश्चर्यजनक है अतः जिसने भी यह संसार बनाया है वह सब कुछ जानता है अर्थात् सर्वज्ञ है। सब कुछ वही जान सकता है जो एक ही समय में पूरे ब्रह्मांड में सब जगह उपस्थित होवें। इसलिए वह सर्वव्यापक है। सज्जनों, एक ही समय में सब जगह वही हो सकता है जो एक स्थान पर न हो अर्थात् जिसका कोई आकार न होवे। अतः संसार बनाने वाले का कोई आकार नहीं है। वह संसार के प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्व के अन्दर है और उनको संचालित करता है।

1.6 संसार किसी एक ने बनाया या बहुतों ने मिलकर ?

इस अद्भुत तथा विशाल ब्रह्मांड को देखकर विचार उठता है कि क्या यह सब किसी एक ने ही बनाया है ? ऐसा इसलिए है कि हम सब मनुष्य ऐसा सोच भी नहीं सकते है कि इस अनंत ब्रह्मांड की रचना किसी एक ने की है। एक छोटी सी मशीन बनाने के लिए भी बहुत सारे लोगों की आवश्यकता पड़ती है तो यह ब्रह्मांड इतनी बड़ी मशीन है कि जिसका प्रारंभ और अंत कहाँ है हम कल्पना भी नहीं सकते है।

वास्तव में, मनुष्य का ऐसा सोचना इसलिए है क्योंकि उसके पास एक शरीर है जो एक समय पर एक स्थान पर रहकर कार्य कर सकता है। इसलिए मनुष्य को कोई भी कार्य करने के लिए कहीं न कहीं अन्य लोगों का साथ लेना पड़ता है। मनुष्य बालकपन से ही माता-पिता, भाई-बहन, सम्बन्धी, मित्र तथा समाज के सहयोग से ही अपना जीवन आगे बढ़ाता है। अतः कुछ लोग सोचते है कि जैसे मनुष्य अकेला कुछ नहीं कर सकता है वैसे ही संसार को भी कोई अकेला नहीं रच सकता है।

प्रथम तो हम अपनी तुलना संसार बनाने वाले के साथ नहीं कर सकते हैं क्योंकि हम एक आकार वाले शरीर से वस्तुएं बनाते हैं और संसार बनाने वाला बिना शरीर के सर्वव्यापक होकर एक एक परमाणु आदि के अन्दर होकर उनसे ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु बनाता है अर्थात् मनुष्य शरीर आदि भी उन्हीं परमाणुओं के मेल से बनता है।

मनुष्य प्रकृति में पहले से ही उपस्थित चीजों को लेकर नई नई वस्तुएं बनाता है। सोने से आभूषण, एल्युमीनियम से हवाई-जहाज, लोहे आदि से गाड़ियाँ, रेत-मिट्टी आदि से घर, जल से बिजली, परमाणुओं से बम तथा ऊर्जा, पेड़ से लकड़ी व कागज आदि सभी पदार्थ मनुष्य प्रकृति की सहायता से बनाता है अर्थात् मनुष्य की रचना ब्रह्मांड के रचयिता द्वारा रची हुई सृष्टि पर आधारित है। अतः मनुष्य अपनी शक्ति से संसार के रचयिता की शक्ति की तुलना न करें।

यदि संसार की रचने करने वाले दो या दो से अधिक होते तो ब्रह्मांड की रचना एक जैसी नहीं होती। अलग अलग रचयिता अपने अपने अनुसार सृष्टि बनाते। भारत के मनुष्यों के शरीर में खून दौड़ता और अमेरिका आदि देशों के लोगों के शरीर में पानी दौड़ता। कहीं पर अग्नि गर्मी देती तो कहीं पर अग्नि ठंडक देती। सावधानी पूर्वक संसार को देखने से पता चलता है कि जहाँ जिस वस्तु की जितनी आवश्यकता है वह वहां उतनी ही मात्रा में उपस्थित है। पूरी सृष्टि प्रकृति के नियमों से चल रही है। पेड़ ऑक्सीजन छोड़ते हैं तो मनुष्य आदि उसको ले लेते हैं और मनुष्य आदि कार्बनडाईऑक्साइड छोड़ते हैं तो पेड़ उसको ले लेते हैं। समस्त संसार में एक अद्भुत संतुलन है। एक ही प्रकार की रचना, व्यवस्था व नियमों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि संसार को बनाने वाला भी एक ही है।

इसको एक अन्य प्रकार से भी समझा जा सकता है। यदि कोई कहे कि संसार बनाने वाले दो हैं तो कोई यह भी कह सकता है कि सौ हैं। कोई एक लाख, कोई 1 करोड़, कोई 1 अरब कह सकता है। यदि ऐसे मानने लग जायें तो अंत में कोई कह सकता है कि कण कण ही भगवान है। इसका अर्थ ये हुआ कि संसार की प्रत्येक वस्तु में असंख्य भगवान है क्योंकि प्रत्येक वस्तु असंख्य कणों से मिलकर बनी हुई है। अब भगवान कोई जड़ तत्त्व तो है नहीं। वह तो चेतन तत्त्व है जिसमें बुद्धि है। अतः कण कण को भगवान मानने वालों को यह भी मानना पड़ेगा कि संसार की प्रत्येक वस्तु चेतन है और प्रत्येक वस्तु में बुद्धि है। किन्तु आपने कभी नहीं देखा होगा कि जैसे मनुष्य बच्चे पैदा कर सकता है वैसे एक घर दूसरा घर पैदा करता हो अथवा एक पुस्तक अपनी बुद्धि से दूसरी पुस्तक बना देती हो। इसी प्रकार कभी आपने नहीं देखा होगा कि एल्युमीनियम अपने आप बुद्धि लगाकर हवाई जहाज बन जाता हो। अतः प्रत्येक कण भगवान नहीं है इसलिए लाखों करोड़ भगवान नहीं हैं अपितु संसार का रचयिता एक ही है। **कण कण भगवान नहीं है अपितु कण कण में भगवान है।**

मुस्लिम रिलिजन की पुस्तकों में लिखा है कि अच्छी अच्छी चीजें अल्लाह ने बनाई हैं और बुरी बुरी चीजें शैतान ने बनाई हैं। सज्जनों, इस संसार में कोई भी पदार्थ बुरा नहीं है। मनुष्य एक चेतन प्राणी है और बुद्धिमान भी है। सृष्टि के रचयिता की बनाई वस्तुओं को अच्छा व बुरा मनुष्य बनाता है। रचयिता ने तो पानी शुद्ध ही दिया है किन्तु उसको गन्दा मनुष्य करता है। रचयिता ने तो अग्नि आदि ऊर्जावान पदार्थ मनुष्यों की उन्नति के लिए बनाये हैं किन्तु उनसे भयंकर हथियार बनाने का कार्य मनुष्य ने किया है। एक लोहे का चाकू उस समय लाभकारी हो जाता है जब एक डॉक्टर उससे

किसी का जीवन बचाता है किन्तु वही चाकू उस समय विनाशकारी बन जाता है जब कोई उससे किसी निर्दोष की हत्या कर देता है।

संसार में उपस्थित प्रत्येक पशु-पक्षी, जीव-जंतु, सजीव-निर्जीव पदार्थों का अलग अलग महत्त्व है। एक सांप मनुष्यों आदि के लिए हानिकारक अनेकों विषैले तत्वों को धरती से साफ करता रहता है। सांप खेत में चूहों को खाकर किसान व फसलों की रक्षा करता है। जब वही सांप (स्वरक्षा या डरकर ही काटता है अन्यथा मनुष्य का मित्र है) मनुष्य को काट लेता है तो लोग उसे बुरा कह देते हैं। मुस्लिम आदि सूअर को गन्दा जीव कहते हैं जबकि यह मनुष्यों के लिए बिना वेतन लिए साफ़-सफाई करता है।

हमें यह समझना होगा कि प्रत्येक प्राणी का कोई न कोई प्रयोग है। बिना कारण के इस संसार में कुछ भी नहीं बना है। जैसे एक मशीन बिलकुल व्यवस्थित बनी होती है और नियमों के आधार पर चलाई जाती है वैसे ही यह ब्रह्मांड भी व्यवस्थित बना हुआ है और बड़े ही सुन्दर और स्पष्ट नियमों से चलता है। जिस प्रकार मशीन में कोई भी अंग (हिस्सा) अनावश्यक (फालतू) नहीं होता है वैसे ही इस ब्रह्मांड में उपस्थित प्रत्येक पदार्थ का कोई न कोई कारण अवश्य है।

क्या आपने कभी सोचा है कि मनुष्य का इस संसार में आने का क्या कारण हो सकता है ? आप शेर, हाथी, कुत्ते, बिल्ली, शार्क मछली तथा लोमड़ी आदि को कितना भी पढ़ाओ वे उपग्रह नहीं बना सकते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो बुद्धि का प्रयोग करके नई नई चीजें सीख सकता है। विचार करें कि मनुष्य को ही ऐसी विचित्र बुद्धि क्यों प्राप्त हुई ? यदि अन्य पशु-पक्षियों की भांति खाना, पीना, नहाना, सोना, साँस लेना, बच्चे पैदा करना

आदि ही मनुष्य की उत्पत्ति का कारण होता तो यह बुद्धि मिलती ही नहीं। यदि इन सब कार्यों के लिए नहीं मिली तो किस लिए मिली ? अब हमारे पास मनुष्य की उत्पत्ति के तीन बड़े कारण बचते हैं। प्रथम यह कि मनुष्य अपनी बुद्धि से इस संसार के गूढ़ रहस्य जानें और नए नए लाभदायक पदार्थों का निर्माण करे। दूसरा यह कि जिस रचयिता ने इस अनोखे संसार को रचा है उसको जानने और समझने का प्रयास करे। तीसरा यह कि जैसे रचयिता ने हमसे बिना कुछ लिए हमको सब कुछ दिया वैसे ही मनुष्य भी उसके जैसा बनने का प्रयास करे। इस संसार में अन्याय आदि से दूसरों के पदार्थों को हड़पने का प्रयास न करें। पुरुषार्थ से पदार्थों को प्राप्त करें और जितनी आवश्यकता होवे उतना ही उनका प्रयोग करें बाकि संसार हित में लगा देवें।

आज मनुष्य ने अपनी उत्पत्ति के पहले उद्देश्य अर्थात् सृष्टि के रहस्यों को जानने के प्रयत्न तो बहुत किये हैं किन्तु सृष्टि की रचना करने वाले को जानने और उसके जैसे अच्छे गुणों को धारण करने वाले उद्देशों पर ध्यान ही नहीं दिया है। परिणामस्वरुप पिछले 500 वर्षों की भौतिक उन्नति ने प्रकृति को बड़े स्तर पर नष्ट किया है। यदि विनाश करने के लिए बुद्धि मिलती तो यह मनुष्यों को नहीं बल्कि शेर जैसे शारीरिक रूप से भी बलवान प्राणी को मिलती किन्तु हम जैसे शरीर वालों को बुद्धि मिलने के पीछे कुछ विशेष कारण है। अतः भविष्य में मनुष्य बिलकुल दानव न बन जाए इसको रोकने के लिए हमें संसार के रचयिता को समझने के प्रयत्न तेज करने ही होंगे।

इससे पूर्व आपको यह बात अवश्य पता होनी चाहिए कि वर्तमान रिलिजन वाले आपके सत्य जानने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। अधिकांश रिलिजन

वाले कहते हैं कि यह श्रद्धा का विषय है, इसमें बुद्धि मत लगाओ। वास्तव में, बुद्धि हमें प्रयोग करने के लिए ही रचयिता ने दी है। अतः बुद्धिपूर्वक, निष्पक्ष तथा रिलिजन से हटकर इस विषय को समझते रहें, आपको अवश्य ही रचयिता से सम्बंधित विशेष बातें जानने को मिलेंगी।

निष्कर्ष : संसार बनाने वाला एक ही है। उसे संसार बनाने हेतु किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। अतः वह सर्वशक्तिमान है जो अकेला ही अपने सामर्थ्य से इस ब्रह्माण्ड की रचना करता है। उसी एक सर्वशक्तिमान जैसे अच्छे गुण सभी मनुष्यों को धारण करने के प्रयास करने चाहिए। मनुष्यों को अपने जीवन के सभी उद्देश्यों को पूरा करने में अपने शरीर तथा बुद्धि आदि साधनों को लगाना चाहिए।

1.7 रचयिता को किसने बनाया ?

संसार बनाने वाले से सम्बंधित प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए दिल्ली में एक कार्यक्रम हेतु मेरा जाना हुआ था। कार्यक्रम में भाग लेने हेतु सैकड़ों युवा आये हुए थे। जब मैं यह समझा चुका था कि संसार का रचयिता एक ही है तब बाद में एक युवा ने मुझसे एक बहुत ही अच्छा प्रश्न किया था। उसने पूछा था कि जब संसार में कोई भी व्यवस्थित व नियमों में बंधा हुआ पदार्थ अपने आप नहीं बनता तो सबसे अधिक बुद्धिमान्, सर्वव्यापक, निराकार रचयिता को किसने बनाया ? इस प्रश्न के उत्तर पर बड़े बड़े वैज्ञानिकों ने मौन धारण किया है। मैंने अनेकों रिलिजन की पुस्तकें पढ़ी किन्तु इस प्रश्न का उत्तर मिलना तो दूर मुझे यह प्रश्न ही कहीं नहीं मिला। सभी रिलिजन वाले श्रद्धा की बात करते हैं और तर्क तथा विज्ञान से पीछे हटते रहते हैं।

जब मैंने भारत के प्राचीन आर्यों को पढ़ा तो मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। उन्होंने बड़ी सरलता से इस प्रश्न का उत्तर देते हुए एक विज्ञान का सिद्धांत बताया था।

महर्षि कपिल लिखते हैं कि -

मूले मूलाभावादमूलं मूलं।[24]

मूल का मूल अर्थात् कारण का कारण नहीं होता है।

यह तो अब तक हम समझ चुके हैं कि यह संसार एक रचना है अर्थात् किसी का कार्य है। दूसरा इस कार्य को करने वाला अर्थात् संसार को रचने वाला मूल कारण है। अब कोई कहे कि रचयिता को किसने बनाया तो फिर यह प्रश्न भी उठेगा कि जिसने रचयिता को बनाया उसको किसने बनाया ? फिर उसको बनाने वाले को किसने बनाया ? हम ऐसा करते रहेंगे किन्तु किसी भी अंतिम निर्णय पर नहीं पहुँच पाएंगे। विज्ञान की भाषा में इसको अनवस्था दोष कहते है। यदि किसी संख्या पर जाकर हम इस क्रमबद्धता (सिलसिले) को समाप्त करेंगे तो अन्योन्याश्रय दोष आएगा। अतः जो सब कारणों का मूल कारण है उसका कोई कारण नहीं होता है।

आर्यों के हजारों वर्ष उपरांत (बाद) आज 21वीं सदी में विज्ञान इस बात पर सहमत है कि संसार के रचयिता का कोई कारण नहीं है। यहाँ तक की कभी ईश्वर के होने और कभी ईश्वर के न होने की बातें करने वाले स्टीफन हॉकिंग भी इस बात को मानते थे कि विज्ञान की अंतिम अवस्था हमें ऐसे स्थान पर पहुँचा देती है जहाँ कोई कारण नहीं होता है। उनके शब्दों में -

---

[24] महर्षि कपिल का सांख्य शास्त्र, अध्याय 1, सूत्र 67।

"We have finally found something that doesn't have a cause."[25]

गणित में भी प्रश्नों के हल करते समय एक बार तो x का मान (value) कुछ न कुछ माननी पड़ती है और उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर आसानी से निकल जाते है। इसी प्रकार सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए यह मानना ही पड़ेगा कि रचयिता ने संसार बनाया है किन्तु उसको किसी ने नहीं बनाया है। अभी तो विज्ञान क्वार्क से आगे के सूक्ष्म तत्वों तक जाने की सोच भी नहीं रही किन्तु भविष्य में जब जाने का प्रयास करेगी तो रचयिता को मानकर ही प्रश्नों का उत्तर खोज पाएंगे। अतः रचयिता को बनाने वाला कोई नहीं है क्योंकि मूल कारण का कारण कोई नहीं होता है। इसका यह अर्थ निकलता है कि संसार का बनाने वाला सदा से है अर्थात् कभी नहीं बना है। जो कभी बना ही नहीं उसको बनाने वाला भी कोई नहीं होता है। अतः वह अजन्मा, अनादि और अनन्त है।

इस विषय को एक बार पुनः एक अन्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करते हैं। जब हम कहते हैं कि 'कोई पदार्थ बना' तो इसका अर्थ है कि दो या दो से अधिक तत्व मिले हैं तभी कोई पदार्थ बना है। जब तत्वों के संयोग (मिलने) से पदार्थ बनता है तो एक न एक दिन वे सभी तत्त्व वियोग (अलग अलग) को अवश्य प्राप्त होंगे। एक घर अलग अलग पदार्थों से मिलकर बनता है। एक समय के बाद वह घर बिना तोड़े भी अपने आप जर्जर आस्था को प्राप्त होकर बिखर जायेगा। जो तत्त्व मिले थे वे सभी फिर से अलग अलग हो जाते हैं। इससे यह समझ में आता है कि जो पदार्थ बना

[25] S.W. Hawking, *'Brief Answers to Big Questions'*, 2018.

है वह अवश्य एक दिन बिगड़ जायेगा। मनुष्य शरीर भी बना हुआ है इसीलिए एक समय के बाद यह समाप्त हो जाता है। श्रीकृष्ण जी कहते है कि -

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च। - गीता

अर्थात् किसी पदार्थ की उत्पत्ति देख, सुनकर पता चलता है कि उसका अंत (समाप्ति) अवश्य होगा तथा किसी पदार्थ का विनाश देखकर पता चलता है कि उसकी उत्पत्ति अवश्य हुई होगी।

अब हम जानते है कि रचयिता ने अकेले ही सृष्टि की रचना की है। वह आकार वाला नहीं है बल्कि निराकार है। रचयिता कई पदार्थों के मेल से नहीं बना है बल्कि एक ही तत्त्व है जो सभी पदार्थों में है। अतः जहाँ पदार्थों का संयोग (मिलना) हुआ ही नहीं वहां कार्य (क्रिया) भी नहीं हुआ। जहाँ कार्य ही नहीं हुआ वहां कर्ता भी नहीं हो सकता है। अतः रचयिता बना नहीं है तो उसको बनाने वाला भी कोई नहीं है।

संसार की प्रत्येक वस्तु अणु-परमाणुओं के अलग अलग अनुपात में मिलने से बनी है। अतः संसार की कोई भी वस्तु सदा नहीं रहेगी। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, तारे आदि समस्त ब्रह्मांड रचयिता ने अनेकों पदार्थों के मिलाने से बनायें हैं अतः इस ब्रह्मांड की एक निश्चित आयु है। इसीलिए संसार के प्राचीन आर्य लोगों की मान्यता रही है कि कोई भी वस्तु बनती है तो बिगड़ती भी है और जो वस्तु बिगड़ती है वह पुनः बनती भी है। अतः जब रचयिता के बनाएं पदार्थ बिगड़ने प्रारंभ होते हैं तो वह पुनः नयी सृष्टि बना देता है जैसे मनुष्य शरीर को पुनः पुनः बनाता है। मैं निश्चित रूप से कह

सकता हूँ कि हजारों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को इस गूढ़ ज्ञान का पता था। इतिहास के इस विषय पर आपको अगले अध्यायों में जानने को मिलेगा।

मैं जानता हूँ कि विज्ञान से अनभिज्ञ (अनजान) सामान्य लोगों को यह विषय समझने में कठिनाई हो रही होगी किन्तु थोड़ी बुद्धि लगाकर समझेंगे तो अवश्य ही यह विषय स्पष्ट हो जायेगा। मैं अत्यंत सरल भाषा में उद्धरणों को सम्मिलित करते हुए ही यह पुस्तक लिख रहा हूँ ताकि सभी सामान्य लोगों को धर्म के गूढ़ रहस्य समझ में आवें।

इसी से सम्बंधित एक और प्रश्न रिलिजन वाले उठाते हैं कि रचयिता स्वयं जन्म नहीं लेता है किन्तु किसी श्रेष्ठ मनुष्य के शरीर में आ जाता है और दुष्टों का नाश करता है। इस प्रश्न का उत्तर आप ऊपर समझ चुके है कि जो सर्वव्यापक है अर्थात् पहले ही सब स्थानों पर है तो कहाँ से वो आएगा। रिलिजन वाले ऐसा इसलिए कहते हैं ताकि उनके पैगम्बर आदि को रचयिता का दूत सिद्ध किया जा सके। दूसरा कारण यह है कि वो अपने अपने भगवानों को ताकतवर सिद्ध करना चाहते हैं। इसीलिए ऐसी कहानियां बनाई जाती हैं कि हमारे भगवान ने अपने दूत द्वारा बुरे लोगों तथा बुराई का अंत करवाया।

प्रथम बात तो यह सिद्ध हो चुकी है कि ईश्वर एक ही है। अतः अपना अपना ईश्वर बताकर झगड़ने वाले मूर्ख है। दूसरी मूर्खता रिलिजन वाले यह कहकर कर देते हैं कि इनका भगवान दूसरे से ताकतवर है। फिर बच्चों को अच्छी लगने वाली कहानियां बनाते हैं। कभी भगवान को युद्ध के मैदान में उतार देते हैं तो भगवान के दूत को (पैगम्बर मुहम्मद) आधी महिला आधी गधी पर

बैठाकर लाखों मील प्रति घंटे की गति से उड़ा देते हैं। अल्लाह का पैगम्बर चाँद के टुकड़े करके लोगों को अपनी ताकत दिखाता है। ईसाईयों का यहोवा अनेकों लड़ाईयां लड़ता है कुछ हार जाता है तो कुछ जीत जाता है। हिन्दुओं का साईं एक साधारण से व्यक्ति से कुश्ती में दो बार हार जाता है।[26]

गधी पर हवा में उड़ना, चाँद के टुकड़े करना, नदी पर चलना, बादलों में रहना, पहाड़ों को उड़ाना जैसे चमत्कारों की कहानियां बनाकर अपने अपने भगवानों की ताकत दिखाना बहुत बड़ी मूर्खता है। अरे, जिस ईश्वर ने यह अद्भुत संसार ही रच दिया है तो उसके सामने ये चमत्कार क्या हैं? जो ईश्वर सर्वव्यापक है उसके लिए एक राक्षस क्या करोड़ों राक्षस भी एक चींटी के समान नहीं है क्योंकि वह तो सब स्थानों और शरीरों में है।

यह तो वही बात हो गयी कि एक खुले मैदान में घूम रहे खरगोश को मारने के लिए करोड़ों तोप के गोले चला दिए जाएँ। वह खरगोश तो एक साधारण गोली से भी मर सकता है। इसी प्रकार ईश्वर को कुछ करने के लिए जन्म लेना पड़े यह मूर्खता की बात है। यह कर्मफल व्यवस्था का विषय है जिसको अगले अध्यायों में समझेंगे किन्तु उससे पहले यह समझ लेते हैं कि संसार का बनाने वाला कितना बलवान है।

आज वर्तमान संसार में आप देख रहे होंगे कि जिस देश के पास अधिक धन, हथियार और तकनीक है उसका राजा ही सबसे अधिक ताकतवर होता है। वर्तमान में अमेरिका सबसे ताकतवर देश माना जाता है। संभवतः भविष्य में भारत व चीन सबसे अधिक ताकतवर हो जायें। यदि संसार के

[26] इस विषय पर मेरी पुस्तक शैतान बने भगवान अवश्य पढ़ें।

सभी ताकतवर देशों के धन और तकनीक को भी मिला लिया जाए तो भी मनुष्य कभी एक नई पृथ्वी बनाने की सोच भी नहीं सकता है। जितनी ऊर्जा अकेले हमारे सूर्य से एक सेकंड में निकल रही है उतनी ऊर्जा संसार के सभी देशों के परमाणु बमों से भी नहीं निकल सकती है। हमारे सूर्य से भी लाखों गुना बड़े बड़े संख्य तारे ब्रह्मांड में उपस्थित है।

विचार करें कि ऐसे अद्भुत व्यवस्थित व नियमों से बंधे हुए महान संसार का रचयिता कितना शक्तिशाली होगा जिसने अकेले ही सब पदार्थ अपने बल से रचे हैं। रोबर्ट फ्लिन्ट को भी मानना पड़ा था कि सृष्टि अत्यंत बुद्धिपूर्वक रची गयी है।

“The order of the universe must have originated with intelligence.”[27] अर्थात् सृष्टि क्रम की उत्पत्ति निश्चित रूप से बुद्धि से हुई है।

संस्कृत में एक (लोकोक्ति) कहावत है -

बुद्धिर्यस्य बलं निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।

अर्थात् जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है। बिना बुद्धि के बल कैसा ?

हम पहले समझ चुके हैं कि रचयिता महाबुद्धिमान् अर्थात् सर्वज्ञ है। जिसके पास सबसे अधिक बुद्धि है उसके पास बल भी सबसे अधिक ही होगा। अतः सृष्टि का रचयिता सबसे अधिक बलवान है। एक शब्द में कहें तो वह सर्वशक्तिमान है।

---

[27] R. Flint, *‘Theism: Being the baird lecture for 1876’*, 2014, p. 172.

फ़ोर्ब्स में छपे एक लेख के अनुसार **“Albert Einstein believed that God existed, but that he was nebulous, universal, and not comprehensible to the human mind.”**[28]

अर्थात् अल्बर्ट आइंस्टीन मानता था कि संसार का रचयिता है जो मनुष्य की बुद्धि से पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता है, सर्वव्यापक (सार्वभौमिक) तथा अत्यंत जटिल है। कोई भी वैज्ञानिक अंत में इसी निर्णय पर पहुँचता है।

निष्कर्ष : अतः तर्क, तथ्यों तथा विज्ञान के आधार पर संसार का रचयिता अवश्य है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, विराट्, एक, अजन्मा, अनादि, अनंत तथा सर्वशक्तिमान सिद्ध होता है। इस निर्णय पर पहुँचने के लिए हमने किसी भी रिलिजन की प्रशंसा अथवा बुराई नहीं की है। इसके उपरांत (बाद) भी यदि किसी की भावनाओं की ठेस पहुंची हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ किन्तु महान विद्वान स्वामी दयानंद कहा करते थे कि **“प्रत्येक मनुष्य को सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत (तैयार) रहना चाहिए।”**[29]

इसलिए मेरा मानना है कि आज की युवा पीढ़ी निष्पक्ष होकर इस विषय को समझेगी। युवाओं को ध्यान में रखते हुए ही मैंने अत्यंत सरल शब्दों में इस विषय को प्रस्तुत किया है। मेरा मानना है कि यह सत्य ज्ञान संसार के

---

[28] ‘Did History’s Most Famous Scientists Believe In God?’, *Forbes* 26 June 2018, Forbes.com

[29] Rule 4 of Arya Samaj Organization estabilished by Swami Dayanand Saraswati in 1875.

प्रत्येक घर तक पहुंचना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा भविष्य के गर्भ में मुझे रक्त की नदियाँ बहती हुई दिखाई देती हैं।

1.8 ईश्वर का नाम क्या है ?

संसार में प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान आदि का एक नाम होता है जिससे उनकी पहचान होती है। प्रश्न उठता है कि संसार के बनाने वाले का क्या नाम है ? कोई भी व्यक्ति कोई वस्तु बनाता है तो उस वस्तु के साथ उसका नाम जुड़ जाता है कि उसने यह बनाया आदि। इसी प्रकार संसार को बनाने वाले का भी नाम होना चाहिए। मान लीजिये अब्दुल नाम के एक व्यक्ति ने एक बम बनाया। अब हम ऐसा नहीं कहेंगे कि किसी रचनाकार ने बम बनाया बल्कि कहेंगे कि अब्दुल ने बम बनाया। अब्दुल नाम लेते ही समाज जान जायेगा कि यह कौन व्यक्ति है, क्या करता है, कहाँ रहता है तथा कैसा व्यक्ति है। नाम बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी कार्य को करने वाले की पहचान नाम से ही होती है। वैज्ञानिक किसी भी नए पदार्थ को खोजते है तो तुरंत उसका नाम रख देते है। यदि नाम नहीं होते तो पूरे संसार में अव्यवस्था होती।

आपने देखा होगा कि कई बार दो अलग अलग व्यक्तियों के एक जैसे नाम होते है। इसके कारण अनेकों बार गड़बड़ी भी हो जाती है। अमेरिका आदि देशों में कुछ एक ऐसे मामले भी है जब डॉक्टर ने बच्चा पैदा करने के लिए

दो समान नाम के लोगों का वीर्य एक-दूसरे की पत्नियों में डाल दिया। इस विषय पर बॉलीवुड में एक फिल्म भी बनाई गयी है।[30]

इसी प्रकार यदि एक व्यक्ति के मित्र का नाम ब्रैड और अंकल का नाम कार्टर है तो वह मित्र को सीधा ब्रैड कह देता है और अंकल को मिस्टर कार्टर आदि कहता है। नाम के आगे मिस्टर, मिस्ट्रेस, श्रीमान आदि क्यों लगाते है ? ऐसा करने से हम उस नाम को नहीं बल्कि उस व्यक्ति को सम्मान देते हैं। हम सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि सभी पदार्थों की पहचान नाम से ही कर पाते हैं। नाम से ही किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के गुणों का पता चलता है। जब भी आपके कानों में किसी नाम की आवाज आती है तुरंत आप उस पदार्थ आदि के बारे में एक चित्र बना लेते हैं कि वह कैसा है। आप भले ही एक बंद अँधेरी काल कोठरी में रहते हैं किन्तु जैसे ही कोई आपके मरे हुए पिता का नाम लेगा तो तुरंत आप अपने पिता के गुणों के बारे में सोचने लग जाओगे। बच्चा पैदा होते ही पहले उसका नाम रखा जाता है।

अतः किसी भी पदार्थ आदि को समझने में नाम ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है बाकि सब बातें बाद में आती हैं। अतः ईश्वर का सही नाम कौन सा है जिससे उसके मुख्य मुख्य गुणों के बारे में पता लग सके ?

हम जानते है कि ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, एक, विराट्, सर्वशक्तिमान है। ये सभी ईश्वर के गुण है। अब जिस नाम में ईश्वर के ये गुण आते हों वही ईश्वर का नाम होना चाहिए। जैसे संस्कृत में दिल को हृदय कहते हैं। हृ से हरति, द से ददाति, य से याति अर्थात् यह लेता है, देता है

[30] Good Newwz.

और चलता है। हृदय एक ओर से अशुद्ध रक्त लेता है, उसमें फेफड़ों की सहायता से शुद्ध ऑक्सीजन मिलाकर दूसरी ओर से शरीर को वापिस देता है और चलता रहता है। इस हृदय नामक शब्द में ही शरीर के एक अंग के गुण छिपे हुए हैं। रक्त की गति (Circulation of blood) का पता 17वीं सदी में लगा था[31] किन्तु सत्य बात यह है कि हजारों वर्ष पूर्व ही इस सिद्धांत का पता मानव समाज को था।[32]

संसार को बनाने वाले का नाम भी ऐसा ही होना चाहिए जिसमें उसके सभी गुणों का समावेश हो। उस नाम को लेते ही संसार बनाने वाले के गुण तथा कर्म आदि प्रत्यक्ष हो जाएं। इसके लिए हमें संसार में भगवान के कुछ प्रचलित नामों का निष्पक्ष रूप से तुलनात्मक अध्ययन करना होगा। जैसे सारे संसार को बनाने वाला एक ही है वैसे ही उसका मुख्य नाम भी एक ही होना चाहिए। जब तक अलग अलग भगवान रहेंगे और भगवान के नाम भी अलग अलग होंगे तब तक संसार में धर्म के नाम पर अधर्म होते रहेंगे।

संसार बनाने वाले का एक नाम अल्लाह है। अल्लाह शब्द "अल + इलाह" शब्दों से बना है। इलाह शब्द का अर्थ सेमेटिक भाषाओं में और इब्रानी भाषा में 'उपास्य अर्थात् पूज्य' है। अतः अल्लाह शब्द से संसार बनाने वाले के गुण नहीं पता चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त जब हम अल्लाह का नाम लेते है तो एक चित्र बनता है कि वही जिसने छः दिन में सात आसमान बना दिए[33], वही जो अर्श पर रहता है और जो पानी पर विचरण करता है[34], वह

[31] होर्वो (1578-1657) ने भूले हुए सिद्धांत का पता लगाया था।

[32] महर्षि यास्क मुनि का निरुक्त भाष्य।

[33] कुरान, सूरा 10 : आयत 3 (मर्कजी मुक्त्बा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली की कुरान से उद्धरण)।

[34] कुरान, सूरा 10 : आयत 3, सूरा 13 : आयत 2, सूरा 20 : आयत 5।

आलिशान सिंहासन का मालिक है[35], वही जिसने धरती बिछा कर उसपर पहाड़ गाड़ दिए[36], शैतान अल्लाह के सभी कार्यों को बिगाड़ता रहता है किन्तु अल्लाह उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाता[37] इसलिए आज भी मक्का-मदीना में एक काले पत्थर को शैतान मानकर सभी उसको पत्थर मारते है[38] आदि आदि।

कुरान की आयतों से पता चलता है कि अल्लाह सर्वव्यापक और निराकार नहीं बल्कि अर्श-फर्श, जल तथा सिंहासन पर रहने और बैठने वाला है। अल्लाह शैतान का कुछ नहीं बिगाड़ पाता अर्थात् वह सर्वशक्तिमान भी नहीं है। अतः सृष्टि के रचयिता वाले थोड़े से भी गुण अल्लाह में नहीं सिद्ध हो रहे हैं।

रिलिजन वालों की एक विशेषता होती है कि जब उनकी बात तर्क, प्रमाण व विज्ञान से सिद्ध नहीं होती तो कहने लगते हैं कि इसका अर्थ ये नहीं जो आपने लगाया है। किन्तु मैंने निष्पक्ष भाव से केवल यह लिखा है कि अल्लाह शब्द के अर्थ में संसार के रचयिता का एक भी गुण नहीं आता है। अतः यह नाम ईश्वर के लिए प्रयोग करना उचित नहीं है। कोई अपनी प्रसन्नता के लिए प्रयोग करे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं किन्तु जब तक सभी मिलकर एक सत्य निर्णय पर नहीं पहुंचेंगे तब तक धर्म के नाम पर विनाशक कहानियां लिखी जाती रहेंगी।

[35] कुरान, सूरा 85 : आयत 15।
[36] कुरान, सूरा 13 : आयत 3।
[37] कुरान, सूरा 2 : आयत 36।
[38] मक्का के पास रमीजमारात स्थान पर तीन बड़े खम्बों को शैतान मानकर सभी हज करने वाले उनपर पत्थर फैंकते है।

संसार बनाने वाले का एक नाम यहोवा (जेहोवा) भी है। यह इसाई और यहूदियों का खुदा है। कुरान वालों ने यहोवा का नाम अल्लाह बदल दिया बाकि यहोवा की प्राचीन पुस्तकों और पैगम्बरों को वो भी मानते है।[39] ये सभी थोड़े बहुत अंतर के कारण अलग अलग रिलिजन बन गये अन्यथा मूल बातें, पुस्तकें व पैगम्बर सबके एक ही है। एक ही वृक्ष की इन तीन शाखाओं ने संसार में आपस में बहुत कत्लेआम किया है।

यहूदी और ईसाईयों का परमेश्वर स्वयं मूसा से कहता है कि "इस्राइल के लोगों से कहो मेरा नाम यहोवा है अर्थात् मैं जो हूँ वो हूँ, लोगों से कहो कि मैंने ही तुमको (मूसा को) लोगों के पास भेजा है।"[40] अतः यहोवा शब्द के अर्थ में संसार बनाने वाले का एक गुण भी नहीं आता है।

यहोवा शब्द सुनते ही मस्तिष्क में एक चित्र बनता है कि वही जिसने छः दिन महनत करके संसार बनाया और सातवें दिन थकने के कारण विश्राम करने लगा,[41] वही जिसने मनुष्य को उसी के जैसा दिखने वाला बनाया,[42]

---

[39] कुरान, सूरा 2 : आयत 87 – "हमने (अल्लाह ने) मूसा को किताब (तौरैत अर्थात् Bible old testament) दी, अंतिम पैगम्बर ईसा को स्पष्ट निशानियाँ देकर भेजा और उसकी सहायता की।"

[40] Bible, *Exodus*, Chapter 3, verse 13-15. *(What is your name? Then god said that I am who I am. Yahova, this is my name forever.)*

[41] Bible, *Genesis*, Chapter 2, verse 1-3. *("He rested on the seventh day" Note :- This is the reason why Sunday is holyday.)*

[42] Bible, *Genesis*, Chapter 1, verse 26. *(And God said, Let us make man in our image, after our likeness.)*

वही जिसके अदन के बाग़ में आने की आवाज सुनकर पहला पुरुष और पहली स्त्री डरकर छिप गये।[43]

यहूदी व ईसाईयों की बाइबिल से पता चल रहा है कि यहोवा सर्वशक्तिमान नहीं था बल्कि कार्य करके थक जाता है क्योंकि यहोवा एक मनुष्य शरीर वाला था। आप ऊपर पढ़ चुके है कि संसार के पुरुष व स्त्री ने यहोवा के आने की आवाज सुनी। हम पहले ही सिद्ध कर चुके है कि सर्वव्यापक तो पहले ही सब जगह है तो कहाँ से कहाँ आएगा। अतः यहोवा सर्वव्यापक नहीं था। इसलिए यहोवा सृष्टि बनाना तो क्या बल्कि सृष्टि बनाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। अतः जो भी इन रिलिजन की पुस्तकों में संसार के रचयिता के बारे में बताया है वह तर्क, तथ्य तथा विज्ञान विरुद्ध है। इसी प्रकार अनेकों छोटे-मोटे रिलिजन व हजारों छोटी छोटी जातियों के अपने अपने देवता हैं।

अतः प्रश्न अभी भी वही है कि संसार बनाने वाले का नाम क्या है। ऐसा कौन सा नाम है जिसके अर्थ में ही संसार बनाने वाले के सभी मुख्य गुण आ जाएं ? इस प्रश्न का सटीक उत्तर मुझे किसी भी रिलिजन में नहीं मिल पाया। उसके बाद मैंने संसार की सबसे प्राचीन आर्य जाति की मान्यताओं को समझा और सभी रिलिजनों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

संसार बनाने वाले का एक प्राचीन नाम ओ३म् है। इसमें '३' यह चिन्ह केवल उच्चारण को लम्बा करने के लिए है अन्यथा यह ओम् है। यह तीन

[43] Bible, *Genesis*, Chapter 3, verse 8-10. *(And they heard the voice of the Lord God walking in the garden in the cool of the day: and Adam and his wife hid themselves from the presence of the Lord God amongst the trees of the garden.)*

अक्षरों अ, उ और म् से मिलकर बना है। संस्कृत भाषा के व्याकरण अनुसार अकार, उकार व मकार से विराट्, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, सर्वज्ञ शब्द सिद्ध होते अर्थात् निकलते है। जो गुण संसार बनाने वाले के तर्क व विज्ञान के आधार पर सिद्ध हुए थे वही गुण ओम् नाम के अर्थ से निकलते है। संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेदों में भी ऐसा ही कहा गया है।

ओम् खं ब्रह्म[44]

अर्थात् मैं (ब्रह्म) ही संसार का रचयिता, विराट् और (खं) आकाश की भांति सर्वव्यापक हूँ। ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ मैं उपस्थित नहीं हूँ। इस आकाश को भी मैंने ही रचा है। तुम सब मनुष्य मुझे ओम् के नाम से ही पुकारो।

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यसः।[45]

अर्थात् उस ईश्वर की कोई मूर्ति (प्रतिमा), आकार आदि नहीं जिसका महान यश और सामर्थ्य है।

वेदों में सब स्थानों पर ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, विराट्, एक बताया गया है। आज दुर्भाग्य से संसार ने इन प्राचीन ग्रंथों व ओम् के नाम को भुला दिया है। वास्तव में ओम् ना तो किसी एक जाति का है, ना किसी एक देश का है। आइये आपको कुछ ऐतिहासिक व रोचक जानकारी देता हूँ।

[44] यजुर्वेद अध्याय 40, मंत्र 17।

[45] यजुर्वेद अध्याय 32 , मंत्र 3।

आज भी ओम् का बिगड़ा हुआ रूप सभी रिलिजन में पाया जाता है। हिन्दू लोग आज भी सभी धार्मिक कार्यों में पहले ओम् ही बोलते है किन्तु अब हिन्दुओं ने इसका शुद्ध स्वरुप बिगाड़ कर इसके लिए ॐ एक चिन्ह बना दिया है। यहूदी और ईसाई अपनी धार्मिक इच्छा प्रकट करने के लिए ओम् को आज भी 'आमेन' कहते है। मुस्लिम लोग इसको 'आमीन' कहते है। सिख रिलिजन वाले 'ओंकार' अर्थात् 'ओम्कार' कहते हैं।[46] बोद्ध धर्म के लोग इसको 'ओम् मणिपद्मे' कहते है।

ओम् शब्द को बिगाड़ देने से उसका अर्थ भी बदल जाता है। ओम् शब्द पूर्ण है अतः इसमें कुछ जोड़ने अथवा घटाने की आवश्यकता नहीं है। इस शब्द से संसार के रचयिता के सभी मुख्य गुण पता चलते हैं। जिस ओम् ने समस्त संसार को बनाया है उसी का नाम बदल देना उचित नहीं है क्योंकि नाम बदल देने से शब्द का अर्थ भी बदल जाता है। जो ओम् सब रिलिजन वालों के लिए है, नाम बदल देने से वह सबके लिए नहीं रह जाता है। केवल नाम बदल देने से सबके भगवान भी बदल गये और एक दूसरे के विरुद्ध शिक्षा देने वाले रिलिजन के ग्रन्थ भी बन गये और भाई-भाई रिलिजन के नाम पर लड़ने लग गये।

जो लोग भाषा विज्ञान का सामान्य ज्ञान रखते है वे जानते है कि देश, काल, परिस्थितियों में शब्दों के रूप बदल जाते है। अंग्रेजी भाषा में भी थ्री फॉर्म ऑफ़ वर्ब, फर्स्ट पर्सन, सेकंड पर्सन, थर्ड पर्सन आदि अलग अलग स्थान, समय व परिस्थिति के कारण शब्दों में परिवर्तन होता रहता है। एकवचन तथा बहुवचन में एक ही शब्द अलग अलग प्रकार से लिखा व बोला जाता

[46] संस्कृत में ओं (ओ+म्) दोनों ही शुद्ध है।

है। ओम् शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत भाषा में भी शब्दों का लिंग, वचन व विभक्तियों में रूप बदल जाता है। जैसे ब्रह्म शब्द को लेते है तो इसके रूप ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि आदि बहुत से बनते हैं। इसलिए ऐसे शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं क्योंकि स्थान, समय व परिस्थिति के कारण इन शब्दों में परिवर्तन हो जाता है किन्तु ओम् शब्द अविकारी है अर्थात् इसमें परिवर्तन नहीं होता है। संस्कृत में ऐसे शब्दों को अव्यय कहते है। इन अव्यय शब्दों की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं। अतः ओम् शब्द के सभी रूप ओम् ओम् ओम् ही बनेंगे। इस शब्द में कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है क्योंकि इसकी शब्द रचना एक अव्यय की है। अतः जिन रिलिजन वालों ने ओम् को बिगाड़ा है अथवा चिन्ह आदि बनाकर उस चिन्ह को ही ओम् मानते है उनको भाषा ज्ञान अवश्य सीखना चाहिए।

यहाँ एक अन्य विषय भी आप सबको समझना आवश्यक है। ईश्वर का मुख्य नाम तो केवल ओम् ही है किन्तु उसके अनंत गुण हैं, अतः प्रत्येक गुण का एक नाम होता है। जैसे विष्लृ व्याप्तौ धातु से 'नु' प्रत्यय होकर विष्णु शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है 'सब चर-अचर जगत में व्यापक होने वाला। अतः ओम् को विष्णु भी कहा जाता है। इसी प्रकार संसार के बनाने के कारण ब्रह्मा, दुष्टों को कर्मफल में दंड देने से रूद्र, मंगलमय और कल्याणकारक होने से ओम् को शिव भी कहते है। ये सभी नाम एक ही ईश्वर के है। देश, काल तथा परिस्थित में ईश्वर के भिन्न भिन्न गुणों तथा कार्यों के आधार पर उनके लिए अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। किसी मनुष्य का नाम भी शिव हो सकता है और ईश्वर को भी शिव कहते हैं। ऐसा नहीं होगा कि किसी मनुष्य का नाम शिव रखने से वह ईश्वर हो गया। अब हमें प्रकरण अनुसार उस शब्द का अर्थ ग्रहण करना है। जहाँ पर कहा गया हो

कि समस्त संसार का कल्याण करने वाला तो वहां हमें ईश्वर के लिए शिव शब्द का प्रयोग करना चाहिए। किन्तु लोगों ने एक ही ईश्वर के लिए प्रयोग होने वाले प्रत्येक शब्द से एक अलग नया भगवान बना लिया। इसी कारण करोड़ों भगवान बन गये है।

हिन्दुओं में तो 33 करोड़ भगवान मानने जैसे बड़े बड़े दोष आ चुके है। गुरु-घंटालों तथा नकली कथावाचकों ने हिन्दुओं की बुद्धि भ्रष्ट करके उनको सत्य ज्ञान से दूर कर दिया है। जो हिन्दू लोग समस्त संसार को दिशा दिखाते थे वे हिन्दू मूर्खतापूर्ण बातों में अपना समय व्यर्थ कर रहे हैं। वास्तव में, आज संसार के लोग धर्म के नाम पर अधर्म कर रहें हैं क्योंकि स्वार्थी लोगों ने धर्म का स्वरुप ही बदल दिया है। साधारण लोग भेड़ चाल चलते हुए कुँए में गिरते चले जा रहे हैं। यह देखकर मुझे बहुत पीड़ा होती है कि कुछ दुष्ट लोग कैसे अपने स्वार्थ के लिए करोड़ों लोगों को भ्रष्ट कर रहे हैं। आजकल तो अत्यंत साधारण बातों पर भी लोगों में विरोधाभास हो जाता है। निश्चित रूप से यह मनुष्यपन नहीं कहा जा सकता है। अतः स्वार्थ, अहम् भाव आदि को त्याग करके सभी मनुष्यों को सत्य पर एक होना ही चाहिए ताकि सभी एक परिवार की भांति शांति तथा समृद्धि को प्राप्त होंवे।

निष्कर्ष : यह सिद्ध होता है कि जिसने संसार बनाया है उसका मुख्य निज नाम तो केवल ओम् है। सभी रिलिजन वाले एक ही वृक्ष की शाखा हैं। हजारों वर्ष पूर्व सभी रिलिजन वालों के पूर्वज और विश्वास एक ही थे। मानवता की रक्षा के लिए पुनः सभी रिलिजन वालों को सत्य पर एक होना ही चाहिए। अब अंत में इस प्रथम अध्याय का सार आप मेरे द्वारा लिखी गयी कविता की कुछ पंक्तियों से समझ सकते हैं।

संभव ही संभव होता है,

असंभव संभव नहीं होता ।।

प्राकृतिक सिद्धांतों के विरुद्ध, संभव कुछ होता नहीं,

बात जो ये टाल दे, मर्द न होगा कोई ।।

क्यों पश्चिमी अज्ञान में, भारत मानुष सोता है,

संभव ही संभव होता है,

असंभव संभव नहीं होता ।।

व्यवस्थित वस्तु देखकर जाने, बनाने वाला है कोई,

बुद्धि से विचारे बिना, बात न माने कोई,

एक ओम् को तजकर[47] के, केवल धर्म नाश ही होता है,

मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरद्वारे बैठा पैगम्बर मोटा है,

संभव ही संभव होता है,

असंभव संभव नहीं होता ।।

[47] ओम् को छोड़कर अपने अपने भगवान बना लेना।

2 सर्वश्रेष्ठ की आवश्यकता क्या है ?

अब हम जानते है कि संसार की रचना ओम् ने की है किन्तु प्रश्न उठता है कि आज ओम् की मनुष्यों को क्या आवश्यकता है ? मनुष्य ने अपनी बुद्धि से अपने लिए आवश्यक अनेकों पदार्थ बना लिए है अतः अब ओम् का क्या महत्त्व है ? यह प्रश्न स्टीफन हॉकिंग जैसे वैज्ञानिक ने भी उठाते हुए लिखा है कि -

"If you accept, as I do, that the laws of nature are fixed, then it doesn't take long to ask: What role is there for God?" अर्थात् यदि आप स्वीकार करते हैं, जैसा कि मैं करता हूं, कि प्रकृति के नियम निश्चित (तय) हैं, तो यह पूछने में देर नहीं लगती कि भगवान का यहाँ क्या कार्य है ?[48]

वे एक अन्य स्थान पर फिर से लिखते है कि -

"A divine creator who caused the Big Bang to bang, then stepped back to behold His work." अर्थात् एक दिव्य रचनाकार, जिसने बिग बैंग को धमाका करने के लिए मजबूर किया, फिर अपने काम को देखने के लिए वापस चला गया।[49]

[48] S.W. Hawking, *'Brief Answers to Big Questions'*, 2018.

[49] S.W. Hawking, *'Brief Answers to Big Questions'*, 2018.

ऐसा नहीं है कि यह प्रश्न कुछ वैज्ञानिकों ने ही उठाया है बल्कि मैं नौजवानों के शिविर लेता हूँ तो अनेकों युवा यह प्रश्न पूछते हैं कि अब संसार बनाने वाले की क्या आवश्यकता है ? इसको समझाने के लिए एक उदाहरण देता हूँ। एक राजा ने एक देश बनाया और उसमें रहने वालों के लिए नियम आदि बना दिए। उसके बाद वहां के लोग ये कहने लग जाएं कि अब हमें राजा की आवश्यकता नहीं है तो क्या यह उस देश के लिए अच्छा है ? बिलकुल भी नहीं, क्योंकि बिना राजा के व्यवस्था कैसे बनेगी ? आज सभी देशों में संविधान व नियम है किन्तु राजा भी है जो सारी व्यवस्था को संभालता है। अतः जो लोग कहते हैं कि संसार को बनाकर ईश्वर वापस अपने काम पर लौट गया, यह वाक्य ही गलत है क्योंकि बनी हुई वस्तु को संभालना भी होता है। दूसरा यह कि जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो वह लौट कर कहाँ जायेगा ?

एक विद्यालय, परिवार, समाज व राष्ट्र के नियम होते हैं जिनके आधार पर सुचारू व्यवस्था चलती है। किन्तु यदि कोई नियमों के विरुद्ध कार्य करे तो नियमों की रक्षा के लिए एक मुख्याध्यापक, परिवार का मुखिया, राज्य व देश का प्रधान सदा उपस्थित होते हैं और ऐसे लोगों को दंड देते हैं। यदि राजा न हो तो नियम किस काम के ? एक छोटा सा देश भी बिना संचालक व राजा के नहीं चल सकता तो यह अनंत ब्रह्माण्ड कैसे चलेगा ?

ओम् ही ब्रह्मांड को रचकर नियमों से बाँध देता है। अब यदि कोई मनुष्य (चाहे राजा हो या रंक) सृष्टि के नियमों को तोड़े तथा बुरे कार्य करे तो उसको दंड देने का कार्य किसका होगा ? एक राजा अपने देश के लिए अच्छा कार्य करने वाले को पुरस्कृत करता है वैसे ही संसार में रहते हुए सभी प्राणियों का भला करने वाले को पुरस्कृत करने का कार्य किसका

होगा ? वास्तव में कोई भी राजा तथा न्यायाधीश कभी भी पूर्ण रूप से न्याय नहीं कर सकते है क्योंकि वे सर्वव्यापक नहीं हैं। यहाँ तक कि अनेकों बार तो स्वयं राजा व न्यायाधीश भी पाप कर्म करते हैं। फिर अच्छे-बुरे का फल देने वाला कौन हो सकता है ? निश्चित रूप से जिस ओम् ने संसार बनाया है वही नियमों व व्यवस्थाओं की रक्षा भी करता होगा। किस व्यक्ति ने एकांत में क्या अच्छा व क्या बुरा किया है यह केवल वही जान सकता है जो पुरे संसार के कण-कण में हो। अतः सर्वव्यापक ओम् प्रत्येक प्राणी के कार्यों को प्रत्यक्ष देख रहा है क्योंकि संसार का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहाँ वह उपस्थित नहीं है। अतः किसी स्थान को एकांत समझकर कुछ गलत नहीं करना चाहिए।

अब आप समझ गये होंगे कि संसार बनाने वाले की सदैव आवश्यकता है इसलिए वह सदैव सब स्थान पर उपस्थित रहता है। वास्तव में आज जो वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य को ओम् की आवश्यकता नहीं है वे अहंकार में ऐसा कहते हैं। ऐसे कुछ लोग मानते हैं कि ओम् ने संसार तो बना दिया किन्तु उसके बाद मनुष्यों को उनके हाल पर छोड़ दिया। इन लोगों का मानना है कि ओम् ने मनुष्यों को ज्ञान नहीं दिया बल्कि मनुष्यों ने अपने पुरुषार्थ (महनत) से ही धीरे धीरे सब कुछ सीखा है।

प्रश्न : क्या मनुष्यों को सृष्टि की आदि (प्रारंभ) में ईश्वर ने ज्ञान दिया था अथवा नहीं ?

उत्तर : इस विषय को समझने के लिए हमें पहले मनुष्य और उसकी बुद्धि के स्तर को समझना होगा। सज्जनों, मनुष्य शब्द का अर्थ होता है 'मनन करने वाला' अर्थात् बुद्धि से विचार करके किसी भी कार्य को करने वाला ही

मनुष्य है। एक शेर मनुष्य से अधिक बलवान है किन्तु उसके उपरांत (बाद) भी एक मनुष्य सैकड़ों व हजारों शेरों को पिंजरे में बंद कर लेता है। कैसे ? क्योंकि मनुष्य के पास बुद्धि है अर्थात् विचार करने की क्षमता है। ऐसा नहीं है कि अन्य जीव जंतुओं के पास बुद्धि नहीं है किन्तु जैसी बुद्धि मनुष्य के पास है वैसी संसार के किसी अन्य प्राणी में नहीं है। आप एक हाथी, शेर, लोमड़ी आदि को कितना भी पढ़ा लीजिये वे कभी गाड़ी नहीं बना सकते हैं, ना ही फोन आदि। दूसरी ओर आप एक मनुष्य के बच्चे को जो सिखायेंगे वह सीखजायेगा। मनुष्य शरीर की बनावट भी नई नई चीजें सीखने में बहुत उपयोगी है। मनुष्य अपनी बुद्धि के बल पर इच्छानुसार वस्तुओं की रचना कर सकता है।

इतना सब होते हुए भी मनुष्य और अन्य जीव जंतुओं में एक बहुत बड़ा अंतर है। मनुष्य के पास स्वाभाविक ज्ञान नहीं होता और अन्य सभी जीव-जंतुओं के पास स्वाभाविक ज्ञान होता है। आइये इसको थोड़ा विस्तार से समझते है। क्या कभी हिरण के बच्चे के हाथ पैर पकड़कर उसको उछलना सिखाना पड़ता है ? बिलकुल नहीं, क्योंकि हिरण का बच्चा पैदा होते ही कुछ ही घंटों में स्वयं खड़ा होकर चलने और उछलने लगता है। बच्चे की माँ तथा पिता ने उसको चलना नहीं सिखाया और न ही अभी उस बच्चे ने अन्य हिरण आदि को उछलते हुए ही देखा था। फिर कैसे वह हिरण का बच्चा अपने आप चलना, उछलना और तैरना सीख जाता है ? सत्य यह है कि वह बच्चा उस ज्ञान को लेकर पैदा हुआ है। इन जीवों में स्वाभाविक ज्ञान होता है अर्थात् जीवन यापन के लिए जितने ज्ञान की आवश्यकता है वह इनमें जन्म से ही होता है। एक पक्षी अपने नन्हे बच्चे को हवा में ले जाकर छोड़ देता है क्योंकि वह जानता है कि उसका बच्चा बिना सिखाए ही

उड़ना जानता है। मछली, मगरमच्छ, अजगर, गाय, भैंस आदि अन्य सभी जीव अपनी अपनी विद्या लेकर पैदा होते हैं। मकड़ी को जाल बनाना और मधुमक्खी को शहद बनाना सिखाना नहीं पड़ता है। मनुष्य के बनाये हुए घर की छत से पानी घर में आ सकता है किन्तु बयां के घोंसले से पानी अन्दर नहीं आ पाता है। मैं एक व्यक्तिगत अनुभव साझा करना चाहूँगा। जब मैं बालक था तो गाँव में रहता था। हमारे पास एक गाय और एक भैंस थी। जब भी हमारी गाय तथा भैंस को बच्चा होता तो आधे घंटे से भी कम समय में वे खड़े होकर अपने आप चलने लगते थे। तीन-चार दिन बाद ही मैं अपने दादा जी के साथ उन बच्चों को अपने गाँव की नदी में नहलाने लेकर चला जाता था। अब शुरू शरू में वे नन्हे बच्चे नदी में जाने से पीछे हटते और डरते थे किन्तु हम उनको बलपूर्वक नदी में धकेल देते थे।

हम जानते थे कि ये नदी में जाते ही तैरने लग जायेंगे क्योंकि यह विद्या ये जीव लेकर पैदा हुए हैं। अतः मनुष्य के अतिरिक्त अन्य सभी जीव आवश्यक ज्ञान लेकर पैदा होते हैं जिसको स्वाभाविक ज्ञान कहते है। इससे अधिक यदि आप इन जीवों को सिखाने का प्रयास करेंगे तो ये नहीं सीख सकते हैं। इन जीवों के पास अत्यंत साधारण बुद्धि होती है। अतः आप एक हाथी को महीनों तक प्रशिक्षण देकर एक निर्धारित चित्र तो बनवा सकते हैं किन्तु उसके उपरांत वह हाथी अपनी स्वयं की बुद्धि से सृष्टि को देखकर कलाकृतियाँ नहीं बना सकता है।

मनुष्य अन्य सभी प्राणियों से भिन्न होता है। मनुष्य जब पैदा होता है तो वह कोई स्वाभाविक ज्ञान लेकर पैदा नहीं होता है। मनुष्य के बच्चे को जैसा सिखाया जाता है वह सब कुछ वैसा ही सीख लेता है और यदि उसको कुछ सिखाया न जाए तो वह कुछ सीख नहीं सकता है। मनुष्य के बच्चे को बहुत

अच्छे हाथ-पैर होते हुए भी चलना सिखाना पड़ता है और यह सीखने के लिए बच्चे को जीवन का लगभग 1 वर्ष जितना समय लग जाता है। लगभग 100 वर्ष पूर्व बरेली के एक अनाथालय में एक बच्चा लाया गया था जो भेड़िये की भांति कच्चा मांस खाता था और उसी की तरह चलता था। इस बालक को भेड़िया उठा ले गया था। भेड़िये ने बच्चे को खाया नहीं बल्कि पाल लिया था।[50] मुझे स्मरण (याद) है कि जब मेरी आयु 4 वर्ष के लगभग थी तो मेरे पिताजी गाँव की नदी में मुझे तैरना सिखाते थे। यदि मनुष्य के बच्चे को कोई तैरना न सिखाए तो वह बूढ़ा हो जायेगा किन्तु तैरना नहीं सीख पायेगा। यदि मनुष्य के बच्चे को बोलने का ज्ञान न देवें तो वह कभी भाषा ज्ञान नहीं सीख पायेगा। ऐसे अनेकों अनुसन्धान किये गये कि जब मनुष्य के बच्चे को गूंगी-बहरी औरतों के साथ एकांत वन में छोड़ दिया। दूध देने के लिए गाय अथवा बकरी को उनके पास छोड़ दिया गया। अंत में 10-12 वर्ष बाद देखने से पता चला कि बच्चा बकरी की भांति 'में-में' ही कर रहा था। अकबर ने भी इस प्रकार का परीक्षण किया था।

बंदरों की जो अवस्था 1000 वर्ष पूर्व थी वही अवस्था आज है। उनमें किसी प्रकार की उन्नति नहीं हुई है। यह केवल बंदरों की बात नहीं है बल्कि आज भी संसार में मनुष्यों की ऐसी सैकड़ों जनजातियाँ है जो पूर्व काल में कभी शिक्षित तथा सभ्य होती थी किन्तु अब पूर्णतः अशिक्षित है। भारत के अंडमान द्वीप पर सेंटिनेल, ओंगी, जरावा, जंगिल, निगरेटा आदि प्रजातियाँ है जो बुद्धि का प्रयोग करके भौतिक उन्नति नहीं कर पाएं। कारण सीधा सा है कि इन लोगों को किसी बुद्धिमान ने शिक्षा नहीं दी। इन सब प्रजातियों के लोग अपने अपने छोटे छोटे द्वीपों में छुपकर रहते हैं। भारत सरकार ने ऐसे

---

[50] प्रोफ़ेसर रामदेव, *'भारत वर्ष का इतिहास'*, पृष्ठ 53।

50 से अधिक छोटे छोटे द्वीपों को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर रखा है। प्रत्येक द्वीप पर किसी प्रजाति के 200 से 500 मानव रहते हैं। बाहरी लोगों के कारण इन जनजातियों में बीमारी फैलने का भी डर है जिससे पूरी प्रजाति समाप्त होने की आशंका है। इन लोगों को वस्त्र बनाना नहीं आता और न ही ये वस्त्र आदि पहनते हैं। ये लोग खेती करना भी नहीं जानते हैं। इनमें यदि कोई 5 तक गिन ले तो उसे गणितज्ञ माना जाता है। हजारों वर्षों से इन जातियों के लोग वहां रहते हैं किन्तु इनके भीतर न कोई इतिहास है और न ही कोई लोक कथा है। इन प्रजातियों को आगे बढ़कर उन्नति करवाने वाला एक कारण भी वहां उपस्थित नहीं है। यदि कोई इनके द्वीप पर चला जाए तो अपनी रक्षा में हमला कर देते है।

एक अमेरिकी मिशनरी जॉन एलिन शाओ अवैध रूप से सात मछुआरों की सहायता से नवम्बर 2018 में सेंटिनेल द्वीप पर पहुंचा। इस प्रतिबंधित द्वीप पर पहुँचने के लिए उसने मछुआरों को 25-25 हजार रूपये दिए थे। शाओ द्वीप की सुन्दरता देखना चाहता था और सेंटिनेलीज लोगों को इसाई बनाना चाहता था। इस अमेरिकी इसाई मिशनरी को 17 नवम्बर 2018 को सेंटिनेलीज लोगों ने मार कर रेत में दफना दिया।[51] वास्तव में उन जनजातियों के मनुष्यों को मुस्लिम अथवा इसाई बनाने की आवश्यकता नहीं है और ना ही ऐसा वे चाहते हैं। वे लोग खूंखार नहीं है बल्कि अपनी रक्षा में ऐसा करते हैं।

---

[51] M. Safi, *The Guardian* 27 November 2018, theguardian.com
अंडमान में आदिवासियों को ईसाई बनाने गए अमरीकी की लाश खोजने का काम रुका, *बीबीसी हिंदी आर्टिकल* 27 नवम्बर 2018 *आजतक न्यूज़* 21 नवम्बर 2018।

अतः जो लोग यह कहते हैं कि मनुष्य अपने आप उन्नति कर लेता है वे अहंकारवश ऐसा कहते हैं क्योंकि मनुष्य किसी उच्च शिक्षक के बिना कुछ नहीं सीख सकता है। मनुष्य के पास बुद्धि तो है किन्तु बिना ज्ञान देने वाले के उस बुद्धि का कोई उपयोग नहीं है। बुद्धि का ज्ञान के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा एक बल्ब का बिजली के साथ है। बल्ब में जलने की शक्ति तो है किन्तु वह उस समय तक नहीं जलेगा जब तक उसमें बिजली नहीं पहुंचेगी। इसी प्रकार से बुद्धि में ज्ञान धारण करने की शक्ति तो है किन्तु जब तक उसका सम्बन्ध किसी ज्ञानी के साथ न हो तब तक बुद्धि में ज्ञान आ नहीं सकता है। अतः मनुष्य अपने आप उन्नति नहीं कर सकता है जब तक की कोई उच्च शक्ति ज्ञान न देवें।

बड़े बड़े वैज्ञानिक भी अपने से पहले हुए शोधकर्ताओं के सिद्धांतों व गलतियों आदि से सीखते हैं। उनके पास पूर्वजों का इतिहास होता है जो उन्नति करवाता है। जितना महत्वपूर्ण आज हवाई जहाज है किसी समय पर एक साधारण चक्र (टायर) भी उतना ही महत्वपूर्ण था। संसार करोड़ों वर्षों से चला आ रहा है जिसमें कभी ज्ञान-विज्ञान सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाता है तो कभी भयंकर युद्ध अथवा वैश्विक आपदाओं के कारण समाप्त हो जाता है। किन्तु मनुष्य के पास उन्नति करने के लिए कुछ इतिहास, सिद्धांत, पूर्वज, भाषा आदि कारण सदा होते हैं जिससे चार-पांच हजार वर्ष बाद पुनः पुनः विज्ञान उन्नति कर लेता है।

किन्तु कल्पना कीजिये कि सृष्टि की आदि में अर्थात् जब संसार बना होगा तब तो ना ही कोई इतिहास था, ना ही पूर्वज थे, ना ही भाषा थी तो कैसे मनुष्यों ने उन्नति कर ली ?

इससे एक ही बात सिद्ध होती है कि ओम् ने केवल संसार ही नहीं रचा अपितु रचने के उपरांत मनुष्यों को सर्वप्रथम सृष्टि का ज्ञान भी दिया होगा। एक बार ज्ञान देने के बाद गुरु-शिष्य परम्परा से वह आगे बढ़ता रहा। अतः ओम् ही मनुष्यों का आदि गुरु हुआ। जैसे एक भव्य उद्यान (पार्क) बनाकर उसमें घूमने वालों के लिए कुछ दिशानिर्देश दे दिए जाते हैं वैसे ही सृष्टि की आदि में मनुष्यों को ज्ञान देना आवश्यक था। मनुष्यों को सृष्टि के प्रारंभ में दिए ज्ञान की सदैव आवश्यकता रहेगी किन्तु दुर्भाग्य से आज मनुष्यों को पता ही नहीं है कि वह सर्वोच्च ज्ञान कहाँ व कौन सा है ? वास्तव में यह जानना प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है कि सृष्टि की आदि में संसार रचने वाले ने मनुष्यों को कौन सा ज्ञान दिया था और उसमें क्या क्या बातें थी।

3 भगवान की पुस्तक कौन सी ?

आज संसार में अनेकों रिलिजन है और सभी दावा करते हैं कि केवल उन्हीं की पुस्तक में ओम् का दिया हुआ ज्ञान है । प्रश्न उठता है कि कौन सी पुस्तक में संसार रचने वाले का अद्भुत ज्ञान है ? यहूदी लोग तौरेत व अंजिल को, ईसाई लोग बाइबिल को, मुस्लिम कुरान को, सिख गुरुग्रंथ साहिब को, पारसी जेंद अवेस्ता को, आर्य (हिन्दू) वेदों को ओम् का दिया हुआ ज्ञान बताते हैं। अब समस्या यह है कि ईश्वरीय ज्ञान कौन सा है इसका निर्णय कैसे हो ? किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व हमें कुछ परीक्षाएं करनी पड़ती हैं।

इन सभी पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन करके ही सत्य तक पहुंचा जा सकता है । जैसा संसार बनाने वाला है वैसा ही उसका ज्ञान भी होना चाहिए। संसार का रचयिता सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानता है तो उसका दिया हुआ ज्ञान कभी भी विज्ञान के विरुद्ध व मूर्खतापूर्ण नहीं होना चाहिए। ईश्वर के ज्ञान में संसार की प्रत्येक विद्या तथा ज्ञान दिया होना चाहिए। सब प्रकार का ज्ञान उसमें होना चाहिए। अतः परीक्षाओं के आधार पर सभी मत पंथ संप्रदाय की पुस्तकों की पड़ताल अर्थात् छानबीन करना आवश्यक है। यह तुलनात्मक अध्ययन निष्पक्ष भाव से तर्क तथा विज्ञान के आधार पर ही होगा जिससे एक अटल सत्य तक पहुंचा जा सके । अतः परीक्षाओं के आधार पर ईश्वर के ज्ञान की खोज प्रारंभ करते हैं।

3.1 पहली परीक्षा

नियम : पुस्तक के नाम से ही पता चलना चाहिए कि वह ईश्वरीय ज्ञान है ना कि एक पुस्तक। ईश्वर सर्वव्यापक तथा निराकार है अतः वह बैठकर कोई पुस्तक लिखकर उसे मनुष्यों को नहीं देगा। सर्वव्यापक ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के हृदय, बुद्धि तथा मस्तिष्क आदि में उपस्थित है और सृष्टि की आदि में मनुष्यों के हृदय में सीधा ज्ञान देता है।

परीक्षा : अब ईश्वरीय ज्ञान के नाम पर जितनी भी पुस्तकें है उनका अर्थ निकालकर देखना अनिवार्य है।

1. जेंद अवेस्ता पारसियों का धर्मग्रन्थ है जिसका अर्थ 'पवित्र लेख' है। इससे पता चलता है कि यह एक पुस्तक है जो किसी धर्मात्मा ने लिखी है।

2. बाइबिल शब्द ग्रीक के बिबलिया से निकला है जिसका अर्थ 'कई पुस्तकें' है। अतः इन कई पुस्तकों को कई मनुष्यों ने मिलकर लिखा होगा। बाइबिल के दो भाग हैं अर्थात् ओल्डटेस्टामेंट और न्यूटेस्टामेंट। पहले वाली को यहूदी मानते हैं और दूसरी को ईसाई मानते हैं। ये दोनों शब्द लेटिन भाषा के "टेस्टर" से निकले हैं जिसका अर्थ साक्षी (गवाही) है। यहूदी और ईसाईयों के भगवान् ने बहुत सारे लोगों की गवाही करवाई है कि यहोवा ही भगवान् है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि बाइबिल में गवाहियाँ, कहानियां, गाथाएँ है किन्तु ज्ञान नहीं है।

3. कुरान के कई अर्थ निकलते हैं क्योंकि मुहम्मद से पूर्व यह शब्द सीरियाई भाषा के कुरियाना के रूप में उपस्थित था। बाद में कुरआन के रूप में अरबी में भी यह शब्द रूपांतरित हो गया। कुरान के अर्थ 'विशेष पढ़ना', 'उसने पढ़ा व उचारा', 'ग्रंथों को पढ़ना' आदि है। इससे पता चलता है कि कुरान भी किसी मनुष्य की लिखी हुई पुस्तक है। कुरान को मशहफ़ भी कहते हैं जिसका अर्थ है 'लिखा हुआ' अर्थात् वह पुस्तक जो अल्लाह ने लिखी अथवा लिखवाई। लिखने लिखाने का कार्य हाथ पैरों वाले मनुष्यों का होता है ईश्वर का नहीं जिसने हाथ पैर बनाए हैं।

4. गुरुग्रंथ साहिब का अर्थ बताने की अधिक आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसके नाम से स्पष्ट पता चलता है कि यह एक ग्रन्थ (पुस्तक) है। इसी प्रकार बोद्ध लोगों की पुस्तक 'त्रिपिटक' है। त्रिपिटक का अर्थ है 'तीन पिटारी' अर्थात् तीन पुस्तकें जिनमें महात्मा बुद्ध के वचन तथा उनकी शिक्षाएं है। इनसे सीधा अर्थ लगा सकते हैं कि ये दोनों ही ग्रन्थ मनुष्यों के वचनों को संगृहीत किये हुए हैं तथा इनका अर्थ भी 'पुस्तक' निकलता है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि यहोवा अथवा अल्लाह ने बोलकर ज्ञान दिया और बाद में मनुष्यों (पैगम्बरों आदि) ने पुस्तकें लिख दी। प्रथम बात तो यह है कि यदि ईश्वर बोला तो उसका कोई न कोई आकार अवश्य है और यदि आकार है तो उसने एक स्थान घेरा हुआ है अर्थात् वह सर्वव्यापक नहीं है। अतः बोलकर ज्ञान देने वाला अवश्य ही कोई

शरीरधारी होना चाहिए। दूसरा यदि ईश्वर ने बोलकर ज्ञान दिया और बाद में मनुष्यों ने पुस्तकें लिखी तो उन पुस्तकों का नाम ऐसा होना चाहिए था जिसका अर्थ केवल 'ज्ञान' निकलता हो किन्तु यहाँ तो सभी पुस्तकों का अर्थ पढ़ना, लिखना, ग्रन्थ, बहुत सारी पुस्तकें, पवित्र लेख आदि निकल रहा है। इससे पता चलता है कि इन पुस्तकों में ज्ञान नहीं अपितु रिलिजन को बढ़ावा देने वाली कहानियां, गाथाएँ, इतिहास, सुनहरे सपने आदि ही हैं।

5. वेद शब्द संस्कृत भाषा की 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेद के अर्थ से ही पता चलता है कि यह किसी पुस्तक अथवा लेख का नाम नहीं अपितु केवल मात्र ज्ञान है। वेदों में किसी भी मत-पंथ, संप्रदाय, जाति तथा देश का कोई वर्णन नहीं है। इससे यह पता चलता है कि वेद (ज्ञान) समस्त संसार के लिए है किन्तु आज केवल प्राचीन आर्यों के वंशज ही वेदों को अपना धर्म मानते हैं। सृष्टि के प्रारंभ में ओम् ने मनुष्यों को बिना बोले, बिना पढ़े, बिना पुस्तक लिखे उनके भीतर ही ज्ञान दिया क्योंकि वह सर्वव्यापक है। ज्ञान लेने-देने के लिए मुंह, आंख, कान आदि की आवश्यकता अल्प सामर्थ्य वाले मनुष्यों को होती है। ओम् तो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान है। उसको कार्य करने के लिए हमारी भांति हाथों की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि प्रत्येक अणु-परमाणु ही उसके हाथों के समान है। अतः ईश्वर ने प्रारंभ में मनुष्यों को ज्ञान दिया और बाद में मनुष्यों ने उस ज्ञान को लिखित रूप दे दिया किन्तु उसका नाम और अर्थ वही रहा जो सदा से रहा है अर्थात् वेद शब्द जिसका अर्थ है ईश्वरीय ज्ञान।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है क्योंकि अभी कई परीक्षा करनी बाकि हैं किन्तु पहली परीक्षा में वेद पूर्णतः सफल हुए। मैं यह भी मानता हूँ कि केवल नाम में ईश्वरीय ज्ञान होने से कुछ नहीं होता है। बिना किसी पक्षपात के हमने केवल सभी रिलिजन वालों की धार्मिक पुस्तकों के नाम और उनके अर्थ का ही विवेचन किया है।

3.2 दूसरी परीक्षा

नियम : ईश्वर का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ही मनुष्यों को मिलना चाहिए क्योंकि मनुष्य का काम ज्ञान के बिना चल ही नहीं सकता है। एक छोटा सा फ़ोन, पंखा, फ्रिज, एयर कंडीशनर जैसी वस्तु क्रय (खरीदने) करने पर भी उनकी नियमावली तथा प्रयोग करने की विधि उनके साथ एक छोटी पुस्तक के रूप में मिलती है। इसी प्रकार सृष्टि का ज्ञान भी मनुष्यों को आरम्भ में ही मिलना चाहिए। ऐसा नहीं होता है कि आपको नया मोबाइल फोन आज मिला है और उसके प्रयोग की विधि 10 वर्ष बाद मिलेगी। यह आपके साथ अन्याय होगा। किसी भी नये पदार्थ के बारे में एक बार तो प्रारंभ में ज्ञान मिलना ही चाहिए। उसके उपरांत फिर वह ज्ञान एक दूसरे से सब जगह प्रचारित हो (फ़ैल) जाता है। अतः सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्यों को कुछ भी ज्ञान नहीं था तभी उनको ज्ञान मिलना चाहिए।

परीक्षा : इस नियम के आधार पर परीक्षा पूर्ण करने हेतु हमें रिलिजन की सभी पुस्तकों की प्राचीनता को देखना होगा क्योंकि सृष्टि को बने हुए करोड़ों वर्ष हो चुके हैं।

1. कुरान का ज्ञान पैगम्बर मुहम्मद को अल्लाह ने सुनाया था। आज मुस्लिमों का 1438 हिजरी संवत् चल रहा है अर्थात् कुरान इससे प्राचीन नहीं है। अतः कुरान का ज्ञान आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व मुहम्मद को मिला और मुहम्मद ने युद्ध लड़कर लोगों को गुलाम बनाते हुए बलपूर्वक उनको कुरान का ज्ञान दिया। प्रश्न उठता है कि क्या कुरान आने से पूर्व संसार के मनुष्य पशुओं की भांति जीवित रहते थे ? क्या कुरान आने से पूर्व मनुष्यों को घर बनाना, खेती करना, गणित विद्या आदि कुछ नहीं पता था ? इतिहास के विद्यार्थी जानते है कि लगभग 5000 वर्ष पुरानी हड़प्पा सभ्यता कितनी विकसित थी। अतः कुरान से पूर्व ही मनुष्यों को सृष्टि का ज्ञान हो गया था। कुछ मुस्लिम कह सकते है कि कुरान से पूर्व अल्लाह ने बाइबिल (तौरेत, अन्जील) आदि से ज्ञान दे दिया था क्योंकि कुरान में बाइबिल की इन पुस्तकों को भी अल्लाह की पुस्तकें माना है। चलिए उन सभी पुस्तकों की प्राचीनता पर विचार करते हैं।

2. आप जानते ही है कि बाइबिल कई पुस्तकों का एक संग्रह है जिसमें ईसा की न्यूटेस्टामेंट (ईसाईयों की पुस्तक) और मूसा की ओल्डटेस्टामेंट (यहूदियों की पुस्तक) है। ईसाईयों के अनुसार ईसा को हुए लगभग 2020 वर्ष हुए है। ईसा से लगभग 300-400 वर्ष पूर्व मूसा हुआ था। अतः दोनों ही बाइबिल की पुस्तकें 2500 वर्ष से पहले की नहीं है। क्या संसार केवल इतना ही प्राचीन है ? बिलकुल भी नहीं क्योंकि सृष्टि को बने हुए करोड़ों वर्ष हो चुके हैं और उसी समय में ईश्वर का ज्ञान मिलना चाहिए था जब सृष्टि बनी थी।

3. सिखों के गुरुग्रंथ साहिब को तो अभी 500 वर्ष भी नहीं हुए हैं। वैसे भी गुरु नानक देव जी कहते है कि - **"ओंअकारि उतपाती । कीआ दिनसु सभ राती । वणु त्रिणु त्रिभवण पाणी । चारि बेद चारे खाणी ।"**[52] अर्थात् "एक ओम् (ओंकार) परमात्मा से ही सारी उत्पत्ति हुई है । दिन-रात, वन, वनस्पति, तीनों लोग तथा जल आदि सब उसी ने बनाएं हैं। ओम् ने ही चारों वेदों का ज्ञान दिया है और चारों प्रकार के जीव (अंडज, भूमज, स्वेदज, उदरज) उत्पन्न किये है।"
   अतः गुरु ग्रन्थ साहिब में अनेकों गुरुओं (श्रेष्ठ मनुष्यों) की वाणी लिखी हुई है जो 500 वर्ष से प्राचीन नहीं है। गुरु नानक जी के इस कथन से यह भी स्पष्ट होता है कि सिख लोगों की मान्यता वेदों के आधार पर है। अतः सिख कोई अलग रिलिजन नहीं है इसीलिए अब सिखों और गुरुग्रंथ साहिब को अगली परीक्षा में बैठने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सिखों की ओर से वेद पहले ही परीक्षा में उपस्थित है।

इसी प्रकार बोद्ध कोई अलग रिलिजन नहीं है। महात्मा बुद्ध वेदों को ही अपना धर्म मानते थे और सभी को आर्य बनाने की बात करते थे। बाद में मनुष्यों ने उनके नाम से अलग बोद्ध रिलिजन बना लिया।

[52] गुरु ग्रन्थ साहिब, रागु मारू, महला 5, घरु 4 पृष्ठ 470।

महात्मा बुद्ध कहते हैं कि **"समणानं यानिधत्थि ब्राह्मणानं। वेद्गू सो ॥20॥**[53] अर्थात् "जो श्रमणों और ब्राह्मणों की सभी अवस्थाओं (महानताओं) को जानता है, वही वेदज्ञ है।"
महात्मा बुद्ध वेदों में श्रेष्ठ लोगों के लिए दिए 'आर्य' शब्द से भी बहुत प्रेम करते थे। इसीलिए महात्मा बुद्ध ने "चार आर्य सत्य" बताए थे जो आज सारे विश्व में प्रसिद्ध हैं। अतः बोद्धों को तथा त्रिपिटक को भी अगली परीक्षाओं में बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि बोद्धों की ओर से वेद पहले ही परीक्षा में उपस्थित है।

4. पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता संसार के सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक माना जाता है। प्रत्येक इतिहासकार जानता है कि अवेस्ता भाषा संस्कृत से निकली है। वेद के मंत्र को अवेस्ता में मन्थ्र, मित्र को मिथ्र, भग को बग आदि लिखा गया है। अवेस्तन भाषा संस्कृत से बहुत ही अधिक मेल खाती है। यहाँ तक की वेदों के अनेकों मंत्र अवेस्ता में ज्यों के त्यों (थोड़े उच्चारण भेद से अलग) लिखे गये है। उदहारण स्वरुप यजुर्वेद का निम्न मंत्र अवेस्ता ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रहा है।

"ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥"[54]

आज अवेस्ता ग्रन्थ का एक छोटा सा भाग ही बचा हुआ है। आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि यहूदी, इसाई तथा मुस्लिमों के मत से

[53] त्रिपिटक, खुद्दक निकाय, सुत्तनिपात, सभिय सुत्त का 20वां वचन, मूलपालि भाषा।
[54] यजुर्वेद अध्याय 36, मंत्र संख्या 12।

हजारों वर्ष प्राचीन यह पारसियों का मत है। इसका मूल उद्गम स्थल ईरान देश में था क्योंकि अफगानिस्तान और ईरान एक समय पर प्राचीन भारत देश का ही भाग होता था। ईरान को उस समय परास्य (पारसी) देश कहा जाता था। आज पारसी संप्रदाय लगभग समाप्ति की ओर है। अवेस्ता में महर्षि वेद व्यास का स्पष्ट नाम आता है। आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व हुए प्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफ़ेसर रामदेव लिखते है कि “अवेस्ता में स्पष्ट लिखा है कि जिस समय परास्य देश में वेदों का प्रचार था तो धर्म की बहुत उन्नति हुई थी।”[55] अतः इससे एक बात तो स्पष्ट है कि पारसियों का मत वेद के आधार पर बहुत बाद में बना है जो श्रेष्ठ महात्मा व्यक्तियों ने वेद की शिक्षाओं को लेकर बनाया था। अतः अगली परीक्षाओं में अवेस्ता और पारसियों को बैठने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इनकी ओर से भी वेद परीक्षा में उपस्थित है।

5. वेद संसार की सबसे प्राचीन लिखित पुस्तक मानी जाती है। कुछ यूरोपियन विद्वानों ने बड़ी चालाकी से इनका रचना काल 1500 से 2000 ईसा पूर्व (आज से 4000 वर्ष पूर्व) लिख दिया है। किन्तु वो ये भूल गये कि वेदों को श्रुति भी कहते हैं अर्थात् जो श्रवण (सुनना) करके गुरु से शिष्य लेता जाए। मैं नहीं जानता आप में से कितने लोग इससे परिचित हैं कि भारत में आज भी ऐसे गुरुकुल हैं जहाँ वेदों को पढ़ाने हेतु कोई पुस्तक नहीं है अपितु गुरु शिष्य परम्परा से वेद मंत्र सदा मनुष्यों में विराजमान होते हैं। बड़े विद्यार्थी फिर उन्हीं गुरुकुलों में अध्यापक बन जाते हैं और छोटे बच्चों को वह ज्ञान दे

[55] भारतवर्ष का इतिहास, प्रोफ़ेसर रामदेव, प्रथम भाग, पृष्ठ 59।

देते हैं। इस प्रकार यह परम्परा सदा से चली आ रही है और आज भी चल रही है। यही कारण है कि भारत देश से इतिहास और विद्या की लाखों पुस्तकें तथा अपार साहित्य लुप्त हो गया किन्तु वेद आज भी पूर्ण रूप से उपस्थित हैं।

फ्रांसिसी यात्री फ्रांसुआ बर्नियर लगभग 450 वर्ष पूर्व भारत आये थे और उन्होंने अपनी यात्रा का अनुभव अपनी पुस्तक में लिखा था। फ्रांसुआ बर्नियर लिखते हैं कि - **"भारतवासी वेदों को लाखों वर्ष प्राचीन मानते है। इनके मानव धर्मग्रन्थ इतने प्राचीन है कि उनकी प्राचीनता में संदेह भी नहीं किया जा सकता है।"**[56]

यह तो स्पष्ट ही है कि आज संसार में ईश्वरीय ज्ञान कहलाने वाले सभी ग्रंथों में वेद सबसे अधिक प्राचीन हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि वेद कितने प्राचीन हैं ? इसका उत्तर वेदों में ही दिया हुआ है कि **"शतं ते ऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणी चत्वारि कृण्मः"**[57] अर्थात् "सौ अयुत (दस लाख) की सात शून्य के आगे दो, तीन, चार लिखने से 4,32,00,00,000 (चार अरब बत्तीस करोड़) वर्ष होते हैं। इतने ही वर्ष तक सृष्टि रहती है और इतने ही वर्ष तक प्रलय रहता है। इस विषय पर अधिक शोध करने के इच्छुक लोग मनुस्मृति,[58] सूर्यसिद्धांत,[59] ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका,[60] सृष्टि उत्पत्ति और मनुष्य

[56] डॉ. बर्नियर की भारत यात्रा, अनुवादक बाबु गंगाप्रसाद गुप्त, पृष्ठ 234।

[57] अथर्ववेद अष्टमंकाण्डम् सूक्त 2 मंत्र 21।

[58] मनुस्मृति अध्याय 1 श्लोक 64 से 80 तक सृष्टि की आयु से सम्बंधित गणना व विज्ञान है। धर्मग्रंथों में ऐसी वैज्ञानिक गणना आपने पहले ना देखी होगी और ना ही सुनी होगी। असली मनुस्मृति कहाँ से प्राप्त करें यह जानने हेतु थैंक्स भारत को मेल करके पूछें।

[59] सूर्य सिद्धांत अध्याय 1 श्लोक 14 से 18 पढ़ें।

[60] महर्षि दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, अध्याय 2, वेदोत्पत्ति विषयः पृष्ठ 27 से 30 तक।

उत्पत्ति[61] तथा मेरा व्याख्यान[62] पढ़ सकते हैं। अभी 2020 ईसा संवत् में मनुष्यों की उत्पत्ति को 1,96,08,53,120 वर्ष पूरे होकर 121वां चल वर्ष चल रहा है। वैसे सृष्टि मनुष्य उत्पन्न होने से पूर्व ही बन चुकी थी। मनुष्यों को प्रारंभ में ही ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हो गया था।

लगभग 100 वर्ष पूर्व ईसाई इतिहासकार कहते थे कि 4006 ई.पू. यहोवा ने सृष्टि बनाई है किन्तु अब विज्ञान वाले कह रहे हैं कि ब्रह्माण्ड की आयु लगभग 13.7 बिलियन वर्ष (1370 करोड़) है।[63] इसका अनुमान तारों की घूमने और विस्तार करने की गति के आधार पर लगाया जाता है। ब्रह्माण्ड वैज्ञानिकों की भाषा में "Scientists estimate the age of the universe by using the movement of stars to measure how fast it is expanding. If the universe is expanding faster, that means it got to its current size more quickly, and therefore must be relatively younger. The expansion rate, called the Hubble constant. A larger Hubble Constant makes for a faster moving—and younger—universe." सभी वैज्ञानिक अलग अलग विधियों द्वारा ब्रह्माण्ड की आयु निकालते रहते हैं। यदि Hubble Constant को 70 से बढ़ाकर 142 कर देंगे तो सृष्टि की वही आयु आ जाएगी जो वेदों के

[61] पंडित स्वामी आर्य बिहारी द्वारा लिखित पुस्तक।

[62] मनुष्य उत्पत्ति तथा सृष्टि उत्पत्ति सम्बंधित मैंने एक व्याख्यान दिया हुआ है जो आपको थैंक्स भारत यूट्यूब पर मिल जायेगा।

[63] This is based on a Hubble Constant of '70'.

अनुसार है। अभी कुछ माह पूर्व ही Inh Jee[64] और उसके साथियों ने Hubble Constant को 82.4 मान लिया है और सृष्टि की आयु को 11 बिलियन वर्ष (1100 करोड़ वर्ष) माना है।[65] अभी वे Hubble Constant को और भी अधिक बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं।

वैज्ञानिक बार बार इसको घटाते बढ़ाते रहते हैं। वास्तव में सृष्टि की आयु निकालने की यह विधि अपूर्ण है इसलिए प्रत्येक वर्ष अलग अलग वैज्ञानिक सृष्टि की अलग अलग आयु बता देते हैं। वास्तव में प्रत्येक तारे और उसके परिवार के अन्य ग्रह आदि की गति व आकार भिन्न भिन्न होता है। सबकी चमक व बनावट भी भिन्न भिन्न होती है। कहीं गुरुत्व बल कार्य करता है तो कहीं नहीं करता है। ऐसे में पूरे ब्रह्माण्ड में उपस्थित ग्रह, नक्षत्र तथा तारों की एक ही गति व ब्रह्माण्ड के विस्तार करने की ठीक गति तथा समय कैसे मापा जा सकता है। यह तो वही बात हो गयी कि एक टोकरी में 5 सेब रखी हैं। एक सप्ताह से सेब किसी ने नहीं खाई इसलिए उनमें से 1 सेब खराब हो गयी। अब एक सेब को देखकर क्या यह कहा जा सकता है कि बाकि सेब भी एक सप्ताह बाद खराब होंगी अथवा 1 दिन बाद ख़राब होंगी ? सभी सेब एक ही टोकरी में थी फिर भी एक सेब ही क्यों खराब हुई ? वास्तव में, प्रत्येक सेब की बनावट थोड़ी भिन्न होती है, उसके अन्दर के तत्व भी भिन्न अर्थात् किसी सेब में

[64] Max Plank Institute, Germany and also Inh Jee is the lead author of Thursday's journal 'Science'.

[65] S. Borenstein, 'Study finds the universe might be 2 billion years younger', *AP* 12 September 2019, apnews.com

कोई तत्व अधिक होता है तो किसी में थोड़ा कम होता है। अनेकों कारण हो सकते है कि कौन सी सेब जल्दी खराब होगी और कौन सी देर से खराब होगी। आप सभी सेबों को एक ही प्रकार से नहीं ले सकते हैं। इसी प्रकार सभी तारों की गति के विषय में एक अवधारणा बनाना असंभव है। अतः यह वर्तमान विधि उचित नहीं है। इस विषय में ब्रह्माण्ड वैज्ञानिक Inh Jee स्वयं कहती हैं कि - **"We have large uncertainty for how the stars are moving in the galaxy."** अर्थात् "आकाशगंगा में तारे कैसे घूम रहें है इसके बारे में हमें निश्चित रूप से कुछ नहीं पता है।"[66]

प्रश्न उठता है कि जब वैज्ञानिक निश्चित ही नहीं हैं तो किस आधार पर सृष्टि की आयु बताने की चेष्टा कर रहे हैं? मेरा निश्चित मत है कि यदि हम सब मनुष्यों को सृष्टि की निश्चित आयु जाननी है तो भारत में रहने वाले प्राचीन आर्यों की मान्यताओं को ध्यानपूर्वक समझना होगा। आर्य लोग प्रतिदिन अपने धार्मिक कर्मकांड करने से पूर्व संस्कृत में मनुष्य की उत्पत्ति का समय बोलते हैं और प्रतिदिन एक एक दिन इसमें बढ़ाते जाते हैं।[67] यह कार्य उनके पूर्वज सृष्टि के प्रथम दिन से करते आये हैं जिसके कारण अब वे इस कार्य को निरंतर कर रहें हैं।

अतः प्रमाण, तर्क व तथ्यों के आधार वेद ज्ञान लगभग 196 करोड़ वर्ष प्राचीन सिद्ध हो रहा है और अन्य रिलिजन के ग्रन्थ कुछ हजार वर्ष तक ही

---

[66] Inh Jee, '*Thursday's journal 'Science"*.

[67] संकल्प पाठ (ओ३म् तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहार्द्धे वैवस्वत मन्वन्तरे...)।

सीमित हैं। आप यह भी जानते हैं कि जिस समय सृष्टि बनती है उसी समय मनुष्यों को ज्ञान देना भी अनिवार्य है। अतः 196 करोड़ वर्ष पूर्व जब सृष्टि में मनुष्य उत्पन्न हुए उसी समय उन्हें वेद का ज्ञान प्राप्त हो गया था। अतः इस दूसरी परीक्षा में भी केवल वेद ही पूर्णतः सफल हुए है।

3.3 तीसरी परीक्षा

नियम : ईश्वर सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) है अतः उसका ज्ञान त्रुटीयुक्त तथा अपूर्ण नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि ईश्वर पहले कुछ ज्ञान देवें और कुछ समय बाद उसे हटाकर नया ज्ञान दे देवें। ईश्वर का ज्ञान सदा एकरस तथा अपरिवर्तनीय रहना चाहिए। जब ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि तथा उसके नियम नहीं बदलते हैं तो सृष्टि के बारे में दिया ज्ञान कैसे बदल जायेगा ? जैसे पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है आदि जैसे सिद्धांत करोड़ों वर्ष पूर्व भी सत्य थे, आज भी सत्य है। उसी प्रकार ईश्वर का ज्ञान ऐसा होना चाहिए जो सदा सत्य हो।

परीक्षा : इस नियम के आधार पर परीक्षा पूर्ण करने हेतु हमें यह जानना होगा कि किस रिलिजन की पुस्तकें तथा ज्ञान बार बार समय अनुसार बदला है। यदि समय समय पर किसी का ज्ञान बदला है तो निश्चित रूप से वह इस परीक्षा में असफल हो जायेगा।

1. मुसलमानों का मानना है कि अल्लाह हमेशा अपने पैगम्बर भेजते रहते हैं और सभी कुछ न कुछ लेकर आते हैं। कुरान में लगभग 25 पैगम्बरों के नाम दिए हैं और मुस्लिमों के अनुसार एक लाख चौबीस

हजार (124000) कुल नबी हुए हैं। पहले अल्लाह ने मूसा को तौरेत दी फिर दाउद को जबूर दी, उसके बाद जीसस (अरबी में ईसा) को इन्जील दी तथा अंत में मुहम्मद को कुरान दी।[68]
मुस्लिमों की मान्यता पर अनेकों बड़े प्रश्न उठते हैं। पहला यह कि क्या अल्लाह को अपना ज्ञान मनुष्यों को देने के लिए एक बिचोलिये (दलाल) अर्थात् पैगम्बर की आवश्यकता है ? यदि हाँ तो वह सर्वशक्तिमान सिद्ध नहीं होता है।

दूसरा यह कि क्या अल्लाह की पहली पुस्तक में खराबी आ जाती है जो बाद में नई नई पुस्तकें भेजता रहता है ? यदि हाँ तो ऐसा अल्लाह सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) नहीं हो सकता है। कुछ मुस्लिम कहते है कि लोग अल्लाह के दिए सन्देश को बदल देते है इसलिए नया सन्देश देना पड़ता है। इसमें भी प्रश्न उठता है कि वह ज्ञान ही क्या जिसको मनुष्य बदल देंवें। यदि अल्लाह के ज्ञान को लोग बार बार बदल देते हैं तो क्या कुरान भी बदल चुकी है ?
सारा संसार जानता है कि यहूदी, इसाई तथा मुस्लिम अपनी अपनी पुस्तकों को ठीक बताने व सिद्ध करने में हजारों सालों से लड़ते आयें हैं। इसका सीधा अर्थ निकलता है कि इन सभी की पुस्तकों में अलग अलग बातें है। यदि एक जैसा ज्ञान होता तो ये लोग किस बात पर झगड़ते ? इन सभी पुस्तकों में अलग अलग बातें है। इसलिए सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है कि क्या अल्लाह अज्ञानी है जो पहले कुछ कहता है और बाद में अपनी ही पहले वाली बात के विरुद्ध कुछ और कहने लगता है ? अरे, लोग तो ऐसे राजनेता पर

[68] कुरान, पारा 1, सूरा 2 अल-बकरा, आयत 87।

भी भरोसा नहीं करते हैं जो बार बार अपनी बात से मुकर (हट जाना) जाता है। आश्चर्य है कि फिर वही लोग ऐसे अल्लाह पर भरोसा कैसे कर सकते हैं ?

2. मुस्लिमों से पहले ईसाई और उनसे पहले यहूदी है। ईसाई और यहूदियों का खुदा यहोवा भी अपनी पुरानी पुस्तकों को गलत बताकर नई पुस्तकें देता रहता है। पहले यहोवा ने मूसा को तौरेत पुस्तक दी, फिर दाउद को जबूर पुस्तक दे दी। फिर इन दोनों के विरुद्ध नया ज्ञान (इन्जील) जीसस को दे दिया। वास्तव में ईसाईयों और यहूदियों का खुदा यहोवा बार बार गलतियाँ करता रहता था और फिर अपनी गलतियों पर पछताता रहता था।

   "And it repented the Lord that he had made man on the earth, and it grieved him at his heart. And the Lord said, I will destroy man whom I have created from the face of the earth; both man, and beast, and the creeping thing, and the fowls of the air; for it repenteth me that I have made them." अर्थात् "यहोवा को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों बनाया ? यहोवा इस बात से बहुत ही दुःखी हुआ। इसलिए यहोवा ने कहा, "मैं अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खत्म कर दूँगा। मैं हर एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीवजन्तु को खत्म करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को भी

खत्म करूँगा। क्यों ? क्योंकि मैं इस बात से बहुत दुःखी हूँ कि मैंने इन सभी चीजों को बनाया।"[69]

क्या यहोवा को सृष्टि बनाने से पहले यह नहीं पता था ? यहोवा पृथ्वी को नष्ट करना चाहता था क्योंकि मनुष्य बुरे विचारों के हो गये थे। लेकिन पूरी पृथ्वी अर्थात् सभी जीव-जंतुओं को भी मनुष्य की बुराई की सजा यहोवा क्यों देना चाहता था ? क्या यही न्याय है ? वास्तव में ये बच्चों को प्रसन्न करने के लिए लुभावनी और चमत्कारी कहानियां है। आजकल ऐसी कहानियों पर सुपरमैन, आयरनमैन, स्पाइडरमैन जैसी फ़िल्में बनने लग गयी हैं। प्रत्येक दौर के मनुष्य को काल्पनिक कहानियां किसी न किसी रूप में अच्छी लगती हैं। वास्तव में जिस यहोवा को स्वयं ही नहीं पता की क्या करना चाहिए व क्या नहीं वो मनुष्यों को क्या शिक्षा दे सकता है ?

कुछ लोगों को समझ नहीं आ रहा होगा कि कौन सा ग्रन्थ किनका है। अतः एक बार क्रम से समझते है। पहले यहोवा ने मूसा को तौरेत पुस्तक दी। फिर कुछ समय बाद एक दाउद नामक व्यक्ति आया। उसने कहा कि यहोवा ने मुझे एक नई जबूर नामक पुस्तक दी है। उसके कुछ समय बाद एक जीसस नामक व्यक्ति आया जिसने दावा किया कि वह यहोवा का पुत्र है और यहोवा ने अपने पुत्र को एक नई इन्जील नामक पुस्तक दी है। उनके कुछ समय बाद अरब में एक मुहम्मद पैदा हुआ जिसने दावा किया कि खुदा का नाम अल्लाह है और उसी ने पहले वाली सभी पुस्तकें मनुष्यों को दी

[69] Bible, *Genesis*, Chapter 6, verse 6-8.

थी। अब अल्लाह ने उसे एक नई कुरान नामक पुस्तक दी है। इस प्रकार इन नई नई पुस्तकों के आने के कारण एक पुस्तक को मानने वाले दूसरी पुस्तक को मानने वालों से लड़ने लगे जिसके कारण करोड़ों लोग मर चुके हैं। क्या इनका खुदा (यहोवा अथवा अल्लाह) इस कत्लेआम का दोषी नहीं है ? क्या आवश्यकता थी नई नई पुस्तकें देने की ? क्या एक ही पुस्तक में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं दे सकता था ? क्या ऐसा पुस्तक नहीं बना सकता था जिसमें मिलावट ही न हो सके ? वास्तव में इन सभी बातों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि किसी ने किसी को ज्ञान नहीं दिया बल्कि नए नए लोग अपने आप को पैगम्बर सिद्ध करने के चक्कर में भगवान के नाम पर स्वयं पुस्तकें लिख देते थे। उनके मरने के बाद लोग उनकी बातों का प्रचार करने लग जाते थे।

3. वेद जैसे सृष्टि के आरम्भ में थे वैसे ही आज भी हैं , उन में एक मात्रा का भी अंतर नहीं हुआ है। जैसे ओम् अनादि है वैसे ही उसके वेद भी अनादि हैं। आर्यों के प्राचीन ग्रंथों गीता, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, उपनिषद, दर्शन आदि में वेद को अपरिवर्तनीय ईश्वरीय ज्ञान कहा गया है। सृष्टि के आदि में ईश्वर ने मनुष्यों को चारों वेदों का ज्ञान दे दिया था। वेदों में सभी प्रकार की विद्या है जिसको मेरी पुस्तकों तथा व्याख्यानों से आप जान सकते हैं। आज तक ईश्वर को पांचवा वेद अथवा कोई नया वेद देने की आवश्यकता नहीं हुई है। चारों वेद सृष्टि की आदि में ही ईश्वर ने दे दिए थे। वेदों के आधार पर अनेकों महापुरुषों ने मनुष्यों के लिए सरल भाषा में वेद का ज्ञान देने के लिए अनेकों पुस्तकों की रचना की है। चारों वेदों में 20416

मंत्र हैं। ना कोई मंत्र कम होता है और ना कोई मंत्र बढ़ता है। वेद आज भी चार है क्योंकि इनमें अलग अलग विद्या है। ऋग्वेद (ज्ञानकाण्ड) अर्थात् बुद्धि का प्रयोग करके इसमें उपस्थित ज्ञान को समझें, यजुर्वेद (कर्मकाण्ड) अर्थात् जो ज्ञान हमने ऋग्वेद से लिया फिर उसको कर्म द्वारा प्रत्यक्ष Practical (साकार) करना, सामवेद (उपासनाकाण्ड) अर्थात् जिसने ज्ञान और कर्म दिया उसके समीप जाने की विद्या धारण करना जिससे मानसिक सुख की प्राप्ति होकर मनुष्य की आयु तथा बुद्धि बढ़े आदि, अथर्ववेद (विज्ञानकाण्ड) अर्थात् सृष्टि को जानना, प्रकृति के नियम समझने जिससे अनादि पदार्थों का साक्षात् हो सके और अनंत की प्राप्ति हो। अब आप जानते है कि ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्यों का विज्ञान अथर्ववेद में है तो यह कैसे हो सकता है कि उसमें यह ना बताया गया हो कि वेद का ज्ञान मनुष्यों को कब मिला। ईश्वर स्वयं मनुष्यों को इसका उत्तर देते हैं कि -

यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋचः साम यजुर्मही।[70]

अर्थात् "सृष्टि के आरम्भ में ही चारों वेदों का ज्ञान ऋषियों के द्वारा समस्त मनुष्यों को प्राप्त हो जाता है। ऋचः अर्थात् ऋग्वेद, साम अर्थात् सामवेद, यजुः अर्थात् यजुर्वेद, मही अर्थात् ब्रह्मविद्या अथर्ववेद।"

[70] अथर्ववेद मण्डल 10, सूक्त 7, मंत्र 14।

इससे थोड़ा आगे वेद शब्द के बारे में भी वेदों में बहुत ही सुन्दर व्याख्या की गयी है जिसमें कहा गया है कि "जो मनुष्य सम्पूर्ण ज्ञान (यो वेद परमेष्ठिनं) देने वाले ओम् को प्रत्येक मनुष्य में (ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते) उपस्थित समझते है वे अपनी आत्मा को उच्च बनाते है अर्थात् मानवीय गुणों को धारण करते है।"[71]

ब्रह्म शब्द का अर्थ है निरंतर सर्वत्र व्यापक अर्थात् उपस्थित। अतः उसका नाम ओम् है। प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर के दर्शन करने पर एक दूसरे के प्रति द्वेष भावना तथा एक दूसरा का बुरा करने की भावना स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।

मेरा निश्चित मत है कि यदि वेद के इस मंत्र को ही आज संसार के सभी मनुष्य अपना लेवें तो बलात्कार, अनाचार, व्यभिचार, लूट, मार-काट, हत्याएं, भ्रष्टाचार नहीं होगा। यदि प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य में ईश्वर को उपस्थित देखे तो निश्चित रूप से अधिकांश मनुष्यों के व्यवहार में श्रेष्ठता आ जाएगी। संभवतः थोड़े से बुरे व्यवहार वाले लोग भी प्रेम तथा संगत से सुधर जाएंगे। किन्तु आज रिलिजन के ग्रंथों में एक दूसरे के प्रति जहर भरने वाली शिक्षाएं उपस्थित है जो निश्चित रूप से संसार के लिए घातक है।

अतः तर्क, तथ्यों तथा प्रमाण के आधार पर केवल वेद ही ऐसे हैं जो सृष्टि के आरंभ से अब तक बिना परिवर्तन के चले आ रहे हैं। ईश्वर सर्वज्ञ (सब जानने वाला) है अतः उसका ज्ञान पूर्ण होता है जिसमें कुछ जोड़ना अथवा कम करना नहीं पड़ता है। ईश्वर का ज्ञान नया अथवा पुराना नहीं होता है। ज्ञान सदा नया तथा सत्य होता है। ईश्वर को ना तो वेदों से कुछ घटाना पड़ा

[71] अथर्ववेद मण्डल 10, सूक्त 7, मंत्र 17।

और ना ही उनमें कुछ जोड़ना पड़ा है। बिना किसी पक्षपात के इस परीक्षा में भी केवल वेद ही सफल हुए हैं।

3.4 चौथी परीक्षा

नियम : ईश्वर ने केवल एक यही पृथ्वी अथवा सौरमंडल नहीं बनाया है अपितु असंख्य सौरमंडल और पृथ्वी बनाई हैं। अतः ईश्वर का ज्ञान सब मनुष्यों के लिए होता है। ईश्वर के ज्ञान में किसी व्यक्ति आदि का नाम तथा वंशावली नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान में किसी स्थान तथा देश आदि का इतिहास व भूगोल नहीं होना चाहिए।

परीक्षा : इस नियम के आधार पर परीक्षा पूर्ण करने हेतु हमें कुरान, बाइबिल तथा वेदों का तुलनात्मक अध्ययन करना होगा। इनमें से जिसमें भी केवल मात्र ज्ञान की बातें होंगी वही परीक्षा में सफल होगा।

1. कुरान के विषय में आप जानते ही हैं कि उसमें मुहम्मद पैगम्बर के जीवन की घटनाएँ, उसकी बीवी-बच्चों तथा युद्धों तक का उल्लेख मिलता है। यह आप ऊपर पढ़ ही चुके हैं कि 25 अन्य पैगम्बरों के नाम भी कुरान में है। चूँकि पैगम्बर मुहम्मद अरब देश का था इसलिए कुरान में अरब देश की घटनाएँ, स्थान तथा नाम आदि भरे पड़े हैं। आप जानते है कि अरब में मीठे पानी की नदियाँ[72] तथा फलों के बाग़ बगीचे तथा रंग-बिरंगी फसलें नहीं होती थी।[73]

[72] कुरान सूरा 2, आयत 60 (मूसा मीठे पानी के लिए अल्लाह से प्रार्थना करता है तो अल्लाह अपनी लाठी एक चट्टान पर मारकर उसमें से 12 फुव्वारे निकालता है)।
[73] कुरान सूरा 2, आयत 61 (सब्जी आदि उगने के लिए अल्लाह से प्रार्थना की गयी है)।

इसीलिए कुरान में ऐसी जन्नत (स्वर्ग) की कल्पना की गयी जहाँ मीठे पानी तथा शराब की नदियाँ हैं, चमत्कारी फलों के वृक्ष तथा भोजन के लिए असंख्य स्वादिष्ट व्यंजन है, जहाँ पर सुन्दर सुन्दर हूरें हैं। इतना ही नहीं कुरान में केवल उन्हीं रिलिजन, कौम तथा जातियों की बात की गयी है जो मुहम्मद के समय अरब देश तथा उसके आस पास थी। कुरान का दूसरा सूरा पढेंगे तो उसमें बार बार यहूदी तथा ईसाईयों की बात की गयी है।[74] पूरे सूरा में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि यहूदी तथा ईसाईयों को भी अल्लाह ने ज्ञान दिया था किन्तु अब वे भटक गये है, इसलिए मुहम्मद ही अब अंतिम पैगम्बर तथा कुरान ही अल्लाह का अंतिम ज्ञान है। वास्तव में मुहम्मद को अपना अलग रिलिजन चलाना था। अतः पहले से उपस्थित रिलिजन से श्रेष्ठ अपने को सिद्ध करने का बार बार प्रयास किया गया तथा यहोवा के स्थान पर अल्लाह को खुदा ठहराया गया। अब अरब व उसके आस पास हिन्दू लोग तो रहते नहीं थे अतः उनका वर्णन कहीं आया ही नहीं।

कल्पना कीजिये कि अल्लाह ने एशिया के देशों के लोगों को कुरान में ज्ञान दिया ही नहीं। सेकड़ों बार यहूदी, इसाई, मुस्लिम शब्द कुरान में आते हैं किन्तु एक बार भी हिन्दू, बोद्ध आदि शब्द नहीं आते हैं। वास्तव में उस समय मुहम्मद का मुकाबला केवल यहूदी, इसाई तथा अरब के मूर्तिपूजकों से था अतः केवल उन्हीं से सम्बंधित बातें ही कुरान में आ गयी। पूरी कुरान में आधी से अधिक

[74] कुरान सूरा 2, आयत 62, 67, 87, 102, 113, 120, 135, 136 (यह पूरा सूरा ही इतिहास, कौम, यहूदी, ईसा आदि से भरा हुआ है)।

आयत तो केवल मुहम्मद को पैगम्बर तथा अल्लाह को खुदा सिद्ध करने तथा इतिहास बताने वाली ही हैं।

अतः कुरान मनुष्यकृत एक इतिहासग्रंथ ही सिद्ध हो रहा है। यह तो सामान्य बुद्धि की बात है कि ईश्वर अपना ज्ञान मनुष्यों को सृष्टि की आदि में देता है तो उस समय तो कोई इतिहास होता ही नहीं है और यदि किसी पुस्तक में इतिहास है तो वह निश्चित रूप से मनुष्यों ने ही लिखा होगा। ईश्वर तो केवल ज्ञान ही देता है। इस परीक्षा में कुरान बहुत अधिक पिछड़ गयी है।

2. बाइबिल की सभी पुस्तकों में लोग, देश, कौम, तथा जातियों का इतिहास भरा हुआ है। आप बाइबिल की किसी भी पुस्तक का कोई भी पृष्ठ खोलकर देखेंगे तो आपको अरब, इस्राइल, पालिस्टाइन, मूसा, दाउद, जीसस, यहोवा के किस्से तथा कहानियां ही पढ़ने को मिलेंगे। क्या यही है ईश्वर का ज्ञान ? इससे एक बात तो स्वतः ही स्पष्ट हो गयी है कि ये सभी ग्रन्थ सृष्टि के आरम्भ से मनुष्यों के पास नहीं हैं क्योंकि इनमें इतिहास भरा हुआ है। बाइबिल के अन्दर इतिहास (Chronicles) नाम की एक पूरी पुस्तक है। कुछ लोग कह सकते हैं कि इतिहास से बहुत सारा ज्ञान मिलता है। बिलकुल सही बात है किन्तु इतिहास तो सृष्टि बनने के बाद बनता है तो क्या सृष्टि बनने से पहले ईश्वर के पास ज्ञान नहीं होता है ? यदि होता है तो उसको ज्ञान देने के लिए इतिहास बताने की क्या आवश्यकता है ? वास्तव में बाइबिल की सभी पुस्तकें चमत्कारों से भरी हुई मीठी कहानियां मात्र है जिनको सुनाकर 21वीं सदी के बच्चों को भी रोने से भी चुप नहीं करवाया जा सकता है। कहीं आदम के पूरे परिवार

का इतिहास लिखा गया है[75] तो कहीं जीसस के खानदान के लोगों का इतिहास लिख दिया गया है।[76]

वास्तव में बाइबिल पूरे ब्रह्माण्ड के लिए नहीं है किन्तु हमारी पृथ्वी के भी एक छोटे से हिस्से तक सीमित है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि उस समय संसार में करोड़ों की संख्या हिन्दुओं की भी थी। यदि बाइबिल में सबका नाम व इतिहास लिखा ही गया है तो खुदा ने हिन्दुओं का नाम लेकर भी कुछ ज्ञान देना चाहिए था। यहोवा तो इस पृथ्वी के भी सभी मनुष्यों को ज्ञान नहीं दे पाया फिर सारे ब्रह्माण्ड की क्या बात करें। बाइबिल इस परीक्षा में पुर्णतः असफल हुई है।

3. वेदों में किसी पुरुष, जाति, देश आदि का इतिहास तो छोड़िये उनका नाम तक नहीं है। इसके ठीक विपरीत मनुष्यों ने वेद के शब्दों के आधार पर मनुष्यों, नदी व स्थान आदि के नाम रख लिए हैं। जैसे एक शब्द है 'इन्द्र' जिसका अर्थ है ऐश्वर्यवान। अब मनुष्यों ने इन्द्र शब्द से देवता बना लिए तथा अपनी संतानों के नाम भी रख लिए हैं। अब किसी मनुष्य का नाम इन्द्र हो और वो कहे कि मेरा नाम वेद में है तो यह कहना मूर्खता होगी। सत्य यह है कि वह शब्द वेद से आया हुआ है। ऐसे हजारों नाम आज हैं। आजकल तो मुस्लिम, इसाई, गुरु-घंटाल आदि सभी वेद के अन्दर उनका नाम सिद्ध करने की होड़ में लगे हुए हैं। एक बहन का नाम सुपथा है।

[75] Bible, *Genesis*, Chapter 5, verse 1 – 32.

[76] Bible, *Metthew*, Chapter 1 verse 1 – 25 (The Genealogy of Jesus Christ).

कुछ समय पहले उसने मुझसे कहा कि भैया मेरा नाम वेद में है।[77] मैंने कहा बहन इसको ऐसे मत कहों कि तुम्हारा नाम वेद में है बल्कि ऐसे कहो कि मेरा नाम वेद से है अर्थात् वेद से लिया गया है।
आजकल देव, शिव, वेदिका आदि जैसे सेकड़ों नाम वेद से लेकर लोग अपने बच्चों के रख लेते हैं। वास्तव में वेद के शब्द गुणवाचक होते हैं, नाम अथवा स्थानवाचक नहीं। अब जिनको संस्कृत आदि का कुछ पता ही नहीं वे कुछ भी कह देते हैं। अब मुस्लिम व इसाई आदि भी कह सकते हैं कि उनके नाम भी गुणवाचक हैं किन्तु लैटिन तथा अरबी भाषा विज्ञान के अनुसार यह बात सत्य नहीं है। इतना ही नहीं वहां तो उन नामों के व्यक्तियों के विषय में लम्बी लम्बी चर्चाएं भी की गयी हैं। वेद में ऐसा नहीं है। वेद का एक मंत्र है -

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वार्यम।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥[78]

अर्थात् हे श्रेष्ठ मनुष्यों ! अपना इन्द्र (ऐश्वर्य, सामर्थ्य) बढ़ाओ, सारे विश्व को श्रेष्ठ व अच्छा बनाओ, तथा जो दुष्ट मनुष्य मानवता को नष्ट करें तुम मिलकर उनको नष्ट कर दो।

अब आप भलीभांति समझ गये होंगे कि वेद के शब्द गुणवाचक (गौणिक व यौगिक शब्द) होते हैं, व्यक्तिवाचक अथवा स्थान वाचक नहीं। हाँ, मनुष्य इन शब्दों को लेकर अपनी संतानों के नाम रख

[77] यजुर्वेद अध्याय 40, मंत्र 16 (अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्)।
[78] ऋग्वेद मण्डल 9, सूक्त 63 मंत्र 5।

सकते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं है। अतः संसार के सभी शब्द व भाषाओं की उत्पत्ति वेदों से ही हुई है क्योंकि वेद ज्ञान ही सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को मिला था।

अब अनेकों मुस्लिम व इसाई तो वेद में मुहम्मद व ईसा शब्द को सिद्ध करने पर तुले रहते हैं। प्रथम तो ऐसा करके इन्होंने वेद के सामने हथियार डाल दिए। मैं पहले ही समझा चुका हूँ कि वेदों में किसी का कोई नाम आदि नहीं है। यदि ये लोग कहेंगे कि नहीं वेदों में मुहम्मद व ईसा का नाम है तो प्रश्न उठेगा कि वेद से मुहम्मद तथा ईसा ने नाम (शब्द) चुराकर अपना नाम रखा था क्योंकि वेद सबसे प्राचीन है और मुहम्मद तथा ईसा तो वेदों के बहुत बाद में आएं हैं।

यदि वेदों के प्रमाण देकर ही कोई मुहम्मद व ईसा को सिद्ध कर रहा है तो इसका अर्थ हुआ कि वह वेदों की महानता को स्वीकार कर रहा है। फिर क्यों कुरान और बाइबिल के पीछे ये लोग पड़े हुए हैं ? यदि वेदों में मुहम्मद और ईसा का नाम है और वेद सृष्टि के आरम्भ में मिले हैं तो सभी मुस्लिम, इसाई व यहूदी क्यों नहीं वेदों को अपना लेते हैं ? ये सभी लोग वेदों में अपने आने मत-पंथ के लोगों के नाम क्यों सिद्ध करना चाहते है ? कारण यह है कि वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है तथा वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान के ही मंत्र है। दूसरा वेदों की भाषा संस्कृत है जो संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक व स्पष्ट नियमों से बंधी हुई भाषा है। इसीलिए सभी रिलिजन वाले वेदों में अपने अपने लोगों के नाम सिद्ध करके अपनी अपनी प्राचीनता सिद्ध करना चाहते हैं किन्तु ये लोग भूल जाते हैं

कि ऐसा करके ये लोग वेदों की महानता प्रकट करते हैं अपने मत-पंथ की नहीं।

एक और बहुत बड़ा भ्रम अंग्रेज इतिहासकारों ने समाज में फैला दिया है। आज इतिहास में पढ़ाया जाता है कि वेदों से प्राचीन आर्यों के रहन सहन का पता चलता है, उनकी परम्पराओं, सभ्यताओं और युद्धों का पता चलता है। इस प्रकार की मान्यता का प्रचार मोनियर विलियम तथा मैक्समूलर जैसे संस्कृत से अनजान लोगों ने किया है। इन लोगों ने वेदों का मनचाहा अर्थ लगाकर अंग्रेजी आदि में वेदों को लिख डाला और फिर उनसे हिंदी में वेद छपने लग गये। इन्हीं को पढ़कर आजकल के तथाकथित मुस्लिम समर्थक कम्युनिष्ट आदि लोग वेदों के कहीं कहीं से शब्दों को उठाकर इतिहास सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इस विषय पर मैं अलग से लिखूंगा वहीं पर अधिक पढ़ना किन्तु कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा वाली कहावत ऐसे लोगों पर ठीक सिद्ध होती है। जैसा कि आप पूर्व में समझ ही चुके है कि वेद शब्द विद् धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ ज्ञान है और यह ज्ञान सृष्टि के प्रारंभ में मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर ने प्रदान कर दिया था। इतिहास तब बनता है जब मनुष्यों के द्वारा क्रियाकलाप प्रारंभ होते हैं। सृष्टि की आदि में जब मनुष्यों के क्रियाकलाप आरम्भ हुए ही नहीं थे तो इतिहास कैसे बनेगा और कहाँ लिखा जायेगा ? यह मान्यता एक गहरे षड्यंत्र के द्वारा संसार में फैलाई गयी है ताकि वेदों को ईश्वरकृत नहीं मानव कृत सिद्ध किया जा सके।

संस्कृत में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। यह संस्कृत व्याकरण की सुन्दरता ही है कि कम से कम शब्दों को सीखकर संसार का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है। किन्तु हमें किस शब्द का कहाँ क्या अर्थ लेना है इनका ज्ञान होना ही चाहिये अन्यथा अर्थ का अनर्थ ही होगा। जैसे एक शब्द गौ है। गौ पृथ्वी और गाय दोनों को कहते है किन्तु कहाँ क्या अर्थ लिया जायेगा यह देश, काल, परिस्थिति आदि कई बातों पर निर्भर करता है। जैसे यदि कोई यह कहे कि गौ को चीरकर सोना निकाल लेना चाहिए। अब कोई मूर्ख यहाँ गौ का अर्थ गाय करेगा तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। गाय को चीरकर सोना नहीं रक्त निकलेगा और प्रतिदिन दूध आदि के रूप में सोना देने वाली गाय समाप्त हो जाएगी। पृथ्वी को चीरकर नीचे से सोना निकाल लेना ही बुद्धिमत्ता है और उस शब्द का सही अर्थ है।

इसी प्रकार से वेद मन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करके आज संसार में प्रचारित कर दिया गया है। कुछ स्वार्थी लोग उस झूठ पर अपनी रोटी सेकते हैं क्योंकि उनको ठीक गलत से कोई अर्थ नहीं होता है। वास्तव में जब तक वेदों की ज्योति संसार में जल रही है तब तक अंधकार फैलाने वाले ग्रंथों का कोई महत्त्व नहीं है। इसीलिए वेदों से लोगों की श्रद्धा हटाने के लिए वेदों में मनघडंत अश्लीलता बताना, उनमें जादू-टोना दिखाना तथा अनपढ़ गंवारों की बड़बड़ाहट सिद्ध करने जैसे षड़यंत्र किये जाते है।

युद्ध का एक पुराना तरीका है कि “The process of subversion can take decades or even centuries. The main purpose is to destroy ancient basic moral standards,

traditions and ideologies of your enemy. Destroy anything of value in the country of your enemy.” अर्थात् “किसी भी देश को तोड़ने में दशकों अथवा सेकड़ों वर्ष लग सकते हैं। अपने दुश्मन राष्ट्र को नष्ट करने के लिए उसकी प्राचीन मूल नैतिक मानकों, परम्पराओं तथा विचारधाराओं को नष्ट करना चाहिए। अपने दुश्मन के प्रत्येक मूल्यवान सिद्धांत व पदार्थ को नष्ट कर दो।” ऐसा होते ही वो राष्ट्र स्वयं ही विनाश की ओर बढ़ जायेगा। भारत के साथ यह लम्बे समय से हो रहा है। परिणामस्वरुप भारत को पुनः तोड़ने के लिए देश के अंदर से ही आवाजें उठने लगी हैं, सभाएं होने लगी हैं, विरोध प्रदर्शन प्रारंभ हो गये हैं। यदि आज भी भारत का नौजवान उठकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की रक्षा हेतु खड़ा नहीं होता है तो भयंकर मार-काट को कोई प्रधानमंत्री अथवा सरकार नहीं रोक सकेगी।

स्मरण रहे की 21वीं सदी में वैचारिक युद्ध निरंतर लड़े जा रहे हैं। प्रत्येक देश ने दूसरे देशों के विरुद्ध एक अघोषित युद्ध छेड़ रखा है। ऐसे में भारत को सुरक्षित रखना है तो निश्चित रूप से अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को धारण करके रखना होगा। अपने इतिहास को पढ़ना होगा तथा अपने शास्त्रों के ज्ञान को समझना होगा। जिन लोगों की परम्पराएँ और महापुरुष भारत से बाहर के हैं निश्चित रूप से जान लीजिये वो लोग कभी भी इस राष्ट्र अथवा मानवता के हित में नहीं सोच सकते हैं। ऐसे भारतीयों की मानसिकता को विदेशी पैसे से संचालित होने वाले संगठन, मीडिया, फिल्मकार, लेखक आदि संचालित करते हैं। हाँ, वेदों को मानने वाला मनुष्य किसी भी देश

का हो वह कभी किसी का अहित नहीं करेगा किन्तु दुर्भाग्य से वेदों की शिक्षाओं का प्रचार अत्यंत न्यून है और मानवता को समाप्त करने की शिक्षा देने वाले ग्रंथों को बोलबाला है।

कुछ लोग आज प्रश्न खड़ा करते हैं कि 58 देशों से अधिक देशों में मुस्लिम फ़ैल गये, लगभग 100 देशों में ईसाइयत है और अनेक देशों में नास्तिक शासन व्यवस्था है। ऐसे में वेद केवल भारत तक ही सीमित रह गये और भारत में भी शासन में वेदों का चिन्ह भी नहीं है। ऐसा क्यों ?

सज्जनों यह प्रश्न साधारण लोग ही नहीं बल्कि मैंने देखा है जो अपने को बुद्धिजीवी कहते और प्रचारित करते है वो भी इस प्रश्न को हिन्दुओं से पूछ बैठते हैं। इनकी बुद्धिमत्ता का परिचय तो यहीं से मिल जाता है कि ये लोग सत्य असत्य का भेद संख्या से करते हैं। संख्या कभी भी सत्य-असत्य में भेद करने का मापदंड (पैमाना) नहीं होती है। संख्या तो जंगल में गधों की भी बहुत अधिक होती है। यदि संख्या के आधार पर सही गलत का निर्णय करते हो तो समय के आधार पर भी सत्य असत्य का निर्णय क्यों न किया जाये ? अर्थात् जो मत सबसे प्राचीन है वही सत्य माना जाना चाहिए। आज कुरान के मानने वाले लोग 58 देशों में फ़ैल गये किन्तु मुहम्मद के जन्म से पूर्व इस्लाम और कुरान कहाँ थी ?

आज मुस्लिमों का 1439 हिजरी संवत् चल रहा है अर्थात् इतने वर्षों पूर्व के इस्लाम का कोई इतिहास नहीं है। केवल कुरान में इनके पूर्व के पैगम्बरों के नाम लिख दिए गये हैं। वो पूर्व के पैगम्बर वही हैं जो ईसाईयों और यहूदियों के हैं। इसी प्रकार 2020 वर्षों से पूर्व

अर्थात् जीसस के आने से पहले कितने इसाई थे ? आपको उत्तर प्राप्त होगा कि एक भी नहीं।

सज्जनों संसार के प्रत्येक कोने में अपने अपने महापुरुषों के नाम से चलने वाले संवत् (कैलेण्डर) पाये जाते हैं। ईसा संवत्, इलाही संवत्, हिजरी संवत् आदि आदि। भारत में भी कृष्ण संवत्, युधिष्ठिर संवत् और विक्रम संवत् बराबर चल रहे हैं किन्तु ये संवत् मनुष्य को अरबों वर्ष प्राचीन परम्परा से नहीं जोड़ सकते हैं। यदि संसार में एक मात्र सृष्टि संवत् (जिस दिन मनुष्य उत्पन्न हुए तब से अब तक) कहीं है तो वो केवल आर्यों में ही है।

मनुष्यों को उत्पन्न हुए 1,96,08,53,121वां वर्ष चल रहा है। इसी को सृष्टि संवत् भी कहते है। इतने वर्ष पूर्व मनुष्यों को वेद प्राप्त हुए थे। आज चारों ओर लूट मार भुखमरी, भय, अत्याचार, दरिद्रता, दुराचार, व्याभिचार, बलात्कार, हत्याएं, युद्ध और षड्यंत्रों का बोलबाला है। जो लोग कह रहे है कि वो संसार में अधिक संख्या में हैं और उन्हीं के नियमों आदि को सरकारों ने अपनाया हुआ है तो क्या वो इतना साहस दिखायेंगे कि ऊपर लिखी भयंकर बुराइयों का श्रेय (credit) भी स्वयं ही ले लेवें। आज संसार में पाप बढ़ रहा है तथा संसार की आधी से अधिक जनसँख्या को खाने के लिए भोजन और पीने के लिए साफ़ पानी नहीं मिल पा रहा है। अतः क्या यह मान लिया जाये कि इन सबका कारण वे लोग हैं जो अधिक संख्या में तथा अधिक देशों पर कब्ज़ा किये हुए हैं। क्योंकि इन्हीं लोगों के कानूनों से ही अधिकांश देश चल रहे हैं और छोटे

तथा गरीब देशों को लूट रहें हैं। जो प्रश्न किसी अन्यों को अपमानित करने के लिए पूछा गया था वह तो अब स्वयं उन्हीं लोगों के गले का फ़ांस बन गया है। अपने स्वार्थ में मनुष्य कई बार ऐसे प्रश्न पूछ बैठते हैं जो उन्हीं के विरुद्ध जा पड़ते हैं। अतः मनुष्यों को संख्या पर नहीं गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। वास्तव में मैं पहले ही सिद्ध कर चुका हूँ कि वेद का किसी समाज, जाति, सभ्यता अथवा राष्ट्र से सम्बन्ध नहीं है। यह तो मानव धर्मशास्त्र है जो सृष्टि की आदि में ओम् (ईश्वर) के द्वारा समस्त मानव जाति को दिया गया है।

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थात् यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले (छोटी सोच वाले) व्यक्तियों की होती है। इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है।

विचार कीजिये पिछले पांच हजार वर्षों में ही ना जाने कितने मत-पंथ व संप्रदाय आये और चले गये किन्तु वेद का ज्ञान करोड़ों वर्षों से चला आ रहा है। सत्य-असत्य का भेद करने के लिए तर्क और तथ्यों पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। पुस्तक के प्रारंभ में ही बिना किसी पक्षपात के परीक्षा करके अर्थात् जाँच पड़ताल करके यह सिद्ध हो चुका है कि कुरान, बाइबिल, तौरेत, अन्जील, जिन्दावस्था, गुरुग्रंथ साहिब, आदि पुस्तकें केवल साधारण मनुष्यों द्वारा समय समय पर किसी विशेष क्षेत्र के लोगों को

बताई हुई साधारण बातों को समेटे हुए है। केवल वेद ही जाति, देश, समाज की सीमाओं से अलग रहकर समान रूप से सारी मानव जाति को आवश्यक समस्त ज्ञान-विज्ञान प्रदान करता है।

अतः वेद में ना तो किसी व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान आदि का नाम है और ना ही किसी प्रकार का कोई इतिहास ही उनमें है। वेद में केवल और केवल ज्ञान है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस परीक्षा में भी केवल वेद ही सफल हुए हैं। वेदों में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा मनुष्यों के विषय में ज्ञान दिया गया है। वेदों में किसी कौम अथवा जाति आदि का कोई उल्लेख नहीं है। कुछ लोग कह सकते हैं कि वेदों में आर्य जाति का वर्णन है। ये लोग संस्कृत तथा वेदों से अनभिज्ञ (अनजान) हैं क्योंकि आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे लोगों को आर्य कहना है, यह वेद की आज्ञा है। अब वो अच्छे लोग संसार के किसी भी हिस्से में क्यों न हों उनको संस्कृत के अनुसार आर्य शब्द से संबोधित किया जाना चाहिए। इस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड हेतु वेदों का ज्ञान है।

3.5 पांचवी परीक्षा

नियम : हम जानते हैं कि प्राकृतिक संसार और इसके नियम ईश्वर ने बनाए हैं। अतः ईश्वर ने जो ज्ञान दिया होगा उसमें सृष्टि के नियमों के विरुद्ध कोई बात नहीं होनी चाहिए। उदहारण के रूप में जैसे पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है तो ईश्वर जो ज्ञान देगा उसमें ऐसा नहीं होना चाहिए कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि ईश्वर के ज्ञान से विपरीत

नहीं होनी चाहिए । इसके साथ ही साथ ईश्वर के ज्ञान में सब प्रकार की विद्याओं का भण्डार होना चाहिए।

परीक्षा : यह अंतिम तथा सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा है । जैसे ईश्वर सर्वज्ञ (अनंत ज्ञान वाला) है वैसा ही उसका ज्ञान भी होना चाहिए। इस नियम के आधार पर परीक्षा पूर्ण करने हेतु विभिन्न ग्रंथों में सृष्टि विज्ञान से सम्बंधित बातें अध्ययन करनी होंगी । जिस ग्रन्थ में ब्रह्माण्ड के नियमों के अनुकूल ज्ञान होगा और जिसमें ईश्वर के गुणों के अनुकूल ज्ञान होगा तथा जिसमें अवैज्ञानिक बातें, ढ़ोंग-पाखंड आदि नहीं होंगी वही ईश्वरीय ज्ञान होगा।

1. मैंने कुरान को प्रारंभ से अंत तक पढ़ा है । कुरान में सेकड़ों ऐसी आयतें हैं जो ईश्वर के बनाए हुए संसार के विपरीत (विरुद्ध) बातें बताती हैं । कुछ आयतें तो ऐसी हैं जिनको पढ़कर लगता है कि लिखने वाले ने थोड़ी सी बुद्धि का प्रयोग भी नहीं किया है। अल्लाह लिखता है कि -

   “जुल-करनैन ने पश्चिम की ओर एक मुहीम की तैयारी की । वह सूर्यास्त की सीमा तक पहुँच गया तो उसने सूरज को एक काले पानी की झील में डूबते देखा।”[79]

   प्रश्न उठता है कि क्या सूर्य कभी अस्त होता है ? क्या जिस ईश्वर ने सृष्टि बनाई उसको सूर्य का ज्ञान नहीं है । यदि कोई कहे कि सामान्य भाषा में सूर्य को अस्त होना कहा गया है तो भी प्रश्न उठता है कि ईश्वर सामान्य भाषा के चक्कर में लोगों को गुमराह कर रहा

---
[79] कुरान, सूरा 18, आयत 85, 86।

है। यदि सामान्य भाषा में अस्त होना कहते हैं यह मान भी लिया जाए तो क्या सूर्य काले पानी की झील में अस्त होता है ? कुछ लोग कहते है कि सूर्य समुद्र में अस्त होता दिखाई देता है। इससे पता चलता है कि कुरान के लेखक ने जो आँखों से दिखा वह सब लिख दिया। यदि संसार बनाने वाला ज्ञान देता तो ऐसी अज्ञानता की बातें कभी नहीं बताता। इसी प्रकार आगे अल्लाह कुरान में कहता है कि -

"फिर जुल कुरनैन ने एक दूसरी मुहिम की तैयारी की। यहाँ तक की सूर्योदय की अंतिम सीमा तक जा पहुंचा। वहां उसने देखा कि सूरज एक ऐसी कौम (किसी जाति के लोग) पर उदय हो रहा है जिनके लिए धूप से बचने की भी कोई व्यवस्था हमने नहीं की है।"[80]

यहाँ भी वही प्रश्न उठता है कि क्या सूर्य कभी उदय होता है ? यह तो बताया ही नहीं कि सूर्योदय की अंतिम सीमा कौन सी है ? अल्लाह ने उस कौम के लिए धूप से बचने की कोई व्यवस्था क्यों नहीं की ? वैसे धूप तो सब पृथ्वी पर रहती है किन्तु अरब के लोग धूप से बहुत अधिक पीड़ित रहते थे तो कुरान में ऐसी आयतें लिख दी गयी। इस बात का अधिक विश्लेषण आप स्वयं कर सकते हैं।

इसके बाद अल्लाह ने मनुष्यों को धरती और आकाश का ज्ञान दिया। कुरान में अल्लाह कहते है कि -

[80] कुरान, सूरा 18, आयत 89, 90।

"अल्लाह ने आसमान बनाया, उसकी छत खूब ऊँची उठाई, इसके बाद जमीन को उसने बिछाया और उसमें पहाड़ गाड़ दिए गये।"[81] एक अन्य जगह कुरान में आसमान का ज्ञान लिखा हैं कि - **"वही अल्लाह है जो आसमान को थामे हुए है कि कहीं आसमान जमीन पर गिर न पड़े।"**[82]

इन आयतों से पता चलता है कि कुरान लिखने वाले को सृष्टि का कुछ ज्ञान नहीं था। कुरान लिखने वाले ने ऊपर जो नीला आकाश दिखाई देता है उसको आसमान मान लिया। इसी लिए मुहम्मद ने एक के ऊपर एक सात आसमानों की कल्पना की है तथा सबसे ऊपर वाले सातवें आसमान पर अल्लाह रहता है। कुरान लिखने वाला जानता ही नहीं था कि पृथ्वी चपटी नहीं है बल्कि गोलाकार है। चटाई की भांति पृथ्वी को बिछाया नहीं जा सकता है। यह पृथ्वी, आकाश, सूर्य, तारें आदि तो सूक्ष्म अणु-परमाणुओं से बने हुए हैं। आकाश को आसमान कहना, फिर आसमान को छत कहना और उस आसमान की छत को धरती पर गिरने से बचाना जैसी बातें छोटे बच्चों को कहानियां सुनाने के लिए बहुत अच्छी हैं किन्तु ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन बातों का कोई उपयोग नहीं है।
कुरान अरब देश में लिखी गयी जहाँ पानी की बहुत समस्या है। अल्लाह का पैगम्बर मूसा और उसकी कौम प्यासी थी। उन्होंने अल्लाह से पानी की प्रार्थना की - **"अल्लाह ने मूसा से कहा कि**

[81] कुरान, सूरा 79, आयत 28-32।
[82] कुरान, सूरा 22, आयत 65।

चट्टान पर अपनी लाठी मारो। लाठी चट्टान पर लगते ही उसमें से 12 पानी के झरने निकल पड़े।”[83]

यह सब बातें सृष्टि नियम अर्थात् प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हैं। प्रकृति के नियम बनाने वाला अपने ही नियमों को कैसे तोड़ सकता है। क्या उसके बनाये हुए नियमों में कमी है ? चट्टान से थोड़े समय के लिए 12 झरने निकालने से अच्छा होता कि वहां अरब में सेकड़ों शुद्ध पानी की नदियाँ बहा दी जाती। वे झरने तो 1400 वर्ष में ही झड़ गये यदि गंगा जैसी नदी होती तो सदियों तक अरब की प्यास बुझाती। क्या अब चट्टान पर लाठी मारने से पानी निकल सकता है ? क्या चट्टान में पानी जितने ही हाइड्रोजन और आक्सीजन के अणु है ? यदि नहीं तो चट्टान से 12 झरने कैसे निकल गये ? हाँ पहाड़ों के नीचे तो पानी मिल सकता था किन्तु एक चट्टान पर लाठी मारने से पानी निकालना निश्चित रूप से लोगों को प्रभावित करने के लिए एक चमत्कार की कहानी मात्र है। यह तो सृष्टि बनाने वाले के नियमों की सरेआम धज्जियाँ उड़ गयी। वास्तव में ये सब चमत्कारी किस्से कुरान में इसलिए डाले गए है ताकि अल्लाह को सर्वशक्तिमान सिद्ध किया जा सके। प्रश्न उठता है कि क्या अपने ही बनाये नियमों को तोड़कर ही वह अपने को सर्वशक्तिमान दिखा सकता है ? अरे, जिस ईश्वर ने यह अनंत विचित्र संसार बना दिया वह ऐसी जादूगरों जैसी हरकतें करेगा ? हो सकता है इन सब बातों से 1400 वर्ष पूर्व के अरब के लोग बहक गये हों और बाद में युद्धों और जोर जबरदस्ती से करोड़ों लोग कुरान के अनुयायी बन गये हों किन्तु 21वीं सदी का कोई भी बुद्धिमान ऐसी बातों पर विश्वास नहीं

---

[83] कुरान, सूरा 2, आयत 60।

कर सकता है। कुरान में एक अन्य स्थान पर फिर से अल्लाह कहता है कि - **"आसमान को नहीं देखते कि कैसे उठाया गया ? पहाड़ों को नहीं देखते कि कैसे जमाए गए ? और जमीन को नहीं देखते कि कैसे बिछाई गई ?"**[84]

कुरान का ज्ञान मुहम्मद की आँखों तक ही सीमित है। मुहम्मद ने आँखों से जो देखा और जैसा सोचा वह सब कुरान में लिख दिया। सौर मण्डल के क्या सिद्धांत है, सूर्य के क्या सिद्धांत है, पृथ्वी तथा चन्द्रमा आदि के क्या नियम है, ग्रहण कैसे व क्यों लगता है, आकाश क्या है, ब्रह्माण्ड कितना विशाल है, उर्जा कैसे उत्पन्न की जा सकती है, अग्नि आदि ऊर्जा से विमान कैसे बनाये जा सकते है आदि जैसे सेकड़ों विषय है जिनका ज्ञान कुरान में होना चाहिए था किन्तु कुरान में तो बुद्धि के विरुद्ध सब बातें लिखी गयी हैं।

कुरान कहती है कि - **"क़यामत के दिन आसमान को हम (अल्लाह) यूँ लपेटकर रख देंगे जैसे पंजी (किताब) में पन्ने (पृष्ठ) लपेट दिए जाते हैं।"**[85]

सज्जनों पूरी कुरान में सृष्टि के विषय में ऐसी ही सब बातें की गयी है। अल्लाह के अंतिम पैगम्बर मुहम्मद भी अल्लाह की भांति बहुत बड़े जादूगर थे। हदीस में लिखा है कि -

"नबी करीम सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम (मुहम्मद) के ज़माने में चाँद फट कर दो टुकड़े में हो गया था। फिर नबी करीम ने लोगों से

[84] कुरान सूरा 88, आयत 18, 19, 20।

[85] कुरान सूरा 21, आयत 104।

कहा कि ये लोगों ! इस घटना के गवाह रहना।[86] मक्का के लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम से कोई मोजिज़ा (चमत्कार) करने को कहा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने चाँद के दो टुकड़े करने का चमत्कार दिखाया।"[87]

वास्तव में रिलिजन के ग्रंथों में ईश्वर की बनाई सृष्टि को फुटबाल बना दिया है। कोई भी आकर खेलने लग जाता है। कभी कुछ जोड़ देते हैं तो कभी कुछ तोड़ देते हैं। कुरान तथा मुस्लिमों की पवित्र पुस्तक सहीह बुखारी शरीफ में धरती, पहाड़, आसमान, नदियाँ, चाँद, सूरज की प्राथमिक बातें हैं जबकि इस सृष्टि का कोई ज्ञान नहीं है। कुरान को सृष्टि बनाने वाले का ज्ञान कहना ईश्वर का अपमान होगा क्योंकि कुरान में ईश्वर की बनाई सृष्टि के विरुद्ध सभी बातें हैं। जो बातें कुरान में बताई गयी हैं वह ईश्वर का ज्ञान तो क्या किसी ज्ञानी महापुरुष का ज्ञान भी नहीं हो सकता है।
अतः कुरान में सृष्टि का कोई ज्ञान नहीं है किन्तु सृष्टि नियमों के विपरीत ज्ञान अवश्य भरा हुआ है। कुरान में संसार की सभी विद्याओं का ज्ञान तो दूर किसी एक विद्या का भी ठीक से ज्ञान नहीं है। अतः हमारी पांचवी और अंतिम परीक्षा में भी कुरान असफल हो गयी। मैं अपने बुद्धिमान, निष्पक्ष मुस्लिम समर्थकों से प्रार्थना करूंगा कि अल्लाह को ईश्वर और कुरान को उसका ज्ञान मानना छोड़ देवें तथा समस्त संसार के पिता ओम् को जानने का प्रयत्न करें।

[86] सहीह बुखारी शरीफ़, पारा 14, हदीस संख्या 3636।
[87] सहीह बुखारी शरीफ़, पारा 14, हदीस संख्या 3637-3638।

2. बाइबिल की सभी पुस्तकों (जबूर, तौरेत, अन्जील) ने सृष्टि नियमों के विरुद्ध चमत्कार दिखाने में सभी रिलिजन को पीछे छोड़ दिया है। यहूदी और ईसाईयों का खुदा यहोवा तो बात बात पर अपने किये हुए कार्यों पर पछताने लगता है। बार बार अपनी भूल स्वीकार करता है। पहले पृथ्वी को बनाकर पछताया[88] और फिर कुछ ही समय में पृथ्वी के सभी जीवों को मारकर पछताने लगा।[89] यहोवा ने पहला मनुष्य आदम तो मिट्टी से बनाया[90] किन्तु स्त्री को बनाने का कभी नहीं सोचा। फिर आदम दुःखी रहने लगा क्योंकि उसका कोई हमसफ़र नहीं था। एक दिन यहोवा ने आदम को गहरी नींद में सुलाकर चुपके से उसकी एक पिसुली (पसली अर्थात् हड्डी) निकाल कर उससे एक स्त्री बना दी।[91] इतना ही नहीं खुदा अर्थात् यहोवा काम करने के बाद थक जाता था और अदन के बाग़ में विश्राम करने लगता था।[92]

विश्राम की आवश्यकता साँस लेने वाले, खाने-पीने वाले, शरीर वाले प्राणियों को ही होती है। यहोवा ने मनुष्यों को अपने शरीर जैसा बनाया है।[93]

---

[88] Bible, *Genesis*, Chapter 6, verse 6-7.
[89] Bible, *Genesis*, Chapter 8, verse 21.
[90] Bible, *Genesis*, Chapter 2, verse 7.
[91] Bible, *Genesis*, Chapter 2, verse 22.
[92] Bible, *Genesis*, Chapter 2, verse 2-3.
[93] Bible, *Genesis*, Chapter 1, verse 26.

फिर एक बार यहोवा कुछ और कहने लगा कि - **"क्या मेरे विश्राम के लिए कोई स्थान हो सकता है ? क्या मेरे हाथों ने ही इन सब पृथ्वी, स्वर्ग को नहीं बनाया ?"**[94]

आप स्वयं ही बुद्धि लगाइए क्या यह ब्रह्माण्ड हाथों से बनाया जा सकता है। हाथ तो शरीरधारी के ही होंगे और शरीरधारी एक समय पर एक स्थान पर ही हो सकता है । अतः वह सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक नहीं हो सकता है । फिर कैसे यहोवा ने संसार को बनाया ? अपार ब्रह्माण्ड बनाने वाला प्रत्येक सूक्ष्म कण में उपस्थित है और इसी कारण उन सूक्ष्म कणों को जब चाहे तथा जैसे चाहे संचालित कर सकता है। वह केवल ओम् ही है। अतः बाइबिल की बातें निश्चित रूप से बालकपन की बातें सिद्ध हो रही है।

सज्जनों बाइबिल की इन सभी बातों से सृष्टि का ज्ञान तो नहीं मिलता किन्तु बच्चों के मनोरंजन की कहानियां अवश्य मिलती हैं। दुर्भाग्य से कुरान वालों की भांति बाइबिल का लेखक भी इस पृथ्वी और स्वर्ग से बाहर की बात न कर सका । जो दिख गया उसे ही अपने शब्दों में लिख कर एक रिलिजन बना दिया गया। बाइबिल का प्रत्येक पृष्ठ सृष्टि के नियमों के विरुद्ध किस्से कहानियों से भरा हुआ है। इसी कारण अल्बर्ट आइंस्टीन कहते है कि - **"The Bible a collection of honourable, but still primitive, legends which are nevertheless pretty childish."**[95] अर्थात् बाइबिल सम्मानजनक है, लेकिन अभी भी आदिम है,

[94] Bible, *Acts*, Chapter 7, verse 49-50.

[95] Albert Einstein's 'God letter' written in

किवदंतियों अर्थात् काल्पनिक किस्से कहानियों का संग्रह है जो बहुत ही बचकाना है।”

बाइबिल की इन्हीं मूर्खतापूर्ण कहानियों के कारण ही संसार के करोड़ों लोग भगवान के होने में शंका करने लगे हैं। किसी भी बड़े वैज्ञानिक ने ये सिद्ध करने का प्रयास तक नहीं किया कि ईश्वर नहीं है क्योंकि वो जानते है कि यह संसार किसी बुद्धिमान की रचना है।

अल्बर्ट आइंस्टीन कहते है कि **“I am not an atheist, and resented being labelled as one.”**

अर्थात् मैं नास्तिक नहीं हूँ बल्कि मुझे नास्तिक कहने वालों का मैं विरोध करता हूँ।”[96]

बाइबिल और कुरान की बचकाना बातों को पढ़कर सभी वैज्ञानिकों ने इन दोनों ग्रंथों को मन बहलाने वाली पुस्तकें माना और इनमें बताए गये खुदा को मनुष्य की कमजोरी व डर से उत्पन्न हुआ माना है। कारण सीधा है कि ईश्वर वैसा है जैसा वेद में बताया गया है, वैसा नहीं जैसा कुरान अथवा बाइबिल में बताया है। इसी कारण कट्टर ईसाई सदा से वैज्ञानिकों का विरोध करते आये हैं।

आज से लगभग 1600 वर्ष पूर्व रोम में चर्च के अन्दर इसाई पादरी सिरिल के आदेश पर एक महिला को निर्वस्त्र करके उसकी आंखें फोड़ दी गयी और फिर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिए। उस महिला का नाम Hypatia था। उस देवी का अपराध केवल इतना

[96] H. Sherwood, *The Guardian* 4 December 2018.

था कि वह बच्चों को गणित पढ़ाती थी। यह इतिहास की सत्य घटना है।[97]

पादरी कहते थे कि गणित की विद्या झूठी है क्योंकि बाइबिल में इसके बारे में कुछ नहीं लिखा है। यही नहीं जब वैज्ञानिक गैलीलियों ने धरती को गोलाकार कहा और सूर्य के चारों ओर घूमने वाली कहा तो ईसाई पादरियों ने सन् 1633 में उनको जेल में बंद कर दिया और बाद में उसी के घर में आजीवन बंधी बना दिया था।[98] अस्तु, अभी कुछ वर्ष पूर्व 31 अक्टूबर, 1992 में वेटिकन कथौलिक चर्च ने लगभग 350 वर्ष बाद गैलीलियों से क्षमा मांगी थी।[99]

"On 31 October 1992, Pope John Paul II expressed regret for how the Galileo affair was handled, and officially conceded that the Earth was not stationary."[100]

बाइबिल में पृथ्वी को अनेक स्थानों पर स्थिर तथा चपटी कहा गया है।

---

[97] S. Scholasticus, 'The Murder of Hypatia', (late 4th Cent.) from Ecclesiastical History, Bk VI: Chap. 15. (Socrates Scholasticus was a 5th-century Christian church historian.)
[98] W. Crawley, 'Galileo: what really happened?', *BBC* 27 June 2010, bbc.co.uk
[99] A. Cowell, 'After 350 Years, Vatican Says Galileo Was Right: It Moves', *The New York Times* 31 October 1992.
[100] W.D. Montalbano, 'Vatican finds Galileo 'not guilty', *The Washington Post* 1 November 1992, washingtonpost.com

"The earth and all the inhabitants thereof are dissolved: I bear up the pillars of it. Selah." Or "When the earth and all its people quake, it is I who hold its pillars firm."[101] अर्थात् जब धरती और उसके प्राणी हिलने लगते है और गिरने को तैयार होते है तब मैं धरती के सभी खम्बों को अच्छे से पकड़ लेता हूँ ताकि वह ना गिरे।

बाइबिल के अनुसार पृथ्वी चपटी है और यह चार खम्बों पर रखी हुए है। आसमान से धरती को तम्बू की भांति यहोवा द्वारा ढक दिया है।[102] ईसाई सोचते थे कि भूकंप में जब धरती हिलती है तो उसे गिरने से यहोवा बचा लेता है। प्रश्न तो यह भी उठता है कि आकाश में स्थित गोलाकार पृथ्वी गिरेगी कहाँ ? इसी लिए ईसाई पृथ्वी को चपटा (flat) मानते है। इस विषय की अनेक आयतें बाइबिल में भरी हुई है। बाइबिल में कहा गया है कि - **"He set the earth on its foundations; it can never be moved."** हे परमेश्वर, तूने ही धरती का उसकी नीवों पर निमार्ण किया। इसलिए धरती अपनी जगह से कभी नहीं हटेगी।[103]

बाइबिल में अनेकों स्थानों पर आया है कि यहोवा ने धरती की नींव वैसे ही भरी है जैसे मनुष्य अपने छोटे छोटे घर बनाने की भरते हैं। आज विज्ञान चीख चीख कर कह रहा है कि धरती किसी खम्बे पर नहीं बल्कि गुरुत्वाकर्षण बल के आधार पर आकाश में स्थित है

[101] Bible, *Psalm*, Chapter 75, verse 3

[102] Bible, *Isaiah*, Chapter 40, verse 22

[103] Bible, *Psalm*, Chapter 104, verse 5.

और सूर्य के चारों ओर घूम रही है। बाइबिल कभी भी संसार के रचने वाले का ज्ञान नहीं हो सकता है। बाइबिल तो किसी बुद्धिमान का ज्ञान भी नहीं हो सकता है। बाइबिल यह भी कह रही है कि पृथ्वी कभी अपने स्थान से नहीं हटेगी किन्तु मैं पहले ही सिद्ध कर चुका हूँ कि कोई भी वस्तु जो बनी हुई है उसकी एक निश्चित आयु होती है। इसलिए सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी आदि समस्त ब्रह्माण्ड की एक निश्चित आयु है। बाइबिल में एक अन्य स्थान पर फिर से कहा गया है कि -

"And after these things I saw four angels standing on the four corners of the earth." अर्थात् इसके बाद धरती के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूतों को मैंने खड़े हुए देखा।[104]

बाइबिल स्पष्ट रूप से कह रही है कि धरती के कोने होते हैं अर्थात् धरती यहोवा ने चार खम्बों पर रखी हुई है जिसकी नींव भी यहोवा ने भरी है। मैंने देखा है भारत जैसे देशों में नए बने हुए ईसाई कहते हैं कि इन आयतों का यह अर्थ नहीं है। जहाँ वेटिकन के बड़े बड़े पोप अपनी गलतियों और पापों की क्षमा मांग रहे हैं वहीं भारतीय इसाई अभी भी सीना तानकर गलतियों को छुपाने में लगे हैं। क्या ये 50-100 वर्ष पूर्व इसाई बने हुए लोग बाइबिल के विषय में यूरोप के ईसाईयों से अधिक जानते है ? आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व पादरियों ने मिलकर यहूदी, इस्राइल के लोगों, महिलाओं[105] तथा

[104] Bible, *Revelation*, Chapter 7, verse 1.

[105] महिलाओं पर संसार के सभी रिलिजन में हुए भयंकर अत्याचारों की दास्तां जानने हेतु मेरी पुस्तक 'पाप की देवियाँ' अवश्य पढ़ें।

अन्य अल्पसंख्यकों से क्षमा मांगी थी[106] क्योंकि ईसाईयों ने सदियों तक भयंकर कत्लेआम किया था तथा अनेकों पाबंधियाँ लगाई हुई थी।

कोलंबस जब अमेरिका का पता लगाने के लिए एक जहाज ले जाना चाहता था तो उसने पुर्तगाल के महाराज की सहायता लेने का प्रयास किया। महाराज ने पादरियों से इस पर विचार करने को कहा तो पादरियों ने कहा कि किसी अन्य स्थान पर भूमि के खण्ड के बारे में बाइबिल में कुछ नहीं कहा है। अतः कोलंबस को जहाज न दिया जाए क्योंकि उसको कोई भूमि नहीं मिलेगी।[107]

आइये बड़े ही संक्षेप में एक दृष्टि बाइबिल के उन चमत्कारों पर डालते हैं जो ईश्वर के बनाये हुए सृष्टि नियमों की खुलकर धज्जियाँ उड़ाते हैं।

“अँधा भिखारी चिल्लाता है कि हे दाउद की संतान मुझ पर दया कर। तब जीसस (यीशु) उससे पूछता है कि मैं क्या करूं ? अँधा कहता है मुझे देखने की शक्ति दे। जीसस कहता है कि तू देखने लग जा। तभी अंधे को दिखाई देने लग गया।”[108]

[106] R. Carroll, ‘Pope says sorry for sins of church’, *The Guardian* 13 March 2000, theguardian.com

[107] Power And Patronage: Columbus’s Search For Financial Support - Encyclopedia (W. D. Phillips Jr. and C. R. Phillips, ‘*The Worlds of Christopher Columbus*’, (Cambridge, U.K.: Cambridge University Press, 1992).

[108] Bible, *Luke*, Chapter 18, verse 41-43.

“मरी हुई बच्ची का हाथ पकड़कर जीसस ने कहा, ‘तलीथा कूमी!’ जिसका अर्थ है, हे लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ! और लड़की तुरंत उठकर चलने फिरने लग गयी।”[109]

बिना दवा के लोगों की आँखें ठीक करने के अनेकों किस्से बाइबिल न्यू टेस्टामेंट में उपस्थित हैं। जन्म से गूंगे-बहरों को कुछ ही सेकंड में जीसस आवाज और सुनने की शक्ति दे देता है। जैसे जादूगर कहते है, “खुल जा सिम सिम” बस वैसे ही जीसस को कहना होता है, “हो जा” और सब हो जाता है। बाइबिल का ज्ञान ईश्वरीय नहीं हो सकता है क्योंकि अपने ही कार्यों को आप ही बदल देने वाला सर्वज्ञ कैसे हो सकता है। पहले बच्ची मरी फिर जीसस ने ठीक की। अरे, ठीक ही करनी थी तो मरने क्यों दी ? क्या लोगों को अपना चमत्कार दिखाना था ? ऐसा लग रहा है कि धर्म तो एक बहाना है, सभी को अपना अपना गिरोह बड़ा बनाना है।

एक स्थान पर तो बाइबिल वालों ने एक विचित्र चमत्कार दिखा दिया। **“एक स्त्री को 12 वर्ष से लहू बहने का रोग था, उसने जीसस को जाता हुआ देखकर उसके पहने हुए (चोगे) कपड़े को छू लिया। तुरंत उसका लहू बहना रुक गया।”**[110]

बाइबिल के अनुसार जीसस का नाम लेने से, उसके कपड़े छूने से, उसके देखने से, उसके पुकारने से लोगों की बीमारियाँ ठीक हो जाती थी। यदि ऐसा है तो आज लाखों ईसाई बिमारियों से क्यों मर

[109] Bible, *Mark*, Chapter 5, verse 41-42.

[110] Bible, *Mark*, Chapter 5, verse 41-42.

रहे है ? कहाँ गये जीसस के कपड़े ? इसाई रिलिजन इन्हीं चमत्कारों के बल पर खड़ा है किन्तु 21वीं सदी में ऐसे चमत्कारों की झूठ लोग जान चुके हैं।

अभी कुछ समय पूर्व मैं यूरोप की यात्रा पर था। नीदरलैंड और जर्मनी के चर्च या तो मुस्लिम ले रहे है या फिर उनमें रेस्टोरेंट खुल रहे हैं। लोग चर्च और पादरियों के पास जाना पसंद नहीं करते हैं। एक बात तो आप जानते ही होंगे कि आज भी किसी पादरी को संत (saint) की उपाधि कोई न कोई चमत्कार दिखाकर ही मिलती है। आज भी संसार में सेकड़ों इसाई संत हैं जो बड़े बड़े चमत्कारी हैं। अभी सारा संसार कोरोना से लड़ रहा है। क्यों नहीं ये इसाई संत संसार को कोरोना से बचा लेते हैं ? सत्य यह है कि मैंने 15 मार्च, 2020 को नीदरलैंड के द हेग शहर में चर्च के बाहर कोरोना से बचने के पोस्टर देखे। चर्च वालों ने चर्च के बाहर पोस्टर में लिखा था कि चर्च कोरोना के कारण बंद रहेंगे। कहाँ गये सभी चमत्कारी ? मैं यहाँ केवल इसाई चमत्कारियों को नहीं बल्कि मुस्लिम झाड़-फूक करने वालों और वेद विरुद्ध कार्य करने वाले स्वार्थी हिन्दू गुरु घंटालों को भी सत्य का दर्पण (आईना) दिखा रहा हूँ।

भारत में कुछ समय पहले तक ईसाईयों की एक बहुत बड़ी संत थी। कुछ लोग उसे मदर टेरेसा[111] कहते थे। भारत में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लाखों लोगों और आदिवासियों को बहला फुसलाकर इसने इसाई बनाया था। गुजरात के सूरत शहर में

[111] Mother Teresa’s full name is Anjezë Gonxhe Bojaxhiu.

दिसंबर 2019 को लगभग 300 ईसाईयों ने सामूहिक रूप से मेरे कार्यक्रम में ईसाइयत को छोड़ दिया था। वहां पर टेरेसा से सम्बंधित अनेकों जानकारियां मुझे मिली थी। इस विषय पर आप मेरी लिखी '300 इसाई' पुस्तक पढ़ सकते हैं।

बाइबिल की अवैज्ञानिक बातों तथा लुभावनी काल्पनिक कहानियों से आप यह तो जान ही गये होंगे कि 2000 वर्ष पूर्व के अनपढ़ इस्राइलियों तथा आस पास के क्षेत्रों के लोगों का एक नए रिलिजन पर विश्वास लाने के लिए यह ग्रन्थ लिखा गया था। इस ग्रन्थ में सृष्टि के विषय में कोई ज्ञान नहीं है बल्कि सृष्टि के विरुद्ध बातें भरी पड़ी है। सृष्टि के नियम जो ईश्वर ने बनाए हैं, चमत्कार के नाम पर उनको तोड़ कर जीसस, यहोवा आदि की महानता दिखाई गयी है।

ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानने वाला है। उसका कोई कार्य तथा उसका बनाया हुआ कोई भी नियम अपूर्ण नहीं है। वह स्वयं भी अपने कार्य तथा नियम को नहीं बदल सकता है क्योंकि वे पहले ही पूर्ण (perfect) है। अतः बाइबिल में संसार रचने वाले का ज्ञान नहीं है बल्कि कुछ सामान्य लोगों की बातें, इतिहास, कहानियां, चमत्कार आदि ही हैं।

3. जैसा कि आप सभी जानते हैं कि पहले की सभी परीक्षाओं में केवल वेद ही सफल हुए हैं। इस परीक्षा में सफल होने के लिए वेदों में ब्रह्माण्ड की सभी प्रकार की विद्याओं का भण्डार होना चाहिए अर्थात् सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को सृष्टि का सारा ज्ञान अवश्य दिया होगा। कुछ मन्त्रों के आधार पर देखने का प्रयास करेंगे

कि ईश्वर ने मनुष्यों को संसार के कौन कौन से नियमों के विषय में ज्ञान दिया था और कौन कौन सी विद्याओं का विस्तार करने की आज्ञा दी थी। वेदों में ब्रह्माण्ड विद्या के विषय में सभी गूढ़ विद्याओं और नियमों का ज्ञान दिया गया है। संक्षेप में कुछ मंत्रों से समझने का प्रयास करते हैं।

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः[112]

(अयम्) यह प्रत्यक्ष (गौः) गोलरूपी पृथ्वी (पितरम्) पालना करने वाले (स्वः) सूर्य लोक के (पुरः) आगे आगे तथा (मातरम्) अपनी योनिरूप जलों के साथ वर्तमान (प्रयन्) अच्छी प्रकार चलती हुई (पृश्निः) अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश में (आक्रमीत्) चारों ओर घूमती है ||6||

अर्थात् मनुष्यों को जानना चाहिये कि जिससे यह भूगोल जल के सहित आकर्षणरूपी गुणों से सब की रक्षा करनेवाले सूर्य के चारों तरफ क्षण क्षण घूमता है, इसी से दिन रात्रि, शुक्ल वा कृष्ण पक्ष, ऋतु और अयन आदि काल-विभाग क्रम से सम्भव होते हैं॥६॥

महर्षि यास्क अपने ग्रन्थ निरुक्त में लिखते हैं कि **"गौरिति पृथिव्या नाम धेयम्। यद् दूरं गता भवति।"**[113] अर्थात् पृथ्वी का नाम 'गौ' इस कारण है कि यह दूर दूर तक चलती रहती है। अगले खंडो में ऋग्वेद के मंत्रों के आधार पर महर्षि यास्क कहते है कि सभी ग्रह

[112] यजुर्वेद अध्याय 3, मंत्र 6।

[113] निरुक्त अध्याय 2 खण्ड 5।

आदि अपनी अपनी परिधि में सदा घूमते रहते है।[114] इस विषय को महर्षि दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पुस्तक से भी समझा जा सकता है।[115]

आर्यों के सभी प्राचीन ग्रंथों में यह विद्या सदा से लिखी हुई है। ईसाईयों ने 350 वर्ष पूर्व भी पृथिवी आदि के भ्रमण की बात नहीं मानते हुए गैलीलियों को कैद कर दिया था। वहीं आर्यों के हजारों वर्ष पूर्व के ग्रंथों में इस विद्या को विस्तार से समझाया गया है। यदि वेद की बात करें तो करोड़ों वर्ष पूर्व ही सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेद में यह ज्ञान मनुष्यों को दे दिया था। कुछ संस्कृत से अनजान मैक्समूलर तथा मोनियर विलियम जैसे लोगों ने वेद मन्त्रों से अर्थ के अनर्थ कर दिए। वेद में एक शब्द के अनेक अर्थ होते है किन्तु किस शब्द का कहाँ कौन सा अर्थ लेना है यह व्याकरण के नियमों के आधार पर होता है। कहाँ गौ का अर्थ पृथ्वी लेना है, कहाँ वाणी लेना है और कहाँ गाय लेना है, इसका निर्णय देश, काल, परिस्थिति, प्रकरण तथा नियमों के आधार पर लिया जाता है। अब कहीं लिखा है कि आठ पदों से युक्त वाणी बोलो और मैक्समूलर अर्थ करता है कि आठ पैरों वाली गाय (गर्भवती) का वध करो। इस प्रकार वेदों के अर्थ करने वाले लोगों के वेद बाजारों में बिक रहे हैं।

[114] निरुक्त अध्याय 2, खण्ड 6 तथा खण्ड 14।

[115] ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका विषय 9।

वर्तमान समय में वेद का सबसे सुन्दर व प्रमाणिक अर्थ महर्षि दयानंद सरस्वती ने किया है।[116]

या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारत: ।
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते ।।[117]

अर्थात् "सभी लोक अपने अपने मार्ग में सदा नियम पूर्वक घूमते हैं तथा पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमती है। ईश्वर ने जिस जिस के घूमने के लिए जो जो मार्ग निश्चित किया है, उस उस मार्ग में सब लोक घूमते रहते हैं। सब लोकों के नियम पूर्वक घूमने व कार्य करने के कारण ही अनेक प्रकार के रस, फल, फूल, पेड़, पौधे तथा अन्न आदि पदार्थों की व्यवस्था होती है जिससे सभी प्राणी सुखपूर्वक रहते हैं अर्थात् ब्रह्माण्ड के इन्हीं नियमों को बनाने के कारण ही जीवन संभव हुआ है।"

इसी प्रकार वेद में आता है कि "चन्द्र लोक पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। कभी कभी सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है।[118] इस प्रकार के अनेकों मंत्र वेदों में हैं जो ब्रह्माण्ड के विभिन्न लोकों के

---

[116] यदि शुद्ध वेद भाष्य ढूंढने में आपको समस्या आती है तो Thanks Bharat Website पर जाकर हमें सूचित करें आपको सही ग्रन्थ मिलने का स्थान आदि बता दिया जाता है।

[117] ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 65, मंत्र 6 *(इस मंत्र के भौतिक अर्थ के लिए)* ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का 9वां विषय पढ़ें क्योंकि एक ही वेद मंत्र से अलग अलग भौतिक व आध्यात्मिक अर्थ करके अनेकों विद्याओं को जाना जा सकता है किन्तु अर्थ व्याकरण के नियमों पर आधारित होना चाहिए।

[118] ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 48, मंत्र 13 (इसके भौतिक अर्थ के लिए ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका 9वां विषय पढ़ें)।

भ्रमण करने की विद्या देते है तथा आकर्षण विद्या (गुरुत्वाकर्षण आदि) का ज्ञान देते है।[119]

यदा सूर्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥[120]

हे परमेश्वर ! (यदा) जब आपने (दिवि) आकाश में (अमुम्) बहुत दूर दिखने वाले (सूर्यम्) सूर्यरूप (शुक्रम्) शुद्ध देदीप्यमान (ज्योतिः) ज्योति को (अधारयः) स्थापित किया (आदित्) तब ही सम्पूर्ण भुवन (लोक-लोकांतर) नियमबद्ध हो गए अर्थात् सूर्य के आकर्षण से सभी ग्रह आदि उसके चारों ओर नियम पूर्वक घूमने लगे ॥३०॥

ब्रह्माण्ड के विषय में इस वेद के मंत्र से बहुत सारी विद्याएँ एक साथ समझ आ जाती हैं। कहाँ तो बाइबिल और कुरान में धरती को चपटी कहा गया है और सूर्य को पृथ्वी के एक छोर पर काले पानी की झील में छिपते दिखाया गया है और कहाँ वेद में सूर्य को आकाश में पृथ्वी से अत्यंत दूर स्थित होने की बात की गयी है। इतना ही नहीं सभी ग्रह आदि सूर्य के कारण तथा उसके आधार पर नियमों में बंधे होने की बात भी कही गयी है।

यजुर्वेद में सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश के विषय में ईश्वर ने मनुष्यों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञान दिया है।

[119] ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 12, मंत्र 28-29 (ऋग्वेद भाष्य भूमिका में मण्डल सहित यह मंत्र नहीं दिया गया है अतः कुछ लोगों को ढूंढने में परेशानी होती है)।

[120] ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 12, मंत्र 30।

प्रश्न - कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः ।[121] हे विद्वान मनुष्यों ! कौन एकाकी अर्थात् अकेला विचरता है और अपने ही प्रकाश से प्रकाशित है ? कौन दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित है ?

उत्तर - सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।[122] अर्थात् इस संसार में सूर्य ही एकाकी (अकेला) विचरता और अपनी ही धुरी पर घूमता है तथा अपने ही प्रकाश से प्रकाशवान होकर सब लोकों को प्रकाशित करता है । (2) सूर्य के प्रकाश से ही चन्द्रमा प्रकाशित होता है क्योंकि उसका स्वयं का प्रकाश नहीं है ।

कितने सरल व स्पष्ट शब्दों में वेदों ने कितनी महान विद्या मनुष्यों को बता दी । ऐसे ऐसे ब्रह्माण्ड के अनेकों गूढ़ रहस्यों को वेदों में खोला गया है । वेदों में सृष्टि नियम के विरुद्ध कोई भी बात नहीं है । सृष्टि के नियम ईश्वर ने बनाए है अतः ईश्वर का ज्ञान सृष्टि नियम के विरुद्ध नहीं होना चाहिए । मनुष्यों को सृष्टि का ज्ञान देने हेतु ईश्वर ने वेद में गणित विद्या भी सिखाई है । गणित विद्या को वेद में इतने विस्तार से समझाया है कि आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे । यजुर्वेद के मंत्रो से बड़ी बड़ी संख्याओं को जोड़ना, घटाना, गुणन, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भागजाति, प्रभागजाति आदि गणित के सभी अंगों का ज्ञान ज्ञान दिया गया है ।[123] जिस प्रकार आज भी बच्चा विद्यालय आदि में जाकर अध्यापक से गणित विद्या सीखता है वैसे सृष्टि की आदि में सर्वप्रथम उत्पन्न हुए मनुष्यों को वेद का ज्ञान

[121] यजुर्वेद अध्याय 23, मंत्र 9 ।
[122] यजुर्वेद अध्याय 23, मंत्र 10 ।
[123] यजुर्वेद अध्याय 18, मंत्र 24 तथा 25 (वेद के ये दोनों मंत्र बहुत बड़े तथा गहरे अर्थों वाले है) ।

स्वयं ईश्वर ने सीधे उनकी आत्मा में करवाया था। ईश्वर का कोई आकार नहीं है तथा वह प्रत्येक जीव के अन्दर स्थित है। अतः सर्वप्रथम उत्पन्न हुए मनुष्यों के भीतर ही ईश्वर ने ज्ञान प्रदान कर दिया था। इसीलिए ईश्वर को आदि गुरु भी कहते हैं।

गणित की विद्या सिखाने के बाद वेदों में पृथ्वी आदि का माप निकालने का ज्ञान प्रश्नोत्तर के माध्यम से दिया गया है।

प्रश्न - पृच्छामि॑ त्वा॒ पर॒मन्तं॑ पृथि॒व्याः पृच्छामि॒ यत्र॒ भुव॑नस्य॒ नाभिः॑।[124] अर्थात् पृथ्वी की सीमा क्या है ? सब भुवनों (लोकों) को बनाकर आकर्षण द्वारा किसने आकाश में स्थापित किया है ?

उत्तर - इ॒यं वेदिः॒ परो॒ऽअन्तः॑ पृथि॒व्याऽअ॒यं य॒ज्ञो भुव॑नस्य॒ नाभिः॑। अर्थात् हे मनुष्यों ! इस भूगोल (गोलाकार पृथ्वी आदि) में ऊपर से भूमि के अंत तक मध्यस्थ रेखा द्वारा व्यास निकालकर भूगोल की सीमा (माप) निकाला जाता है। दूसरा जो यज्ञ स्वरुप ईश्वर है उसी ने सभी लोकों को आकर्षण युक्त किया है और वो नियम पूर्वक अपनी कक्षा में घूम रहे हैं। सभी लोकों के बीच ईश्वर ने ही आकर्षण स्थापित किया है।

इस मंत्र में पृथ्वी का व्यास तक निकालने की विद्या दी हुई है। इससे यह सिद्ध होता है कि करोड़ों वर्ष पूर्व के मनुष्य भी जानते थे कि पृथ्वी गोल है क्योंकि वेद का ज्ञान करोड़ों वर्षों से मनुष्य के पास है।

---

[124] यजुर्वेद अध्याय 23, मंत्र 61।

गणित विद्या अनेकों विद्याओं की जननी है। जो लोग कहते हैं कि भारत ने संसार को शून्य का ज्ञान दिया उन लोगों को संभवतः पता नहीं है कि सृष्टि की आदि में ही संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेदों में 17 अंक तक गिनती करने का ज्ञान दिया गया है। ऐसी कोई भी विद्या नहीं जिसके विषय में वेदों में प्राथमिक ज्ञान न दिया हो। उसी प्रारंभिक ज्ञान के बल पर गुरु-शिष्य तथा पिता-पुत्र सम्बन्ध के आधार पर ज्ञान संसार में चलता रहता है।

कुछ लोग प्रश्न पूछते हैं कि वेदों में सभी विद्याएँ (ज्ञान) विस्तार से क्यों नहीं दी गयी है ? सभी विद्याएँ संक्षेप में ही क्यों दी गयी है ?

ऐसा प्रश्न आलसी लोगों का हो सकता है किन्तु परिश्रमी लोगों का नहीं। परिश्रम बिना संसार में कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। परिश्रम से ही संसार संतुलित रहता है। भले ही भोजन नौकर बनाते हों, भले ही नौकर ही खाना परोस दें और निवाले से आपके मुंह के अन्दर भी डाल दें तो भी आपको भोजन स्वयं चबाना पड़ेगा। यह सत्य है कि ईश्वर ने ज्ञान सिद्धांत रूप में दिया है। प्रत्येक विद्या के मुख्य मुख्य नियम वेदों के द्वारा मनुष्यों को जना दिए हैं। इसके साथ साथ ईश्वर ने मनुष्यों को बुद्धि भी दे दी है। ईश्वर ने बुद्धि को ऐसा बनाया है जिससे मनुष्य थोड़े ज्ञान से ही बहुत कुछ नया नया ज्ञान प्राप्त कर लेता है। विचार कीजिये इतने विशाल ब्रह्माण्ड की असंख्य विद्याओं को विस्तार से लिखने के लिए कितने ग्रन्थ भर जाएंगे ? पूरा संसार ग्रंथों से भर जायेगा किन्तु फिर भी प्रत्येक विद्या विस्तार से नहीं बताई जा सकती है। ईश्वर ने प्रत्येक विद्या के बारे में ज्ञान दे दिया और फिर आज्ञा दी कि मेरी दी हुई बुद्धि और सिद्धांतों

से अब नई नई विद्याओं का विस्तार करो और सुखपूर्वक रहो। जैसे वेदों में विमान बनाने की विद्या के अनेकों मंत्र है अर्थात् ईश्वर ने संक्षेप में विमान बनाने का ज्ञान देकर मनुष्यों को कहा कि अब तुम बुद्धि से स्वयं अच्छे अच्छे विमान बनाओ। अब इससे आगे का कार्य मनुष्य को अपनी बुद्धि से करना है क्योंकि बुद्धि मिली ही इस कारण से है।

यदि सब ज्ञान और पदार्थ बने बनाए दे दिए होते तो बुद्धि क्यों मिलती ? आज भी आपने देखा होगा बड़े बड़े वैज्ञानिक किसी नई विद्या की खोज करके उन नियमों को संक्षेप में वैज्ञानिक भाषा में ही सुरक्षित करते हैं। ऐसा नहीं है कि वे अपनी खोज से सम्बंधित प्रत्येक वस्तु, समय, स्थान आदि की एक एक बात लिख देते हों। केवल सिद्धांत आदि ही खोज में गिने जाते हैं। उसके आधार पर पदार्थ तो संसार के लोग अपने आप बना लेते हैं। इसी प्रकार चारों वेदों में संक्षेप में संसार की सारी विद्याएँ सीखा दी गयी हैं।

एक बार मैं अपने एक मित्र के साथ प्रगति मैदान दिल्ली में लगे पुस्तक मेले में गया था। वहां पर कुछ मुस्लिम भाइयों ने अपनी एक स्टाल लगा रखी थी जिसका नाम 'वेद और कुरान कितने दूर कितने पास' था। वे वहां पर प्रचार कर रहे थे कि वेद और कुरान दोनों में एक जैसा ज्ञान है। वेद के साथ कुरान का नाम जोड़कर ये लोग कुरान को वैज्ञानिक, प्राचीन तथा ईश्वरीय ज्ञान कह रहे थे। मैंने वहां पर उन मुस्लिम भाइयों को चुनौती दी कि आप जो प्रचार कर रहे हो वह गलत है। बहुत सारे लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। मैंने कहा कि कुरान की प्रत्येक आयत यह सिद्ध करती है कि यह

पुस्तक किसी साधारण व्यक्ति ने लिखी है जबकि वेदों में सृष्टि की सभी विद्याएँ संक्षेप में सिखाई गयी हैं। मैंने कहा कि वेदों में विमान बनाने तक की विद्या सिखाई गयी है। इस बात पर मुस्लिम युवक मुझे झूठा कहने लगे और बोले कि यदि वेदों में विमान बनाने से सम्बंधित मंत्र मिल जाएंगे तो वे सभी वेद को ही ईश्वर का ज्ञान मान लेंगे। उन युवकों ने सोचा था कि अभी यहाँ पुस्तक मेले में वेद कहाँ से आयेंगे ? मैंने उनको मंत्र बताए जो उन्होंने माने नहीं। फिर मैंने सबके सामने उन युवकों को मेरे साथ आर्यसमाज के स्टाल पर चलने को कहा क्योंकि वेद आजकल केवल आर्यसमाजों में ही मिलते हैं। तभी कुछ अरब के नौजवान मुस्लिम आये और हमसे कहने लगे कि वे मानते हैं कि वेदों में विमान बनाने आदि की विद्या बताई गयी है। किन्तु दुर्भाग्य से उन नौजवानों ने कुरान को नहीं त्यागा। विमान विद्या से सम्बंधित प्राचीन ज्ञान तथा इतिहास आप अगले अध्याय में विस्तार से पढ़ेंगे।

वेदों में केवल भौतिक उन्नति ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वश्रेष्ठ ज्ञान दिया गया है। वेदों में स्वस्थ व सुखी जीवन जीने के अमूल्य सिद्धांत दिए गये हैं। संसार के किस पदार्थ से क्या लाभ लेना है यह सब भी वेद मंत्रों में बताया गया है। यदि शरीर में कोई रोग आ जाये तो उसकी औषधियां भी वेदों में बताई गयी है। कुरान अथवा बाइबिल जैसे ग्रंथों की भांति चमत्कार से रोग ठीक करने का ज्ञान ईश्वर ने नहीं दिया है बल्कि वह रोग मनुष्यों के किसी गलत कर्म का परिणाम है। अतः मनुष्य को स्वस्थ दिनचर्या के साथ योग प्राणायाम तथा औषधियों का ज्ञान ईश्वर ने दिया है।

बिना परिश्रम के ओम् ने किसी भी समस्या का समाधान वेद में नहीं दिया है। इससे पता चलता है कि संसार में कोई भी छोटा रास्ता नहीं है। मनुष्यों को मानसिक सुख चाहिए तो वेदों ने ओम् का नियमित जप करने का ज्ञान दिया है क्योंकि संसार के प्रत्येक अणु में ओम् का वास है। मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, यह सब ज्ञान वेदों में मनुष्यों को दिया गया है ताकि मनुष्य ओम् द्वारा बताए हुए अच्छे कार्यों को करें और अच्छे कार्यों का अच्छा फल ही प्राप्त करें। यह ऐसा ही है जैसे एक पिता अपने पुत्र को मानवता की अच्छी अच्छी बातें सिखाए और जब वो पुत्र किसी दुःखी प्राणी की सहायता करे तो पिता उससे प्रसन्न होकर उसे नाना प्रकार के सुख देवे। विवाह कब, किससे तथा कैसे करना चाहिए, यह ज्ञान भी वेदों में दिया गया है। विवाह का उद्देश्य भी मनुष्यों के लिए ईश्वर ने निर्धारित किया हुआ है। वास्तव में मनुष्य और पशु में यही अंतर है कि मनुष्य विवाह करके एक उद्देश्य के लिए संयोग करता है किन्तु पशु अकारण करते रहते हैं क्योंकि उनमें मनुष्य की भांति बुद्धि नहीं है। पशु-पक्षी भोग योनियाँ हैं अर्थात् बताने के बाद भी कोई मनुष्य पशुतुल्य तथा राक्षसी कार्य करे तो ईश्वर उसे भोग योनियों अथवा स्थावर (वृक्ष आदि) जातियों में उत्पन्न कर देता है। अच्छे कर्म करने वाले मनुष्यों को ईश्वर विभिन्न प्रकार की विद्याओं तथा धनों से संपन्न कर देता है। आपने देखा होगा कि एक व्यक्ति जन्म से राजा तथा धनवान पैदा होता है और एक व्यक्ति जन्म से दरिद्र पैदा होता है। वास्तव में जो जन्म से धनवान है वह भी उसका ही पुरुषार्थ है। आप पहले पढ़ चुके है कि ईश्वर बिना परिश्रम किसी को कुछ भी प्रदान नहीं करता है। उस

धनवान बच्चे ने पूर्वजन्मों में बहुत पुरुषार्थ तथा अच्छे कर्म किये थे जिनका उपहार (इनाम) उसे प्राप्त हुआ है।

कर्मफल व्यवस्था पर अगले अध्यायों में विस्तृत चर्चा करेंगे किन्तु यहाँ केवल यह समझ लेवें कि मनुष्य जीवन से सम्बंधित प्रत्येक विषय तथा पहलू का ज्ञान वेदों में ओम् ने दे दिया है। केवल स्वस्थ जीवन जीने का ज्ञान ही नहीं बल्कि योग के द्वारा इच्छामृत्यु का ज्ञान भी दे दिया है और केवल जन्म का ज्ञान ही नहीं बल्कि मृत्यु से सर्वथा छूटने का ज्ञान भी वेदों में दिया है। किन्तु एक बात का ध्यान रखें कि कुरान और बाइबिल की भांति वेद का नाम लेने अथवा उनको पढ़ लेने से कोई चमत्कार नहीं होगा। जैसे कुरान मुस्लिमों की रक्षा करती है, बाइबिल ईसाईयों की वैसे वेद केवल आर्यों आदि के लिए नहीं है। वेद पूरे ब्रह्माण्ड के लोगों की रक्षा के लिए है। जैसी हमारी पृथ्वी, चन्द्रमा तथा सूर्य आदि है वैसे ही ब्रह्माण्ड में असंख्य सौरमंडल हैं जिनको ओम् ने बनाया है और जहाँ पर हमारे जैसी ही सृष्टि है। वेद सब संसार के लिए है इसीलिए इनमें किसी का नाम, इतिहास, किस्से-कहानियों तथा चमत्कारों आदि का कोई उल्लेख नहीं है। सृष्टि के आरम्भ में प्रत्येक पृथ्वी पर यही वेद का ज्ञान ईश्वर देता है।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग अभी भी सत्य को धारण करने का साहस नहीं कर पाएंगे किन्तु पांच परीक्षाओं में से प्रत्येक परीक्षा में केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध हुए हैं। बिना किसी पक्षपात के तर्क, तथ्य तथा विज्ञान के आधार पर हमने सभी ज्ञान की पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कुरान केवल मुस्लिमों के लिए सिद्ध हुई तो वहीं बाइबिल केवल यहूदी और

ईसाईयों के लिए सिद्ध हुई किन्तु वेद समस्त संसार के लाभ के लिए ज्ञान दे रहे हैं। अतः वेद ही ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान सिद्ध हुआ।

अब तक आप तीन मुख्य सिद्धांत जान चुके है –

- ईश्वर एक है जिसका नाम ओम् है। ओम् ने ही संसार को बनाया है क्योंकि ओम् सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अनादि है।
- मनुष्य बिना सिखाये अपने आप कुछ नहीं सीखता है। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में जब सभी मनुष्य बालक के समान बुद्धि वाले थे तब ईश्वर ने उनको ज्ञान दिया था।
- जो ज्ञान ईश्वर ने मनुष्यों को दिया था वह वेद का ज्ञान था। मनुष्य भौतिक उन्नति भले कितनी भी कर ले किन्तु मनुष्य की उन्नति हेतु आवश्यक सभी विद्याओं के ज्ञान के लिए सदा वेद ज्ञान की आवश्यकता मनुष्यों को रहेगी।

मैं जानता हूँ कि अब ईश्वर और धर्म से सम्बंधित कुछ साधारण प्रश्न आपके मस्तिष्क में घूम रहे होंगे। सभी मनुष्य वेद का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते हैं किन्तु वेद की मुख्य मुख्य शिक्षाओं को जानकार अपने जीवन को सफल अवश्य बना सकते हैं।

चाणक्य नीति का एक श्लोक है -

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्॥

अर्थात् 'शास्त्र अत्यंत विशाल और अनन्त हैं, विद्याएँ भी बहुत सी हैं, मनुष्य की आयु बहुत कम है और उसके मार्ग में मुश्किलें भी बहुत हैं। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को शास्त्रों में से सारभूत तत्व को उसी प्रकार ग्रहण कर लेना चाहिए, जिस प्रकार हंस दूध ग्रहण करके पानी को छोड़ देता है।'

वेद के ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होने के बाद भी प्रश्न उठता है कि आज 21वीं सदी में वेद विज्ञान की क्या आवश्यकता है ? आज तो संसार ने बिना वेद पढ़ें ही बहुत उन्नति कर ली है। अनेकों पक्षपाती लोग तो दिन रात चिल्लाते रहते हैं कि वेद ज्ञान बेकार है। इनका कहना है कि जिन्होंने वेदों को लिखा वो गडरिये तथा सपेरे थे। इसका कारण है कि भारतीय आज भी रोमिला थापर जैसी पक्षपात करने वाले इतिहासकारों को पढ़ते है। सत्य इतिहास तथा आंकडें देशवासियों तक पहुँचने ही नहीं दिए जाते है। अंग्रेजों ने इतिहास को अपने शासन की दृढ़ता तथा दीर्घता के लिए प्रयोग किया और उनके जाने के बाद प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद ने इतिहास को मुस्लिमों के अनुसार मोड़ दिया।

अब समय आ गया है कि इतिहास के विषय पर विस्तार से शोध किया जाएं और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता, संकृति, धर्म तथा देश का सही इतिहास लिखा जाये ताकि भावी पीढ़ियाँ सदियों तक उस इतिहास से शिक्षा लेकर शांति तथा समृद्धि को प्राप्त होवें।

4 गड़रियों का देश

इस अध्याय में प्राचीन भारत की ज्ञान-विज्ञान तथा परिस्थितियों पर उठने वाले प्रश्नों का उत्तर देते हुए स्वर्णिम इतिहास का आश्चर्यजनक ज्ञान आपको पढ़ने को मिलेगा। इस अध्याय को पढ़कर विश्व के प्रत्येक कोने में रहने वाले व्यक्ति को प्राचीन सभ्यताओं तथा लोगों पर अवश्य गर्व होगा। यह सत्य है कि वर्तमान में वेदों का ज्ञान भारत में ही है। इसी कारण भारत देश को निशाना बनाकर अनेकों इतिहासकारों ने इसे गड़रियों का देश सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया है। श्रीकृष्ण का नाम लेकर कहा जाता है कि भारत के राजा भी गाय, भैंस चराते थे। कुछ पक्षपाती इतिहासकार तो कहते हैं कि प्राचीन भारतीयों को कुछ भी ज्ञान नहीं था और उन्होंने नदियों के किनारे गाय चराते हुए वेद लिख दिए थे।

इस अध्याय को पढ़कर ऐसे लोगों को पता चल जायेगा कि प्राचीन भारतीयों को किन किन गूढ़ विद्याओं का ज्ञान था। किन्तु उससे पहले एक प्रश्न ये भी उठता है कि क्या गाय चराना बुरा है ? ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं ? क्या किसी प्राणी को प्रतिदिन भोजन खिलाना और उसकी रक्षा करना गलत है ? क्या गाय चराने से ही किसी को मूर्ख कह देना चाहिए ? आज बड़े बड़े उद्योगपति, वैज्ञानिक, कलाकार, राजनेता अपने अपने फार्म हाउस में गाय पालते हैं और बिना यूरिया की खेती करते तथा करवाते हैं। केवल इसलिए ताकि उन्हें दूध तथा भोजन शुद्ध मिल सके। क्या इन सब लोगों को भी मूर्ख कह देना चाहिए क्योंकि ये सब भी गाय, भैंसों का पालन पोषण करते हैं। क्या मूर्खता और बुद्धिमत्ता मापने का यही पैमाना है ? वास्तव में भारत के

विषय में ऐसी सोच रखने वाले इतिहासकार अपनी संकुचित सोच और पक्षपाती विचारधारा को प्रदर्शित करते हैं।

वर्षों से देखता आ रहा हूँ कि कुछ लोग प्राचीन भारतीय विज्ञान को सर्वोत्तम बताते हुए दूसरों को नीचा दिखाते हैं तो कुछ लोग प्राचीन भारतीय वेद विज्ञान का उपहास उड़ाते हुए उसे बेकार बताते हैं। वास्तव में मनुष्य सृष्टि से प्राप्त हुई वस्तुओं से ही नई नई वस्तुएं बनाकर उसपर अपना अधिकार समझने लगता है । कुछ लोग वर्तमान विज्ञान की उन्नति के सामने नतमस्तक होकर बाकि सब ऐतिहासिक मानवीय चेष्टाओं को तुच्छ समझने लग गये हैं। उनके लिए प्राचीन मनुष्य केवल भोजन की तलाश में भटकने वाले वनमानुष ही थे। अतः विज्ञान के विषय पर समाज में अनेकों प्रकार की मान्यताएं फैली हुई हैं।

मैं सदैव कहता हूँ कि आज जो विज्ञान ने उन्नति की है यह संसार ने पहली बार नहीं देखी है बल्कि करोड़ों वर्ष पूर्व भी मनुष्य ऐसी उन्नति अनेकों बार देख चुके हैं। विज्ञान बनता बिगड़ता रहता है। लोग बदल जाते है, भाषाएँ बदल जाती है, रिलिजन बदल जाते है, देश बदल जाते है किन्तु सृष्टि के नियम सदा वही रहते हैं। सृष्टि के नियमों को जानते ही मनुष्य अपनी बुद्धि लगाकर अनेकों प्रकार की विज्ञान उन्नत कर लेता है। कुछ लोग कहते होंगे कि हवाई जहाज की खोज मनुष्यों की सबसे बड़ी उन्नति थी। उसके बाद मनुष्य मानवरहित राकेट से चाँद तथा मंगल तक पहुँच गया है। वास्तव में महत्वपूर्ण हवाई जहाज नहीं बल्कि गुरुत्वाकर्षण, गति तथा बल जैसे सृष्टि के नियम है।

यह सत्य है सृष्टि के नियम ही वह चाबी है जिससे विज्ञान का प्रत्येक ताला खोला जा सकता है। सृष्टि के नियम बनाने वाले ने हमें प्रत्येक नियम का ज्ञान करोड़ों वर्ष पूर्व ही दे दिया था तथा साथ ही साथ मनुष्यों को बुद्धि भी दे दी थी ताकि नियमों को जानकार मनुष्य विज्ञान में उन्नति करता रहे। अणु परमाणु, वायु, आकाश, जल, अग्नि जैसे पदार्थों के गुण जानने के बाद मनुष्य ने उनसे अनेकों लाभदायक आश्चर्यजनक पदार्थ बना लिए हैं।

आज के मनुष्य तथा वैज्ञानिक इस विज्ञान की उन्नति पर घमंड करते हुए कहते हैं कि इससे पहले इतनी उन्नति संसार में कभी नहीं हुई जबकि धरती को बने हुए करोड़ों वर्ष हो चुके हैं। आज के इतिहासकार अपने को बहुत बड़े विद्वान मानते हुए लिखते हैं कि 5000 साल पहले संसार में आदिमानव तथा वनमानुष रहते थे जिनको धातुओं का भी ज्ञान नहीं था। इन लोगों को उत्तर देते हुए मैंने सदैव यही कहा है कि विज्ञान के प्रत्येक सिद्धांत तथा सृष्टि के प्रत्येक नियम का उल्लेख वेदों में किया हुआ है। सृष्टि के प्रत्येक नियम की खोज का श्रेय पिछले 500 वर्ष में हुए कुछ यूरोप के विद्वानों को दे दिया जाता है किन्तु प्रत्येक नियम का ज्ञान मनुष्यों को संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेदों में पहले ही दिया है।

इस प्रकार कहने पर कुछ लोग प्रश्न खड़ा करते हैं कि यूरोप के लोगों ने तो वेद शास्त्र नहीं पढ़े। फिर कैसे उन्होंने विज्ञान में उन्नति कर ली ? आज के समय में वेद विज्ञान की क्या आवश्यकता है जबकि मनुष्य मंगल ग्रह तक पहुँच गया है ? कुछ लोग तो कह देते है कि 21वीं सदी में वेद विज्ञान बेकार है तथा अब इसकी मनुष्यों को कोई आवश्यकता नहीं है। वास्तव में यह केवल विज्ञान का विषय नहीं है बल्कि इतिहास का विषय भी है। बड़े ही ऐतिहासिक तथ्यों तथा अनुभवों के आधार पर ऐसे सभी प्रश्नों के प्रमाणिक

उत्तर आपको सरल शब्दों में रोचक ढंग से समझने को मिलेंगे। इस अध्याय से अनेकों गूढ़ प्रश्नों का हल भी आपको प्राप्त हो जायेगा। इन विषयों को संक्षेप में मैंने पहले भी लोगों के सामने प्रस्तुत किया है किन्तु इस विषय को पुस्तक रूप देते हुए मैंने अनेकों मूल्यवान प्रमाण, मेरे व्यक्तिगत अनुभव तथा नए दृष्टिकोण से युक्त इतिहास को क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया है।

युद्ध का एक प्राचीन तरीका है कि यदि शत्रु का इतिहास समृद्धिशाली तथा गौरवशाली रहा है तो उसको नष्ट कर दो। इनका सीधा सिद्धांत होता है कि - **"By half truths break old moral virtues, honesty, valor and earnesty."**[125] बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटी में बैठे प्रोफेसर अपने ही देश के प्राचीन इतिहास के प्रति नौजवानों का मोह भंग करने का प्रयास करते रहते हैं।

इन लोगों का एक सिद्धांत और होता है कि स्वयं उत्तर देने के चक्कर में मत पड़ो तथा दूसरे के प्रश्नों को ख़त्म मत होने दो। इसका अर्थ हुआ कि ये लोग उत्तर देने में नहीं बल्कि नए नए प्रश्न खड़े करके उत्तर मांगने में विश्वास करते हैं। ऐसे प्रोफेसर देश की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, विज्ञान, इतिहास, धर्म आदि से लोगों की श्रद्धा हटाने के लिए नए नए प्रश्न खड़े करते रहते हैं। इस अध्याय में इस समस्या को जड़ से ही काट दिया जाएगा।

[125] Communist Rules of Revolution.

4.1 बिना वेदों के दुनिया ने कैसे वैज्ञानिक उन्नति की ?

यह सर्वविदित है कि वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है। अब तक के विषय पढ़कर आप यह भी जान गये होंगे कि वेदों में ज्ञान-विज्ञान की वो सब गूढ़ बातें लिखी हुई हैं जिनको आज वैज्ञानिक खोज रहें हैं। किन्तु प्रश्न उठता है कि जिन देशों में वेद नहीं है वहां पर विज्ञान ने इतनी उन्नति कैसे कर ली ? अतः आज संसार में वेद जैसे मानव धर्मशास्त्र की क्या आवश्यकता है ?

यदि ज्ञान को दो प्रकार से विभाजित करें तो आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान कह सकते है। आध्यात्मिक ज्ञान के अंतर्गत सृष्टि के रचयिता और शरीर में उपस्थित जीवात्मा से सम्बंधित ज्ञान आते हैं वहीं सांसारिक पदार्थों के विषयों को जानना भौतिक ज्ञान के अंतर्गत आता है। मनुष्य समाज को शांति-समृद्धि के लिए दोनों प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होती है। अध्यात्मिक उन्नति समाज में मानवीय गुणों को बढ़ाती है। आध्यात्मिकता के साथ की गई भौतिक उन्नति प्राणिमात्र के हित में होती है। यदि समाज में अध्यात्मिक अवनति (पतन) हो जाये और भौतिक उन्नति चरम पर पहुँच जाये तो विनाशकारी विचारों और अमानवीय गुणों का समाज बन जाता है। ऐसा समाज बारूद के ढेर पर स्थित होता है जो कभी भी नष्ट हो सकता है। अध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में भौतिक ज्ञान का दुरूपयोग होता है। आज मनुष्य ने भौतिक ज्ञान में बहुत उन्नति की है किन्तु विचार कीजिये इस 200-300 वर्षों में भौतिक विज्ञान ने संसार का कितना विनाश कर दिया है।

अब तक के अध्याय पढ़कर आप यह तो समझ ही गये होंगे कि मनुष्य का बच्चा बिना सिखाए स्वयं से कुछ नहीं सीख सकता है। यदि उसको कोई कुछ नहीं सिखाए तो वह अपने आस पास उपस्थित पशु-पक्षियों आदि को देखकर उन जैसा ही सीख लेता है। बिना किसी के सिखाए हुए वह उन बंदरों आदि जैसा है जो मनुष्यों आदि को देखकर उन जैसा (नकल) ही करने का प्रयास करते हैं। किन्तु मनुष्य और अन्य बंदर आदि में बहुत बड़ा अंतर है कि मनुष्य के पास बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धि है और बन्दर आदि पशुओं के पास जीवन जीने के लिए जितने ज्ञान की आवश्यकता है उतना स्वाभाविक ज्ञान है। यदि कोई बंदरों को कपड़े सिलने वाली सुई बनाना अथवा अन्य कुछ ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दे तो वो कभी भी मनुष्य की भांति नहीं सीख सकते हैं। इसका अर्थ है कि मनुष्य सृष्टि की आदि से ही बुद्धिमान है और प्रारंभ में जब सर्वप्रथम ईश्वर ने मनुष्यों को उत्पन्न किया तो उनको ज्ञान भी दिया। उसी प्रारंभीय ज्ञान को मानव धर्मशास्त्र अर्थात् वेद कहा जाता है जिसका अर्थ है ज्ञान। उसके बाद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, एक स्थान से दूसरे स्थान तक वह ज्ञान मनुष्य फैलाते जाते हैं। उसके उपरांत वह विद्या बिना वेदों के भी संसार में फैल जाती है।

आज जो लोग यह कह रहे हैं कि विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है वे लोग नितांत घमंडी और अपने से पहले वाले लोगों के पुरुषार्थ को नीच समझने वाले हैं। आज जो भी विज्ञान आप संसार में देख रहे हैं यह कोई 100-500 वर्ष में यहाँ तक नहीं पहुंची है। यह छोटी छोटी विद्याओं के सीखते रहने से पूरी मानवजाति के हजारों-लाखों वर्ष के अथक परिश्रम का फल है। आज विज्ञान की उन्नति को देखकर लोग भूल जाते हैं कि सृष्टि की आदि में मानव धर्मग्रन्थ अर्थात् वेद से ही मनुष्य ने ज्ञान प्राप्त किया था। आज पृथ्वी

का प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक स्थान यहाँ तक की मनुष्य भी विषैला हो चुका है। भौतिक ज्ञान में संसार ने इतनी उन्नति कर ली है कि संसार की आधी से अधिक जनसँख्या को पीने का पानी नहीं मिल पा रहा है और प्रतिदिन लाखों लोग भूख से तड़प तड़प कर मर जाते हैं।

पहले भौतिक ज्ञान पर ही विचार करते हैं। सांसारिक पदार्थों का ज्ञान अर्थात् विज्ञान को दो प्रकार से उन्नत किया जा सकता है।

- प्रथम मानव धर्मग्रन्थ वेद को पढ़ और समझकर भी विज्ञान में उन्नति की जा सकती है। वेदों में ब्रह्माण्ड विज्ञान जैसे सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, चन्द्रमा पर जीवन, आकाशगंगाएँ, वर्षा विज्ञान आदि अनेकों विषयों को संक्षेप में बताया गया है। तीव्र गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाले साधन बनाने के अनेकों मंत्र हैं। इन साधनों में हवा में चलने वाले विमानों को बनाने की विद्या भी है। बिजली बनाने की विद्या से लेकर अणु-परमाणु तक सभी प्रकार की विद्याएँ वेदों में दी गयी है। किन्तु ये सब संक्षेप में सिद्धांत रूप से दी गयी है। यदि विस्तार से वेदों में एक एक विद्या को उन्नत करने का ज्ञान दिया जाता तो वेदों का आकार इतना विशाल हो जाता कि मनुष्य उसको संभाल ही नहीं पाता है। दूसरा यदि प्रत्येक विषय पर एक एक बात गहराई तक सीखा दी जाती तो मनुष्य की बुद्धि का क्या प्रयोग होता ?

  विद्यालयों आदि में गणित की पुस्तक में सिद्धांत (फ़ॉर्मूले) दिए जाते हैं। उन फार्मूलों का प्रयोग करके हजारों-लाखों प्रश्नों का उत्तर सरलता से निकाला जा सकता है। ऐसा नहीं होता कि लाखों प्रश्न

उत्तरों से गणित की पुस्तक को लाखों पृष्ठों की बना दिया जायें। इसी प्रकार वेदों में भी सिद्धांत रूप से ज्ञान दिया गया है।

- दूसरा संसार के पदार्थों को देख समझकर भी भौतिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है। इसमें समय बहुत लगता है जैसे वेदों को पढ़कर अग्नि के गुणों को सरलता से जाना जा सकता है कि अग्नि तीक्ष्ण होती है और उस अग्नि से अनेकों प्रकार के कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं। किन्तु बिना वेदों के भी मनुष्य यह ज्ञान ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि का अध्ययन करके प्राप्त कर सकता है। अग्नि के पास जाकर वह अग्नि के गुणों को जान सकता है किन्तु उसके प्रयोगों को जानने के लिए बहुत समय लगेगा। अतः भौतिक ज्ञान वेदों से अथवा सृष्टि के अध्ययन से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि जिसने वेद नहीं पढ़े उसको ज्ञान होगा ही नहीं बल्कि वेदों का ज्ञान देने वाले ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि को देखकर ईश्वर की दी हुई बुद्धि के बल पर भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु वह ज्ञान भटकाने वाला होता है क्योंकि सृष्टि आदि को देखकर केवल भौतिक ज्ञान में उन्नति की जा सकती है, आध्यात्मिक ज्ञान में नहीं। जहाँ पर भौतिक ज्ञान समाप्त होता है वहां से आध्यात्मिक ज्ञान का प्रारंभ होता है। जिस प्रकार शरीर तथा प्राण दोनों ही जीवन के लिए आवश्यक हैं वैसे ही भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ज्ञान संसार के लिए आवश्यक है। बिना अध्यात्म ज्ञान के भौतिक ज्ञान विनाशकारी होता है तथा दीर्घकाल तक भी नहीं चलता है।

सज्जनों उन्नति के साथ अवनति अर्थात् उत्थान के साथ पतन अवश्य होता है। जिस दिन से आपने घर बनाना प्रारंभ किया उसी दिन से वह घर टूटना भी प्रारंभ हो जाता है। अणु परमाणुओं के मेल से बना कोई भी पदार्थ सदा नहीं रहता है। इसी प्रकार से सभ्यताएँ बनती बिगड़ती हैं। आगे बढ़ती हैं और उन्नति करती हैं। फिर किसी न किसी कारण से समाप्त होती रहती हैं और फिर से नई सभ्यता और फिर से उसका पतन यह प्रवाह निरंतर चलता रहता है। अतः यह पहली बार नहीं है कि मनुष्य ने इतनी भौतिक उन्नति प्राप्त की है। ऐसा कहना आज के मनुष्यों का मिथ्या घमंड दर्शाता है।

अब आध्यात्मिक ज्ञान पर विचार करते हैं। यह ज्ञान भौतिक ज्ञान की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म है। जीवात्मा और ईश्वर भौतिक पदार्थों से भी सूक्ष्म है अतः उनका ज्ञान किसी मशीन अथवा किसी फार्मूले से नहीं हो सकता है। इस साधारण सी बात को संसार के श्रेष्ठ वैज्ञानिक माने जाने वाले लोग जानते ही नहीं हैं। इसीलिए संसार को बनाकर उसको चलाने वाली शक्ति को खोजने के लिए खरबों डॉलर व्यय करके वैज्ञानिकों ने एक बहुत ही विशालकाय एल.एच.सी मशीन का निर्माण किया। सन् 2008 से 2012 तक वैज्ञानिक परीक्षण करते रहे किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। अब संसार का अपार धन लगा है तो संसार के सामने कुछ न कुछ बातें फैला दी जाती है। लगभग 30 किलोमीटर लम्बी मशीन से संसार का सबसे सूक्ष्म तत्त्व खोजने वाले भूल गये कि वह तत्त्व सर्वव्यापक है और उस मशीन के भी कण कण में है। यदि वह तत्त्व किसी पदार्थ से बना होता तो निश्चित रूप से उसको विज्ञान की सहायता से बने किसी साधन से खोजा जा सकता था जैसे प्रोटोन, इलेक्ट्रान आदि को जान लिया गया। किन्तु वह बना नहीं है

और संसार के सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ से असंख्य गुना सूक्ष्म है तो उसको भौतिक विज्ञान से जानना असंभव है। हाँ ईश्वर ने स्वयं ही उस तक पहुँचने हेतु अत्यंत सूक्ष्म तत्त्व (बुद्धि) बना कर जीवात्मा पर कृपा की है। अष्टांग-योग के द्वारा बुद्धि आदि की सहायता से हम स्वयं को (आत्मा को) जान लेते है और उसके उपरांत जीवात्मा ही परमात्मा का अनुभव कर सकती है। इसके अतिरिक्त सृष्टि के रचयिता तक पहुँचने का कोई मार्ग नहीं है। अतः वर्तमान भौतिक ज्ञान मनुष्य को विनाश की ओर बढ़ा रही है क्योंकि इसमें आध्यात्मिक ज्ञान के लिए कोई स्थान नहीं है। आध्यात्मिक ज्ञान (ईश्वर और आत्मा) ही मनुष्य को पूर्णता की ओर लेकर जा सकता है। मनुष्य की ज्ञान पिपासा आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही पूर्ण हो सकती है।

विचार कीजिये यदि संसार के पदार्थों में इतनी सुन्दरता व सुख आज मनुष्यों को दिख रहा है तो उसके बनाने वाले में कितना सुख होगा। विचार कीजिये जो जीवात्मा मनुष्य शरीर को पाकर भिन्न भिन्न प्रकार के आश्चर्यजनक पदार्थों को बना देती है उस जीवात्मा को जानना संसार का कितना बड़ा आश्चर्य होगा ? जो लोग ये कह रहे हैं कि बिना वेदों के मनुष्य ने आज उन्नति कर ली तो निश्चित रूप से उनको ज्ञान-विज्ञान की सही परिभाषा को जानने की आवश्यकता है। यह संभव है कि जैसे तैसे हजारों वर्षों तक पुरुषार्थ करके और सृष्टि का अध्ययन करके मानव समाज भौतिक ज्ञान में उन्नति कर ले किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान एक साथ प्राप्त करना है तो मनुष्यों को मानव धर्मग्रन्थ अर्थात् वेदों की ओर लौटना ही होगा।

परमाणु विद्या के जनक महर्षि कणाद लिखते है कि **"यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि सह धर्मः"** अर्थात् जिस विद्या से संसार के सभी पदार्थों के साथ साथ ईश्वर-आत्मा आदि का भी ज्ञान हो उसे धर्म कहते हैं।

अतः ऐसा नहीं है कि मनुष्य वेदों के ज्ञान के बिना उन्नति नहीं कर सकता है। ईश्वर ने मनुष्यों को बुद्धि तत्व दिया है जिससे मनुष्य प्रत्येक पदार्थ का अध्ययन, आंकलन और विश्लेषण कर सकता है। किन्तु जहाँ पर भौतिक ज्ञान विज्ञान का अंत होता है उससे आगे की विद्या केवल वेदों द्वारा ही मनुष्य जान सकते हैं। जिस प्रकार जीवन जीने के लिए भोजन तथा पानी के साथ साथ वायु आदि की भी आवश्यकता होती है वैसे ही भौतिक ज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता सदा होती है। जिस दिन संसार में ये दोनों ज्ञान सर्वसाधारण में पहुँच जायेंगे उस दिन लोगों को मन बहलाने के लिए किसी जन्नत आदि के लालच, पापमुक्ति और जीसस की प्राप्ति के लालच की आवश्यकता नहीं होगी। समाज कर्मफल व्यवस्था के अनुसार शांति और समृद्धि को प्राप्त होगा।

4.2 वर्तमान विज्ञान का घमंड

मेरा मानना है कि विज्ञान कभी भी हमारा तुम्हारा नहीं होता है। किन्तु घमंड में चूर कुछ लोग प्रश्न उठाते हैं कि वैदिक आर्य लोग केवल गाय-भैंस चराना जानते थे। भारत के लोगों का अपमान करने के लिए मूर्खतापूर्ण प्रश्न किये जाते हैं। कुछ ऐसे ही प्रश्नों पर प्रकाश डालते हुए संक्षेप में भारत से फैली विश्व सभ्यता के दिग्दर्शन करेंगे।

प्रश्न - यदि भारत में सभी प्रकार का ज्ञान विज्ञान पहले से ही था तो वह समाप्त कैसे हुआ ?

उत्तर - आज नासा जैसी कुछ एजेंसी विज्ञान की उन्नति में अपनी पीठ थपथपा रही हैं। दुनिया के देशों में श्रेय लेने की होड़ लगी है कि यह विज्ञान हमने दिया वह विज्ञान हमने दिया। विज्ञान कभी भी हमारा तुम्हारा नहीं होता है किंतु सबके कल्याण के लिए होता है। जिसने भी संसार के उत्थान के लिए पुरुषार्थ किया उसकी जय जयकार होनी ही चाहिए। ये भी सच है कि बाद के काल में नासा व अन्य देशों के वैज्ञानिकों ने दिन-रात परिश्रम करके विद्याओं का विस्तार किया है। इस कार्य के लिए वे सभी प्रशंसा के पात्र भी हैं।

अस्तु, उत्थान के साथ पतन जुड़ा हुआ है। प्रयत्न और पुरुषार्थ जहाँ भी होगा वहां उन्नति अवश्य होती है। उन्नति के समय अपार धन सम्पदा, ताकत, मौज मस्ती के साधन पैदा हो जाते हैं। फिर उनके कारण आलस्य और प्रमाद बढ़ जाने से अवनति होती है। जैसे महाभारत युद्ध के बाद यदु वंशियों, वृष्णि वंशियों तथा अन्धक वंशियों का आपसी झगड़े में पतन हुआ। इसी प्रकार यूरोप के देशों और अमेरिका आदि के लोग अब उतने पुरुषार्थी नहीं रह गये हैं जितने की भारत और चीन आदि देशों के लोग हैं। इसलिए सबने मान लिया है कि 21वीं सदी से विश्वशक्ति एशिया में रहेगी। जिस प्रकार मनुष्य पहले बच्चा होता है फिर युवा और अंत में वृद्ध होकर समाप्त हो जाता है वैसे ही सभ्यताएँ बनती बिगड़ती रहती हैं। व्यवस्थाएं भी बदलती रहती हैं। महाभारत युद्ध ने सारी दुनिया की व्यवस्थाओं को छिन्न भिन्न कर दिया था। पूरी दुनिया के विद्वान शिल्पी युद्ध के कारण काल का ग्रास बन गये थे। कुछ सुंदर पंक्तियों से समझिये -

शक्ति, सामर्थ्य, सेवा सदा संसार में रहता नहीं,

आज वो है जहाँ, कल कोई और था,

ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था ॥

प्रश्न - यदि हजारों लाखों वर्ष पूर्व भी संसार में विज्ञान था तो उसके अवशेष उपलब्ध क्यों नहीं होते हैं ?

उत्तर - अब प्रश्न खड़ा हो गया है कि यदि संसार ने पहले भी उन्नति की थी तो उनके कुछ अवशेष, चिह्न, नमूने आदि प्राप्त होने चाहिए किन्तु ऐसा संसार में नहीं हो रहा है। जो लोग इतिहास विद्या को गहनता से पढ़े हैं वह जानते हैं कि हजारों-लाखों वर्ष पूर्व के अवशेष न मिलने के अनेकों कारण होते हैं।

- हजारों सालों में अनेकों पदार्थ क्षय (गल) को प्राप्त हो जाते हैं। वंशज अपने पूर्वजों की वस्तुओं का प्रयोग करते चले जाते हैं। आज भी अपने पिता, दादा की वस्तुएं उनके बच्चे उपयोग करते हैं। इन दोनों कारणों से इतिहास मिटता रहता है। प्राकृतिक आपदाओं या गृहयुद्धों अथवा बाहरी आक्रान्ताओं के कारण भी सभ्यताएँ इतिहास से मिट जाती हैं। ग्रंथो व साहित्य में स्वार्थी लोग विभिन्न देश, काल, परिस्थितियों में मिलावट करते जाते हैं जिसके कारण उनकी ऐतिहासिकता नष्ट हो जाती है।

जैसे रामायण, महाभारत जैसे इतिहास ग्रंथों में बड़े स्तर पर काल्पनिक कहानियों तथा श्लोकों ने स्थान ले लिया तो विश्व समुदाय ने उन सही इतिहास के ग्रंथों को ही काल्पनिक ठहरा दिया। यह तो वही बात हो गयी कि आँख में दर्द है तो आँख ही निकाल दो, दांत में दर्द है तो दांत निकाल दो, हाथ में दर्द है तो हाथ काट दो।

यदि इतिहासविद् इसी प्रकार पक्षपातपूर्ण तरीकों से इतिहास का निर्माण करके लोगों को पढ़ाएंगे तो एक दिन पूरी मानव जाति का बचा हुआ इतिहास भी समाप्त हो जायेगा। जो लोग कहते हैं कि कोई बात नहीं इतिहास समाप्त होने से अच्छा ही होगा वही लोग सबसे अधिक फोन में चित्र (फोटो, वीडियो) आदि बनाकर यादों को संजोते हैं। यदि इतिहास नहीं तो मनुष्य भी नहीं। जो आपने पहले कभी विद्यालय में, यात्रा में, अपने से बड़ों द्वारा, पुस्तकों से, दूसरों को जो देख कर सीखा है आदि वह सब इतिहास हो जाता है। किन्तु आप प्रतिदिन उसी इतिहास में सीखी हुई विद्या से अपना जीवन चलाते हैं। इस बात को समझने के लिए थोड़ी बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी।

- इतिहास के नष्ट होने का एक और बड़ा कारण है इतिहास पर शोध करने वाले लोग ही सभ्यताओं के अवशेष (बचे हुए पदार्थ आदि) निकाल लेते हैं। फिर उनसे वो अपने अपने अनुसार लाभ लेने के लिए नई नई परिभाषाएं बनाते हैं और पूरा इतिहास विकृत हो जाता है। अलग अलग समय में उपस्थित राजाओं के दबाव में भी इतिहास को इच्छा अनुसार बनाया जाता है। इससे भी आने वाली पीढ़ियों को अवशेष प्राप्त नहीं होते हैं आदि जैसे अनेकों कारण हैं।

उदाहरण स्वरुप जब अंग्रेज भारत में रेलवे लाइन बिछा रहे थे तो हड़प्पा सभ्यता की ईंटों को उखाड़ उखाड़ कर रेलवे में लगा दिया गया। पाकिस्तान व भारत के जिन जिन स्थलों पर हड़प्पा सभ्यता के बड़े बड़े मकान, तालाब आदि बने हुए थे उनकी ईंटों को लेकर लोगों ने अपने घर बना लिये। आज भी हड़प्पा के अनेकों अवशेष बचे है जिनको स्थानीय लोगों ने घेर रखा है। कुछ अवशेषों को उखाड़ कर इतिहास पर शोध करने वालों ने बड़े बड़े नगरों के संग्रहालयों में प्रदर्शन हेतु रख दिया है। लगभग 2500-2000 ई.पू की महान सभ्यता के नामों निशान मिटाये जा रहे हैं। फिर 1000 साल बाद आने वाली पीढियां कहेंगी कि कोई हड़प्पा सभ्यता नहीं थी क्योंकि उनके कोई अवशेष नहीं है।

हजारों वर्ष पूर्व की बात छोड़िये यदि हम मरुस्थल में जिस स्थान पर से गुजर जाते हैं उसी स्थान पर 1 घंटे पश्चात् आकर अपने पैरों के निशानों को खोजेंगे तो पैरों के निशान भी हमें नहीं मिलेंगे। एक समय आएगा जब संसार में भयानक महामारी, प्राकृतिक आपदा अथवा परमाणु युद्ध से करोड़ों लोग नष्ट हो जाएंगे। सब सरकारें समाप्त हो जाएंगी। सब साधन-संसाधन समाप्त हो जायेंगे। कोई कार्य करने वाला नहीं होगा। जो लोग कभी कंप्यूटर पर बैठकर विलासिता पूर्ण (अपार धन कमाना) जीवन जीते होंगे वो उस समय भोजन के लिए मारे मारे फिरेंगे। मनुष्यों के लिए अस्तित्व की रक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। भूख लगने पर हवाई जहाज के टुकड़े नहीं खाये जा सकते हैं। उस भयानक स्थिति में दो तीन पीढ़ी तो ऐसे ही जीवन जीने हेतु घुमक्कड़ बनकर और संघर्ष करते हुए निकल जाएँगी। उनके बाद आने वाली पीढ़ियों

को ज्ञान-विज्ञान का कुछ भी पता न रहेगा। ऐसे ही सभ्यताओं में उतार-चढ़ाव चलता रहता है जब तक महाप्रलय का समय नहीं आता है।

जो लोग बीच बीच में सृष्टि के समाप्त होने का अनुमान लगाते रहते हैं उनको पता होना चाहिए कि अभी संसार 2 अरब से भी अधिक वर्षों तक समाप्त नहीं होगा। स्वर्णिम इतिहास के सैकड़ों प्रमाण तो मैं स्वयं Thanks Bharat YouTube Channel से अनेकों वीडियो में दे चुका हूँ। भविष्य में समय मिल पाया तो महाभारत से आज तक के इतिहास पर लेखनी अवश्य चलाऊंगा। अब कोई यह प्रश्न खड़ा करता है तो समझ लीजिये वह किसी न किसी स्वार्थ, पूर्वाग्रह, हठ का शिकार है अथवा किसी दुर्घटना के कारण उसका दिमाग ऐसे गहन विषयों को पकड़ने में असमर्थ है। या यूँ कहे कि वह किसी न किसी प्रकार के पागलपन का शिकार है।

4.3 वर्तमान विज्ञान का श्रेय

वैसे तो वर्तमान विज्ञान में संसार के सभी देशों ने अपना अपना योगदान दिया है। फिर भी कुछ देशों और सम्प्रदायों में श्रेय लेने की तीव्र इच्छा बनी रहती है। विज्ञान ने यहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत लम्बी यात्रा की है किन्तु पिछले 100 वर्षों में विज्ञान आश्चर्यजनक रूप से आगे बढ़ा है। इन्हीं 100 वर्षों की एक झलक मैं आपको दिखाना चाहता हूँ ताकि आपको समझ में आ सके कि वर्तमान विज्ञान का प्रवाह किस दिशा से चला है।

4.4 द्वितीय विश्वयुद्ध और जर्मनी

युद्ध के समय सदा से ही विरोधी पक्ष का निशाना सेनापति, विद्वान, शिल्पी तथा वैज्ञानिक ही होते हैं। जर्मन इंजीनियर वर्नहर वान ब्रान ने पेनमुंडे गांव को दुनिया की पहली मिसाइल बनाने के लिए चुना था। सन् 1936 से 1943 तक 12 हजार लोगों के साथ वो इस मिशन पर लगे रहे। एडोल्फ़ हिटलर ने इस मिशन पर विशेष ध्यान दिया तथा बहुत धन लगाया था। दूसरे विश्वयुद्ध के बावजूद सहयोगी वैज्ञानिक वाल्टर डार्नबर्गर का 1942 में लिखा महत्वपूर्ण दस्तावेज आज भी उपलब्ध है जिसमें दुनिया के पहले राकेटर एग्रीगेट-4 (ए4) के कामयाब परीक्षण का उल्लेख है। दुनिया के पहले लंबी दूरी तक मार करने वाले रॉकेट का नाम **'वेंजियन्स वेपन'** या बदला लेने वाला हथियार था। इससे सम्बंधित दस्तावेज Thanks Bharat Trust से संपर्क करके प्राप्त किये जा सकते हैं। दूसरे विश्वयुद्ध में जब हिटलर इस हथियार का प्रयोग करने की तैयारी कर रहे थे उसी दौरान ब्रिटिश ख़ुफ़िया एजेंसियों को पेनमुंडे के रॉकेट कारखाने की भनक लग गयी। 17 अगस्त 1943 को ब्रिटिश रॉयल एयरफोर्स ने उस समय का सबसे बड़ा हमला पेनमुंडे पर किया था। इसे ब्रिटेन ने ऑपरेशन **'हाइड्रा'** नाम दिया था। उसके बाद हिटलर ने कारखाना बदलकर जर्मनी के बीचोंबीच मिटेलवर्क में लगा दिया था। जर्मनी की हार से ठीक पहले हालाँकि अभी v1 और v2 राकेट का काम चल रहा था लेकिन फिर भी 2500 वी1 और 1400 वी2 राकेट ब्रिटेन पर छोड़े गये जिनमें लगभग 3000 लोग मारे गये। दुनिया के वैज्ञानिक व सैनिक ऐसी हवाई मशीनों से हुए हमलों को देखकर हक्के बक्के रह गये थे।

4.4.1 जर्मन विज्ञान चुराकर अपना बनाने की प्रतिस्पर्धा

चहुँओर से युद्धों में घिरा जर्मनी कारखाने बदलता रह गया और मित्र देश दूसरा विश्वयुद्ध जीत गये। यदि 1-2 वर्ष का समय और नाजी लोगों को मिल जाता तो युद्ध का परिणाम कुछ और ही होता। युद्ध के पश्चात् अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन तथा फ्रांस जैसे विजेता देशों ने ए4/वी2 तकनीक हासिल करने के लिए जर्मन वैज्ञानिकों और इंजिनियरों की खोज प्रारंभ कर दी। वान ब्रान के नेतृत्व में सभी इंजिनियर अलग अलग ग्रुपों में बंट गये। ताकि कोई एक ग्रुप मरे तो राकेट की तकनीक समाप्त न होवे। राकेट से सम्बंधित सभी डाक्यूमेंट्स और पूरी तकनीक को इन्होंने जर्मनी ऑस्ट्रिया के बॉर्डर पर पहाड़ों तथा गुफाओं में छुपा दिया था। अब ये इंजिनियर थोड़ा सुरक्षित थे क्योंकि जब तकनीक नहीं मिलेगी तब तक कोई भी देश ऐसे होनहार व्यक्तियों को नहीं मारेगा। बाद में तकनीक के कुछ कुछ ब्लूप्रिंट सोवियत संघ ,ब्रिटेन व फ्रांस को भी मिले। इसीलिए ये देश फाइटर जहाजों व स्पेस एजेंसी के मामले में उन्नत है। सबसे बड़ा लाभ अमेरिका को हुआ। मुख्य वैज्ञानिक बर्नहर वान ब्रान इनके हाथ लगा जिसको अमेरिका की नागरिकता दी गई। ब्रान ने लगभग 150 राकेट इंजिनियरों का पता बताकर उनको भी अमेरिका में लाने का महत्वपूर्ण काम किया था। दूसरे प्रसिद्ध वैज्ञानिक और ब्रान के मुख्य साथी वाल्टर डार्नबर्गर ने भी अमेरिका के अन्तरिक्ष मिशनों की कमान संभाली थी। 1958 में नासा की स्थापना के बाद इसी वैज्ञानिक ने नासा के प्रसिद्ध मिशन 'अपोलो' के लिए कार्य किया व अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों ने चांद तक यात्रा की। इसी रिसर्च के आधार पर इंटरकांटिनेंटल मिसाइलें विकसित की गई।

नासा की सफलता के पीछे जर्मन वैज्ञानिकों का सबसे बड़ा हाथ है। सोवियत संघ (Soviet space program) ने जब सभी राकेट वैज्ञानिकों के अमेरिका में होने की बात सुनी तो राकेट तकनीक प्राप्त करने के लिए उसने दिन-रात, आकाश-पाताल एक कर दिया। सोवियत संघ के वैज्ञानिक पेनमुंडे गाँव पहुंचे और किस्मत से Alexei Isaev को supersonic bomber rocket से सम्बंधित एक दस्तावेज मिला तथा वी2 राकेट के बिखरे हुए कुछ हिस्से भी मिले।

इतना ही नहीं एक वी2 राकेट जो नाजियों ने पोलेंड में उतारा था उसको भी ढूंढ निकाला। यही से सोवियत संघ और अमेरिका की अन्तरिक्ष उड़ान शुरू हुई। इतना ही नहीं Nuclear weapons की सोच भी हिटलर की ही थी और उसी के वैज्ञानिक सर्वप्रथम इस दिशा में कार्य कर रहे थे। 1944 में जर्मनी की हार के बाद राकेट तकनीक की भांति परमाणु तकनीक व वैज्ञानिक भी अमेरिका के हाथ लगे। “A discovery by nuclear physicists in a laboratory in Berlin, Germany, in 1938 made the first atomic bomb possible, after Otto Hahn, Lise Meitner and Fritz Strassman discovered nuclear fission. When an atom of radioactive material splits into lighter atoms, there’s a sudden, powerful release of energy.”

जिस खुफिया मिशन पर हिटलर काम कर रहा था उसमें अधिकांश कारीगर व मजदूर यहूदी युद्धबंदी थे। इसीलिए यहूदी लोगों में भी वह विद्या फ़ैल गयी और आज इजराइल ने बहुत वैज्ञानिक उन्नति की है। अमेरिका ने इन यहूदी कारीगरों को भी शरण दी। आज भी इजराइल के बाद सबसे अधिक यहूदी अमेरिका में है तथा अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिका की राजनीति में बहुत

ताकत रखते हैं। जिन यहूदियों के पास दुनिया में कोई जमीन का टुकड़ा नहीं था आज अमेरिका पर पकड़ बनाकर अपने लिए एक नया देश 'इजराइल' बनवा लिया और तकनीक को भी उन्नत किया।

ये थी जर्मनी की ताकत और तकनीक जिसके पीछे हिटलर का समर्थन व प्रोत्साहन कार्य कर रहा था। जिस हिटलर को दुनिया मित्र देशों के दुष्प्रचार के कारण संसार का सबसे बुरा व्यक्ति बताती है उसी हिटलर और जर्मनी के बल पर आज की वैज्ञानिक दुनिया यह उछल कूद कर रही है। आधी दुनिया पर अत्याचार करने वाला ब्रिटेन अच्छा है तो हिटलर कैसे बुरा हुआ ? जापान पर परमाणु बम बरसाने वाला अमेरिका अच्छा है तो हिटलर बुरा कैसे हुआ ? जो भारतीय हिटलर का विरोध करते हैं उनको पता होना चाहिए कि इसी हिटलर और जर्मनी ने सुभाष चन्द्र बोस का साथ दिया था। हमारी सेना ब्रिटेन की गुलामी के कारण हिटलर के विरुद्ध लड़ रही थी। ब्रिटेन हमारा भी शत्रु था और शत्रु का शत्रु मित्र होता है। हमने मित्रों को उस समय के कुछ मूर्ख नेताओं के बहकावे में आकर शत्रु मान लिया।

फरवरी 2020 में मुझे यूरोप जाने का अवसर प्राप्त हुआ। नीदरलैंड के द हेग नगर में रहने वाले लियो नामक व्यक्ति से इस विषय पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मूल रूप से वह व्यक्ति डच है। कुछ समय बात करने पर पता चला कि ऐतिहासिक घटनाओं की अच्छी जानकारी उसके पास थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पर जर्मनी ने नीदरलैंड की राजधानी एम्स्टर्डम को अपने कब्जे में ले लिया था तो भी लियो हिटलर से अधिक बुरा मित्र देशों को बता रहा था।

सब जानते हैं कि हिटलर के राकेटों ने ब्रिटेन में 3000 लोगों को मार दिया था किन्तु कोई यह बात नहीं करता कि ब्रिटेन के हवाई हमले में प्राचीन नगर कोलोन को पूरा नष्ट करके 50000 से अधिक लोग मार दिए थे। उसने बताया कि प्रथम विश्व युद्ध में जर्मन लोगों का बड़ा अपमान किया गया था। उनको घुटनों पर बैठाकर नाक रगडनी पड़ती थी। उसके बाद ज्ञात इतिहास की सबसे अपमानजनक **वर्साय की संधि** हुई। इसमें न केवल जर्मनी पर अपार आर्थिक कर्ज का बोझ डाला गया बल्कि जर्मन लोगों को उन्हीं के देश में राष्ट्रसंघ देशों की शर्तों पर गुलाम बनाकर रख दिया था। कोई सोच भी नहीं सकता कि वह कर्ज उतारने में जर्मनी को 92 वर्ष लगे है।[126] जर्मन लोग भूखे मर रहे थे। अर्थव्यवस्था समाप्त हो चुकी थी। ऐसे में देश में गृहयुद्ध की सम्भावना थी जिसमें किसी भी विश्वयुद्ध जितने लोग मर सकते थे। इन परिस्थितियों में हिटलर आगे आया और दुःखी देश को नई दिशा दी। सन् 1929-1930 की आर्थिक मंदी का प्रकोप कम होने पर भी जर्मनी के कई बड़े बैंक अचानक से दिवालिया हो गये जिनके मालिक यहूदी लोग थे। प्रथम विश्वयुद्ध के समय और संधि के समय यहूदी नेताओं और कम्युनिष्टों के हाथ जर्मनी की सत्ता थी। लोगों के मन में उनके प्रति रोष उत्पन्न हो गया था। जो लोग ये कहते हैं कि हिटलर ने जर्मन लोगों को उकसाया वो मनुष्य की मानसिकता, संवेदना और परिस्थितियों को समझने का प्रयास ही नहीं करते हैं। यह जर्मन लोग थे जिन्होंने हिटलर को जन्म दिया था। जब मैं जर्मनी पहुँचा और कई ऐतिहासिक म्युजियमों में गया तो देखा कि जर्मन लोग अपनी मातृभूमि को प्राणों से अधिक चाहते हैं। 1871 में फ्रांस से युद्ध जीतने के बाद भी जर्मनी ने विजित क्षेत्र एक संधि द्वारा

[126] A. Hall, ‘Germany ends World War One reparations after 92 years with £59m final payment’, *Mail Online* updated 29 September 2010, dailymail.co.uk

वापिस कर दिए थे। ऐसे स्वाभिमानी राष्ट्र के साथ जबरदस्ती वर्साय की संधि कर लेना करोड़ों लोगों को भूख और लाचारी की ओर धकेलना था। वास्तव में ये युद्ध जर्मनी ने प्रारंभ नहीं किये थे। लगता है संसार भूल गया था कि कैसे फ्रांस, ब्रिटेन, डच तथा पुर्तगाल ने आधे संसार को गुलाम बनाया और उनका सब कुछ लूट कर ले गये।

सब मनुष्यों में गुण दोष होते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हिटलर श्रेष्ठ व्यक्ति था अथवा अच्छा व्यक्ति था। निश्चित रूप से हिटलर के कुछ कार्य उसको बहुत बुरा कहने पर विवश कर देंगे किन्तु हिटलर के विरोधी संसार के सबसे बुरे लोग थे। क्रिया की प्रतिक्रिया संसार में अवश्य होती है। संसार की बड़ी ताकतों से लड़ने के लिए हिटलर को घर में आवाज उठाने वाले कुचलने पड़े। युद्ध कभी भी पूर्णतः व्यवस्थित नहीं चलता है कि किसी एक स्थान पर दो लोग मारने हैं तो दो ही मरेंगे। राज आदेश तो दो मारने का होता है किन्तु 100 भी मर सकते हैं। राजा अकेला निर्णय नहीं करता है। कुछ निर्णय देश, काल, परिस्थिति के कारण भी होते हैं। सैनिक अथवा जनता का आक्रोश भी कई बार राजा को संभालना कठिन होता है। जैसे ब्रिटेन वालों ने भारतीयों का अपमान किया था उससे भी घटिया व्यवहार प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के लोगों के साथ किया था। अतः कई बार लोग स्वयं निर्णय करने पर उतर आते हैं।

1857 की क्रांति में अनेकों अप्रिय और गलत घटनाएँ भी घटित हुई थी तो क्या यह कह दिया जायें कि अंग्रेज सज्जन थे और भारतीय अत्याचारी थे। हिटलर ने अनेकों पाप किये किन्तु दूसरे विश्वयुद्ध में मारे गये लोगों के प्राण व्यर्थ नहीं गये। यूरोप की साम्राज्यवादी शक्तियां इतनी कमजोर हो गयी कि उनको सभी गुलाम देशों को स्वतंत्र करना पड़ा था। यूरोप जाकर मुझे

हिटलर, जर्मन लोग तथा दूसरे विश्व युद्ध से सम्बंधित अनेकों आश्चर्यजनक जानकारी पता चली जो संभवतः गूगल अथवा सोशल मीडिया द्वारा कभी नहीं मिल पाती।

वास्तव में विजेता ही इतिहास का निर्माण करता है। भारतीय इतिहास का निर्माण इसाई अंग्रेज जाति ने किया है। इतिहास के नाम पर झूठ परोसकर सदा के लिए गुलाम मानसिकता भारतीयों में भरने का कार्य कर दिया गया। उसी प्रकार आप जहाँ भी ढूंढने निकलेंगे आपको केवल हिटलर के विरुद्ध ही सारे तथ्य और जानकारियां मिलेंगी। सारा साहित्य और पुस्तकें हिटलर के विरुद्ध मिलेंगे। लेखनी राज्य के पक्ष में सदा से चलती आई है। स्टालिन और माओ जैसे करोड़ों की हत्या करने वाले कुछ पृष्ठों में सिमट कर रह गये और हिटलर पर संसार के प्रत्येक पुस्तकालयों में नकारात्मक साहित्य भर दिया गया। सज्जनों युद्ध किसी के लिए भी अच्छा नहीं होता है। राजा भले ही कितना अच्छा क्यों न होवे युद्ध के समय निर्दोषों की हत्याएं और अप्रिय घटनाएँ नहीं रोक सकता है।

यह सत्य है कि हिटलर ने यहूदियों के प्रति कठोर दृष्टिकोण अपनाया था और लाखों यहूदी मारे गये थे। यह भी सच है कि यहूदियों पर अत्याचार हुए। किन्तु क्या कोई इस बात पर चर्चा करता है कि यहूदी पिछले 250 वर्षों से विश्व अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सम्भाल रहे हैं। बैंकों आदि को संचालित करने वाले लोगों में सबसे अधिक संख्या यहूदियों की रही है। क्या संसार नहीं जानता कि इस बैंकिंग व्यवस्था में कैसे भयंकर लूट चलती है। करोड़ों लोगों कि मेहनत का पैसा प्रत्येक 10 वर्षों में नष्ट हो जाता है जिससे लाखों अपराध संसार में होते हैं। परदे के पीछे छुपे इन लोगों को कभी मानवता के शत्रु क्यों नहीं कहा गया है ? वास्तव में संसार

जो प्रत्यक्ष दिखता है उसे ही सच मान लेता है। आज संसार में कुछ भी पढ़ सुनकर अथवा देखकर ही सत्य-असत्य का निर्णय नहीं किया जा सकता है। यदि ऐसा है तो भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद जैसे सभी क्रांतिकारियों को इतिहास में आतंकवादी का स्थान मिला है। आपमें से कुछ ही लोग जानते होंगे कि सुभाष चन्द्र बोस भारत देश का युद्ध बंदी था। यदि सुभाष चन्द्र बोस वापिस भारत आ भी जाता तो उसे चुपचाप ब्रिटेन के हाथों सौंपने की संधि पर नेहरु ने हस्ताक्षर किये थे। इसी कारण से इतिहास में सुभाष चन्द्र बोस जी को भारत का शत्रु सिद्ध कर दिया गया है। 100 वर्ष बाद यही पुस्तकें प्रमाण हो जायेंगी और नई पीढ़ियाँ सत्य को भूल जाएंगी।

वास्तव में कहने का तात्पर्य यह है कि आध्यात्मिक उन्नति के बिना भौतिक उन्नति इसी प्रकार विनाशकारी सिद्ध होगी। यह संक्षेप में इतिहास बताने का इतना ही अर्थ है कि जिस विज्ञान के पीछे संसार भाग रहा है, जिस धन संपदा को हड़पने के लिए पुरुषार्थ करता है उसका अंत एक भयानक युद्ध से ही होता है। आज भी संसार इसी रीति से आगे बढ़ रहा है जिसका परिणाम महाविनाशकारी युद्ध ही है जिसको कोई टाल नहीं पायेगा। इस वर्तमान विज्ञान का पूर्ण लाभ वही उठा सकते हैं जिनको आध्यात्मिक ज्ञान है। संसार को बचाने का आध्यात्मिक ज्ञान के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

4.5 5156 वर्ष पूर्व महाभारत का इतिहास

इतिहास की इस रोचक व ज्ञानवर्धक सत्य घटना से एक बात स्पष्ट है कि दूसरे विश्वयुद्ध में तकनीक स्थानांतरण जर्मनी से मित्र देशों में हुआ। पेनमुंडे गांव में कारखाने के टूटे-फूटे अवशेष बिखरे पड़े हैं। कल्पना कीजिए कि यदि द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी की भांति सभी सम्मलित देशों का विनाश हो जाता अथवा बहुत बड़ा परमाणु युद्ध हो जाता तो सभी देशों के वैज्ञानिक व रिसर्च करने वाले स्थान, कारखाने सबसे पहले नष्ट होते और संसार पुनः अंधकार में चला जाता। ऐसा ही हुआ था आज से लगभग 5156 वर्ष पूर्व, जब महाभारत का युद्ध लड़ा गया जिसमें चीन का भगदत्त, पातालदेश (अमेरिका) का बब्रूवाहन, यूरोपदेश (हरिवर्ष कहते थे - हरि संस्कृत में बन्दर को भी कहते हैं अर्थात् बंदर जैसी आँखों वाले) का विडालाक्ष, यूनान व ईरान का शल्य, कन्धार आदि अनेकों बड़ी ताकतों ने हिस्सा लिया था। महाभारत में अर्जुन का विवाह अमेरिका के राजा की कन्या 'उलोपी' से हुआ था।

दुर्भाग्य से उस युद्ध में महाविनाश हुआ। जो कुछ विद्वान शिल्पी बचे थे उनकी आयु तकनीक को दोबारा खड़ा करने के लिए साधन - संसाधन जुटाने में ही निकल गई। परिणामस्वरूप आने वाली पीढ़ियां अंधकार में चली गयी। साहित्य, ग्रंथ आदि सब नष्ट हो गया था। जो कुछ बचा था उसको समझाने व समझने वाला कोई बचा न था। बाद में विदेशी आक्रांताओं ने भी हमारी अमूल्य पुस्तकों व पुस्तकालयों को नष्ट किया। नालंदा के पुस्तकालय में जब मुसलमानों ने आग लगाई तो 6 माह तक धुआं उठता रहा इतना साहित्य नष्ट को गया था। इतना सब होने पर भी

ज्ञान विज्ञान भारत से यूनान, वहां से अरब और यूरोप तक पहुंचा। इस विषय पर विस्तार से आगे पढ़ेंगे। फ्रांसुआ बर्नियर कहता है कि **"हमें प्रयत्न करने पर भी वेद प्राप्त नहीं हुए क्योंकि भारतवासी वेदों को छुपाकर रखते है कि कहीं मुस्लिम के हाथ पड़ गये तो वो जला न देवें।"**[127]

4.6 जर्मनी के विज्ञान का मूल स्त्रोत

जिस प्रकार विज्ञान को अपना बनाने की प्रतिस्पर्धा चली आ रही है वैसे ही आर्य शब्द को भी अपना बनाने की प्रतिस्पर्धा चली आ रही है। इतिहास के सबसे प्राचीन ग्रंथों और ताड़पत्रों में आर्य शब्द अच्छे, सभ्य, सज्जन, परोपकारी, वैज्ञानिक और मानवीय गुणों से संपन्न लोगों के लिए आया है। अपने स्वर्णिम इतिहास को कम महत्त्व देने वाले जवाहरलाल नेहरु भी अपनी 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिखता है कि **"आश्चर्य की बात है अब तक साठ हजार से अधिक संस्कृत की हाथ की लिखी पुस्तकें और उनके रूपान्तरों का पता लग चुका है और नये नये ग्रन्थ बराबर मिलते जा रहे है। हिन्दुस्तान की बहुत सी पुरानी पुस्तकें अब तक यहाँ मिली ही नहीं है जबकि उनके अनुवाद चीनी और तिब्बती भाषा में मिले हैं।"**[128]

विचार करें कि वे सब ग्रन्थ आज कहाँ गये ? जिन्होंने हमें गुलाम बनाया था वो सब अमूल्य ग्रंथों को अपने देश ले गये। नेहरु ने कभी इस बौद्धिक संपदा

---

[127] बर्नियर की भारत यात्रा, पृष्ठ 234।

[128] जवाहरलाल नेहरु, *'हिंदुस्तान की कहानी'*, पृष्ठ 110।

को पुनः पाने के लिए ब्रिटेन से चर्चा भी नहीं की। जो लोग तमिल आदि अन्य भाषाओं को संस्कृत से प्राचीन मानते हैं उनको साठ हजार हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथों का नाम सुनकर ही मूर्छा आ गयी होगी। विचार कीजिये हजारों लाखों वर्ष पूर्व के प्राचीन ग्रंथों में आर्यों और उनकी विज्ञान के विषय में ना जाने कितनी गूढ़ बातें भरी होंगी। यही कारण है कि यूरोप के देश और इतिहासकार अपने को आर्यों की संतान कहते हैं और इसके लिए एक शब्द इतिहासकारों ने निकाला अर्थात् आर्य परिवार या यूँ कहें इंडो-यूरोपियन। इन यूरोपियन इतिहासकारों ने स्वयं को आर्य कहना तो प्रारंभ कर दिया किन्तु आर्य शब्द की व्याख्या गलत कर बैठे। आर्य जन्म से नहीं कर्म से होता है किन्तु इन्होंने आर्य शब्द की महानता को देखते हुए आर्य शब्द से रंग रूप, जाति आदि जोड़ दी। जैसे जो लम्बे, सुन्दर, गोरे लोग होते हैं वही आर्य होते हैं। इसी प्रकार सभी इतिहासकारों ने अपने अपने देश के लोगों की आकृति के अनुसार आर्य शब्द का अर्थ लगा लिया। विज्ञान की प्रतिस्पर्धा की भांति आर्य शब्द की प्रतिस्पर्धा भी विनाशकारी सिद्ध हुई। होना ये चाहिए था कि जहाँ से यह आर्य शब्द निकला है अर्थात् वेदों से, तो उन वेदों के जानकार लोगों से आर्य शब्द की व्याख्या करवानी चाहिए थी किन्तु स्वार्थ में अंधे लोग विनाश करने पर तुले रहते हैं।

हुआ ये कि हिटलर जैसे साधारण सैनिक ने जेल में रहकर और बाहर भी प्राचीन उपलब्ध इतिहास की सेकड़ों पुस्तकें पढ़ डाली। वही से उसके विचार दृढ होते गये कि केवल श्रेष्ठ और मानवतावादी लोगों को ही संसार में जीने का अधिकार है दूसरों को अपमानित करके लूटने वालों को नहीं। वैसे हिटलर का मानना कुछ गलत नहीं था कि श्रेष्ठ लोगों को ही जीने का

अधिकार होना चाहिए किन्तु उसका श्रेष्ठता का पैमाना उसी गलत यूरोप के इतिहास पर आधारित था।

हिटलर नहीं जानता था कि जन्म से सभी मनुष्य साधारण होते हैं फिर अच्छे कर्म करने वाले आर्य और बुरे कर्म करने वाले दस्यु होते हैं। आर्य का सम्बन्ध किसी एक देश, सभ्यता अथवा जाति से नहीं होता है। हिटलर ने श्रेष्ठ मानव जाति बनाने के लिए अनेक प्रयोग किये जो निश्चित रूप से अव्यवस्थित, बिना किसी योजना के थे और जर्मनी के सारे साधन संसाधन सेना और युद्ध पर लगने के कारण वे सब प्रयोग असफल हो गये क्योंकि अधिकांश स्थानों पर रखे हुए लोग बिना ध्यान दिए मर रहे थे। कोई भी बुद्धिमान आसानी से समझ सकता है कि एक लेखक की लेखनी में कितनी ताकत होती है कि वह लाखों लोगों की मौत का कारण भी बन सकती है और लाखों को जीवनदान देने वाली भी सिद्ध हो सकती है। हिटलर को पापी कहने वालों ने कभी उन इतिहासकारों का विश्लेषण क्यों नहीं किया जिन्होंने आर्य शब्द की गलत व्याख्या की थी और जिनका साहित्य पढ़कर हिटलर को गलत ज्ञान हुआ था। संसार के प्राचीन साहित्य में आर्य शब्द की महानता देखकर यूरोप वालों ने भारतीयों से यह आर्य शब्द छीनने के लिए इतिहास को तोड़ा मरोड़ा किन्तु हिटलर ने कुछ ही वर्षों में सबकी बुद्धि ठिकाने लगा दी। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद मित्र देशों ने हारे हुए देशों के लोगों से कोई दुर्व्यवहार नहीं किया था। इस बार सबको पता चल गया था कि लोगों को सताना ठीक नहीं है अन्यथा पुनः पुनः हिटलर आते रहेंगे।

प्रश्न उठता है कि जर्मनी तथा जापान जैसे देशों ने विज्ञान में इतनी उन्नति प्राप्त कैसे की ? द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी की वायुसेना के पास

लगभग 2500 विमान थे। ब्रिटेन व फ्रांस मिलकर भी जर्मनी का मुकाबला नहीं कर सकते थे। जर्मनी में इतनी उन्नत पदार्थ विद्या के पीछे कौन था ? इस प्रश्न का उत्तर स्वयं हिटलर देते हुए लिखते हैं कि -

"Every manifestation of human culture, every product of art, science and technical skill, which we see before our eyes two-day, is almost exclusively the product of the Aryan creative power. Aryan alone who founded a superior type of humanity. If we divide mankind into three categories – founders of culture, bearers of culture, and destroyers of culture - the Aryan alone can be considered as representing the first category." On the next page he said that "the present Japanese development has been due to Aryan influence."[129]

हिटलर स्पष्ट कह रहा है कि जर्मनी, जापान व विश्व के सभी हिस्सों में जितना ज्ञान विज्ञान तथा अच्छाई है वह आर्यों की ही देन है। हिटलर से लगभग 47 वर्ष पहले महर्षि दयानंद ने "सत्यार्थ प्रकाश" में जो लिखा था अक्षरशः वही हिटलर ने 47 साल बाद लिख दिया।

"अहम् भूमिमद्दाम आर्याय"[130]

---

[129] Mein Kampf, हिटलर की आत्मकथा "मेरा संघर्ष" के पृष्ठ 232 से ...

[130] ऋग्वेद मण्डल 4, सूक्त 26, मंत्र 2।

ईश्वर ने वेद के इस मंत्र में कहा है कि मैं यह भूमि आर्यों को देता हूँ। आर्य कभी भी दस्युओं से हारकर कायरों की भांति छिपते न रहें यही ईश्वर का आदेश है। हिटलर ने यही कहा कि विश्व पर केवल आर्यों का कब्जा होना चाहिए और जर्मनी वाले सभी आर्य हैं। सभी नाजी लोग आर्य हैं। उसने हिन्दुओं के चिह्न "स्वस्तिक" को अपना ध्वज भी बना लिया था। वह कोई इतिहासकार नहीं किन्तु एक नेता था और नेता शोध का कार्य नहीं कर सकता है। इसीलिए हिटलर जितनी शोध कर पाया वह भी एक राजा के लिए बड़ी बात थी। किन्तु आर्य कौन है ? इस प्रश्न की खोज वह नहीं कर पाया और अधूरे ज्ञान का परिणाम घातक ही हुआ। हिटलर से एक ही भूल हुई और वह थी आर्य को जन्म से मानने की। फिर भी यह स्पष्ट है और सारी दुनिया जानती है कि Vedas are the foundation head of all art, science and technology.

अस्तु, जर्मनी में आज भी संस्कृत का बोलबाला है। वहां की 14 यूनिवर्सिटीज में संस्कृत व वेदों का अध्ययन भी होता है। आज भी लाखों लोग वहां अपने को आर्यों की संतान मानते हैं। मेरा मानना है कि यदि यूरोप के लोगों तक आर्य और वेदों का सही सही अर्थ पहुँचाया जाये तो संभवतः संसार में सुधार शीघ्र हो सकता है अन्यथा विनाश के बाद तो सुधार अपने आप हो ही जायेगा।

मैं समझता हूं कि आज के बाद कोई यह नहीं कह सकता है कि वर्तमान समय में आर्यों ने कौन सी वैज्ञानिक उपलब्धि दिलवाई। 21वीं सदी के इस विज्ञान का आधार आज भी आर्य ही हैं, पहले भी आर्य ही थे और आगे भी आर्य ही होंगे। आज आर्यों को हिन्दू कहा जाने लगा है। ईश्वर वेद में आज्ञा देता है कि -

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्ननन्तो अराव्णः[131]

अर्थात् "हे मनुष्यों ! अपना ऐश्वर्य, धन, संपदा, बल बढ़ाओ, फिर पूरे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ, जो दुष्ट, राक्षस मार्ग में बाधा बने उनका सर्वनाश कर दो।"

आज जो लोग ईसाइयत और यूरोप से प्रभावित होकर आर्य, संस्कृत और वेदों का अपमान करते हैं उनको ठोस प्रमाणों पर आधारित यह पुस्तक बार बार पढ़नी चाहिए । यह बात सभी मनुष्यों को समझ लेनी चाहिए कि पक्षपातपूर्ण रवैये से मानवता की उन्नति नहीं होगी अपितु सत्य पर आधारित ज्ञान प्राप्त करके ही मानवता को सुख, शांति तथा समृद्धि की ओर लेकर जाया जा सकता है।

अब एक नमूने के रूप में सृष्टि के आदि से वर्तमान राष्ट्रों की संरचना को एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। लैटिन भाषा यूरोप की प्राचीनता भाषा में से एक मानी जाती है जिसमें से अंग्रेजी जैसी कई भाषाएँ निकली हैं। संस्कृत में पिता के लिए पितृ शब्द है तो लैटिन में पेटर तथा फ्रेंच में पात्री उच्चारण होता है। अंग्रेजी का पैट्रियार्क शब्द भी पेटर से निकला है। टयूटनिक, इटैलियन, ग्रीक, केल्टिक, स्लावनिक, फारसी, जिन्द, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन आदि सभी भाषाएँ आर्य परिवार की भाषा सिद्ध हो चुकी हैं।

संस्कृत का अग्नि शब्द लैटिन में इग्निस हो गया, लिथुआनियाँ में अग्निस, स्कॉटलैंड की भाषा में इंगिल, अंगिल आदि हो गया। संस्कृत का मूषक

[131] ऋग्वेद मण्डल 9, सूक्त 63, मंत्र 5।

शब्द ग्रीक में मूस, प्राचीन स्लावनिक में माइस, लैटिन में मस, प्राचीन जर्मन में मुस शब्द तो कहीं माउस पाएंगे।

मैक्समूलर अपनी पुस्तक 'हम भारत से क्या सीखें' में लिखता है कि **"आजकल का प्रत्येक छात्र जानता है कि अंग्रेजी आर्यों की भाषा है। हम जानते है कि भारतीय भाषाएँ, टयूटनिक, इटैलियन, ग्रीक, केल्टिक, स्लावनिक, और फारसी आदि सभी भाषाएँ एक ही भाषा वृक्ष की शाखाएं है।"**[132]

जिस भाषा वृक्ष की बात मैक्समूलर कर रहा है वह संस्कृत है और ये सातों भाषाएँ और इनसे निकली अनेकों आधुनिक भाषाएँ आर्य परिवार की भाषाएँ कहलाती हैं। मैक्समूलर आगे लिखता है कि "अकेले भारत का साहित्य यूनान और रोम के साहित्य से कहीं विशाल है और इतने विशाल साहित्य को केवल इस लिए झूठा कह दिया गया कि ऐसा न करने पर यह स्वीकार करना पड़ रहा था कि भारतीय और यूरोपीय लोग एक ही वृक्ष की दो शाखाएं है। हम यूरोप वाले अपने विश्वासों के मामले में कितने कट्टर होते हैं कि हमने ईसा को मार डाला, सुकरात को मार डाला तथा यहाँ तक की जैलीलियों (गैलीलियो) को भी करीब करीब मार ही डाला। छोटे मोटे असंख्य लोग हमारी इस कट्टरता के शिकार हो चुके है।"[133]

भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने वाले प्रसिद्ध विदेशी लेखक मैक्समूलर आगे भी आर्यों की श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए लिखता है कि "आर्य सभ्यता को हमें विशाल रूप में ही ग्रहण करना चाहिए क्योंकि हिन्दू,

---

[132] मैक्समूलर, *'हम भारत से क्या सीखें'*, पृष्ठ 54।

[133] मैक्समूलर, *'हम भारत से क्या सीखें'*, पृष्ठ 55।

पर्शियन, यूनानी, रोमन, स्लाव, केल्ट तथा टयूटन जातियां सभी उसी आर्य जाति से सम्बंधित है। संसार की जितनी भी गणमान्य अर्थात् उत्तम व उन्नत सभ्यताएँ हैं सभी आर्य सभ्यता की अंग हैं।"

जीवन के अंतिम समय में मैक्समूलर ने अपनी कई पहले की गई त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया किन्तु उसके ज्ञान का स्त्रोत वही पुराना ही था। यह बात सत्य है कि मैक्समूलर इतिहास की कुछ कुछ जानकारी रखता था किन्तु धर्म का उसको थोड़ा भी ज्ञान न था किन्तु फिर भी मैक्समूलर ने वेदों का अंग्रेजी में अपने मन से अर्थ कर दिया। बाद में भारत की अन्य भाषाओं में वही पढ़ाया जाने लगा जो आज तक भी भारत में वही पढ़ाया जाता है। उसको तुरंत प्रभाव से रोकना आवश्यक है। यहाँ तक की प्राचीन सभ्यताओं तथा परम्पराओं को अनावश्यक समझने वाला जवाहरलाल नेहरु भी कहता है कि -

"साठ हजार से अधिक हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपि भारत से यूरोप अंग्रेज लेकर जा चुके है।"[134]

इतनी बड़ी संख्या में शास्त्रों को भारत से बाहर क्यों लेकर जाया गया यदि भारतीय गाय-भैंस चराने वाले थे ? यदि भारत सपेरों का देश था तो उन सपेरों के ग्रंथों को यूरोप क्यों लेकर जाया गया था ? वास्तव में पिछले 250-300 वर्षों में विज्ञान की उन्नति में उन प्राचीन शास्त्रों का बहुत बड़ा योगदान है। वास्तव में किसी भी नए पदार्थ के बनने में प्राचीन मनुष्यों का अनुभव सदा ही काम आता है। प्राचीन भाषाओं से ही नई नई भाषाएँ बनती

[134] हिंदुस्तान की कहानी, जवाहर लाल नेहरु, पृष्ठ 110 (नेहरु परिवार उच्च अंग्रेज अधिकारीयों यहाँ तक की वायसराय तक के संपर्क में रहता था अतः नेहरु का यह कहना उनकी अक्षरशः सत्य है)।

रहती हैं किन्तु उस प्राचीन भाषा का महत्त्व कभी कम नहीं हो सकता है क्योंकि जब जब नई भाषाओं के शब्दों का अर्थ किया जाता है तो उनको उन शब्दों के आदि मूल स्रोत को ढूँढना ही पड़ता है।

यहूदी और ईसाई अपनी धार्मिक इच्छा प्रकट करने के लिए ओम् को आज भी 'आमेन' कहते है। मुस्लिम लोग इसको 'आमीन' कहते है। सिख रिलिजन वाले 'ओंकार' अर्थात् 'ओम्कार' कहते है।[135] बोद्ध धर्म के लोग इसको 'ओम् मणिपद्मे' कहते है। अस्तु, मैक्समूलर की यह बात कुछ कुछ सत्य है कि आधे संसार की भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं। माननी भी पड़ेगी क्योंकि संसार भर में इसके प्रमाण भरे पड़े हैं। किन्तु मेरा स्पष्ट मत है कि संसार की आधी नहीं अपितु सभी भाषाएँ संस्कृत से ही निकली है क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर ने मनुष्यों को संस्कृत में ही वेद ज्ञान दिया था। यूरोप के देशवासी और विद्वान इस बात को नहीं नकार सकते कि यूरोप के लोग आर्यों की ही संतान है। अब यदि ये यूरोप वाले अपने को भारत से वहां गया हुआ मानते तो वो अपने अपने देशों में विदेशी कहे जाते। इसलिए उन्होंने आर्यों को ही भारत से बाहर का सिद्ध कर दिया ताकि आर्यों की संतान अर्थात् जो यूरोपवासी हैं वो अपने ही देशों में विदेशी न बन जायें। वास्तव में संसार की उत्पत्ति के समय सर्वप्रथम मनुष्यों ने त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत पर जन्म लिया यह महर्षि दयानंद सरस्वती का अपने अनुभव व विस्तृत भ्रमण से प्राप्त ज्ञान के आधार पर मत था। कुछ काल पश्चात् जब मनुष्यों में आपसी वैर बढ़ा होगा तो जो आर्य (श्रेष्ठ) लोग थे वे नीचे आकर बस गये। आर्यों के बसने के कारण ही उस भूमि का नाम आर्यावर्त हुआ। बाकि जो दुष्ट और दस्यु लोग संसार के अन्य भागों जैसे चीन, अफ्रीका आदि स्थानों

[135] संस्कृत में ओं (ओ+म्) दोनों ही शुद्ध है। यह विषय आप प्रथम अध्याय में पढ़ चुकें हैं।

पर चले गये थे। धीरे धीरे भौगोलिक परिस्थिति के कारण रंग, रूप और शरीर की बनावट में अंतर आने लग गया। आर्यावर्त से ही आर्य लोग विमान आदि बनाकर अन्य यूरोप आदि स्थानों पर जाने लगे और बसने लगे। यह लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व की बात है। उस समय तक केवल एक संस्कृत भाषा आर्यों की थी। बहुत समय तक अपने मूल स्थान आर्यावर्त से दूर रहने के कारण धीरे धीरे अन्य स्थानों के आर्य वंशजों में मूल भाषा और संस्कृत से दूरी प्रारंभ हो गयी। यह ऐसे ही है जैसे 200 वर्ष बाद अधिकांश गोरे अमेरिकन भूल जायें कि वो अंग्रेज जाति के ही वंशज है। वैसे भी अमेरिकन इंग्लिश और ब्रिटिश इंग्लिश में उच्चारण, शब्द रचना आदि में कुछ ही समय में बहुत अधिक बदलाव हुआ है।

इसी प्रकार दस्यु बिना पढ़ें लिखे होकर अलग अलग प्रकार के चिन्ह बनाकर व्यवहार करते थे। मान लीजिये कोई व्यक्ति कुत्ते के विषय में कुछ कहना चाहता होगा तो उसे कुत्ते जैसी आकृति बनानी पड़ती होगी क्योंकि भाषा तो उनको आती नहीं थी। धीरे धीरे इन आकृतियों ने चिन्हों का स्थान ले लिया होगा। बाद में वर्णमाला निकली होगी और उसका प्रचलन हो गया। यह एक प्रकार से चित्रलिपि थी जो मिस्र, क्रीट और बाबुल आदि में उपस्थित थी। चीन की लिपि आज भी चित्रलिपि का श्रेष्ठ उदाहरण है।

4.7 हड़प्पा की भाषा

कुछ लोग प्रश्न खड़ा करते हैं कि यदि महाभारत के समय में संस्कृत का प्रचलन था और संस्कृत इतनी प्राचीन है तो हड़प्पा सभ्यता की भाषा अब तक क्यों नहीं पढ़ी गयी है ? प्रथम तो ऐसा प्रश्न पूछने वाले बोद्ध और तमिल

आदि लोगों की पाली और तमिल भाषा भी स्वयं ही मैदान से बाहर हो गयी।

अब संस्कृत भाषा पर आते हैं। महाभारत युद्ध का ठीक ठीक समय महाभारत के विषय में ही लिखा जायेगा किन्तु आज से लगभग 5000 वर्ष से अधिक समय पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ था। महर्षि वेदव्यास ने कुछ ही वर्षों बाद उस इतिहास को जय नामक ग्रन्थ जो बाद में भारत और महाभारत के नाम से प्रसिद्ध हुए लिख दिया था। अब इतने बड़े संस्कृत के ग्रन्थ को कोई नहीं माने अथवा अंग्रेजी इतिहासकारों के 800 ई.पू. महाभारत ग्रन्थ लिखने की बात कोई माने तो उनका कोई क्या कर सकता है ? ये ऐसे लोग होते हैं जो स्वार्थ, लोभ, लालच, भय, द्वेष तथा अहंकार में अपने पिता को मानने से भी मना कर सकते हैं।

मनुष्यों की उत्पत्ति 1,96,08,53,120 वर्ष पूर्व हुई है। इतने लम्बे समय में संस्कृत से अनेकों भाषाएँ निकली और नष्ट हुई होंगी। महाभारत के समय पर भी कई अलग अलग भाषाएँ विद्यमान अवश्य होंगी। महाभारत में आता है कि युद्ध समाप्त होने पर अर्जुन के झुण्ड पर हमला करके लूटेरे डाकुओं ने बहुत सा धन और महिलाएं छीन ली थी।[136]

अतः पता चलता है कि उस समय कई लुटेरी जातियां भी उपस्थित थी और युद्ध के बाद बड़े बड़े राजाओं को लूट लेने में सक्षम हो गयी थी। ऐसी छोटी छोटी जातियों की भी अपनी अपनी व्यवहार करने वाली भाषाएँ

[136] महाभारत, मौसल पर्व, अध्याय 4 (इस उदाहरण से यह भी पता चलता है कि महाभारत एक सत्य इतिहास की घटना थी क्योंकि कोई भी पक्षपाती पुस्तक कभी भी अपने नायक को अंत में हारता हुआ नहीं दिखाती है, बाइबिल ईसा, मूसा को, कुरान मुहम्मद को महान व चमत्कारी सिद्ध करती है किन्तु महाभारत में इतिहास वैसे ही लिखा है जैसे हुआ था, यहाँ तक की अंत में श्रीकृष्ण जी की मृत्यु का वर्णन भी किया गया है)।

होंगी। अब जो कुछ प्रमाण हड़प्पा की लिपि कहकर प्रचारित किया जा रहा है क्या वह पूरे हड़प्पा की लिपि थी ? इस प्रश्न का उत्तर संसार का कोई इतिहासकार नहीं दे पाया है। वास्तव में जिस वर्णमाला को दिखाकर हड़प्पा की प्रचारित किया जा रहा है वह किसी छोटी मोटी लुटेरी जाति आदि की घरेलू चित्रलिपि भी तो हो सकती है। साठ हजार प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ जो अंग्रेजों को प्राप्त हुए हैं क्या वो आसमान से टपक गये हैं ?

निश्चित रूप से इतिहास को पूरी तरह से भ्रष्ट किया जा चुका है। अधिकांश बुद्धिजीवी इतिहासकारों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता वर्तमान के हिन्दुओं से मान्यताओं के आधार पर मिलती जुलती सभ्यता थी। उपस्थित सिक्कों व अन्य पदार्थों आदि पर महायोगी के चित्र, बैल आदि के चित्र सिद्ध कर रहे हैं कि वह आर्यों की ही सभ्यता थी। जो बोद्ध अंग्रेजी इतिहासकारों की मानकर महाभारत को 800 ई.पू. लिखा ग्रन्थ मानते हैं वो तो ये भी नहीं जानते है कि अंगेजों ने महात्मा बुद्ध का समय न्यून से न्यून 1000 वर्ष केवल एक लेखनी चलाकर कम कर दिया। अस्तु, भारत के इतिहास पर जीवन में समय मिला तो अवश्य एक विस्तृत ग्रन्थ लिखकर इन सब प्रश्नों का प्रमाणिक उत्तर देने का प्रयत्न करूँगा।

भारतीय इतिहास के सही तथ्यों को छुपा लिया गया है और गलत तथा अप्रमाणिक बातों को इतिहास मान लिया गया है। कुछ सिक्कों तथा वस्तुओं पर खुदे हुए चिन्हों को हड़प्पा की लिपि कहकर प्रचारित कर दिया गया ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि वेद (संस्कृत) हड़प्पा के बाद के काल में लिखे गये थे। भारत को गुलाम बनाने वाले लोग डरते थे कि कहीं संस्कृत भाषा और वेद ईसाईयों की बाइबिल में लिखी सृष्टि रचना (4006

ई.पू. लगभग) से प्राचीन न सिद्ध हो जाएं। इसी प्रकार फिर आर्यों को भारत में बाहर से आए हुए लिख दिया गया।

आप में से बहुत कम लोग जानते होंगे कि अंडमान में अनेकों द्वीपों पर छोटी छोटी मनुष्य की प्रजातियाँ रहती हैं। अधिकांश द्वीपों पर लोगों का जाना अवैध है क्योंकि वहां जाते ही उन प्रजातियों के लोग हमला करके मार डालते हैं। उनकी अपनी अपनी भाषाएँ हैं। उन अधिकांश भाषाओं को अब तक कोई समझ नहीं सका है। संसार में अनेकों द्वीप व निर्जन स्थानों पर ऐसी ऐसी मानव प्रजातियाँ उपस्थित हैं। आज से 5000 वर्ष बाद आने वाले मनुष्य 21वीं सदी का इतिहास लिखेंगे और उनको किसी छोटी मोटी प्रजाति की चित्रलिपि अथवा अटपटे शब्द खुदे हुए पत्थर मिलेंगे। उनको देखकर यदि वे इतिहासकार यह कहने लगेंगे कि पूरे यूरोप में यही लिपि बोली जाती थी तो क्या यह सत्य है ? बिलकुल नहीं, क्योंकि आज संसार में अनेकों भाषाएँ बोली जाती हैं।

इसी प्रकार इतिहाकारों द्वारा पूरे भारत की एक ही लिपि लिखना उनकी मूर्खता तथा इतिहास की कम समझ को दर्शाता है। जब प्रत्यक्ष हजारों वर्ष पूर्व के ग्रन्थ उपलब्ध हैं तो उनको न मानकर एक कमजोर कड़ी से इतिहास का निर्माण करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है ?

वास्तव में ब्रिटेन के ईसाईयों ने भारत के इतिहास को पूरी तरह से बदलकर लिखा है। उनकी भाषा अंग्रेजी है। आप पहले पढ़ चुके हैं कि विश्व की अधिकांश प्राचीन भाषाओं की रचना संस्कृत से हुई है। एक यूरोपीय विद्वान लिखते हैं कि -

"जिन जिन भाषाओं में संस्कृत का रिश्ता दिखाई देता हो वे सभी उस मूल देवदत्त साहित्य का ही अंग है जिसे किसी एक मूलस्थान से पढ़कर मानव पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों में जाकर बसते रहे ।"[137]

सज्जनों मैं सदैव कहता हूँ कि विज्ञान कभी भी हमारा तुम्हारा नहीं होता है किंतु सबके कल्याण के लिए होता है । लेकिन कुछ लोग अपनी छोटी व नीच सोच के कारण विवश कर देते हैं कि उनको कड़वी सच्चाई का दिग्दर्शन करवाया जाये । अन्यथा सभी जानते है कि वेद ज्ञान सभी मनुष्यों के लिए है तथा अनेकों विदेशी विद्वान भी यही मानते है। एक विदेशी लेखक लिखता है कि **"ऋग्वेद यह केवल आर्यों का ही नहीं अपितु सारे मानवों का प्राचीनतम ग्रन्थ है ।"**[138] अतः भले ही संसार में विज्ञान ने उन्नति की हो किन्तु वह केवल भौतिक उन्नति ही है जिसके कारण संसार की आधी से अधिक आबादी साफ़ पानी तथा भोजन को तरस रही है । आज इस वैज्ञानिक उन्नति के कारण लगभग प्रत्येक मनुष्य समस्याओं से घिरा हुआ है तथा किसी न किसी बात को लेकर दुःखी है । वेदों ने मनुष्यों को केवल भौतिक ज्ञान नहीं दिया है बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया है । आध्यात्मिक विद्या के बिना भौतिक वैज्ञानिक उन्नति विनाशकारी होती है । जैसे आकाश में उड़ते हुए विमान का इंधन समाप्त होने पर वह गिर कर नष्ट हो जायेगा वैसे ही बिना आध्यात्मिक उन्नति के भौतिक वैज्ञानिक उन्नति मानव सभ्यता का विनाश ही करेगी । वेदों द्वारा मनुष्यों को दिया आध्यात्मिक ज्ञान कौन सा है ? इस विषय को अगले अध्यायों में लिखा जायेगा ।

---

[137] H.H. Wilson, '*Preface to Vishnu Puran*', Oxford, 1837.

[138] M. Philip, *'The Teaching of the Vedas'*, p. 213.

मेरा मत है कि आज के बाद कोई यह नहीं कह सकेगा कि नासा के आने के बाद विज्ञान ने गति पकड़ी। यह ज्ञान तो नासा की स्थापना के लाखों करोड़ो वर्ष पहले से ही आर्यों ने दे दिया था। आशा करता हूँ कि मनुष्य जाति को उन्नत व सभ्य बनाने हेतु सभी वेद व आर्यों के मानव कल्याण हेतु दिए गये आध्यात्मिक ज्ञान को भी अपनाएं। ईश्वर के सच्चे उपासक बन कर दया, करुणा, प्रेम, सौहार्द जैसे गुणों की वृद्धि करके मानवता को चहुँ ओर फैला देवें।

4.8 प्राचीन विज्ञान की एक झलक

विज्ञान की इस प्रगति में प्राचीन वैज्ञानिकों तथा गणितज्ञों का बहुत बड़ा योगदान है जिनके ग्रन्थ पढ़कर बाद में आने वाले वैज्ञानिकों ने विज्ञान की नई नई जानकारियों से अनेकों पदार्थ बना लिए हैं। उन प्राचीन ग्रंथों के लिखने वालों को संसार ने कभी सच्ची श्रद्धांजलि नहीं दी बल्कि उनको गाय-भैंस चराने वाले कहकर उनका उपहास ही किया है। यहाँ पर बड़े ही संक्षेप में आपको जानने को मिलेगा कि जिस विज्ञान पर संसार घमंड कर रहा है उसका हजारों वर्ष पूर्व के प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख किया गया है। यदि उल्लेख किया गया है तो इसका तात्पर्य यह है कि वह विद्या कभी न कभी संसार में अवश्य रही होगी। उत्त्थान के साथ पतन निश्चित है। अतः विज्ञान युग के पश्चात् अंधकार युग का आना भी निश्चित है। यह वैज्ञानिक उन्नति सदा नहीं रहेगी। ऐसे समय पर मनुष्यों का मार्गदर्शन प्राचीन शास्त्रों द्वारा ही होता है। अतः प्राचीन शास्त्रों के विषयों को समाज में सदा प्रचारित करते रहना चाहिए।

कहा जाता है कि बिजली के आविष्कार के बाद विज्ञान ने बहुत तीव्र गति से उन्नति की है। अनेक प्रकार के पदार्थों के निर्माण का कार्य बिजली के कारण ही संपन्न हो पाया है। वास्तव में बिजली एक ऊर्जा है और हम सब जानते है कि पृथ्वी पर जीवन ही सूर्य की ऊर्जा के कारण संभव है। अतः बिजली से मनुष्य अनेकों प्रकार के लाभ ले सकता है। बिजली को संस्कृत में विद्युत कहते हैं तथा वेदों से इस विद्या का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। वेद में मंत्र आया है कि -

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥[139]

भावार्थ : "हे विद्वांसो, यथा पदार्थविद्याविदो जनाः सूर्यादेः सकाशाद् विद्युतं गृहीत्वा..." अर्थात् हे विद्वान लोगों, जैसे पदार्थ विद्या को जानने वाले जन सूर्य आदि के समीप से बिजली को ग्रहण करके कार्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही तुम सभी लोग करो ॥13 ॥ इस प्रकार सूर्य आदि से बिजली बनाने के निर्देश अनेकों वेद मन्त्रों में है।[140]

इममु त्यमथर्ववदग्निं मन्थन्ति वेधसः।
यमङ्कूयन्तमानयन्नमूरं श्याव्याभ्यः ॥[141]

भावार्थ : "जो विद्वान लोग भूमि, अन्तरिक्ष, वायु, आकाश तथा सूर्य आदि से मंथन करके बिजली को निकालते हैं, वे अनेक कार्यों के सिद्ध करने में समर्थ होते हैं।"

[139] ऋग्वेद मण्डल 6, सूक्त 16, मंत्र 13।

[140] ऋग्वेद मण्डल 6, सूक्त 59, मंत्र 8, ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 163, मंत्र 10।

[141] ऋग्वेद मण्डल 6, सूक्त 15, मंत्र 17।

अतः बिजली का महत्त्व वेदों में मनुष्य को पहले ही बता दिया गया है और यह भी बता दिया गया है कि बिजली अनेकों पदार्थों तथा स्त्रोतों से बनाई जा सकती है और उससे अनेकों बड़े बड़े कार्य संपन्न किये जा सकते हैं। ऋग्वेद के अन्य मंत्र में विभिन्न पदार्थों से बिजली बनाने का वर्णन किया गया है।[142] वेदों में यह भी बताया गया है कि बिजली से कौन कौन से कार्य संपन्न किये जा सकते हैं।

हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमायै सूक्तेन वचसा नवेन।
मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये॥[143]

भावार्थ : "ये विद्युद्रथं न साध्नुवन्ति ते सर्वत्र रन्तुं रमयितुं च न शक्नुवन्ति।" अर्थात् जो बिजली से रथ को नहीं सिद्ध करते हैं, वे सर्वत्र न आप रम (घूम) सकते हैं और न दूसरों को रमा सकते हैं॥३॥

यहाँ पर विद्युत् से चलने वाले रथों (गाड़ियों) का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। इसी प्रकार विद्युत् से भिन्न भिन्न प्रकार के तीव्र गति से चलने वाले विमान, रथ तथा अन्य पदार्थों का उल्लेख वेदों में अनेकों मन्त्रों में आया है।[144]

तृषु यदन्ना तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः।
वातस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा॥[145]

[142] ऋग्वेद मण्डल 4, सूक्त 8, मंत्र 10।
[143] ऋग्वेद मण्डल 2, सूक्त 18, मंत्र 3।
[144] ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 182, मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 164, मंत्र 2।
[145] ऋग्वेद मण्डल 4, सूक्त 7, मंत्र 11।

भावार्थ : "यदि मनुष्या विद्युद्वाय्वादियोगविद्यां जानीयुस्तर्हि ते दूतवदश्ववद्दूरं यानं समाचारं च गमयितुं शक्नुयुः ।" अर्थात् जो मनुष्य बिजली और वायु आदि के योग तथा सम्बन्ध को जानता है वह बहुत दूर वाहन तथा समाचार को पहुंचा सकता है ॥11॥

इस मंत्र से ईश्वर मनुष्यों को कहता है कि बिजली तथा वायु आदि के द्वारा मनुष्य तीव्र गति से चलने वाले वाहन तथा तेजी से सूचनाएं लेने देने वाले यन्त्र (जैसे फोन आदि) बना सकता है। इस विषय को फिर से एक अन्य मंत्र में कहा गया है।

प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात्।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥[146]

भावार्थ : "यदा मनुष्या अग्नियानेन गमनं तडिता समाचारंश्च गृह् णीयुस्तदेते सद्यः कार्याणि साद्धुंशक्नुवन्ति ।" अर्थात् जब मनुष्य अग्नि यान से गमन और विद्युत् (बिजली) से समाचारों को ग्रहण करें तब ये शीघ्र कार्यों को सिद्ध कर सकते हैं ॥2॥

यह मंत्र वेदों की महानता को प्रदर्शित कर रहा है। ईश्वर ने मनुष्यों को स्पष्ट कहा है कि विद्युत् से ऐसे ऐसे पदार्थ बनाये जा सकते हैं जिनसे दूर देश की बातें अत्यंत शीघ्र जानी जा सकती है। आज फोन ऐसा ही एक साधन है। मोबाइल फोन आदि आने के बाद बिजली से चार्ज होते ही इलेक्ट्रोन आदि विद्या के द्वारा शीघ्र बातें कही तथा सुनी जा सकती हैं। मनुष्य को बुद्धि मिली ही इसलिए है ताकि वह अपनी सुविधा तथा सुखों में वृद्धि के लिए

---

[146] ऋग्वेद मण्डल 7, सूक्त 3, मंत्र 2।

अच्छे अच्छे पदार्थ बना सके किन्तु मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में इन अच्छे अच्छे पदार्थों को बनाने के बाद भी सुखी नहीं बल्कि दुःखी हो रहा है।

एक अमेरिकी विद्वान कहती हैं कि - **"We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the greatest Vedas, the most remarkable works containing not only religious ideas for a perfect life, but also facts which all the science has since proved true. Electricity, Radius, Electrons, Airships all seem to be known to the seers who found the Vedas."**[147]

अर्थात् "हमने प्राचीन भारतीय धर्म के बारे में सुना और पढ़ा है। यह उन महान वेदों की भूमि है जो अत्यंत अद्भुत हैं जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक तत्व बताये गये हैं बल्कि उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें समस्त विज्ञानों ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रॉन्स, विमान आदि सब विद्याएँ वेदों के दृष्टा ऋषियों को ज्ञात थी।"

ऐसा नहीं है कि विद्युत् आदि की विद्या केवल वेदों में ही है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थ अगस्त्य संहिता में विद्युत् के विषय में अत्यंत विस्तार से ज्ञान दिया गया है। अगस्त्य संहिता के कुछ ही भाग आज उपलब्ध होते है। अगस्त्य संहिता में इलेक्ट्रिक सेल बनाने की विधि का वर्णन किया गया है।

[147] W. Willox, '*The sublimity of the vedas*'.

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम् ।

छादयेच्छिखिग्रीवेन चाद्र अभिः काष्ठपांसुभिः ॥

दस्तालोष्टो निधातव्यः पारदाच्छादिदस्ततः ।

संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम् ॥

अर्थात् एक मिट्टी का पात्र लें, उस पात्र में ताम्बे की एक धातु (पतली धातु की चद्दर Copper Sheet) तथा शिखिग्रीवा डालें। फिर बीच में गीला लकड़ी का बुरादा (wet sawdust) लगाकर उसके ऊपर पारा (mercury) तथा दस्त लोष्ट (zinc) डालें। उसके बाद तारों को आपस में मिलाने पर मित्रावरुणशक्ति का उदय होगा।

इन सूत्रों के आधार पर नागपुर में इंजीनियरिंग के प्राध्यापक श्री पी.पी. होले ने अपने मित्रों की सहायता से परीक्षण प्रारंभ किया तो शिखिग्रीवा शब्द का अर्थ समझ नहीं आया था। संस्कृत कोष में देखने पर पता चला कि शिखिग्रीवा तो मोर की गर्दन को कहते हैं। उसके बाद होले अपने मित्रों सहित महाराजा बाग़ गये और Zoo वालों से पूछा कि किसी मरे हुए मोर की गर्दन मिलेगी। अस्तु, वह तो नहीं मिली किन्तु शिखिग्रीवा का सही अर्थ अवश्य मिल गया। वास्तव में नई नई भाषाएँ आने पर प्राचीन शब्दों के अर्थ समझने में समस्या आने लगती है। बाद में एक आयुर्वेदाचार्य को होले ने अपनी समस्या बताई तो वह हंसने लगा और बोला कि यहाँ पर शिखिग्रीवा का अर्थ मोर की गर्दन नहीं है बल्कि उसकी गर्दन जैसे रंग का पदार्थ कॉपरसल्फेट है। बस फिर तुरंत इस सूत्र के आधार पर इलेक्ट्रिक सेल बनाया गया और मल्टीमीटर द्वारा उसको मापा गया। उसका ओपन सर्किट

वोल्टेज 1.38 वोल्ट्स और शोर्ट सर्किट करंट 23 मिली एम्पीयर था। बाद में इस परीक्षण को सार्वजनिक कर दिया गया था।

अगस्त्य संहिता के एक अन्य सूत्र में आता है कि –

अनेन जलभंगोस्ति प्राणो दानेषु वायुषु।

एवं शतानां कुम्भानां संयोग कार्य कृत्स्मृतः ॥

महर्षि अगस्त्य कहते हैं कि "यदि सौ कुम्भों की शक्ति का पानी पर प्रयोग करेंगे तो पानी अपने रूप को बदल कर प्राण और उदान वायु में परिवर्तित हो जायेगा। फिर उस उदान वायु को किसी पदार्थ में (जैसे सिलिंडर आदि) इकट्ठा किया जाये तो उससे अनेकों कार्यों की सिद्धि होती है।"

सज्जनों प्राण वायु ऑक्सीजन को तथा उदान वायु हाइड्रोजन को कहते हैं। जल इन्हीं के अणुओं से बनता है। महर्षि अगस्त्य जल के अणुओं को अलग करने की विधि बता रहे हैं और हाइड्रोजन की ऊर्जा से विभिन्न यंत्र चलाने का निर्देश दे रहे हैं। आप जानते है कि हाइड्रोजन से सभी प्रकार के वाहन तथा विमान आदि तक को चलाया जा सकता है किन्तु वैश्विक परिस्थिति तथा राजनीति के कारण हाइड्रोजन से कई गुना अधिक प्रदुषण फ़ैलाने वाले इंधनों का प्रयोग वाहनों के लिए संसार में हो रहा है। मैं वर्तमान वैज्ञानिकों के पुरुषार्थ को नमन अवश्य करता हूँ किन्तु इन्होंने जिन प्राचीन लोगों के ग्रंथों तथा परीक्षणों को अपने परीक्षणों का आधार बनाया था मैं उन ऋषियों को पूज्य मानता हूँ और प्रत्येक मानवतावादी को भी मानना चाहिए।

आज संसार के लोग विभिन्न प्रकार के नए नए यन्त्र बनाकर कहते हैं कि मनुष्य ने कितने महान यंत्रों को बना लिया है। नई नई मशीनें बनाई जा रही हैं किन्तु भारतीय दर्शन इस विषय पर अत्यंत गहन चिंतन करता है। ऋषि भास्कराचार्य ने अपनी पुस्तक सिद्धांत शिरोमणि में अनेकों प्रकार के उन्नत तथा चकित करने वाले यंत्रों का वर्णन किया हुआ है। हजारों वर्ष पूर्व स्वचालित यन्त्र तथा पारे आदि से समय देखने के लिए सुन्दर घड़ियाँ बनाने तक की विधि बताई हुई है।

सिद्धांत शिरोमणि में यंत्रों को परिभाषित करते हुए संसार के सबसे सर्वश्रेष्ठ यन्त्र की व्याख्या पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। वहां पर लिखा गया है कि -

अथ किमु पृथुतंत्रैर्धीमतो भूरियन्त्रैः,

स्वकरकलितयष्टेर्दत्तमूलाग्रदृष्टेः ॥

न तदविदितमानं वस्तु यद्दृश्यमानं,

दिवि भुवि च जलस्थं प्रोच्यतेऽथ स्थलस्थम् ॥40॥ [148]

यहाँ पर भास्कराचार्य जी ने कहा है कि संसार का सर्वश्रेष्ठ यन्त्र बुद्धि ही है। विभिन्न विद्या के ग्रंथों को पढ़कर विभिन्न यन्त्र तभी बनाये जा सकते हैं जब बुद्धि भी मनुष्य का साथ देवे अर्थात् बिना बुद्धि के कोई यन्त्र नहीं बन सकता है। आकाशस्थ ग्रह, तारे आदि सभी का मान (गति, दूरी आदि) निकाला जा सकता है। आकाश, पाताल (भूमि) तथा जालस्थ सभी वस्तु दिखाई देने वाली हैं इसलिए बुद्धि से इन सबकी जानकारियां निकालनी

[148] सिद्धांत शिरोमणि, गोलाध्याये, अध्याय 12 यंत्राध्यायः, श्लोक 40।

सुलभ होती है, अर्थात् बुद्धि ही ग्रह गति ज्ञान आदि विद्याओं के लिए एक महान यन्त्र है ।।40।।

यहाँ पर भास्कराचार्य जी ने संसार के सभी यन्त्र तथा विद्याओं को जानना सुलभ बताया है यदि मनुष्यों की बुद्धि ठीक है। इस बुद्धि को ही सर्वोच्च यन्त्र कहा है क्योंकि बाकि सभी यन्त्र इससे ही बनाये गये हैं तथा बनाये जाते हैं। मनुष्य ने सभी यंत्रों के बनाने का श्रेय विभिन्न वैज्ञानिकों को तो दे दिया किन्तु इस बुद्धि को बनाने वाले सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक की कोई बात तक नहीं करता। अधिकांश तो जानते ही नहीं है कि यह बुद्धि यन्त्र किसने बनाया है ? बनाने वाला कहाँ रहता है ? वह कैसा है ? उसने सब कैसे बनाया ? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए जब मैंने सभी रिलिजन की पुस्तकें पढ़ी तो मुझे केवल निराशा ही हाथ लगी थी क्योंकि वहां पर बुद्धि के विरुद्ध, विज्ञान के विरुद्ध, सृष्टि नियमों के विरुद्ध किस्से-कहानियां भरे पड़े हैं। अस्तु, अब आप इन सब प्रश्नों के ठीक ठीक तार्किक तथा वैज्ञानिक उत्तर जान चुके हैं। यह विद्या प्रत्येक घर तथा युवा तक पहुंचे इसी उद्देश्य को लेकर मैंने इस पुस्तक को लिखने का पुरुषार्थ किया है।

महाभारत का युद्ध आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व हुआ था। उस पूरे युद्ध का वृतांत उसी समय जय नामक पुस्तक में लिख दिया गया था। किन्तु इसाई इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास बनाते समय महाभारत की पुस्तक को 800 से 1000 ई.पू. पहले लिखा कह दिया। अस्तु, महाभारत पुस्तक का यह समय भी ईसाईयों तथा यहूदियों की बाइबिल की सभी पुस्तकों (जबूर, तौरेत, अन्जील) से अधिक प्राचीन है।

संसार के सबसे प्राचीन इतिहास ग्रंथों में से एक महाभारत के सभापर्व में एक बहुत ही रोचक घटना आती है -

स कदाचित् सभामध्ये धार्तराष्ट्रो महीपतिः ।

स्फाटिकं स्थलमासाद्य जलमित्यभिशंकया ।। [149]

अर्थात् एक दिन दुर्योधन मय द्वारा बनाये गये सभा भवन में भ्रमण करता हुआ स्फटिक मणियों वाले स्थान पर जा पहुंचा। वह स्थान (floor) जल की भांति लग रहा था। आँखों से देखने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह जल है कोई स्थल नहीं है। इसी लिए दुर्योधन ने जल की आशंका के कारण अपना वस्त्र ऊपर उठा लिया। बाद में पता चला कि यह तो स्थल के अन्दर दिव्य दृश्य स्थापित किया हुआ है।

आज भी आपने देखा होगा कि घर के स्थल (floor) को पारदर्शी करके नीचे से बिजली के तारों अथवा सेंसरों के माध्यम से भिन्न भिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ देखने को मिलती हैं किन्तु हम उस स्थल पर चल भी सकते हैं। दुर्योधन जब उस सभा भवन में कुछ दूर आगे गया तो उसने फिर से एक स्थान पर जल देखा। दुर्योधन से सोचा कि यह भी दिव्य दृश्य है। इस बार वह सीधा चल पड़ा किन्तु वहां पर सही में जल था इसलिए वह जल में गिर गया। उस महल में कई स्थलों पर ऐसे ऐसे दिव्य दृश्य लगायें गये थे कि असली और नकली की पहचान भी जटिल (मुश्किल) थी।

इस उदाहरण से आप समझ सकते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व भारत में कैसे कैसे भवन बनाए गये थे। जिस प्रकार से मय निर्मित भवन था उससे यह स्पष्ट

---

[149] महाभारत, सभापर्व, अध्याय 10।

ज्ञात होता है कि विद्युत् से अनेकों प्रयोग मनुष्य समाज सदा से लेता आया है। हाँ, कुछ समय तक ज्ञान की परम्परा किन्हीं कारणों से कई बार रुक जाती है किन्तु थोड़े ही समय में वह पुनः प्रारंभ हो जाती है क्योंकि मनुष्यों के पास बुद्धि नामक यन्त्र है जिसका प्रयोग करके वे नए नए पदार्थ सदा बनाते रहते हैं।

बताने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसी गूढ़ विद्या का ज्ञान देने वाले ये ग्रन्थ हजारों वर्ष पूर्व के हैं जब यूरोप में किसी भी प्रकार की खोजें प्रारंभ भी नहीं हुई थी।

इस बात को प्रोफेसर मैकडोनेल लिखते है कि -

"In science too, the debt of Europe to India has been considerable. During the eighth and ninth centuries, the Indians became the teachers in arithmetic and algebra of the Arabs, and through them of the nations of the West."[150]

अर्थात् "विज्ञान में भी भारत का यूरोप पर बहुत ऋण है। आठवीं और नौंवी शताब्दियों में भारत वाले अंकगणित और बीजगणित के विषयों पर अरब वालों के अध्यापक थे तथा अरब के माध्यम से वह विद्या पश्चिम (यूरोप) के देशों में आई।"

गणित विद्या अन्य सभी भौतिक विद्याओं का मूल है। कोई भी माप गणित विद्या से ही निकाला जा सकता है अर्थात् सभी सृष्टि के नियम गणित विद्या

[150] A.A. Macdonell, '*A History of Sanskrit Literature*', p. 424.

से ही जाने जाते हैं। कोई भी यन्त्र गणित विद्या के बिना नहीं बनाया जा सकता है। सभी विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा इतिहासकार यह कहते हैं कि गणित विद्या का ज्ञान भारत से ही संसार में फैला है। इसका सीधा अर्थ निकलता है कि आज जिस विज्ञान पर संसार खड़ा है उसका आधार भारतीय ज्ञान ही है। हजारों वर्ष पूर्व भारत के गणित के ग्रंथों को देखकर संसार आज भी आश्चर्यचकित हो जाता है।

महर्षि भास्कराचार्य कृत गणित का ग्रन्थ 'लीलावती' आज भी बड़े बड़े गणितज्ञों में आश्चर्य का विषय बना हुआ है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में गणित की ऐसी विद्या देखकर कुछ स्वार्थी अंग्रेज इतिहासकारों ने इसकी प्राचीनता कम करने के लिए सेकड़ों वर्ष का समय घटा दिया। किन्तु फिर भी जब यूरोप और संसार में जमा, घटा, गुणा, भाग आदि की सामान्य जानकारियां थी तब सूर्य सिद्धांत, लीलावती, आर्यभटीय जैसे महान ग्रंथों में गणित, ग्रंहों का माप तथा दूरी, ग्रहण विज्ञान आदि जैसे गंभीर विषयों की सटीक जानकारी उपलब्ध थी।

भास्कराचार्य की पुत्री लीलावती के विषय में तो कहा जाता है कि वह पेड़ों के पत्ते तक गणित विद्या से गिन दिया करती थी। गणित विषय पर Mr. Colebrooke लिखते है कि -

"The credit of the discovery of the principle of differential calculus is generally claimed by the Europeans, but is was known to the Hindus centuries

ago as it has been referred to in various places by Bhaskaracharya."[151]

महाभारत के पश्चात् लुप्त हुआ विज्ञान पश्चिम में 1600-1700 ई. में प्रारंभ हुआ था जबकि भारत में वह विज्ञान 500 ई. के लगभग प्रारंभ हो चुका था। महाराज भोज के समय पर एक ऐसा यन्त्र बनाया गया था जो स्वचालित होकर घूमता रहता था और एक विमान भी बनाया गया था जो आकाश, पृथ्वी तथा जल में चलता था।[152] महाराजा भोज के वंशज उतने योग्य नहीं थे तथा उस समय भारतीय राजाओं में आपसी फूट के कारण युद्ध होते रहते थे। अब युद्धों में विज्ञान पर कौन ध्यान देता क्योंकि सारा सामर्थ्य, धन, बल, बुद्धि, सेना, साधन तो युद्ध में लगता रहता था। इसके तुरंत बाद अरब के मुस्लिमों के आक्रमण प्रारंभ हो गये थे। धीरे धीरे भारत की स्थिति बिगड़ने लग गयी। भारत एक गुलाम देश बन गया तथा इसको गुलाम बनाने वाले मुस्लिमों ने सब विद्या के ग्रंथों को जलाना प्रारंभ कर दिया। नालंदा तथा तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों तथा अनेकों बड़े पुस्तकालयों को जला दिया गया। सुन्दर भवनों को नष्ट कर दिया गया। गुरुकुल परम्परा समाप्त कर दी गयी जिससे ज्ञान-विज्ञान का प्रवाह भारत में एकदम अवरुद्ध हो गया।

[151] H. T. Colebrooke, '*Classics of Indian Mathematics: Algebra, with Arithmetic and Mensuration, from the Sanskrit of Brahmagupta and Bhaskara*'. (लगभग 11 साल भारत में रहकर इस गणितज्ञ ने प्राचीन भारतीय गणित पर विस्तृत प्रकाश डाला है)

[152] इस विषय को विमान विद्या के विषय में अच्छे से अवश्य पढ़ें।

मुस्लिमों ने भारत पर राज करते हुए केवल धन लूटा किन्तु देश की उन्नति पर कुछ भी खर्च न किया। मुगलों की शानों शोकत देखकर फ्रांसुआ बर्नियर लिखता है कि -

“भारत के बादशाह इतना आलिशान जीवन जीते हैं कि कई देशों के राजाओं का खर्च मिलकर भी इनके खर्च के सामने कम रह जायेगा।”[153]

इसी कारण अंग्रेज थोड़ी सी विज्ञान तथा बुद्धि के बल पर कुछ हजार सैनिकों के होते हुए भी भारत को कब्ज़ा गये थे। पंचतंत्र में एक कहावत आती है कि “बुद्धिर्यस्य बलं तस्य” अर्थात् जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है क्योंकि बुद्धि नामक यन्त्र से अनेकों महान यन्त्र बनाए जा सकते हैं।

इस अभागे भारत पर पुनः ईश्वर की कृपा हुई है तथा अब ज्ञान के क्षेत्र में भारत नई नई उपलब्धियां छू रहा है। भारत अपने प्राचीन वैभव तथा गौरव की ओर बढ़ रहा है। भारत के डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि सारे संसार में श्रेष्ठ माने जाते हैं।

वास्तव में, संसार के लोग भारत को विज्ञान का उत्पादक तथा प्रारंभ करने वाला तो मानते हैं किन्तु भारतीय ज्ञान का समय केवल दो हजार वर्ष के अन्दर समेटने का प्रयास करते हैं। एक और आधा सत्य संसार में प्रचारित कर दिया गया है कि भारत ने शून्य का ज्ञान दिया है। वास्तव में भारत में केवल शून्य ही नहीं अपितु गणित की 19 अंकों की संख्याओं तक का ज्ञान करोड़ों वर्षों से है।

[153] डॉ बर्नियर की भारत यात्रा।

विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद में गणित विद्या विस्तार से सिखलाई गयी है। वेदों में आता है कि -

इमा मेऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्द्धश्चैता मेऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ॥[154]

भावार्थ : मनुष्यों को चाहिये कि एक संख्या को दशवार गुणने से दश (१०), दश को दश बार गुणने से सौ (१००), उसको दश बार गुणने से हजार (१०००), उसको दश बार गुणने से दस हजार (१०, ०००), उसको दश वार गुणने से लाख (१, ००, ०००), उसको दश बार गुणने से दश लाख (१०, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से क्रोड (१, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश क्रोड़ (१०, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से अर्ब (१, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश अर्ब (१०, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से खर्ब (१, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश खर्ब (१०, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से नील (१, ००, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश नील (१०, ००, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से पद्म (१, ००, ००, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश पद्म (१०, ००, ००, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से एक शङ्ख (१, ००, ००, ००, ००, ००, ००, ००, ०००), इसको दश वार गुणने से दश शङ्ख (१०, ००,

[154] यजुर्वेद अध्याय 17, मंत्र 2।

००, ००, ००, ००, ००, ००, ०००) इन संख्याओं की संज्ञा पड़ती हैं। ये इतनी संख्या तो कही है परन्तु अनेक चकारों के होने से और भी अङ्कगणित, बीजगणित और रेखागणित आदि की संख्याओं को यथावत् समझें। जैसे भूलोक में ये संख्या हैं, वैसे अन्य लोकों में भी हैं, जैसे यहां इन संख्याओं से गणना की और कारीगरों से चिनी हुई ईटें घर के आकार हो शीत, उष्ण, वर्षा और वायु आदि से मनुष्यादि की रक्षा कर आनन्दित करती हैं, वैसे ही अग्नि में छोड़ी हुई आहुतियाँ जल, वायु और ओषधियों के साथ मिल के सब को आनन्दित करती हैं ॥२॥[155]

वेदों से ही लेकर सूर्य सिद्धांत आदि में भी इन्हीं संख्याओं का वर्णन किया गया है।

एकं दश शतं चैव सहस्रमयुतं तथा।

लक्षं च नियुतं चैव कोटिरर्बुदमेव च॥

वृन्दं खर्वो निखर्वश्च शङ्खः पद्मश्च सागरः।

अन्त्यं मध्यं परार्धश्च दशवृद्ध्या यथाक्रमम्॥

इन दोनों श्लोकों के शब्दों के नाम देखेंगे तो पता चलेगा कि यजुर्वेद के मन्त्र को ही थोड़ी सरल संस्कृत में लिखा गया है। इसी प्रकार यजुर्वेद में गणित के लिए दो प्रकार की संख्याओं की आवश्यकता बताई गयी है। प्रथम – 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 17, 19...से 33 तक तथा क्रम से आगे। इस मंत्र में गुणन, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भागजाति, प्रभागजाति आदि जो

---

[155] महर्षि दयानंद वेद भाष्य।

गणित के भेद हैं, वे योग और अन्तर से ही उत्पन्न होते हैं, यह गणित की गूढ़ विद्या दी गयी है।[156]

दूसरा – 4, 8, 12, 16, 20, 24, 28, 32, 36, 40, 44, 48 तथा क्रम से। इस मंत्र में सम संख्याओं के द्वारा गणित की अनेकों विद्याओं को सिखाया गया है।[157]

इन्हीं मंत्रों से अनिश्चित तथा असंख्यात का मान निकालने के लिए बीजगणित की विद्या संकेतों (अ+क, अ-क, अ÷क) से निकलती है। इसी प्रकार वेदों से रेखा गणित सम्बंधित मन्त्र तीसरे अध्याय में आप पढ़ चुके है। महर्षि दयानंद तो इन दोनों मन्त्रों से सब गणित की विद्याएँ सीखने की बात कहते थे। उनकी बात उस समय सत्य सिद्ध हुई जब वैदिक मन्त्रों से वैदिक गणित निकला जो अत्यंत सरलता से गणित की गूढ़ जानकारियां सिखाता है। आज अनेकों शिक्षण संस्थानों ने वैदिक गणित को अपना लिया है क्योंकि यह समय को बचाता है। वास्तव में, जो वैदिक गणित आज संसार के लिए आश्चर्य का केंद्र है वह तो हमारे प्राचीन आचार्यों की गणित विद्या का एक छोटा सा नमूना मात्र है। हजारों ग्रंथों के लुप्त होने के उपरांत भी सूर्य सिद्धांत, लीलावती, आर्यभटीय, सिद्धांत शिरोमणि जैसे ग्रंथों से प्राचीन गणित, ज्योतिष तथा सृष्टि विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ परम्परा को जाना जा सकता है।

सारा संसार मानता है कि वेद ही संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है और वेदों में गणित का अत्यंत गूढ़ ज्ञान दिया गया है तथा बहुत बड़ी बड़ी

---

[156] यजुर्वेद अध्याय 18, मंत्र 24।

[157] यजुर्वेद अध्याय 18, मंत्र 25।

संख्याओं का मान भी दिया गया है। इतना होने पर भी किस बुद्धि के दुश्मन ने यह प्रचारित किया है कि भारत ने केवल 0 (शून्य) का ज्ञान दिया है वो भी केवल कुछ सेकड़ों वर्ष पूर्व ही। इतना बड़ा झूठ लोगों से बोला गया। क्यों ? इसका कारण सीधा है कि यदि संसार को यह बता दिया जाता कि प्रत्येक विद्या संसार के प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में पहले से ही थी तथा भारतीय विद्वान जानते भी थे तो वर्तमान वैज्ञानिकों पर प्रश्न खड़ा होता कि इन्होंने कौन सी खोजें की हैं ?

यदि इस विषय पर मैं अपना मत दूँ तो निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि प्राचीन साहित्य में सृष्टि के सभी नियम, गणित विद्या आदि विस्तार से दिए हैं इसलिए इसका श्रेय उन्हीं को जाना चाहिए। पिछले लगभग 1500 वर्ष का भारतीय इतिहास दयनीय राजनैतिक परिस्थिति से होकर गुजरा है इसलिए प्रत्येक विद्या थ्योरी रूप में होने के बाद भी व्यावहारिक (Practical) ज्ञान उन्नत नहीं कर पाए। इसके लिए धन, साधन, राजा, व्यवस्था तथा समाज की अनुकूलता आदि उपलब्ध ही नहीं हो सके। परिणामस्वरुप यूरोप में धीरे धीरे इस थ्योरी से प्रैक्टिकल परीक्षण होने लगे और भिन्न भिन्न पदार्थ बनने लगे। इस कार्य में उन सभी यूरोप आदि पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों को श्रेय दिया जाना चाहिए। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि विज्ञान और वैज्ञानिक समस्त संसार के लाभ के लिए होते हैं।

प्राचीन शास्त्रों के गणित ज्ञान पर प्रोफेसर मैकडोनेल लिखते है कि -

"The great fact that the Indians invented the numerical figures used all over the world."[158]

अर्थात् भारतीयों ने ही दुनिया भर में उपयोग किए जाने वाले संख्यात्मक आंकड़ों का आविष्कार किया है।

गणित विद्या के प्राप्त होते ही ब्रह्माण्ड के अनेक गूढ़ रहस्यों को हल किया जा सकता है। प्राचीन शास्त्रों में उच्च गणित विद्या थी इसी कारण ग्रह, उपग्रह, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि से सम्बंधित सृष्टि के नियमों का भी उच्च ज्ञान उपलब्ध था। ज्योतिष विद्या (ग्रह-नक्षत्रों का ज्ञान) ने भारत में बहुत उन्नति की है। भारत में प्राचीन ज्योतिष पर अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध हैं। आर्यभट्ट ने तो वैदिक ज्योतिष से विभिन्न ग्रहों की सूर्य से दूरी भी मापी है जो वर्तमान आंकड़ों के माप से मिलता है।

भारतीय ज्योतिष की प्राचीनता पर एक विदेशी विद्वान लिखते हुए कहते है कि -

"Astronomy of the Hindus has formed the subject of excessive admiration. As pointed out by Mr. Weber - Astronomy was practiced in India as early as 2780 B.C."[159]

[158] A.A. Macdonell, '*A History of Sanskrit Literature*', p. 424.

[159] Acharya Vaidyanath Shastri, *Science in the Vedas*, 1970, p. 187.

विचार कीजिये जहाँ यूरोप में आज से 350 वर्ष पूर्व[160] तक भी खगोल विज्ञान जैसे विषयों पर शोध करने के लिए वैज्ञानिकों को कैद कर दिया जाता था अथवा मार दिया जाता था वहीं भारत में आज से 4800 वर्ष पूर्व खगोल विज्ञान पर शोध हो रही थी। विभिन्न ग्रहों की गति, ग्रहण लगना, ग्रहों का घूमना, पृथ्वी की परिधि तथा व्यास, प्रकाश से सम्बन्धित ज्ञान आदि प्रत्येक विषय वेदों तथा प्राचीन शास्त्रों में है।

प्रसिद्ध पारसी विद्वान फर्दून लिखते हैं कि **"The Veda is a book of knowledge and wisdom, comprising the book of nature, the book of religion, the book of prayers, the book of morals and so on. The word 'Veda' means wit, wisdom, knowledge and truly the Veda is condensed wit, wisdom and knowledge."**[161] अर्थात् वेद ज्ञान की पुस्तक है जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार इत्यादि विषय सम्मिलित हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान और वेदों में सभी प्रकार का ज्ञान-विज्ञान उपस्थित है।

दुर्भाग्य से आज भारत के अनपढ़ लोगों को कुछ गुरु घंटाल ज्योतिष के नाम पर डरा कर ठगते रहते हैं। ज्योतिष को हाथ देखकर, कुंडली देखकर, चेहरा देखकर भविष्य बताने वाली विद्या कह दिया जाता है। कहाँ तो ज्योतिष से ब्रह्माण्ड के रहस्य जाने जाते थे और कहाँ अब ज्योतिष के नाम पर अच्छे बुरे ग्रहों का नाम लेकर लोगों को मूर्ख बनाया जा रहा है। इस विषय में मेरे कई घंटों के व्याख्यान उपलब्ध है।

---

[160] गैलीलियों पर अत्याचार।

[161] Philosophy of Zoroastrianism and comparative study of Religion.

प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान को कौन नहीं जानता है। आज भी संसार वैकल्पिक प्राकृतिक चिकित्सा पर अधिक विश्वास करता है। ऋषियों ने वेदों से आयुर्वेद का ज्ञान निकालकर मनुष्यों पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हजारों वर्ष पूर्व चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता जैसे आयुर्वेद पर आधारित ग्रन्थ पढ़कर एलोपैथी के लोग आश्चर्य से भर जाते हैं। आज जो सर्जरी की जाती है वह विद्या भारत से ही समस्त संसार में फैली है।

इस विषय पर मद्रास प्रेसीडेंसी के पूर्व गवर्नर कहते हैं कि - **"European physicians learnt the science from the works of Arabic doctors; while the Arabic doctors many centuries before had obtained their knowledge from the works of great Indian physicians such as Dhanvantari, Charak, and Shushruta."**[162] अर्थात् "यूरोप वालों ने चिकित्सा विज्ञान अरब के डॉक्टरों से सीखा है और अरब वालों ने हजारों वर्ष पूर्व यह ज्ञान महान भारतीय चिकित्सा वैज्ञानिकों से सीखा था जिनमें धन्वन्तरी, चरक तथा सुश्रुत आदि जैसे वैद्य थे।"

कजली प्रांत जो मालाबार के पास था वहाँ के राजा ने बहुत ही श्रेष्ठ व अदभुत चीज अकबर के लिए भेजी थी और वो था एक अनोखा चाकू जो किसी का गला काटने के लिए नहीं बल्कि अनेकों बिमारियों के उपचार अर्थात् इलाज़ के लिए था। उस चाकू को कजली के सर्वेश्रेष्ठ वैद्यों ने धातुओं के अनोखे मिश्रण से तैयार किया था ताकि यदि किसी के शरीर में किसी तरह की सूजन आई हो तो चाकू को उस जगह पर रगड़ने से सूजन

[162] Lord Ampthill, at one time Governor of Madras Presidency, said in 1905. (Acharya Vaidyanath Shastri, '*What do the others say?*')

समाप्त हो जाएगी। अन्य अनेकों बिमारियों हेतु भी वह चाकू अद्भुत कार्य करता था।[163]

वर्तमान एलोपैथी में केवल दो ही चीजें मुख्य हैं। पहली सर्जरी और दूसरी एंटीबायोटिक दवाएं। एलोपैथी में जो एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग हो रहा है वह मनुष्यों के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हो रहा है। मैं जहाँ भी कार्यक्रमों में जाता हूँ लोगों को जागरूक अवश्य करता हूँ कि आने वाला समय बहुत ही भयंकर है। एलोपैथी में सभी बिमारियों को ठीक करने हेतु एंटीबायोटिक दवाएं दी जाती हैं। प्रथम बात तो यह कि इन एंटीबायोटिक दवाओं की संख्या सीमित है और नई दवाएं मिल ही नहीं रही हैं। दूसरी बात यह है कि अभी जो एंटीबायोटिक हैं उनका असर मनुष्यों पर हो नहीं रहा है अथवा कम हो रहा है।

विचार कीजिये बीमारी होने पर दवा असर ही ना करे तो क्या स्थिति होगी। आने वाला समय ऐसा है कि साधारण बुखार पर भी एलोपैथी की दवाएं असर करना बंद कर देंगी। आज से लगभग 6 वर्ष पूर्व छपी एक रिपोर्ट में यही कहा गया था।

“We are entering a postantibiotic era, where drug-resistant “superbugs” threaten our health and economy.”[164] अर्थात् एंटीबायोटिक युग जा रहा है और हम अगले चरण

---

[163] यह बहुत ही रोचक व ऐतिहासिक किस्सा है। इस किस्से के बारे में विस्तार से अगले अध्याय में लिखा जायेगा।

[164] When Antibiotics Stop Working, What’s Next?, 28 Jannuary 2014

में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ पर दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया आदि हमारे स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था को खतरा पहुंचाते हैं।

आज कोरोना जैसे वायरस आदि ने सारे संसार को चेताया है कि एलोपैथी की दवाएं आदि बेअसर हो चुकी हैं। इस युग में आने वाली बिमारियों पर दवाओं का कोई असर नहीं हो रहा है। यहाँ तक की जिन दवाओं की जेनेटिक रूप से ताकत बढाई गयी है वे सभी भी बेअसर हो चुकी हैं।

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन[165] भी अनेकों बार इस विषय पर संसार को सचेत कर चुका है। अधिकांश डॉक्टर और हॉस्पिटल बीमार लोगों को अधिक से अधिक दवाएं बेचने का प्रयास करते हैं। धीरे धीरे व्यक्ति पर एंटीबायोटिक काम करना बंद कर देती है। एक छोटे बच्चे को खांसी-जुकाम तथा हल्का बुखार होते ही उसको डॉक्टर जल्दी ठीक करने के चक्कर में दवा की हाई डोस दे देते हैं। ऐसे डॉक्टरों से लोग बहुत प्रसन्न होते हैं कि देखो, हमारा बच्चा उस डॉक्टर ने कितना जल्दी ठीक कर दिया है। अब उस बच्चे के शरीर में कम ताकत की एंटीबायोटिक असर करना छोड़ देंगी। जब वह बच्चा बड़ा होगा तो उसके शरीर पर हाई डोस (ज्यादा ताकत की दवा) की दवा भी काम करना छोड़ देंगी। उस समय वह बहुत बेबस महसूस करेगा क्योंकि उससे ऊपर की ताकतवर दवाएं है ही नहीं।

हानिकारक बैक्टीरिया तथा वायरस आदि धीरे धीरे ज्यादा ताकत की दवाओं के प्रतिरोधी बन जाते हैं। अब उस व्यक्ति को कोई बीमारी आएगी तो दवाएं उसके शरीर पर काम ही नहीं करेंगी। जो अच्छा डॉक्टर होगा वह आपको बताएगा कि बच्चे का साधारण सर्दी-जुकाम तथा बुखार आदि कुछ

[165] *WHO Report*, 'The world is running out of antibiotics', 20 September 2017.

दिनों में अपने आप ठीक हो जायेगा क्योंकि जब भी मनुष्य शरीर में कोई बीमारी आती है तो शरीर अपने आप एक एंटीबॉडी बना लेता है और उस बीमारी से लड़ता है। कुछ ही दिनों में वह बीमारी को ठीक कर लेता है।

इतना ही नहीं हमारे शरीर ने एक बार जिस बीमारी के विरुद्ध एंटीबॉडी बना ली है तो भविष्य में कभी भी हमारे शरीर में वह बीमारी आएगी तो पहली बनी हुई एंटीबाडी तुरंत उस बीमारी से लड़ने लग जाएगी। ईश्वर ने शरीर के अन्दर ही सब व्यवस्था की हुई है। चिकित्सा विज्ञान पढ़ते समय सभी डॉक्टर इन बातों को पढ़ते हैं किन्तु डॉक्टर बनते ही कर्तव्य भूल जाते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी डॉक्टर ऐसे हैं। अनेकों अच्छे डॉक्टर भी हैं। एक डॉक्टर मेरे परिचित है जिनका नाम डॉ अजय जैन है। अपना अस्पताल होते हुए भी लोगों को दवाओं के सही तथा सीमित प्रयोग तथा उनके हानिकारक प्रभावों के बारे में बताते हैं। ऐसे अनेकों चिकित्सकों को मैं जानता हूँ जो समाज में सत्य का प्रचार करके लोगों का स्वास्थ्य बचाने का कार्य कर रहे हैं।

अतः अब संसार के पास एक ही उपाय बचता है कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं। यह बीमारी आने से पहले की तैयारी होती है। अब कोरोना के समय सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की बात कर रहे हैं क्योंकि ऐसे व्यक्तियों पर बीमारी असर नहीं दिखा पाती है। अब इस विषय पर केवल आयुर्वैदिक पद्धति ही जोर देती है। बीमारी आने से पहले ही रोकने का ज्ञान मनुष्यों को आयुर्वेद से मिलता है। बीमारी आने के बाद भी उसको जड़ से ठीक करने का ज्ञान भी केवल आयुर्वेद में ही है।

कुछ लोग कहते हैं कि आयुर्वेद जल्दी असर नहीं करता है। वास्तव में आयुर्वेद का सिद्धांत बीमारी को कुछ समय के लिए दबाना नहीं है बल्कि उसे पूर्णतः ठीक करना है। अब बीमारी भी अचानक से तो आई नहीं है बल्कि धीरे धीरे कई माह अथवा वर्ष की अनियमित जीवनशैली के कारण आई होती है। अतः उसे ठीक करने में भी समय लगेगा। कोई कह देवे कि वह 1 दिन में ठीक करेगा तो वह आपको मूर्ख बना रहा है। ऐसा केवल इसाई मिशनरी आदिवासियों को मूर्ख बनाकर धर्मपरिवर्तन करने के लिए कहते हैं।

दुर्भाग्य से, आज आयुर्वेद के नाम पर भी अनेक देसी-विदेशी कंपनी बाजारों में अनेक नए नए पदार्थ बनाकर धन कमा रही हैं। इसी प्रकार कुछ अनपढ़ लोग सड़क के किनारे सांप आदि का अशुद्ध जहर लेकर असली आयुर्वेद लिखकर लोगों को ठग रहे हैं। मुस्लिमों ने भी आयुर्वेद की बड़ी बड़ी कंपनी बना ली हैं। आयुर्वेद का नाम भी धीरे धीरे मिट्टी में मिलाकर ही छोड़ेंगे ये मुनाफ़ाखोर लोग। मैं किसी व्यापारी (हिन्दू, मुस्लिम, इसाई) पर प्रश्न खड़ा नहीं कर रहा हूँ किन्तु यह शिक्षा देना चाहता हूँ कि आयुर्वेद केवल कुछ दवाओं तक सीमित नहीं है बल्कि शुद्ध आचरण, शुद्ध विचार, नियमित दिनचर्या, शास्त्र अनुसार भोजन, पवित्र जीवन, परोपकार, योग-प्राणायाम, ईश्वर की उपासना आदि का नाम आयुर्वेद है। महर्षि चरक कहते हैं कि -

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थो इत्य मिधीयते ॥[166]

---

[166] चरकसंहिता।

अर्थात् जिसके त्रिदोष (वात, पित्त, कफ), सप्त धातु, मल प्रवृत्ति आदि शारीरिक क्रियाएँ संतुलित अवस्था में हों, साथ ही आत्मा, इन्द्रिय एवं मन प्रसन्न स्थिति में हो, वही स्वस्थ मनुष्य कहलाता है।

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि संसार की कोई बीमारी ऐसी नहीं है जो शुद्ध आयुर्वेद से ठीक न हो सकती हो। जो भी मेरी इस पुस्तक को पढ़ रहा है वह आज से ही आयुर्वेद को सम्पूर्ण रूप से जीवन में धारण करें और बच्चों को छोटी-मोटी बिमारियों में एंटीबायोटिक न देवें अथवा डॉक्टर को कह देवें कि सबसे कम ताकत की दवा ही बच्चे को दें। आज भारत देश में इस विषय पर स्वामी रामदेव जी ने बहुत जागरूकता फैलाई है। उन्हीं के मार्गदर्शन में भाई राजीव दीक्षित ने भी अनेकों व्याख्यानों द्वारा लोगों तक सत्य जानकारियां पहुंचाई थी तथा आचार्य बालकृष्ण आज भी लोगों के स्वास्थ्य हेतु कार्य कर रहे हैं। इनसे पूर्व वैद्य आचार्य रामनारायण शर्मा तथा स्वामी ओमानन्द जैसे अनेकों लोगों ने भी आयुर्वेद पर पुरुषार्थ किया था। प्रोफ़ेसर विल्सन लिखते हैं कि -

“Indian medicine dealt with the whole area of the science.”[167] सारा संसार जानता है कि मनुष्य शरीर को पूर्ण सुरक्षित करने के उपाय तथा समाधान केवल प्राचीन आयुर्वेद पद्धति में ही हैं। आयुर्वेद कितना भी प्राचीन क्यों न हो किन्तु आज भी उतना ही उपयोगी तथा असरकारक है जितना हजारों वर्ष पूर्व था। आयुर्वेद एक निर्दोष विद्या है और जो सदा नवीन ही रहती है। पूरे शरीर की शुद्धि का उपाय यदि किसी चिकित्सा पद्धति में है तो वह केवल आयुर्वेद की ही पद्धति है। संसार

[167] Acharya Vaidyanath Shastri, *Science in the Vedas*, 1970, p. 191.

में प्रत्येक पदार्थ तथा यन्त्र की देखभाल तथा शुद्धि करनी पड़ती है अन्यथा वह यन्त्र किसी काम का नहीं रहता है। आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि संसार का सबसे अद्भुत यन्त्र बुद्धि नामक यन्त्र है। आयुर्वेद में बुद्धि की शुद्धि तक के उपाय बताए गये हैं किन्तु लोग केवल शरीर के स्थूल अंगों की ही शुद्धि पर अधिक ध्यान देते हैं। इसीलिए प्राचीन ऋषियों ने शुद्ध बुद्धि के बल पर केवल भौतिक उन्नति ही नहीं की बल्कि आध्यात्मिक उन्नति भी की थी। जब आध्यात्मिक उन्नति भी भौतिक उन्नति के साथ होती है तो मनुष्य विज्ञान की अनावश्यक दौड़ में हिस्सा नहीं लेता है। केवल अत्यंत आवश्यक पदार्थ बनाता है वो भी आवश्यकता अनुसार ही। इसीलिए 500 वर्ष पूर्व तक भी संसार में शुद्ध वातावरण था तथा कैंसर, एड्स जैसी बीमारियाँ नहीं होती थी। फ्रांसुआ बर्नियर भारत से अपने राजा को अपना यात्रा वृतांत भेजते हुए लिखता है कि -

“यहाँ के मर्दों को वह बीमारियाँ बहुत कम होती हैं जिनकी हमारे देश में प्रधानता है और यदि अभाग्यवश कभी हो भी जाती है तो वह इतनी भयंकर नहीं होती जैसी हमारे यहाँ।”[168]

जब से भारत में यूरोप के लोग आये तथा यहाँ कॉलोनियां बसाई तब से प्लेग, मलेरिया आदि जैसी बीमारियाँ भारत में फैलने लगी। एलोपैथी के विकास के लिए भारत जैसे देशों में यूरोप वालों ने अनेकों परिक्षण भी किये। भांति भांति की दवाओं के मनुष्यों पर परीक्षण करने के कारण भारत के गाँव के गाँव नष्ट होने लगे। षड्यंत्रों के तहत फैलाई गयी ऐसी बिमारियों का आयुर्वेद में उपाय नहीं था और ना ही आयुर्वेद के परीक्षणों के लिए गुरुकुल

[168] बर्नियर की भारत यात्रा पृष्ठ 189।

ही बचे थे। गुरुकुल व्यवस्था पहले ही अंग्रेजों (ईसाईयों) ने नष्ट कर दी थी। ऐसे में एलोपैथी की ओर लोगों को मोड़ने के लिए यूरोप वालों ने साहित्य, अख़बार, पत्रिकाओं आदि के माध्यम से प्रचार करना आरम्भ कर दिया। एलोपैथी पर अरबों खर्च किये गये वही आयुर्वेद पर हजारों तक खर्च न हुए। परिणामस्वरुप भारत में आज 2 कैंसर की ट्रेन चलती हैं। प्रत्येक तीसरा व्यक्ति गंभीर बीमारी से ग्रसित है। मेरा निश्चित मत है कि आज यह राष्ट्र जागृत नहीं हुआ तो भविष्य में कभी सुखपूर्वक सो नहीं पायेगा।

4.9 प्राचीन यात्रा के साधन

कुछ लोग सोचते हैं कि मनुष्य ने पहली बार विज्ञान के चमत्कारों के कारण तीव्र वेग से चलने वाले यात्रा के साधन बनाए हैं। सत्य मानिये कि उन लोगों ने संसार के प्राचीन साहित्य का एक छोटा हिस्सा भी नहीं पढ़ा है। यदि पढ़ा होता तो ऐसी बहकी बहकी बातें न करते और प्राचीन लोगों के पुरुषार्थ का अपमान कभी नहीं करते। यात्रा के साधनों से पूर्व वेदों में तीन प्रकार के मार्ग (सड़कें) बनाने का वर्णन किया गया है।

ये ते पन्थानो बहवो जनायना। रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे।[169]

अर्थात् तीन प्रकार के मार्ग बनाने चाहिए। पहला जनायन, दूसरा रथवर्त्म और तीसरा अनोवर्त्म।

- जनायन अर्थात् इस मार्ग पर केवल मनुष्य ही चल सकते हैं।

[169] अथर्ववेद मण्डल 12, सूक्त 1, मन्त्र 47।

- रथवर्त्म अर्थात् इस मार्ग पर केवल रथ (तीव्र गति से चलने वाले साधन) ही चल सकते हैं।
- अनोवर्त्म अर्थात् इस मार्ग पर केवल बैल, बछड़े आदि ही चल सकते हैं।

इस प्रकार मार्गों का विभाजन पूर्ण वैज्ञानिक तथा लाभदायक होता है। इस प्रकार तेज सवारियों से धीमी गति वाले अथवा पैदल चलने वालों की टक्कर होने की सम्भावना कम होती है। संसार के सबसे प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार मार्गों का विभाजन पढ़कर आपको आश्चर्य तो हो ही रहा होगा। अभी मैं यूरोप गया तो मैंने देखा कि जैसा वेदों में व्यवस्था कही गयी है उन लोगों ने अपने लिए वैसी ही व्यवस्था बनाई हुई है। पैदल चलने वालों के लिए अलग से एक सड़क बनाई है। उसके साथ साईकिल व धीमे स्कूटर वालों के लिए सड़क है फिर उसके साथ गाड़ियों के चलने के लिए सड़क है। इस प्रकार की व्यवस्था करने पर तथा नियम बनाकर उनका पालन करने पर जनहानि अत्यंत न्यून होती है तथा भीड़ भी इकट्ठा नहीं होती है। वेदों में कहा गया है कि -

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम्। कण्वा अभि प्र गायत॥[170]

अर्थात् "हे विद्वानों! तुम वायु के द्वारा बल को पैदा करके बिना घोड़ों के रथ से क्रीडा के लिए विशेष साधन बनाओ।"

कुछ लोग रथ से केवल यही तात्पर्य ले लेते हैं कि जिसमें घोड़े जुड़े होते हैं। वास्तव में रथ शब्द स्थान व स्थितिनुसार सभी प्रकार के तीव्र गति से चलने

[170] ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 37, मन्त्र 1।

वाले वाहनों के लिए प्रयुक्त होता है। इतना ही नहीं वेदों में विद्युत् से चलने वाले रथों का भी स्पष्ट वर्णन है।

यजुर्वेद में आता है कि "वायु की गति तथा विद्युत् की दीप्ति से युक्त रथों को प्राप्त होकर तथा देश देशांतर में जाकर प्रसिद्ध होंवे।"[171] इतना ही नहीं एक ही रथ में सेकड़ों मनुष्य बैठकर यात्रा करने के रथों का वर्णन वेदों में किया गया है।

अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान।[172]

अर्थात् "जो तीन प्रकार (बिजली, सूर्य, अग्नि) के प्रकाश से प्रकाशित रथ होवें उसमें सौ श्रेष्ठ पुरुषों को लावें तथा ले जावें।"

वास्तव में सत्य बहुत कड़वा तथा आश्चर्यजनक होता है। वेदों में ऐसी उच्च विद्या की शिक्षा जानकार आपको महान आश्चर्य अवश्य हो रहा होंगा क्योंकि पहले कभी यह सत्य किसी ने बताया नहीं तथा आपने कभी कहीं पढ़ा और सुना भी नहीं है। अथर्ववेद के इस मन्त्र में सेकड़ों श्रेष्ठ लोगों को एक ही यन्त्र से चलने वाले रथ में यात्रा करने का वर्णन आया है। वास्तव में सेकड़ों लोगों को एक साधारण घोड़े का रथ एक साथ यात्रा करवा भी नहीं सकता है। यदि घोड़ों का रथ लम्बा व विशाल होगा तो उसका मार्ग में संचालन ही असंभव हो जायेगा। इससे भी आप समझ सकते हैं कि रथ (मोटर गाड़ी) तीव्र गति से चलने वाली रेलगाड़ी तथा साधारण गाड़ी को कहते हैं।

[171] यजुर्वेद अध्याय 9, मन्त्र 8।

[172] अथर्ववेद कांड 20, सूक्त 76, मन्त्र 2।

यह तो बात हुई धरती पर तीव्र वेग से चलने वाले साधनों की। अब बात करते हैं वायु में चलने वाले साधनों की। महर्षि दयानंद सरस्वती वेद भाष्य में लिखते है कि **"शब्दायमानान् विमानान्"** अर्थात् शब्द करते हुए विमान। जिस समय महर्षि दयानंद ने ये बातें लिखी थी उस समय तो विमान आदि थे ही नहीं और ए.ओ.ह्युम जैसे विदेशी लोग तो महर्षि दयानंद का उपहास तक उड़ाते थे। जब आप विमान शास्त्र पढेंगे तो पता चलेगा कि विमान की भिन्न भिन्न गतियाँ तथा मार्गों का निर्धारण भी प्राचीन ऋषियों ने किया था ताकि वायु में हादसे आदि होने से बचा जा सके। विमान की गतियाँ जैसे चालन, कम्पन, ऊर्ध्वगमन, अधोगमन, मण्डल, चक्रगति, घूमगति, विचित्रगति, अनुलोमगति, विलोमगति, दक्षिणगति, तिर्यग्गति आदि होती थी। विमान के आकाश में पांच मार्ग बनाये गये थे जिनके नाम रेखापथ, मण्डल, कक्ष्य, शक्ति, केंद्र थे।

विमान चालक के गुण, कपड़े तथा भोजन आदि के भी विशेष नियम रखे गये हैं। 'लोहतंत्र, दर्पणप्रकरण, शक्तितंत्र' आदि लगभग 100 प्राचीन ग्रंथों का उल्लेख भी किया गया है जो अब उपलब्ध नहीं होते हैं। संभवतः यूरोप विशेषकर इंग्लैंड के संग्रहालयों में इनमें से कुछ ग्रन्थ अवश्य हो सकते हैं। लगभग 36 आचार्यों की सूचि भी दी गयी है। विमानों में भिन्न भिन्न प्रकार के नए नए यन्त्र बनाकर रखने को कहा गया है। अपने विमान की रक्षा हेतु तथा शत्रु पर प्रहार करने हेतु अनेकों यंत्रों के नाम तथा कार्य बताए गये हैं। आकाश में युद्ध करने के उपाय भी बताए गये हैं। कल्पना कीजिये विमान विद्या कितनी उच्च अवस्था तक एक समय पर पहुंची होगी। ऐसे अद्भुत प्राचीन विज्ञान के ग्रंथों के होते हुए कौन कह सकता है कि विज्ञान ने पहली

बार उन्नति का शिखर छुआ है। विमान विद्या का प्राचीन इतिहास आपको निश्चित रूप से आश्चर्यचकित कर सकता है।

हवाई जहाज – विमान विद्या का सम्पूर्ण इतिहास

पिछले एक दशक से प्राचीन भारतीय हवाई जहाज तकनीक पर भारतीयों में ज्ञान प्राप्त करने की रूचि बढ़ी है। किन्तु इस विषय पर विस्तार से जानकारी तथा विमान शास्त्र आदि जैसे प्राचीन ग्रन्थ सुलभ नहीं है। इस लेख में कोई रटी रटाई जानकारी नहीं, अपितु अत्यंत विस्तार से इतिहास व पुस्तकों का अध्ययन करके अमूल्य प्राचीन जानकारियां दी गयी है। यह विषय अत्यंत गहन तथ्यों तथा जानकारियों से लबालब भरा हुआ है। संभवतः इस विषय का इतना विस्तृत लेख कहीं पर उपलब्ध नहीं है।

नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम् ।।

जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाये तो फल-फूल कहां से हो ?

हवाई जहाज की खोज को विज्ञान की सर्वोत्कृष्ट देन माना जाता है। यह खोज मनुष्य को दांतों तले ऊँगली दबाने पर विवश कर देती है। आज सारी दुनिया स्वीकारती है कि 17 दिसंबर 1903 को राइट ब्रदर्स ने हवाई जहाज बनाकर पहली बार उड़ाया था। दुर्भाग्यवश अधिकांश भारतीय भी कहते और मानते हैं कि यह विद्या पश्चिम की देन है। पाठकों, ऐसा कहना इतिहास का सबसे बड़ा झूठ है।

गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ ?

आज जब भी कोई प्राचीन भारतीय ज्ञान/विज्ञान व समृद्धि की बात करता है तो वही भारतीय कहते हैं कि “क्यों गड़े मुर्दे उखाड़ते हो ?” अतः इस अत्यंत महत्पूर्ण विषय को प्रारंभ करने से पूर्व इसका उत्तर देना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

‘आज में जियो’, ‘कल किसने देखा’, ‘जो बीत गया सो बीत गया’ जैसी बातें करने वाले ही इतिहास से सबसे अधिक लाभ उठाते हैं। मनुष्य इतिहास से घिरा हुआ है, भरा हुआ है। हम छापा (फोटो) लेते हैं, चलचित्र (वीडियो) बनाते हैं। क्यों ? क्योंकि हम अपने इतिहास को सुरक्षित करना चाहते हैं। मैंने देखा है कई बार गहन जाँच के लिए मुर्दों को भी उखाड़ा जाता है। हमारा प्रत्येक कर्म भूत बन जाता है लेकिन फल भविष्य में ही मिलता है।

नौकरी का प्रत्येक दिन भूत बन जाता है किन्तु वेतन भविष्य में मिलता है। यदि हमने नौकरी ठीक से नहीं की थी, वो वेतन में समस्याएँ आयेंगी अथवा अपमानित होना पड़ेगा। किन्तु यदि हमारा भूत अच्छा है तो कोई समस्या नहीं होती है।

एक छोटा बच्चा दो दिन विद्यालय नहीं जाता है तो तीसरे दिन उसे डर लगेगा लेकिन यदि उसका भूत अच्छा है, उसने विद्यालय से कोई अवकाश (छुट्टी) नहीं लिया है, गृहकार्य अच्छे से किया है तो उसे भविष्य में स्कूल जाने से डर नहीं लगेगा। वह प्रसन्नतापूर्वक स्कूल जायेगा तथा पूरे मन से आगामी (भावी) कार्य करता चला जायेगा।

यही एक राष्ट्र के साथ भी होता है । इतिहास हमारा वर्तमान में मार्गदर्शन करता है तथा हमारे स्वर्णिम भविष्य का आधार है । इतिहास को जानकर ही हम अपने पूर्वजों द्वारा की गलतियों को दोहराने से बच सकते हैं और जो गौरवपूर्ण कार्य आदि हो उनका अनुसरण करके सुख-समृद्धि की ओर बढ़ सकते हैं । इसलिए प्राचीन समय में राजा को प्रतिदिन 1 घड़ी इतिहास श्रवण करना अनिवार्य होता था।

विश्व इतिहास की 2 बड़ी घटनाएं

493 ई.पू. यूनान से फारस हार गया था। फारस के सम्राट डेरियस ने अपने नौकर से कहा कि वह प्रतिदिन उनके सामने आकर कहे कि **"मालिक एथेंस वालों को स्मरण रखें"** बाद में फारस यूनान से युद्ध जीता था।

लगभग 1700 वर्ष तक यहूदियों पर पहले ईसाईयों ने व फिर मुस्लिमों आदि ने अत्याचार किये । इनको अपना मुख्य पवित्र स्थल यरुशलम छोड़कर दर दर भटकना पड़ा। यहूदी जब कभी आपस में मिलते तो कहते "अगले वर्ष यरुशलम में मिलेंगे ।" आज यरुशलम (इजराइल की राजधानी) पर यहूदियों का कब्ज़ा है।

अर्थात् जिन्होंने भी अपने इतिहास को स्मरण रखा उन्होंने अपना खोया गौरव, अधिकार और ताकत प्राप्त कर ली तथा स्वाभिमान से अपनी व्यवस्थाएं चलाकर विश्व पटल पर छा गये । दुर्भाग्य से, भारतीय जन मानस वैश्विक घटनाओं व इतिहास से आँख मूंदे बैठा है। अब सोये हुए व्यक्ति को तो उठाया जा सकता है किन्तु जिसने सोने का

नाटक कर रखा है उसको कौन उठा सकता है ? अभी भी समय है कि जब प्रत्येक भारतीय धर्म तथा इतिहास का सत्य ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बनाने में दिन रात परिश्रम करे ताकि भारत राष्ट्र विश्वगुरु बनें । केवल ज्ञान विज्ञान में ही नहीं अपितु संस्कारों में भी भारतीय जन मानस संसार के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करे ।

भारतीयों को सोने का कटोरा लेकर भीख मांगने वाले कह दिया जाता है । वास्तव में सोने का कटोरा लेकर भीख नहीं मांगी जाती है बल्कि दान दिया जाता है । भारतीयों ने सोने के कटोरे में संसार को अमूल्य हीरे मोती दान में दिए हैं । आधी दुनिया की जनसँख्या भारत से लूटी हुई धन संपदा के बल पर आज भी अपने को सभ्य तथा समृद्ध कह रही है । भारत से सबने ज्ञान विज्ञान लिया, सोना-चांदी, हीरे-मोती लिए और आज उसी देश का अपमान करना कृतघ्नता है ।

मित्रों, संसार में धन-संपदा से भी बड़ा सम्मान होता है । भारत को पुनः शिखर पर पहुँचाने का केवल एकमात्र मार्ग अपने देश, धर्म, जाति तथा इतिहास को समझना ही है । सारा संसार आज भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है कि 21वीं सदी में यह मानवता की सुख, शांति तथा समृद्धि का मार्ग दिखायेगा । ऐसे समय पर ओम् तथा ईश्वरीय ज्ञान की महत्ती आवश्यकता है । यह पुस्तक प्रत्येक नौजवान को सत्य वैदिक धर्म की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगी ।

सर्वप्रथम विमानों का इतिहास किसने बताया ?

18वीं शताब्दी में सर्वप्रथम “मनुष्य विमान बनाकर उड़ सकते हैं” कहने वाले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे । वर्तमान

समय में उन्होंने ही प्राचीन हवाई जहाज विज्ञान के विषय को जनसामान्य का विषय बनाया। उन्होंने ताबड़तोड़ कार्यक्रम करते हुए प्रचुर मात्रा में प्रमाण दिखाते हुए प्राचीन भारत में विमानों का इतिहास बताना शुरू किया। सेकड़ों वर्षों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हिन्दू जाति को स्वयं अपने स्वर्णिम इतिहास पर संशय हो रहा था। वो सबकुछ यूरोप की देन मानने लगे थे। लोग अपने धर्म तथा इतिहास को दीन-हीन समझने लगे थे।

जब रेलगाड़ी के आविष्कार के नाम पर कुछ गुलाम मानसिकता के भारतीय लोग अंग्रेजों की प्रशंसा करते थे तो स्वामी दयानन्द ने 10 अषाढ़ शुदी 1932 (1874) को दहाड़ते हुए कहा था कि -

"उपरिचर नामक राजा था। वह सदा भूमि को स्पर्श न करता हुआ हवा ही में फिरता रहता था। पहले के जो लोग लड़ाइयाँ लड़ते थे, उन्हें विमान रचने की विद्या भली प्रकार विदित थी। मैंने भी एक विमान रचना का पुस्तक देखा है। भाई, उस समय दरिद्रों के घर भी विमान थे (जैसे अमेरिका में आज लगभग लोगों के पास गाड़ी है)। भला सोचें कि उस व्यवस्था के सन्मुख रेलगाड़ी की प्रतिष्ठा क्या हो सकती है ?"[173]

ए.ओ.ह्यूम जिन्होंने बाद में 28 दिसम्बर 1885 को मुंबई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की थी। उन्होंने स्वामी दयानन्द का उपहास (मजाक) करते हुए कहा था कि **"व्यक्ति का उड़ना गुब्बारों तक**

[173] पूना प्रवचन, पृष्ठ 42-43 तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शती ग्रन्थ, 1983, पृष्ठ 94।

ही सीमित रह सकता है । यान बनाकर पक्षी की तरह तो केवल सपनों में ही उड़ा जा सकता है । स्वामी जी का दिमाग ठीक नहीं है ।"[174]

आज 133 वर्ष कांग्रेस की स्थापना को हो चुके हैं । ए.ओ.ह्यूम का स्थान राहुल गाँधी ने ले लिया है किन्तु सोच में आज भी अंतर नहीं दिखाई पड़ता है । अस्तु, जब विमान बनने लगे तब एक दिन उदयपुर में ए.ओ.ह्युम ने स्वामी श्रद्धानंद जी से अपने उपहास के लिए क्षमा मांगी थी क्योंकि महर्षि दयानंद सरस्वती उस समय जीवित नहीं थे ।

विमान का प्रथम आविष्कारक के विषय में उत्तर देते हुए स्वामी दयानंद जी ने कहा था कि -

"कला-कौशल की व्यवस्था करने वाला विश्वकर्मा नामक एक पुरुष हुआ है । विश्वकर्मा परमेश्वर का भी एक नाम है और एक शिल्पकार का भी था । अस्तु, विश्वकर्मा ने विमान की युक्ति निकाली । फिर इस विमान में बैठकर आर्य लोग इधर-उधर भ्रमण करने लगे ।"[175]

विश्वकर्मा नामक महान शिल्पी का उल्लेख अनेकों इतिहास के ग्रंथों में आता है । इससे स्पष्ट पता चलता है कि वेदों को पढ़कर सर्वप्रथम विमान का आविष्कार विश्वकर्मा ने करोड़ों वर्ष पूर्व ही कर दिया था ।

---

[174] देशभक्तों के बलिदान, हमारी विरासत तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शती ग्रन्थ (तीनों उपलब्ध)।

[175] पूना प्रवचन, पृष्ठ 94 तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शती ग्रन्थ, 1983।

महाभारत में विमान विद्या के साक्ष्य

द्रुपद को लगता था कि लाक्षागृह में पाण्डव जलकर नहीं मरे। वह अपनी पुत्री का विवाह अर्जुन से करना चाहता था (वैसे बाद में द्रौपदी का विवाह युधिष्ठिर से हुआ था)। इसलिए द्रौपदी के पिता राजा द्रुपद ने स्वयंवर की सूचना एक ऐसे यंत्र से दी थी जो आकाश में घूमता था ताकि यदि पाण्डव कहीं हों तो वो उस सूचना को सुन सकें।

यन्त्रं वैहायसं चापि कारयामास कृत्रिमम्।
तेन यन्त्रेण समितंराजा लक्ष्यं चकार सः॥[176]

अर्थात् "राजा द्रुपद ने एक कृत्रिम आकाश यन्त्र भी बनाया जो तीव्र वेग से आकाश में घूमता रहता था। उस यंत्र के छिद्र के ऊपर उन्होंने उसी के बराबर का लक्ष्य तैयार कराकर रखवा दिया।"

श्रीकृष्ण व अर्जुन पाताल (अमेरिका) में अश्वतरी अर्थात् जिसको अग्नियान नौका कहते हैं उस पर बैठकर पाताल में जाके महाराज युधिष्ठिर के यज्ञ में उद्दालक ऋषि को लेके आये थे। तब युधिष्ठिर श्रीकृष्ण से कहता है **"त्वत्कृते पृथिवी सर्वा मद्वशे कृष्ण वर्तते।"** हे श्रीकृष्ण! आपकी कृपा से सारी पृथ्वी इस समय मेरे अधीन हो गयी है। महाभारत सभापर्व का यह श्लोक स्पष्ट सिद्ध करता है कि पूरा संसार भारत के सामने, उसके बल, विद्या तथा सामर्थ्य के सामने नतमस्तक था। इतना ही नहीं यह भी पता चलता है कि सारे संसार में वेदों के ज्ञाता ऋषि महर्षि रहते थे तथा भ्रमण आदि करते थे। अतः सारे संसार के मनुष्य एक ही वृक्ष की अलग अलग शाखाएं हैं। सभी

---

[176] महाभारत, आदिपर्व।

मनुष्य एक दूसरे के सगे सम्बन्धी हैं। सभी को एक दूसरे के अच्छे तथा मानवीय क्रियाकलापों का सम्मान करना चाहिए।

योगिराज महाराज श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र के विषय में तो आप सबने सुना ही होगा। निश्चित रूप से वह शस्त्र आज भी लोगों को आश्चर्य में डाल देता है।

क्षिप्तं क्षिप्तं रणे चैतत् त्वया माधव शत्रुशु।

हत्वाप्रतिहतं संख्ये पाणिमेष्यति ते पुनः॥ [177]

श्रीकृष्ण को आग्नेयमस्त्रं (सुदर्शन चक्र) देने वाले महान शिल्पी ब्राह्मणदेव कहते हैं कि हे माधव! युद्ध में आप जब जब इसे शत्रुओं पर चलाएंगे, तब तब यह उन्हें शीघ्र ही मारकर और स्वयं किसी वज्र से नष्ट न होकर पुनः आपके हाथ में आ जायेगा। (तीव्र गति से लक्ष्य भेदकर वायु को चीरता हुआ बिना बिगड़े पुनः प्रयोग के लिए वापिस आ जाना आश्चर्यजनक विद्या थी। इस अस्त्र की महानता का इससे पता लगता है कि वर्तमान काल के परम बुद्धिमान वैज्ञानिक अब तक किसी ऐसे शस्त्र का आविष्कार नहीं कर पाए हैं।)

इन सब प्रमाणों के बाद कौन कह सकता है कि आज से लगभग 5154 वर्ष पूर्व महाभारत के समय विमान विद्या तथा अन्य उन्नत विद्याएँ भारत में नहीं थी। महाभारत युद्ध में हमारा सारा ज्ञान-विज्ञान और वैभव नष्ट हो गया था। विद्वान तथा शिल्पी लोग सब मारे गये थे। किन्तु आइये उसके हजारों साल बाद भी नमूने के तौर पर बची विज्ञान का दिग्दर्शन आपको करवा देते हैं।

---

[177] महाभारत, आदिपर्व।

प्रश्न - क्या महाभारत युद्ध के बाद कभी भारत में विमान आदि उड़े थे ?

उत्तर - आज से लगभग 1550 वर्ष पूर्व राजा भोज भारत के सम्राट थे। राजा भोज के काल में विद्वान, शिल्पियों तथा लेखकों का बड़ा मान सम्मान होता था। महाकवि कालिदास इन्हीं के समय हुए थे। इनके प्राचीन ग्रन्थ "भोजप्रबंध" तथा "समरांगणसूत्रधार" मैंने स्वयं पढ़े हैं। उनमें ज्ञान विज्ञान की अनेकों विद्याएँ दी हुई है।

वहीं महर्षि दयानंद भी अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में प्राचीन विमान विद्या की झलक दिखाते हुए राजा भोज की प्राचीन भोजप्रबन्ध पुस्तक से प्रमाण देते हुए लिखते है कि -

घट्येकया कोशदशैकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चारूगत्या।

वायुं ददाति व्यजनं सुपुष्कलं विना मनुष्येण चलत्यजस्त्रं ।।

अर्थात् राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान यन्त्रकलायुक्त बनाया था। वह एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और 1 घंटे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था जो बिना मनुष्य के चलाये कलायंत्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने घमंड में न चढ़ जाते।"

यहाँ पर यूरोप के लोगों का अपमान करने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं है और ना ही महर्षि दयानंद का रहा होगा। किन्तु प्राचीन लोगों को उनके पुरुषार्थ का थोड़ा भी श्रेय न देकर उल्टा उनका अपमान करना

कोई भी सभ्य व्यक्ति सहन नहीं कर सकता है । मैं यहाँ केवल आपको यह कहना चाहता हूँ कि संसार में कभी भी किसी एक जाति को दूसरी जाति का अपमान नहीं करना चाहिए और ना ही अन्याय से उसके साधन, संसाधन, धन संपदा, ज्ञान विज्ञान को लूटना चाहिए । भारत देश को सब प्रकार से लूटकर फिर उसी का अपमान किया गया । महान वैज्ञानिकों की संतान भारत के लोगों को अनपढ़ गंवार कहकर ईसाईयों ने तोप के मुंह पर बांधकर मारा गया । मुस्लिमों ने भारत के लोगों के मुंह पर थूककर जजिया कर लिया । जिन भारतीयों की मेहनत से 58 मुस्लिम तथा 100 से अधिक इसाई देशों ने उन्नति की है उन्हीं भारतीयों को नष्ट करने की सोचना पशुवृत्ति है । जैसे माँ बच्चे को दूध पिलाती है और उसको प्रेम से पालती है भारत ने सदा सारे विश्व को केवल दिया ही दिया है कभी कुछ लिया नहीं है । उसके बाद भी ऋषियों की भूमि भारत और उसके लोगों को तथा उनकी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, इतिहास, परम्पराओं को तुच्छ कह देना कितना उचित है ?

भारत में सृष्टि के नियमों के आधार पर शत्रुओं को युद्ध में हराने के लिए अनेकों प्रकार के दिव्य कलायुक्त यंत्रों के बनाने तथा सीखने के लिए वेदों की विद्या के आधार पर धनुर्वेद बनाया गया था । इस ग्रन्थ में उच्च विज्ञान के सिद्धांत उपस्थित थे । आज धनुर्वेद उपलब्ध नहीं होता है ।

1857 के सन्यासी विद्रोह के मार्गदर्शक स्वामी दयानन्द (गोल मुख वाले बाबा) और उनके गुरु विरजानंद दंडी ही थे । जब भारतीयों की आपसी फूट, अनुशासनहीनता तथा अस्त्र-शस्त्र की कमी के कारण

विद्रोह असफल हुआ तो स्वामी जी बहुत दुखित हुए थे । इसी कारण एक बार उन्होंने कहा था कि -

"सारे भारत में घूमने पर भी मुझे धनुर्वेद के ढाई पन्ने मिले है । यदि मैं जीवित रहा तो सारा धनुर्वेद प्रकाशित कर दूंगा ।" स्वामी जी ने यही बात दोबारा नवम्बर 1878 ई. में कही थी ।[178]

दुर्भाग्य से, स्वामी दयानंद वेदों का भाष्य भी पूरा नहीं कर पाये थे कि षड़यंत्र पूर्वक उनको जहर देकर स्वामी जी के शरीर का अंत कर दिया गया था । आज विज्ञान ने भी अनेकों दिव्य शस्त्रों का विस्तार कर लिया है । जिस राष्ट्र के पास जितने उन्नत प्रकार (किस्म) के हथियार हैं उस राष्ट्र की उतनी ही अधिक ताकत है । प्राचीन भारत में भी दुष्ट लोगों के विरुद्ध सत्य की विजय के लिए अनेकों प्रकार के शस्त्रों का निर्माण हुआ था । आपको स्मरण तो होगा ही जब केवल श्रीराम और श्री लक्ष्मण जी ने अकेले ही खर और दूषण की 10000 की सेना को कुछ ही समय में दिव्य अस्त्र शस्त्रों से ढेर कर दिया था ।

वेदों में हवाई जहाज

मूल रूप से संसार भर में फैली सभी विद्या वेदों से ही फैली है । वेदों में विस्तार से समुद्र, भूमि और अन्तरिक्ष में शीघ्र चलने के लिए यान विद्या के अनेकों मंत्र हैं । हवाई जहाज कैसे होते हैं ? हवाई जहाज की गति कितनी होती है ? हवाई जहाज कैसे बनाये जाते हैं ? इस विषय में इतना विस्तार से वेदों में लिखा गया है कि इसपर एक पूरा बड़ा ग्रन्थ लिखा जा सकता है । इस विषय की अधिक जानकारी के लिए

---

[178] अजमेर और ऋषि दयानन्द, पृष्ठ 61 तथा देशभक्तों के बलिदान, पृष्ठ 500 (दोनों दुर्लभ पुस्तकें उपलब्ध है) ।

आप “ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका” पुस्तक का “नौविमानादिविद्याविषयः” भी पढ़ सकते हैं।

संक्षेप में वेद के कुछ एक मंत्र जिनमें यह विद्या विस्तार से दी हुई है -

1. जो नौकाओं से समुद्र में, रथों से पृथ्वी पर और विमानों से आकाश में दुष्टों से युद्ध करते हैं, वे सदा ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।[179]
2. यान इस प्रकार के होंवे कि जिनसे एक ही दिन-रात में भूगोल, समुद्र तथा अन्तरिक्ष मार्ग से तीन बार जा सकें।[180]
3. यान ऐसे होने चाहिए कि जिनमें बैठकर ग्यारह (11) दिन में ब्रह्माण्ड के चारों ओर जाया जा सके।[181]
4. जो राजा शस्त्रास्त्र जानने वाले श्रेष्ठ धार्मिक शूरों, विमान आदि यानों के निर्माता शिल्पियों और विद्युदादि विद्याओं के विद्वानों की सत्कार-पूर्वक रक्षा करता है, उसका यश सूर्य-रश्मियों की भांति फैलता है।[182] (जैसे अमेरिका आदि यूरोप देशों में वैज्ञानिकों, सैनिकों, विद्वानों को बहुत धन व मान-सम्मान मिलता है तो वो देश आज ईश्वरीय ज्ञान की बात मानते हैं और आगे हैं।)

इतना ही नहीं विमान को बनाने की विद्या भी वेदों में दी गयी है। विमान को कैसे बनाना है इससे सम्बंधित भी वेदों में अनेकों मंत्र हैं। विमान निर्माण करने की विद्या अनेकों वेद मन्त्रों में संक्षेप में बताई

[179] ऋग्वेद भाष्य, मण्डल 1, सूक्त 16, मन्त्र 7।
[180] ऋग्वेद भाष्य, मण्डल 1, सूक्त 34, मन्त्र 2।
[181] ऋग्वेद भाष्य, मण्डल 1, सूक्त 34, मन्त्र 11।
[182] ऋग्वेद भाष्य, मण्डल 6, सूक्त 29, मन्त्र 2।

गयी है - (ऋग्वेद 1.164.48), (ऋग्वेद 1.34.2), (ऋग्वेद 1.34.9) आदि आदि।

भांप का इंजन

सारी दुनिया भांप के इंजन के आविष्कार को इस वैज्ञानिक युग की शुरुआत करने वाला मानती है। क्या आप जानते हैं कि भांप के इंजन को बनाने का ज्ञान भी वेदों में ईश्वर ने हमें दिया है। ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 34, मंत्र संख्या 10 के भावार्थ में वाष्प-निस्सारण के लिए यानों में एक विशेष स्थान के निर्माण का निर्देश दिया है।

"जब यानों में जल और अग्नि को प्रदीप्त करके चलाते हैं, तब ये यान स्थानांतर को शीघ्र प्राप्त करते हैं। उनमें जल और भांप के निकलने का एक ऐसा स्थान रच लेवें कि जिसमें होकर भाफ के निकलने से वेग (स्पीड) की वृद्धि होवे।"

वास्तव में यह विद्या एक साधारण से सृष्टि नियम के आधार पर कार्य करती है और सृष्टि नियमों का ज्ञान सदा से वेदों में दिया हुआ है जिनसे मनुष्य बुद्धिपूर्वक अनेकों ज्ञान विज्ञान की वस्तुएं बनाते हैं।

हवाई जहाज से सम्बंधित वेदों में मन्त्र

(यजुर्वेद में अध्याय 21 मन्त्र 6, 4.34, 33.73 आदि अनेकों मंत्र हैं।)

(ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 85, मन्त्र 4, 1.117.15, 1.116.4, 6.63.7, 1.34.12, 1.164.3, 1.108.1, 1.104.1, 1.34.7, 1.184.5, 1.16.7,

4.45.4, 1.85.7, (अधिक मन्त्र के लिए देवनागरी वर्ण सीखे) १.८७.२, १.८८.१, १.९२.१६, १.१०६.१, १.१०६.२, १.११२.१३, १.११६.५, १.११७.२, १.११९.१, १.१२०.१०, १.१४०.१२, १.१५७.२, १.१६३.६, ११.६७.२, १.१६६.५, १.१८१.३, १.१८२.५, २.१८.१, २.१८.५, २.४०.३, ३.१४.१, ३.२३.१, ३.४१.९, ३.५८.३,८,९, ४.१७.१४, ४.३१.१४, ४.४३.२, ४.४५.७, ४.४६.४, ५.५६.६, ५.६२.४, ५.७७.३, ६.४६.११, ६.५८.३, ६.६०.१२, ७.३२.२७)

इनके अतिरिक्त भी वेदों में इस विषय से तथा अन्य ज्ञान विज्ञान से सम्बंधित हजारों मंत्र हैं जिनमें सृष्टि के प्रत्येक नियम तथा विज्ञान को विस्तार से समझाया गया है।

वेदों में वर्णित बिना ईंधन के उड़ने वाले विमान

इतना ही नहीं वेदों में बिना ईंधन के उड़ने वाले विमान बनाने के विषय में भी ज्ञान दिया गया है। अर्थात् अणु शक्ति व अन्य वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोतों से विमान उड़ाने का संकेत किया गया है। आज वैज्ञानिक इन्हीं विद्याओं का विस्तार करने में लगे हैं। वेदों में मंत्र आता है कि -

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्वनश्वश्चिद्यमजत्यरथी:।
अनवसो अनभीशू रजस्तूर्वि रोदसी पथ्या याति साधन्॥[183]

शब्दार्थ – (मरुतः) हे मरुतो ! वीर सैनिकों ! (वः) तुम्हारा (यामः) यान, जहाज (अन् एनः) निर्विघ्न गतिकारी (अस्तु) हो। तुम्हारा वह

[183] ऋग्वेद मण्डल 6, सूक्त 66, मंत्र 7।

यान (रजः तूः) अणुशक्ति से चालित हो (यम्) जो (अन् अश्वः) बिना घोड़ों के (अरथीः) बिना सारथि के (अनवसः) बिना अन्न, बिना लकड़ी, कोयला अथवा पैट्रोल आदि के (अन् अभीशूः) बिना रासों के, बिना लगाम के (चित्) ही (रोदसी) भूमि और आकाश में चल सके, जा सके (पथ्या साधन्) गतियों को साधता हुआ मार्ग में अनेकों प्रकार से गति आदि कर सके।

इतने उन्नत विमान बनाने की विद्या वेदों में देखकर कुछ लोगों को महान आश्चर्य हो रहा होगा कि संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक में ऐसी विद्या कैसे हो सकती है। यदि इतिहासकारों में थोड़ी भी सच्चाई बची है तो प्राचीन विश्व के लोगों को जंगली, घुमक्कड़, सपेले और गडरिये कहना तथा लिखना बंद करना चाहिए। प्राचीन लोग वेदादि शास्त्रों के विद्वान होते थे। वेदों में सृष्टि के सभी नियम बताएं गये हैं। अतः प्राचीन लोगों को भी सभी नियमों का सदा से पता था। उनसे वो अनेकों पदार्थ भी बनाते थे। वर्तमान विज्ञान यहाँ तक पहुंचा है क्योंकि प्राचीन लोगों ने बहुत पुरुषार्थ करके गणित आदि विद्या को वेदों से उन्नत किया था। अतः संसार के लोगों को प्राचीन आर्यों का ऋणी होना चाहिए तथा विज्ञान की इस उन्नति का श्रेय उनको अवश्य देना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो निश्चित रूप से हम कृतघ्न हैं।

पुष्पक विमान – रामायण में विमान विद्या

रामायण में कुबेर के पुष्पक विमान का उल्लेख अनेकों स्थानों पर आया है। रावण ने इसे कुबेर को युद्ध में हराकर जीता था। अब कुछ लोग कहते हैं कि केवल 1 ही विमान का स्पष्ट वर्णन आया है, इसलिए विमान विद्या नहीं थी। ऐसे लोगों की पंगु बुद्धि पर तरस आता है। जिस कुबेर के पास पुष्पक जैसा विमान हो क्या रावण बिना वायुसेना के उससे युद्ध जीत सकता था ?

अस्तु, उस समय दुनिया का सबसे उत्तम, सबसे सुंदर, शीघ्रगामी, स्वर्णमय तथा प्रसिद्ध पुष्पक विमान ही था। इसलिए उसका वर्णन आया है। उस समय हवाई जहाज विद्या सामान्य थी। सामान्य बातों का बार बार उल्लेख नहीं होता है। फिर भी रामायण में अनेकों स्थानों पर हवाई जहाज की विद्या का उल्लेख दिख पड़ता है।

जब श्रीराम और लक्ष्मण मुर्छित भूमि पर थे तब रावण ने राक्षसियों से कहा कि जाओ सीता को पुष्पक विमान में बैठाकर मरे हुए राम-लक्ष्मण के दर्शन करवा लाओ।

विमानं पुष्पकं तत्तु सन्निवर्त्यम् मनोजवम्।

दीना त्रिजटया सीता लंकामेव प्रवेशिता ।।[184]

राम-लक्ष्मण को दिखाकर त्रिजटा राक्षसी मन के समान द्रुतगामी पुष्पक विमान को लौटाकर दुःखियारी सीता को लंका में ले आई। इसी

[184] युद्धकाण्ड सर्ग 28।

प्रकार युद्धसमाप्ति के बाद विभीषण ने श्रीराम के प्रस्थान के लिए पुष्पक विमान को तैयार करवाया था।

क्षिप्रमारोह सुग्रीव विमानं वानरैः सह।

त्वमप्यारोह सामात्यो राक्षसेन्द्र विभीषण॥[185]

श्रीराम की आज्ञा पाकर वानरों सहित विभीषण आदि भी पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या श्रीराम के राज्याभिषेक में गये (विचार करिये कितना बड़ा विमान था)। अयोध्या जाते समय पुष्पक विमान द्वारा अनेकों स्थलों का निरिक्षण भी सभी ने किया जिसको आजकल हवाई निरिक्षण भी कह देते हैं।

सुग्रीवेणैवमुक्तस्तु हृष्टो दधिमुखः कपिः।

स प्रणम्य तान् सर्वान् दिवमेवोत्पपात ह॥

सुंदरकांड में सुग्रीव अपने वनरक्षक दधिमुख से कहता है कि "अब तुम जाकर पूर्ववत वन की रक्षा करो। और हनुमान आदि सैनिकों को शीघ्र ही मेरे पास भेज दो। सुग्रीव के ऐसा कहने पर दधिमुख प्रसन्नतापूर्वक "आकाश मार्ग" से चला गया।"

इससे यह साफ पता चलता है कि न केवल पुष्पक विमान अपितु रामायण में आकाश मार्ग से जाने के लिए अनेकों व्यक्तियों के पास अपने अपने हवाई जहाज थे। यहाँ मैंने केवल संक्षेप में ही इसका प्रतिपादन किया है। बुद्धिमान थोड़े से ही अधिक जान लेते हैं।

---

[185] युद्धकाण्ड सर्ग 68।

भारत में हवाई जहाज के अनेकों उदाहरण

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ "गयाचिंतामणि" में मयूर (मोर) के आकार के विमानों का वर्णन किया गया है । दूसरी ओर शाल्व का विमान तो भूमि, आकाश, जल, पहाड़ पर आसानी से चलता था ।

सलब्ध्वा कामगं यानं तमोधाम दुरासदम् ।

ययौ द्वारवतीं शाल्वो वैरं वृष्णीकृतं स्मरन् ।।

क्वचिद् भूमौ क्वचिद् व्योम्नि गिरिश्रृंगे जले क्वचिद् ।

अभिज्ञान शाकुंतल में भी हवाई जहाज के विषय का स्पष्ट उल्लेख और राजर्षि दुष्यंत के प्रयोग भासित होता है । विमानों के शिल्पी बौद्धकाल तक ही नहीं राजा भोज के काल तक भी थे, यह बात मेरे लेख के प्रमाणों से आप समझ ही गये होंगे ।

पुत्र दारमरूस सकुनस्य कुच्छियं निसिदार्यत्वा ।

वातपातेन निक्सनित्वा प्लानि ।।[186]

इस श्लोक में लिखा है कि बौधिराज कुमार के महल के कारागार से एक कारीगर विमान लेकर भाग गया था । भारत के अनेक इतिहास ग्रंथों में विमान विद्या की झलक देखने को मिलती है । ये ग्रन्थ हजारों वर्ष प्राचीन हैं । उसी विज्ञान के आधार पर धीरे धीरे विज्ञान बढ़ता गया । मध्यकालीन विश्व की परिस्थिति कुछ अनुकूल न होने के कारण बीच

[186] धम्मपाद -बोधिराज कुमार वत्थु ।

में विज्ञान पर बादल अवश्य छा गये थे किन्तु 400-500 वर्ष पूर्व वे बादल पुनः छंट गये और विज्ञान ने जोर पकड़ा । इसी कारण आज विज्ञान उन्नत अवस्था में है । इस विज्ञान को यहाँ तक पहुँचाने में जिन जिन महात्माओं का योगदान है उन सबकी मानव जाति सदैव ऋणी रहेगी ।

मैंने कई बार देखा है कि प्राचीन वैदिक विमान विद्या पर दूसरों से पहले अपने ही प्रश्न उठाते हैं । कुछ बोद्ध लोग बदले की भावना से भरे हुए रहते हैं । अब बोद्धग्रन्थ का उदाहरण देकर मैंने प्राचीन हवाई जहाज कला सिद्ध कर दी है । आशा है कि सभी भारतीय अपनी श्रेष्ठ सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं का सम्मान करते हुए स्वाभिमान से संसार के सामने खड़े होंगे ।

विमान शास्त्र

इसमें कोई संदेह नहीं है कि लम्बी गुलामी तथा शत्रुभाव से प्राचीन संस्कृत साहित्य का यथासामर्थ्य विनाश किया गया है । इसी कारण विमान विषय पर विस्तार से जानकारी प्रदान करने वाला साहित्य लुप्तप्राय है । सौभाग्य से एक ग्रन्थ महर्षि भारद्वाजकृत “बृहद्विमानशास्त्र” ग्रन्थ की प्राचीन प्रति मेरे हाथ लगी । एक प्रति बडौदा राजकीय पुस्तकालय में भी है क्योंकि इसी पुस्तकालय से सहायता आदि लेकर दिल्ली सरकार की संस्कृत अकादमी इस ग्रन्थ का संस्कृत में प्रकाशन करने की योजना बना रही है । अस्तु, जो भी हो इस ग्रन्थ में अत्यंत उच्च व उन्नत कोटि की विमानविद्या का प्रतिपादन किया गया है ।

लगभग 25 वर्ष पूर्व बैंगलोर के Institute of science के विमान विभाग (Aeronautics Division) के पांच विद्वान संशोधकों (Research Scholars) का लिखा पत्र मद्रास के आंगल दैनिक Tha Hindu में प्रकाशित हुआ था । उस पत्र में उन्होंने लिखा है कि **"भरद्वाज मुनि द्वारा लिखित "बृहदविमानशास्त्र" पुस्तक में वर्णित विविध विमानों में से 'रूक्मि' प्रकार के विमान की उड़ने की विधि समझ में आती है । उस विधि से आज भी उड़ान भरी जा सकती है । किन्तु अन्य विमानों का ब्यौरा समझ नहीं आता ।"**

प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के शब्दों, परिभाषाओं तथा सिद्धांतों को आज समझना अत्यंत दुर्लभ है । इसका स्पष्ट कारण है कि सैकड़ों वर्षों तक उन ग्रंथों पर अनुसन्धान नहीं हुआ है और ना ही उस विद्या का अभ्यास ही हुआ । किन्तु फिर भी वर्तमान काल में भी 1895 में इसी ग्रन्थ को पढ़कर एक भारतीय ने ही विमान बनाने की नींव डाली थी । विमानशास्त्र पुस्तक Thanks Bharat से संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं ।

शिवकर बापूजी तलपड़े

बहुत लोग पूछते हैं कि राहुल आर्य जी क्या शिवकर बापूजी तलपडे के विषय में जो कुछ थोड़ा बहुत कहा जाता है वो ठीक है या गलत ? मेरे विचार से शिवकर बापूजी तलपडे इतिहास के सबसे महत्पूर्ण व्यक्तियों में से एक है । किन्तु इनके बारे में बहुत ही कम जानकारी उपलब्ध है । इस महान व्यक्ति के ऊपर एक फिल्म भी बनी थी जिसका नाम "हवाईजादा" था । हालांकि फिल्म को रुचिकर बनाने के लिए संस्कृत के पंडित, आर्यसमाज काकड़वाड़ी के सदस्य शिवकर बापूजी तलपडे

को गलत रूप से प्रदर्शित किया गया। अस्तु, अब तो दुनिया भर की मीडिया में ये विषय कि "क्या विमान का आविष्कार एक भारतीय ने किया ?" आ चुका है।

शिवकर बापूजी तलपडे ने विमान बनाने की प्रयोग शाला महर्षि दयानन्द से प्रभावित होकर 1882 ई. में खोली थी। महर्षि दयानंद के वेद भाष्य को पढ़कर तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को पढ़कर उन्होंने प्रथम विमान का मॉडल तैयार किया और दुनिया का प्रथम विमान 1895 ई. में मुंबई के जुहू बीच पर उड़ाया।

यह कैसे हो सकता है कि ऐसा व्यक्ति कोई पुस्तक, लेख अथवा अपनी खोज का कोई मॉडल न छोड़कर जावे। निश्चित रूप से शिवकर बापूजी तलपडे से अंग्रेजों ने विमान को उन्नत बनाने के लिए आर्थित मदद देने के बहाने मॉडल ले लिए होंगे। वहीं से विमान बनने के कार्य पर लगे राईट ब्रदर्स को वो दस्तावेज मिले तथा खोज का श्रेय उनको ही दे दिया गया। बाद में अथाह धन के बल पर यूरोप वालों ने बड़े बड़े विमान बनाये और आर्य शिवकर बापूजी तलपडे को भूला दिया गया।

इस बात से तलपडे जी को बहुत आघात लगा। 1916 ई. में शिवकर जी सुब्रह्मण्ययम शास्त्री से "बृहदविमानशास्त्र" को समझने में सहयोग लेने लगे। तलपडे जी 1915-1917 तक मरुत्शिखा नामक विमान पर काम कर रहे थे। अबकी बार वो एक अति उन्नत विमान बनाने की सोच रहे थे जिसको जानकर दुनिया झूठे आविष्कारक राइट ब्रदर्स को भूल जाये। लेकिन दुर्भाग्य से 17 सितम्बर 1917 को उनका देहावसान हो गया।

कुछ आर्यसमाजी विद्वानों का मानना है कि वो विमान बनाने के बहुत नजदीक थे व उनकी मृत्यु के पीछे भी कोई षड्यंत्र था। आर्यसमाजियों के अतिरिक्त सभी हिन्दू इस विषय पर चुप हैं क्योंकि वो सोचते हैं कि शिवकर बापूजी एक आर्यसमाजी था और उसका नाम लेने से आर्यसमाज का प्रचार होता है। इस छोटी मानसिकता से निकल कर हमें ऐसे समय पर भारतीय होकर सोचना चाहिए। क्या भारत के स्वाभिमान को जगाने का दायित्व शिवकर बापूजी तलपडे का ही थी ? क्या यह दायित्व हम सब लोगों का नहीं है ?

हवाई जहाज के इतिहास का सार

ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमंत्री 'लार्ड पार्मस्टन' 12 फ़रवरी, 1958 को ब्रिटिश लोकसदन में कहते हैं कि **"जब आर्यावर्त में सभ्यता व संस्कृति अपने शिखर पर पहुँच चुकी थी, तब यूरोप वाले नितांत जंगली थे।"**

इसमें कोई संशय नहीं कि मनुष्य ने सर्वप्रथम भारत देश में ही विज्ञान व कला का अरुणोदय देखा। जितनी भी विद्या आदि भूगोल में फैली है उनके पीछे आर्य प्रजाति व आर्य संस्कृति ही है। आशा करता हूँ आपको यह लेख अच्छा, स्वाभिमान जगाने वाला व प्रमाणिक लगा होगा।

मेरा मानना है कि जब तक प्रत्येक भारतीय स्वयं अध्ययन करना प्रारंभ नहीं करता है तब तक कोई लाभ नहीं होवेगा। 10-20 लोगों से यह कार्य संभव नहीं है। हजारों-लाखों लोगों को अपनी योग्यता बढ़ानी होगी। फिर सभी योग्य लोगों को मैदान में उतरना होगा। जब लाखों स्वाध्याय वाले, योग्य, ज्ञानवान लोग एक साथ कार्य में लगेंगे तो कुछ ही समय में परिवर्तन दिखने लगेगा और देखते ही देखते पूरा

देश बदल जायेगा। यह पुस्तक प्रत्येक युवक की योग्यता तथा ज्ञान को कई गुना बढ़ाने में सक्षम है। अतः सभी योग्य नौजवानों को यह पुस्तक पढ़ने हेतु प्रेरित करें। आपकी सुविधा तथा सरलता हेतु हवाई जहाज के इस प्राचीन ज्ञान को इंग्लिश भाषा में भी दिया गया है ताकि अपने इंग्लिश भाषी मित्रों को भी आप प्राचीन भारतीय विज्ञान का दिग्दर्शन करवा सकें।

Aero Planes

Translated from Hindi to English by Amisha Aarya.

Over the past decades, interest of Indians has grown towards Indian aero plane technology. However, there is a lack of information and texts such as Viman Shastra (book discussing the aero plane technology). This article is not merely based on mugged up information, instead, it has elaboration on history and relevant books. It is filled with extremely important information and facts. Most probably, this much elaboration is not available throughout Google. I hope, you will read it till the end with patience and fulfill my purpose. There is one request, instead of sharing this book for free of cost, please share its website link because some people edit the copied text and change its meaning according to themselves which renders the public from getting its original motive. Therefore, the best option is to share it via link. Also, please mention it on your website and other social platforms.

Rahul Arya
Founder Thanks Bharat

Index

Introduction

Invention of aircraft is considered as the flagship invention ever done by science. This invention leaves the human beings astonished. Today, the whole world accepts that on December 17, 1903, the Wright Brothers made and flew the first aircraft. Unfortunately, most of the Indians say that West gave this invention to the world but this is the biggest lie. This elaboration will put a final curtain over this lie.

"Why rake up the old wounds?"

Nowadays, if someone talks about presence of science and relevant information in India, Indians do not delay in saying, "Why rake up the old wounds?" Therefore, answering this question becomes crucial before heading on further. People who say, 'Live in the present', 'Who has seen Tomorrow?', 'Let bygones be bygones', are the ones who take most out of the history. Human beings are surrounded and filled with history. We take pictures and record videos to preserve our history. Many times, I have seen thatdead bodies have to be dug out for investigation. Whatever we do becomes a thing of the past, but its result is only achieved later in the future.

Every day of the job/work becomes past, but it is paid in the future. Had not we done the work appropriately, problems could arise while getting paid or we might have to face insult. Similarly, if our past is good, there would be no problem. If a child does not go to school for two days, he would be afraid to go the third day. On the contrary, if his

past is good, for instance, he has completed his homework and not taken any leave, he would stay happy and perform upcoming tasks with full dedication.

Identical is the case with a nation. History shows us right path in the present and is the foundation of our bright future. It is only possible through history that we can proceed towards happiness by learning about the prestigious work done by our ancestors and save ourselves from making same mistakes that were made by them. That is why, it used to be compulsory for a king to reflect upon the history for a specific period every day.

Two important incidents of the World's history

Greece defeated Faras in 493 B.C. The emperor of Faras, Darius asked his servant to say, 'My lord, remember the people of Athens' before him every day. Upon this, Faras defeated Greece.

For about 1700 years, Jews were the victims of Muslims and Christians. They had to leave their culturally significant place, Jerusalem and wander at other places. Whenever Jews met each other, they would say, 'we will meet in Jerusalem next year'. At present, Jerusalem (the capital of Israel) is under the control of Jews.

In conclusion, those who kept their history in mind at all times were able to get their lost prestige and power back. However, Indians are sitting with closed eyes upon the

world's incidents. We can awake the one who is sleeping, not the one who has faked his sleep. (Join Thanks Bharat family on You Tube).

***Question* - Who was the first to inform the history of Air crafts?**

Answer - Maharishi Dayanand Saraswati was the first in18th century to state, 'Humans can fly by making air crafts'. He was the one to make the topic of aircraft technology a talking point for public. He started to spread awareness about this technology by organizing programs and presenting evidence of aircrafts in India/Bharat. Hindus, who were slaves for hundreds of years, were suspicious of the technology and they considered all inventions to be a gift of Europe.

King Uparichara and A.O. Hume

When slave-minded Indians used to appreciate Westerns in the name of invention of train, Maharishi Dayanand Saraswati said in 1874,

'There was a king named Uparichar. He would never touch the land and always fly in the sky. People of ancient India knew the art of making aircrafts for fighting and wars. I have also seen a book based on the same. Poor people also had aero planes at that time (the same way as the Americans have

cars). Think for a moment, is invention of train more appreciable than aircrafts?' [187]

A.O. Hume, who later laid the foundation of Indian National Congress (INC) on 28 December 1885, mocked Swami Dayanand by saying,

'Humans can only fly in hot-air balloons. One can fly by making aircrafts in dreams only. Swami ji is not well mentally.'[188]

It has been 133 years now since INC was founded and Rahul Gandhi has replaced A.O. Hume but still, there seems no difference in their thoughts.

Question - Who was the foremost inventor?

Answer - Who invented the aircrafts? Answering this question, Swami Dayanand said that "Vishwakarma was a person who had a system of art and skills. Vishwakarma is a name of parmeshwar (god) and one of the architects. Therefore, he proposed a mechanism of making aircraft. Later, Aryans (Hindus/Indians) used it for their travel". [189]

[187] Pune discourse, p. 42-43 and Maharishi Dayanand Nirvana Shatigranth, 1983, p. 94.

[188] Deshbhakton ke balidan, Hamari Virasatand and Maharishi Dayanand Nirvana Shatigranth.

[189] Pune discourse, p. 94 and Maharishi Dayanand Nirvana Shatigranth, 1983.

Vishwakarma's name can be found mentioned in many books of history. This concludes, Vishwakarma invented aircraft by studying Vedas millions of years ago.

Evidence of aero plane technology in Mahabharat

Drupad believed that Pandavas did not die of burns in Lakshagraha. He wanted her daughter to marry Arjun. Therefore, father of Draupadi sent a message of Swayamwar (a practice of letting the girl choose her groom) through a device which used to fly in the sky so that Pandavas could hear that information. (However, Draupadi married Yudhishthir later.)

यन्त्रंवैहायसंचापिकारयामासकृत्रिमम् ।

तेनयन्त्रेणसमितंराजालक्ष्यंचकारसः ।।[190]

This means Drupad also made an artificial device which would fly in the sky with a high speed. They placed a shot of same size as the pore on top of the device.

Shri Krishna and Arjun took Rishi Uddyalak to King Yudhishthir in America in an aircraft called Agniyaan Nauka.

Then, Yudhishthir says, **"त्वत्कृतेपृथिवीसर्वामद्वशेकृष्णवर्तते ।"** that means, 'O Krishna, the whole earth has come under my control just because of your graciousness'. This shloka

[190] Mahabharat, Aadiparva.

(statement) from Mahabharat makes it evident that the whole world bowed down to India's power, strength and knowledge.

Sudarshan chakra – A wonderful weapon

क्षिप्तंक्षिप्तंरणेचैतत्त्वयामाधवशत्रुशु ।

हत्वाप्रतिहतंसंख्येपाणिमेष्यतितेपुनः ।।[191]

A great architect, who gave Sudarshan chakra to Shri Krishna, says, 'Dear, this weapon will come to your hand on its own without getting destroyed by thunderbolts whenever you will use it against your enemies.' (Coming into hand with a high speed after achieving a goal is one of the most important characteristics of this weapon. The greatness of this weapon is evident by the fact that no scientists have been able to invent such a device in this modern era).

After verifying all such proofs, who could say that there was no aircraft technology 5154 years ago during the period of Mahabharat? All our scientific knowledge got destroyed in the battle of Mahabharat. All scholars and architects got killed. However, let us direct you towards the remaining proofs of scientific knowledge even after thousands of years later.

[191] Mahabharat, Aadiparv.

Presence of aero planes in India until 500 A.D.

King Bhoj was the emperor of India about 1550 years ago. Scholars, architects and authors were highly appreciated and respected during his reign. The great poet, Kalidasa, was also a person who existed during that period. I have myself read his ancient texts called Bhojprabandha and Samrangan-sutradhar. Similarly, Maharshi Dayanand Saraswati provides the evidence of Bhojprabandha in 11th chapter of Satyarth Prakash (a work of Swami Dayanand Saraswati):

घट्येकयाकोशदशैकमश्वः सुकृत्रिमोगच्छतिचारूगत्या ।

वायुंददातिव्यजनंसुपुष्कलंविनामनुष्येणचलत्यजस्त्रं ।।

Bhojprabandha

That is, during the rule of King Bhoj, there used to be such architects who made an aircraft similar the shape of a horse. It would travel 11 miles and 27.5 miles in 24 minutes and an hour respectively. It had an ability to travel into space as well as on land. A second device was a fan which would operate on itself without being operated by the humans and also provided nice wind. If these two devices stayed intact until present, the Europeans would bow down to India/Bharat.

Two and a half pages of Dhanurveda

Swami Dayanand (the man with round face) and his teacher were the pioneers of a revolt led by saints in 1857. I will discuss this topic in specific in some other blog. However, Swami ji was very disappointed when this revolt failed due to Indians' mutual misunderstandings and lack of weapons. He once said -

"Upon visiting the whole nation (India), I have found two and a half pages of Dhanurveda (texts involving details on wars and politics). If I stayed alive, I will publish the full version of it."

This statement was repeated by him in November 1878 [Ajmer and Rishi Dayanand, page 61 and Deshbhakton ke balidaan, page 500 (both of the rare books are available)]. Unfortunately, Swami Dayanand could not even complete the exposition of Vedas and he was murdered through a conspiracy.

Aero plane in Vedas

Vedas are the ultimate source of all true knowledge spread throughout the world. Several mantras describing details about crafts used on land, sea and space could be found in Vedas. How do aero planes look like? What speed do they travel with? How are they made? Vedas include answers to all these questions with so much details that it is difficult to brief the information within this article. For more

information on this, you must study “नौविमानादिविद्याविषयः” of “ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका”. I believe that the presence of this book in every Hindu’s home is extremely important. It covers, in brief, all topics and information discussed in Vedas. You must purchase unrevised/original Vedas if you are capable to do so.

There are many mantras from Vedas describing Aircraft technology. Some of them are as following -

“Those who fight with boats in sea, raths on earth and aircrafts in sky, always achieve prosperity.”[192]

“Craft should have the capability to travel back and forth on land, water and space at least three times within one day or night.”[193]

An aircraft must be capable of going around the universe within 11 days.

“The king who appreciates warriors, people having knowledge of making jets and does his best to preserve precious knowledge, gets fame and his glory spreads like sun rays.”[194] (For example, scholars, soldiers and scientists are recognized in Europe and the Americas, which suggests that they follow Vedic teachings here).

---

[192] Rigved Bhashya 1.61.7

[193] Rigved Bhashya 1.34.2

[194] Rigved Bhashya 6.29.2

The process and procedures for making jets is described in these mantras of Vedas: Rigved 1.164.48, Rigved 1.34.2, Rigved 1.34.9 etc.

Steam engine

Everyone thinks of steam engine as the foundation of all inventions and scientific world, which itself comes from the Vedas. Rigved 1.34.10 suggests making a part in the vehicle for discharge of steam.

"When water and fire are combined to drive a vehicle, it starts to move. Therefore, leave some space in the vehicle to let steam escape which will increase its speed".

Mantras related to aircrafts in Vedas

(Yajurved 21.6, 4.34, 33.73). [Rigved 1.85.4, 1.117.15, 1.116.4, 6.63.7, 1.34.12, 1.164.3, 1.108.1, 1.104.1, 1.34.7, 1.184.5, 1.16.7, 4.45.4, 1.85.7, (Please learn Devnagri numerals for more mantras) १.८७.२, १.८८.१, १.९२.१६, १.१०६.१, १.१०६.२, १.११२.१३, १.११६.५, १.११७.२, १.११९.१, १.१२०.१०, १.१४०.१२, १.१५७.२, १.१६३.६, ११.६७.२, १.१६६.५, १.१८१.३, १.१८२.५, २.१८.१, २.१८.५, २.४०.३, ३.१४.१, ३.२३.१, ३.४१.९, ३.५८.३,८,९, ४.१७.१४, ४.३१.१४, ४.४३.२, ४.४५.७, ४.४६.४, ५.५६.६, ५.६२.४, ५.७७.३, ६.४६.११, ६.५८.३, ६.६०.१२, ७.३२.२७)

Pushpak Vimaan - Aircraft technology in Ramayana

Kuber's Pushpak Vimaan (an aircraft) is mentioned at many places in Mahabharta. Ravana achieved it by defeating Kuber in war. Now, some people argue that only one air vehicle is mentioned, so, there was no knowledge about aircrafts. I feel pity on such people's thinking. The thing to observe here is that how could have Ravana defeated Kuber to achieve Pushpak Viman without air force and air weapons? Obviously, he must have had amazing aircrafts to defeat Kuber.

Therefore, Pushpak Vimaan was considered as the best aircraft, in terms of speed, appearance and popularity, of that time. Aircraft technology and its knowledge used to be a common thing at that time. Thus, whatever is normal, is not mentioned repeatedly. Still, mention of jets can be found at many places in Ramayana.

When Lakshmana (Shri Ram's younger brother) was lying fainted on ground, Ravana ordered demons to take Sita (Shri Ram's wife) in Pushpak Vimaan to see dead Shri Ram and Lakshmana (they were not actually dead).

Thereafter,

विमानंपुष्पकंतत्तुसन्निवर्त्यम्मनोजवम् ।

दीनात्रिजटयासीतालंकामेवप्रवेशिता ।।[195]

---

[195] Balmiki Ramayan, Yuddh Kand, Sarg 28.

After taking Sita and letting her see Shri Ram and Lakshmana, Trijata (a demon) returned to Lanka swiftly (with high speed) in Pushpak Vimaan. Sita ji was sad after seeing her husband and brother-in-law.

Similarly, after the war ended, Vibhishana (Ravana's brother) made arrangement for Shri Ram's return in Pushpak Vimaan.

क्षिप्रमारोह सुग्रीव विमानं वानरैः सह ।

त्वमप्यारोह सामात्यो राक्षसेन्द्र विभीषण ।।[196]

Following Shri Ram's order, all Vanars along with Vibhishana sat in Pushpak Vimaan and left for Shri Ram's coronation in Ayodhya. (Just imagine how big that Pushpak Vimaan might be!)

On their way to Ayodhya, various places were observed by all which is also called as air observation.

In Sundarkaand, Sugriva asks his forest manager, Dadhimukh, to protect Purvavat forest and send all other soldiers, along with Hanumana, to him.

Following Sugriva's order, Dadhimukh left via "Air way"

सुग्रीवेणैवमुक्तस्तुहृष्टोदधिमुखःकपिः ।

स प्रणम्यतान्सर्वान्दिवमेवोत्पपात ह ।।

[196] Balmiki Ramayan, Yuddh Kand, Sarg 68.

This suggests that there was not only Pushpak Vimaan in Ramayana but many people had their own air planes to travel by air. I have demonstrated the presence of air planes in brief.

Various examples of airplanes in India

There is a description of air planes, which would resemble the shape of a peacock, in ancient book named "Gayachintamani". On the other hand, Shalva's plane was capable of travelling through air, on land and water as well.

सलब्ध्वाकामगंयानंतमोधामदुरासदम् ।

ययौद्वारवतींशाल्वोवैरंवृष्णीकृतंस्मरन् ।।

क्वचिद्भूमौक्वचिद्व्योम्निगिरिश्रृंगेजलेक्वचिद् ।

Abhigyan Shakuntalam also talks about usage of air planes by King Dushyant. Air plane builders were not only present during Boddh era but until the reign of King Bhoj, which you might have probably understood after reading above mentioned evidence. A mechanic flew with air plane from Boddhiraj Kumar's jail.

पुत्रदारमरूससकुनस्यकुच्छियंनिसिदार्यत्वा ।

वातपातेननिक्सनित्वाप्लानि ।।[197]

[197] धम्मपाद –बोधिराजकुमारवत्थु ।

Our own people question the presence of air craft technology before foreigners do. This include Ambedkar followers who wish to take revenge. Casteism proliferated throughout India after Muslims came here. There is no place for casteism in Hinduism. You will find several videos regarding this on Thanks Bharat channel on YouTube. Only after I pubilshed the videos, people came to know about conspiracies of Pandits and recognized our great sages. I have proved the existence of air craft technology with Boddhgranth or Boddh’s book. I hope you will never beg after a foreigner with gold-bowl in hand. We must live with pride since we are the descendants of great sages.

Vimaan shastra (Aircraft technology)

There is no denying the fact that Indians after being slaves for a long time and enemies with a feeling of revenge, everything was done to destroy our culture and knowledge. This is the reason why literature having all the information about aircrafts is difficult to locate in ancient texts. Fortunately, I have found a copy of Maharishi Bhardwajkrita’s ‘Brihadvimanshastra’. One of its copies can be found in Baroda state library as Delhi governments’ Sanskrit Academy is looking forward to publish its Sanskrit version. Therefore, it seems that a high level of information about aircraft technology could be found in this book.

About 25 years ago, a paper written by research scholars from Aeronautics division from Institute of science of Bangalore was published in Madras’s daily The Hindu. That

paper said, “Flying procedures of an aircraft named ’Rukmi’ could be understood from Brihadvimanshastra written by sage Bhardwaj. That procedure can also be used today for flying planes. However, it is difficult to understand the information about other air planes.”

Due to lack of practice and further research on ancient Sanskrit texts over hundreds of years, it is difficult to understand their words, definitions and certain principles. Still, an Indian managed to make an aircraft after reading those texts in 1895. (I have made this book available on my other website, www.vedicpress.com, for free download).

Shivkar Bapuji Talpade

Many people ask me (Rahul Arya) about the validity of whatever Rajiv Dixit ji has said about Shivkar Bapuji Talpade. I believe that Shivkar Bapuji Talpade was one of the most important people in history. However, there is a lack of information on this. A film named ‘Hawaizaada’ was made on him. However, Shivkar Bapuji Talpade as a Sanskrit scholar and a member of Arya Samaj, Kakadwadi (a place in Maharashtra state of India) was portrayed in a wrong way to make film interesting. Thus, it has become a question for media all over the world as if aero plane was an invention of an Indian? He started a research center focusing on making air planes after getting inspired from Maharishi Dayanand Saraswati in 1882. He made the first model of aero plane after reading swami dayanand’s ‘Rigvedadi bhashya bhumika’ and flew the world’s first aero plane at

Mumbai's famous Juhu beach in 1895. Now the question arises, how is it possible for a person to not leave any paper, book or model of his invention? Britishers must have taken that air plane model from him by pretending to provide financial help to develop the model. From there, making of aero planes started and somehow Wright Brothers found documents enclosing information about aero planes and all the credit for invention was given to them.

Afterwards, Europeans made big aero planes since they had colossal amounts of money and Shivkar Bapuji Talpade was forgotten. He was deeply hurt by this and he started to deconstruct Brihadvimanshastra with the help of Subramaniam Shastri in 1916. He was working on an air plane named Marutshikha from 1915 to 1917. This time he was planning for making a flagship aero plane that would expose false inventors, Wright Brothers but, unfortunately, he died on 17 September 1917. Some people from Arya Samaj believe that he was very close to making an aero plane and his death was a conspiracy. Some information could be found about this on Wikipedia which has been edited by our arya scholars. All Hindus, except Arya Samajis, are quiet in this regard. Was to awake India's pride only the responsibility of Swami Dayanand and Shivkar Bapuji Talpade?

Conclusion and prospective

Ex-Prime Minister of Britain, Lord Palmerston, once said in British Parliament on 12 February 1958:

“When culture and civilization was at its peak in Aryavart (India), Europeans were completely wild.”

There is no denying the fact that man saw the dawn of scientific knowledge and art for the first time in India. Whatever knowledge is spread throughout the world is a gift of Aryan race and its culture.

5 सर्वश्रेष्ठ धर्म

हम जान चुके हैं कि वेद ही संसार रचने वाले ओम् का ज्ञान है और इस ज्ञान की मानव जाति को सदैव आवश्यकता रहती है। वेद का ज्ञान बेकार नहीं है बल्कि मनुष्यों की सर्वांगीण उन्नति के लिए वेदों का महत्त्व सदा बना रहेगा। ईश्वर कौन तथा उसका ज्ञान कौन सा है जैसे अनसुलझे प्रश्नों का समाधान भी हो चुका है। सभी ज्ञान विज्ञान से सम्बंधित प्रश्नों पर भी मूल्यवान प्रमाण सहित जानकारी आप प्राप्त कर चुके हैं। अब प्रश्न उठता है कि संसार की सुख, शांति तथा समृद्धि के लिए मनुष्यों के कौन से कर्तव्य हैं ? मनुष्य के दायित्व तथा धारण करने योग्य कार्य कौन से हैं ?

आज धर्म के नाम पर दुनिया में बहुत झगड़े चल रहे हैं। प्रश्न उठता है कि ये धर्म होता क्या है ? कुछ लोग धर्म को रिलिजन भी कहते है। रिलिजन शब्द लैटिन भाषा के religare शब्द से निकला है। Religion का अर्थ है 'इसाई मठ के नियमों के अनुसार जीवन' किन्तु धर्म कर अर्थ 'प्राणीमात्र को सुखी करने हेतु जीवन' है। धर्म और रिलिजन इन दोनों शब्दों के अर्थ एकदम विपरीत है। रिलिजन अथवा मजहब एक मत-पंथ के लोगों के लिए निर्धारित नियमों का नाम है किन्तु धर्म समस्त ब्रह्माण्ड के मनुष्यों के लिए निर्धारित सर्वश्रेष्ठ नियमों का नाम है। पूरे ब्रह्माण्ड के लिए ऐसे सर्वश्रेष्ठ नियम कौन से हैं अर्थात् धर्म क्या है ? जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। अतः संसार बनाने वाले के वेद ज्ञान को ही धर्म कहते है। वेद की सर्वश्रेष्ठ शिक्षाओं का पालन करना ही धर्म और उनके विरुद्ध आचरण करना ही अधर्म है।

धर्म शब्द धृ धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है 'धारण करना'। **धारयति इति धर्मः** अर्थात् जो धारण करने योग्य है वही धर्म है। अब विचार कीजिये धारण श्रेष्ठ पदार्थ किया जाता है या तुच्छ पदार्थ ? निश्चित रूप से श्रेष्ठ ही धारण करने योग्य है। इसी प्रकार से श्रेष्ठ विधान, श्रेष्ठ आचार-विचार और श्रेष्ठ कर्तव्य आदि ही मनुष्य को धारण करने चाहिए। श्रेष्ठ के लिए वेदों में एक शब्द आता है 'आर्य'। अतः श्रेष्ठ धारण करने योग्य धर्म को 'आर्य धर्म' सदा से कहा जाता रहा है। यह भी सर्वविदित है कि महात्मा बुद्ध अपने बनाये मार्ग को सदा 'आर्य-मार्ग' और 'आर्य सत्य' की संज्ञा अपने ग्रंथों में देकर गये हैं। वैसे तो धर्म का यह स्वरुप सब संसार के लिए मान्य, उपयोगी तथा आवश्यक है किन्तु वर्तमान में इसका सम्बन्ध भारत देश से ही पाया जाता है। यह अत्यंत दुर्भाग्य की बात है। आर्य धर्म को ही इतिहास में वेद धर्म कहा जाता है क्योंकि वेद में ही श्रेष्ठ धारण करने योग्य मानवीय शिक्षाओं का उल्लेख किया गया है। वेद की शिक्षाएं किसी एक जाति अथवा देश से सम्बन्ध नहीं रखती अपितु समस्त संसार के लिए समान रूप से उपयोगी है। मेरे विचार से कोई भी देश, जाति अथवा मनुष्य यह नहीं कह सकता है कि केवल वही वेदों का उत्तराधिकारी है।

सातवीं सदी में चीन से एक प्रसिद्ध यात्री इत्सिंग आया था। वह लिख रहा है कि -

"उत्तर की जातियां यानि मध्य एशिया के लोग भारत को हिन्दू (सीन्-तु) कहते हैं किन्तु यह इस देश का नाम नहीं है ना ही यह नाम प्रचलित है। यह देश को 'आर्य-देश' कहा और माना जाता है।"[198]

[198] इत्सिंग का भारत, पृष्ठ 75।

इत्सिंग ने अपने यात्रा वृतांत में भारत के लिए आर्य देश, ब्रह्मदेश तथा जम्बू देश का ही प्रयोग किया है और यह भी कहा है कि भारत के लोगों को हिन्दू का नहीं पता है। आज से लगभग 1300 वर्ष पूर्व तक भी यह देश आर्य देश था तथा इसमें रहने वालों को आर्य कहा जाता था। मैं जब काशी विश्वनाथ गया तो वहां एक द्वार पर लिखा हुआ था कि **"आर्यों से से अतिरिक्त लोगों का प्रवेश वर्जित है।"** मुस्लिमों के आक्रमण होने के बाद भारत को फारसी में हिन्दू तथा यूनानी में इंडो कहा गया। संभवतः ये दोनों नाम सिन्धु के अपभ्रंश थे। अतः बाद के गुलामी काल में आर्यों को हिन्दू कहा जाने लगा। पहले यह शब्द आर्यदेश के लिए प्रयोग किया गया था फिर बाद में इस देश में रहने वालों को भी हिन्दू कहा जाने लगा था। जैसे ईसाईयों के आने के बाद देश को इंडिया और देश में रहने वालों को इंडियन कहा जाने लगा। अतः आज के सभी हिन्दू आर्यों की संतान हैं और वेद ही सदा से उनके धर्मग्रन्थ है।

इत्सिंग की बात समझने के लिए एक ताजा उदाहरण देता हूँ। पिछले दिनों जब मैं जर्मनी गया तो पता चला कि उस देश का नाम देउत्स्च्लेंड (Deutschland) है। अंग्रेजी बोलने वाले लोग ही उस देश को जर्मनी कहते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से आर्य-देश अब हिंदुस्तान, इण्डिया बन चुका है किन्तु देउत्स्च्लेंड (Deutschland) अब तक जर्मनी नहीं है, इस नाम को तो केवल कुछ बाहरी दुनिया के लोग बोलते हैं। यहाँ तक की यूरोप के अन्य देश भी जर्मनी नहीं बोलते हैं। इससे भारत के लोग सीख सकते हैं कि श्रेष्ठ को सदा धारण करके रखना चाहिए कभी त्यागना नहीं चाहिए। एक दिन उसी श्रेष्ठता की ओर मानव जाति को आना है और उस समय आप उनका मार्गदर्शन कर सकते हो।

अब ईश्वर ने सबके अलग अलग धर्म निर्धारित किये हैं जैसे मनुष्यों का अलग धर्म शेर आदि जंगली जानवरों का अलग धर्म, जल का अलग धर्म और अग्नि का अलग धर्म होता है। जैसे अग्नि ने धारण किया है उष्णता को तो अग्नि का धर्म हुआ उष्णता। अब अग्नि को चाहे आप भारत में जलाएं, अमेरिका में, पाकिस्तान या किसी अन्य राष्ट्र में, अग्नि का धर्म सभी स्थानों पर बराबर ही होगा। ऐसे ही पानी का धर्म शीतलता है। शेर का धर्म घास न खाकर मांस खाना, जिराफ और गाय का धर्म घास खाना है। ये सभी प्राणी विश्व के किसी भी कोने में अपने अपने धर्म पर ही मिलेंगे। अब मनुष्य चाहे भारत का हो, पाकिस्तान का हो, यूरोप के किसी देश का हो अथवा अरब देश का हो उन सबका धर्म बराबर होना चाहिए। यदि शराब या मांस भारत के व्यक्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं तो वह अमेरिका (नुकसान चाहे वैचारिक ही क्यों न हो) व अन्य किसी भी राष्ट्र के लोगों को नुकसान ही पहुंचाएंगे।

विचार कीजिये यदि इस राष्ट्र के लोगों का रक्त लाल है तो संसार के अन्य सभी जगह के लोगों का रक्त लाल ही मिलेगा। अतः सबके धारण करने योग्य कर्म भी एक समान होने चाहिए।

5000 वर्ष से अधिक महाभारत को हुए है। वहां पर भीष्म धर्म की श्रेष्ठ व्याख्या करते हुए कहते है -

धारणात् धर्म इत्याहुः धर्मों धारयति प्रजाः।
यः स्यात् धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥

अर्थात् "सम्पूर्ण विश्व के सभी मनुष्यों का धारण करने योग्य धर्म एक ही है। जो धारण करता है, एकत्र करता है तथा अलगाव को दूर करता है, उसे 'धर्म' कहते हैं। जिसमें प्रजा को एकसूत्रता में बाँध देने की ताकत है, वह निश्चय ही धर्म है।"

आज संसार के अधिकांश लोगों की धारणा हो गयी है कि दूसरों को मारकर जियो। इससे थोड़ा अच्छी विचारधारा है 'जियो और जीने दो' किन्तु आर्यधर्म की विचारधारा जानते हैं क्या है ? सबको सुखी बनाने के लिए जियो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

"संसार के सभी प्राणी सुखी तथा स्वस्थ रहें।" इससे उत्तम विचारधारा संसार के अन्य किसी ग्रन्थ में आपको नहीं मिलेगी।
इस बात को एक अन्य प्रकार से समझिये। बाइबिल कहती है कि इसाई बनो। कुरान कहती है कि मुसलमान बनो। कुरआन में स्पष्ट रूप से लिखा है याने जो मुहम्मद और अल्लाह पर ईमान ले आये उस को इस्लाम में प्रवेश कराओ।[199] लेकिन क्या आप जानते हो वेद क्या कहता है ? ऋग्वेद में सभी को शिक्षा देते हुए कहा गया है कि –

[199] कुरान सूरा 2, आयत 205 से लेकर 208 तक।

तन्तुं तन्वन रजसो भानुमिन्विहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान। अनुल्बणं वयत जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।।[200]

अर्थात् "जिस प्रकार सूर्य अपने नियमों का पालन कर रहा है, अटल है उसी प्रकार तुम सब भी नियमों से जीवन को आगे बढ़ाओ। अच्छे क्रियाकलापों के मार्ग को प्रशस्त करें और सभी मनुष्य बने।"

वेद में कहीं नहीं लिखा कि आप हिन्दू बनें। वेद ही एकमात्र धर्म ग्रंथ है जो मानव मात्र के कल्याण के लिए उपस्थित है। वेद की आज्ञा है कि सभी मनुष्य अपनी भौतिक उन्नति करें (अर्थात् साइंस टेक्नोलॉजी में भी उन्नति हो) साथ ही साथ आध्यात्मिक उन्नति भी करें। मानव धर्म का पालन करते हुए अच्छे से अच्छा कार्य करें तथा मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट करने वाले मांस व शराब आदि पदार्थों से सर्वथा दूर रहें।

यह तो आप जान ही गये हैं कि किसी भी वस्तु के स्वाभाविक गुणों को उसका धर्म कहते है जैसे अग्नि का धर्म उसकी गर्मी और तेज है वैसे ही मनुष्य का स्वाभाविक गुण उसकी मानवता है। यही उसका धर्म है। संसार के सभी मनुष्यों को बिना पक्षपात के मानवता की उच्च शिक्षाएं देने के कारण वेद मानवधर्म का नियम शास्त्र है। अत: यह कहना गलत है कि वेद केवल आर्यों (हिन्दुओं) के लिए है, उन पर जितना अधिकार हिन्दुओं का है उतना ही मुस्लिम, इसाई, बोद्ध, जैन, सिक्ख, पारसी, यहूदियों आदि का भी है।

---

[200] ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 मंत्र 6 (आज संसार Being Human कह रहा है यह वेद के इसी मंत्र की शिक्षा है जो ईश्वर ने सृष्टि के प्रारंभ में ही मनुष्यों को दे दी थी)।

धर्म की व्याख्या करते हुए एक श्लोक आता है कि - **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्** अर्थात् जो काम हम दूसरों से अपने लिए नहीं चाहते, वैसा हम भी दूसरों के साथ न करें।
उदाहरण स्वरुप हम नहीं चाहते कि कोई हमें गाली देवे, मारे-पीटे, हमारे शरीर के अंग भंग करे। वैसे ही हमें भी दूसरों के साथ ऐसा कोई कार्य तथा व्यवहार नहीं करना चाहिए। जैसे अपने को सुख अच्छा लगता है और दुःख नहीं वैसे ही सब जगह बराबर समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख दूंगा तो वह अप्रसन्न होगा और सुख दूंगा तो वह प्रसन्न होगा।

मानवता का संदेश देने वाले वैदिक धर्म के अतिरिक्त दूसरे अन्य सभी रिलिजन किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाये गए हैं। अपने नए रिलिजन को चलाते समय उन्होंने अपने आप को ईश्वर का दूत व ईश्वर पुत्र बताया ताकि लोग उनका अनुसरण करें। जैसे इस्लाम मजहब पैगम्बर मुहम्मद द्वारा, इसाई रिलिजन ईसा मसीह (जीसस) द्वारा। सभी अनुयायियों को रिलिजन के चलाने वाले पर विश्वास लाना आवश्यक है। अतः ये धर्म नहीं बल्कि मत व पंथ है। ये सब मत वैज्ञानिक भी नहीं हैं जबकि धर्म और विज्ञान का आपस में अभिन्न सम्बन्ध है। अब तक पुस्तक पढ़कर आप यह जान चुके होंगे कि जहाँ धर्म है वहां विज्ञान है और जहाँ विज्ञान है वहां धर्म है। ये सभी मत धर्म नहीं है। अतः ईश्वर द्वारा दिया गया वेद ज्ञान ही धर्म है। जिसने सृष्टि बनाई है उसी ने मनुष्यों के करने योग्य तथा न करने योग्य कार्य भी बता दिए है।

वेदों में दो प्रकार से शिक्षा दी गयी है। पहले वे कार्य जिनको करने से धर्म होता है जैसे भूखे को भोजन खिलाना आदि। दूसरे वे कार्य जिनको न करने

से धर्म होता है जैसे अपना पेट भरने के लिए निर्दोष प्राणियों की हत्या करना आदि। अतः वेद ज्ञान मनुष्यमात्र के लिए नहीं अपितु प्राणिमात्र के सुख के लिए है और किसी देश तथा जाति के लिए नहीं अपितु पूरे ब्रह्माण्ड के लिए है। इसी कारण यही धर्म अर्थात् धारण करने योग्य है। इसी लिए समस्त मानव जाति का धर्म वैदिक धर्म है। यह वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म है इसी लिए इसे आर्य धर्म भी कह देते है क्योंकि आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। महर्षि मनु जी लिखते हैं कि **'वेदोऽखिलो धर्ममूलं'** अर्थात् वेद ही धर्म का मूल है। वेदों के आधार पर महर्षि मनु ने धर्म के 10 लक्षण बताए हैं –

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह:
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणमं ॥[201]

1. **धृति -** कठिनाइयों से न घबराना।
2. **क्षमा -** शक्ति होते हुए भी दूसरों को माफ करना।
3. **दम -** मन को वश में करना (समाधि के बिना यह संभव नहीं)
4. **अस्तेय -** चोरी न करना। मन, वचन और कर्म से किसी भी परपदार्थ या धन का लालच न करना।
5. **शौच -** शरीर, मन एवं बुद्धि को पवित्र रखना।
6. **इंद्रिय निग्रह -** इंद्रियों अर्थात आँख, वाणी, कान, नाक और त्वचा को अपने वश में रखना और वासनाओं से बचना।
7. **धी -** बुद्धिमान बनना अर्थात प्रत्येक कर्म को सोच-विचारकर करना और अच्छी बुद्धि धारण करना।

[201] मनुस्मृति अध्याय 6, श्लोक 92।

8. **विद्या** - सत्य वेद ज्ञान ग्रहण करना।
9. **सत्य** - सच बोलना, सत्य का आचरण करना।
10. **अक्रोध** - क्रोध न करना। क्रोध को वश में करना।

इन दश नियमों का पालन करना धर्म है। यही धर्म के दश लक्षण हैं। यदि ये गुण या लक्षण किसी भी व्यक्ति में है तो वह धार्मिक है। मनुष्य बिना सिखाये अपने आप कुछ नहीं सीखता है। जैसे भारत के संविधान को पढ़कर हम भारत के धर्म, कानून, व्यवस्था, कर्तव्य, अधिकार आदि को जानते हैं वैसे ही ईश्वरीय संविधान वेद को पढ़कर ही हम मानवता व ईश्वर की रचना (सृष्टि) को जान कर सही उन्नति को प्राप्त कर सकते हैं।

यह तो आप समझ ही गये होंगे कि वेद ही समस्त संसार का धर्म शास्त्र है। आप यह भी जानते हैं कि वेदों में एक मात्रा का भी परिवर्तन अर्थात् मिलावट नहीं हुई है किन्तु आज वेदों का भाष्य अर्थात् ट्रांसलेशन बहुत से लोगों ने किया है। जैसे रावण (रामायण वाला नहीं), सायण, महीधर, उव्वट, मेक्समूलर, कीथ, राल्फ टी एच ग्रिफ्थ, महर्षि दयानन्द आदि ने वेदों के भाष्य किये हैं।

इनमें से महर्षि दयानंद के वेद भाष्य को छोड़ देवें तो बाकि लगभग सभी का भाष्य ईश्वर की सृष्टि के नियमों के विरुद्ध है। आज भारत में सब जगह मेक्समूलर के वेदभाष्य ही मिलते हैं। इन विदेशियों ने वैदिक संस्कृत भाषा का कोई ज्ञान न होते हुए भी वेद भाष्य कर दिया और अंग्रेजों ने उसे ही प्रचलित करवा दिया। कट्टर नास्तिक जवाहरलाल नेहरु ने अपनी पुस्तक द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में मेक्समूलर के किये वेद के ट्रांसलेशन से ही बार बार प्रमाण दिए हैं। लम्बे समय तक ब्रिटेन में पढ़ने और फिर यूरोप में

रहने के कारण तथा अपने सभी पत्र और पुस्तक अंग्रेजी में लिखने के कारण नेहरु के ज्ञान के स्त्रोत भी अंग्रेजी वाले ही होते थे। अतः उन्होंने अंग्रेजी में मेक्समूलर के वेद पढ़े थे। आज भारत के सभी विश्वविद्यालयों में मेक्समूलर के वेद ही पढ़ायें जाते हैं। इसका मूल कारण भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ही रहे। अंग्रेजों के जाने के बाद भी भारतीयों को वेदों के सही अर्थों और भाष्यों से दूर रखा गया। इसीलिए नौजवानों के मन में वेदों के प्रति जहर बढ़ता चला गया जो आज भी समाज में हानि कर रहा है।

हिन्दुओं के ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, पुराण आदि में बड़े स्तर पर मिलावट हुई है। कुछ कुछ तो पूरी पुस्तकें ही ऋषियों के नाम से लिख दी गयी हैं। इन सबके कारण ही हिन्दू अपने पूर्वजों के मूल धर्म से हट चुका है। यह सर्वविदित है कि धर्म शास्त्रों में बड़े स्तर पर मिलावट हुई है। किसी किसी धर्म शास्त्र में तो आधे से अधिक घालमेल हुई है। इसी लिए कुछ लोग तो ऐसा कह देते हैं कि अब शुद्ध ग्रन्थ नहीं रहे तो इन ग्रंथों को त्याग देना ही उचित है। सज्जनों यदि किसी के पैर में गहरी चोट लग गयी हो और पैर काटने की आवश्यकता हो तो क्या आप ये कह देंगे कि अब इस व्यक्ति की आवश्यकता ही नहीं है। क्या आप उसके पैर के स्थान पर गर्दन काटने की बात करेंगे ? यह बात तो बालकपन के मिथ्या प्रलाप जैसी है।

यदि मानव धर्म शास्त्र ही नहीं होंगे तो दो पैरों वाले शरीर को धारण करने वाले जीव को मनुष्य कैसे बनाया जायेगा ? इसलिए मानव धर्मशास्त्रों में जहाँ जहाँ, जिस जिस ने जितनी मात्रा में मिलावट की है उसको दूर करना ही मानवता के हित में है। इतना ही नहीं हिन्दुओं के जिन ग्रंथों में मिलावट

संभव नहीं (वेद) उनको मुस्लिम जला देते थे। बड़े पैमाने पर अमूल्य साहित्य को जला दिया गया।

आज से लगभग 450 वर्ष पूर्व भारत की यात्रा पर आया फ्रांसुआ बर्नियर मानव धर्मशास्त्रों के विषय में लिखता है कि **"भारतवासी वेदों को लाखों वर्ष प्राचीन मानते हैं। इनके मानव धर्मग्रन्थ इतने प्राचीन हैं कि उनकी प्राचीनता में संदेह नहीं किया जा सकता है।"**[202]

अतः ऐसे महान धर्म ग्रंथों को हमने अपने पूर्वजों से प्राप्त किया है। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर इन ग्रंथों को अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित किया था। इस बात को उसी पृष्ठ पर बर्नियर कहता है कि **"वेद इतने अलभ्य है कि मेरे आका के अनेक प्रयत्न करने पर भी उन्हें इसकी एक प्रति न मिली। प्रायः हिन्दू इस डर से उन्हें छिपाकर रखते हैं कि कही वे मुसलमानों के हाथ न पड़ जाये और वे उन्हें जला न देवें।"**

अतः आज के श्रेष्ठ लोगों का कर्तव्य है कि वो मानव धर्म ग्रंथों को त्यागने के स्थान पर उनमें आई त्रुटियों को दूर करें और उसे अपनी आने वाली पीढ़ी को एक धरोहर के रूप में सौंपें। यही सच्ची मानवसेवा है। वेद के विषय में आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि उनमें मिलावट क्यों नहीं हो सकती है। अतः जहाँ वेद मन्त्रों का अर्थ अनेक देशी-विदेशी लोगों ने अपने अपने मन से कर दिया वहां समस्या उत्पन्न हुई है। इसके अतिरिक्त दर्शन, उपनिषद, पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों में भर भर कर स्वार्थी लोगों ने मन चाही बातें समय समय पर मिला दी हैं। इन सब ग्रंथों में आई हुई अनेकों मिलावटी तथा वेदविरुद्ध व सृष्टिविरुद्ध बातों का खंडन मैंने अनेकों

[202] डॉ. बर्नियर की भारत यात्रा, हिन्दुओं के धार्मिक विचार, पृष्ठ 234।

व्याख्यानों के द्वारा किया हुआ है जिनको आप यूट्यूब आदि पर देख सकते हैं।

प्रश्न उठता है कि धर्मग्रंथों में आई इन अधार्मिक बातों को दूर कैसे किया जायें ? एक साधारण व्यक्ति को कैसे पहचान हो कि कौन सी बात सत्य है और कौन सी असत्य अर्थात् बाद में जोड़ी गयी है। सज्जनों मानव धर्मग्रंथों की शुद्ध शिक्षाओं को जानने के लिए आपको कुछ साधारण बातों का ध्यान रखना होगा।

- स्मरण रखें कि एक ही ग्रंथ में दो विरोधाभाषी बातें कभी भी नहीं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए मनुस्मृति को ले लीजिये। मनुस्मृति में महर्षि मनु जी लिखते हैं कि मांस नहीं खाना चाहिए और उसी ग्रंथ में आगे चलकर लिखा मिलता है कि मांस खाना चाहिए। अतः इन दोनों में से एक बात ही सत्य है। अब विचार ये करना है कि दो विरोधाभाषी बातों में से ये निर्णय कैसे करें कि कौन सी सत्य है और कौन सी असत्य है। न्यायशास्त्र में सत्य-असत्य का भेद करने हेतु सिद्धांत और प्रमाण दिए गये हैं। किन्तु साधारण रूप से सत्य असत्य में भेद जीवात्मा स्वयं कर सकता है। जब भी कुछ पढ़ें तो एकांत में उस बात पर विचार करें। उसके उपरांत ध्यानयोग द्वारा उस बात को देखना समझना कि जैसा विचार किया था वैसा ही है या नहीं ? जब आप किसी बात को लेकर ध्यान-समाधि में बैठेंगे तो ईश्वर जीवात्मा को सत्य मार्ग स्वयं दिखा देगा।

मान लीजिये किसी ग्रन्थ में बकरे आदि की बलि चढ़ाने की बात है तो ध्यान समाधि द्वारा विचार कीजिये कि क्या यह प्राणिमात्र के

हित में है अथवा नहीं है। धर्म प्राणिमात्र के हित के लिए होता है। धर्म-अधर्म को ठीक ठीक जानकर उसी परिभाषा के अनुसार बातों की परीक्षा करके भी आप ठीक गलत का निर्णय कर सकते हैं। कोई भी मनुष्य जब किसी कार्य को करता है तो उसके भीतर डर, भय, संकोच, लज्जा, शोक अथवा प्रसन्नता, उत्साह, उमंग, निर्भयता आदि भाव उत्पन्न होते हैं। ये सभी भाव ईश्वर की ओर से होते हैं। ईश्वर प्रत्येक कार्य में हमारे साथ ही होता है किन्तु मनुष्य उसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं।

यदि किसी ग्रन्थ में चोरी को अच्छा बताया है तो विचार कीजिये जब आप स्वयं चोरी करेंगे तो आपके भीतर डर, संकोच, लज्जा आदि भाव उत्पन्न होंगे अर्थात् आत्मा जानता है वह कार्य अच्छा नहीं है। अतः वह अधार्मिक कार्य है। इसी प्रकार किसी ग्रन्थ में दान देने की बात है तो विचार करें जब आप दान देते हैं तो आत्मिक संतुष्टि की, प्रसन्नता और परोपकार की भावना उत्पन्न होती है। अतः वह बात मानव धर्म की है। सामान्य रूप से जो बात वेदविरुद्ध हो वह मिलावटी है और जो बात वेद के अनुसार हो वह सत्य है। जिससे जीवमात्र का हित होकर मानवता की उन्नति हो वही धर्मशास्त्र है।

- किसी धर्मग्रन्थ में मिलावट पहचानने का दूसरा साधारण तरीका है कि उसमें दी शिक्षाओं और बातों का पूर्वापर सम्बन्ध होना चाहिए। मान लीजिये भोजन से सम्बंधित शिक्षाओं का विषय चल रहा है और उसमें बीच में कुछ श्लोक आदि अचानक से विवाह आदि से

सम्बंधित आ जायें तो समझ लीजिये वहां पर मिलावट हुई है। अतः किसी ग्रन्थ का एक विशेष हिस्सा पढ़ना भी हानिकारक है।
जब तक पूरा प्रकरण नहीं पढ़ते हमें बातें समझ नहीं आ सकती हैं। इसके लिए आपको अपने जीवन में समय की कमी को दूर करना होगा। रात को जल्दी सोकर प्रातः जल्दी उठे। निश्चित रूप से अपने सभी कार्य करने के उपरांत आप प्रतिदिन एक घंटा सरलता से मानव धर्मग्रन्थ को पढ़ने में लगा सकते हैं।

- धर्मग्रंथों में मिलावट पहचानने के लिए सृष्टि नियमों पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि किसी बात में सृष्टि नियमों का उल्लंघन हुआ है तो वह बात मिलावटी है। जैसे कहीं लिखा हो कि बिना माता-पिता के संतान उत्पन्न हो गयी, बैल अथवा सांप के फन पर पृथ्वी टिकी है,[203] गधे पर स्त्री का मुख लगा था,[204] किसी ने 50 फुट का मनुष्य देखा, किसी ने जन्नत देखी, किसी ने समुद्र पी लिया[205] आदि बातें सृष्टिक्रम के विपरीत होने से असत्य है। अतः सृष्टि में जो नियम ईश्वर ने बना दिए हैं तो ईश्वर की शिक्षाएं भी उन नियमों के अनुसार ही होनी चाहिए।

इस प्रकार साधारण रूप से ग्रंथों आदि से घालमेल हटाई जा सकती है। इनके अतिरिक्त भी सत्य-असत्य को अलग करने हेतु भाषा, स्थान और चतुर्थप्रमाण आदि के पैमाने होते है। संसार के किसी भी धर्मग्रन्थ में वेद

[203] पुराणों की मान्यता (विशेष : पुराण हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ नहीं बल्कि इतिहास ग्रन्थ है जिनमें आधी से अधिक बातें मूर्खतापूर्ण है किन्तु दुर्भाग्य से आज पुराणों के आधार पर ही हिन्दुओं के कर्मकांड गुरुघंटाल चला रहे हैं)।
[204] मुस्लिमों की मान्यता (स्त्री मुख के गधे पर मुहम्मद जन्नत गया)।
[205] पुराणों के अगस्त्य मुनि (ये बातें वेद विरुद्ध व ईश्वर के बनाए हुए नियमों के विरुद्ध है)।

विरुद्ध कोई बात लिखी गयी है तो वह ठीक नहीं होगी क्योंकि वेद स्वयं सृष्टि को बनाने वाले की विद्या है और बाकि सब मनुष्यों के द्वारा लिखे गये ग्रन्थ है। जो लोग ये सोचते है कि अब शुद्ध वेदादि शास्त्र उपस्थित नहीं है उनको स्मरण रखना चाहिए कि विद्या का मूलनाश कभी नहीं होता है। विद्या कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में सदा रहती है। जैसे कभी धूप और कभी छांव, कभी दिन तो कभी रात एक के बाद दूसरा चलता है वैसे ही कभी संसार में विद्या बढ़ जाती है और कभी विद्या कम हो जाती है। आज भी अनेकों आर्य गुरुकुलों में आपको शुद्ध वेदशास्त्र प्राप्त हो जायेंगे। दुर्भाग्य से आज विदेशी लोगों के किये वेदों के अर्थ ही बाजारों में मिलते है। जिनको वैदिक संस्कृत नहीं आती थी उन विदेशी लोगों ने वेद मन्त्रों का अंग्रेजी में अर्थ कर दिया है। अंग्रेजी से अनेकों ने आर्य भाषा (हिंदी) में अर्थ कर दिया। अब वही झूठे अर्थों वाले ग्रन्थ बाजारों में वेद आदि के नाम से बिक रहे हैं। पहले के अध्यायों में इस विषय की कुछ बातें आप पहले ही समझ चुके होंगे। वर्तमान समय में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा वेदों का जो अर्थ आर्यभाषा में किया गया है वह सर्वश्रेष्ठ है। यह मानव धर्मशास्त्र प्रत्येक घर में अवश्य होना चाहिए भले ही आप हिन्दू हो, पारसी, बोद्ध, यहूदी, इसाई अथवा मुस्लिम हो। महान भारतीय दार्शनिक, लेखक और स्वतंत्रता सेनानी योगी अरविन्द घोष लिखते हैं कि **“Dayanand’s powerful and original commentary will be widely accepted as the definite word on the Veda.”**[206]

यह बात अक्षरशः सत्य है कि महर्षि दयानंद द्वारा किया गया वेदों का अर्थ ही पूर्ण वैदिक और वैज्ञानिक है। दुर्भाग्य से आज भारत के सभी शिक्षण

---

[206] A. Ghosh, *‘Dayananda : The man and his work’*.

संस्थानों में मैक्समूलर द्वारा किये वेदों के मनघडंत अर्थ को ही वेद कहकर पढ़ाया जाता है। नौजवान पीढ़ी को मेक्समूलर की बातें पढ़कर वेदों से घृणा हो जाती है। 'ईश्वरीय ज्ञान कौन सा है' में मैंने वेदों में उपस्थित ज्ञान-विज्ञान की गूढ़ बातें दर्शायी है कि जिनको पढ़ करके किसी भी मनुष्य को मानव धर्म ग्रन्थ की महानता का पता चलता है।

विदेशी विद्वान भी कहते है कि **"ऋग्वेद यह केवल आर्यों का ही नहीं अपितु सारे मानवों का प्राचीनतम ग्रन्थ है।"**[207]

दुर्भाग्य से आज वेदों के ज्ञान को न जानने के कारण नौजवानों के मन में धर्म से सम्बंधित अनेकों बड़े प्रश्न उठते रहते हैं। गुरु घंटालों को धर्म से कोई लेना देना नहीं अतः वे भी नौजवानों की शंकाओं का समाधान नहीं कर पाते हैं। अधिकांश धर्मगुरु तो धर्म को श्रद्धा का विषय कहकर टाल देते हैं। आज विज्ञान के इस युग में ढ़ोंग-अन्धविश्वास तथा पाखंड का कोई स्थान नहीं है। संसार पुनः वेदों की ओर लौट रहा है। ऐसे में भारतीयों का कर्तव्य बनता है कि वे अपने धर्म को अच्छे से जानें। वैदिक धर्म का सबसे बड़ा सिद्धांत है 'अच्छे कर्म करना'। अब प्रश्न उठते हैं कि कौन से कर्म अच्छे हैं तथा अच्छे कर्म करने से क्या होगा ? जैसा कि आप जानते है कि जब भी आप अपने राष्ट्र के लिए कोई अच्छा कार्य करते हैं तो राष्ट्र आपको सम्मानित करता है अर्थात् अच्छे कार्य का फल देता है। यह सिद्धांत प्रत्येक स्थान पर है। अच्छी फिल्मों और कलाकारों को पुरस्कार क्यों दिया जाता है ? वैज्ञानिकों को पुरस्कार आदि क्यों दिए जाते हैं ? विद्यालय में अच्छा पढने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित क्यों किया जाता है ? प्रत्येक क्षेत्र में अच्छा करने

[207] M. Philip, *'The Teaching of the Vedas'*, p. 213.

वालों को अच्छा फल दिया जाता है। परिश्रम का फल सृष्टि का नियम है और मनुष्य समाज ने भी उसको अपनाया हुआ है। इसी प्रकार वेदों के अनुसार अच्छे कार्य करने वाले मनुष्यों को ओम् (ईश्वर) अच्छा फल देता है। वह फल इस जीवन तथा भावी जीवन में ओम् हमें देता है। इसको समझने के लिए पहले पुनर्जन्म के विषय को समझना होगा।

5.1 धर्म का आधार

मनुष्य कोई भी कार्य लाभ हानि को देखकर ही करता है। जिस कार्य को करने से मनुष्य को दुःख मिलने की आशंका हो उस कार्य को मनुष्य कभी नहीं करता है। प्रश्न उठता है कि धर्म का पालन करने से मनुष्य को क्या लाभ होगा ?

अब संसार में आप देखते हैं कि पहले कोई भी कर्म होता है तथा उसके बाद उसका फल मिलता है। जैसे किसी ने महनत करके कर्म किये। अतः बाद में उसे धन आदि साधन फल के रूप में प्राप्त होते हैं। मनुष्य दूध पीता है, भोजन करता है, खेल खेलता है, पढ़ता है, समाजसेवा करता है, राजनीति करता है, अभिनय करता है आदि सभी कर्मों का कोई न कोई फल उसको संसार में अवश्य मिलता है। मनुष्य गलत भोजन तथा दिनचर्या रखेगा तो बीमारी के रूप में उसका फल मिलेगा। मनुष्य अच्छा भोजन तथा व्यायाम आदि करेगा तो स्वस्थ शरीर के रूप में उसे फल मिलेगा। यह सृष्टि का नियम है कि किये हुए कर्म निष्फल कभी नहीं जाते हैं। कर्म का फल अवश्य मिलता है भले ही वह कुछ समय बाद ही क्यों न मिले।

अब आप पहले पढ़ ही चुके है कि जो जो कर्म धारण करने योग्य हैं उन्हें धर्म कहते हैं। अब धारण करने योग्य कर्म कौन से हैं यह वेदों में मनुष्यों को बताया गया है। वेदों में कहा है कि भाई-भाई से द्वेष मत करो, अच्छे मनुष्य बनो, जुआ मत खेलो, किसी का बुरा मत करो, बलपूर्वक किसी के पदार्थ मत छीनों, धर्म की उन्नति के लिए दान करो, हवन यज्ञ करो, ईश्वर की उपासना तथा ओम् का जप करो, दुष्टों से अपने राष्ट्र की रक्षा करो, दुराचार मत करो, महिलाओं का सम्मान करो, किसी निर्दोष (भले पशु, पक्षी आदि) की हिंसा मत करो, सत्य बोलो, चोरी मत करो, गृहस्थ भी ब्रह्मचर्य कर पालन करें, अन्तःकारण शुद्ध रखें, आर्ष पुस्तकों का अध्ययन करो, बहुत से पदार्थ जोड़ने के चक्कर में मत रहो क्योंकि सदा कुछ नहीं रहने वाला है, अच्छे कर्म करके फल की इच्छा मत करो और जो मिले उसमें संतोष करो, मेहनत करके पदार्थों को ग्रहण करो आदि आदि। ये सब कर्म करना ही धर्म है। अब इन कर्मों के करने से इनका फल भी अवश्य मिलेगा। जैसे संसार में आपको जीवित रहने तथा साधन-संसाधन जुटाने के लिए कर्म करने से फल मिलता है वैसे ही धर्म के कर्म करके आपको भविष्य में मिलने वाले जन्म में उनका फल मिलता है। यदि आपने अच्छे कर्म किये हैं, धार्मिक कर्म किये हैं तो अगला जन्म अच्छा होगा और यदि आपने अधार्मिक कर्म किये हैं तो दुःख मिलेंगे। किये हुए कर्मों का फल अवश्य मिलेगा।

महर्षि मनु कहते थे कि **“नास्तिको वेदनिन्दकः”**[208] अर्थात् वेदों की निंदा करने वाला ही नास्तिक है। वेदों से ज्ञान प्राप्त करके महर्षि मनु ने सरलता

[208] मनुस्मृति अध्याय 2, श्लोक 11 (कहीं कहीं अध्याय 1, श्लोक 130)।

से संसार के सभी लोगों के लाभ के लिए कर्मफल व्यवस्था का वर्णन किया है।

कुछ लोग कह देते हैं कि हम तो किसी दुष्ट को फल भोगते हुए नहीं देखते हैं अथवा दुष्ट लोग पाप कर्मों से बहुत सा धन कमा लेते हैं और उन्हें सजा भी नहीं होती है। वास्तव में, यह प्रश्न कर्म तथा पुनर्जन्म की मान्यता को न समझने के कारण उत्पन्न होता है।

महर्षि मनु कहते हैं कि -

ना धर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति॥[209]

अर्थात् (लोके चरितः अधर्मः) संसार में किया हुआ अधर्म (सद्यः न फलति) तुरंत फल नहीं देता, समय आने पर ही देता है। जैसे (गौः+इव) गाय को पालने-खिलाने आदि पर तुरंत वह दूध नहीं देने लग जाती है बल्कि गाय कुछ समय बाद दूध देने योग्य होती है वैसे ही कर्मफल व्यवस्था को समझें। किया हुए अधर्म करने वाले को (शनैः+आवर्तमानः) चारों ओर से घेरकर (कर्तुः मूलानी कृन्तति) अधर्म कर्ता की जड़ों को ही काट डालता है अर्थात् उसका धीरे धीरे पूर्णतः सर्वनाश कर देता है।

मनुस्मृति के एकादश (11वें) अध्याय में पाप कर्मों का तथा द्वादश (12वें) अध्याय में पुण्य कर्मों को विस्तार से वर्णन किया गया है। त्रिविध कर्म तथा त्रिविध गतियाँ होती हैं। जो भी अच्छे-बुरे कर्म मनुष्य करता है उनको मन,

---

[209] मनुस्मृति अध्याय 4, श्लोक 172।

वचन और शरीर से करता है। इन्हीं तीनों प्रकार से किये कर्मों के अनुसार ही सुख-दुःख मनुष्यों को प्राप्त होते हैं। इन कर्मों के अनुसार ही उत्तम, मध्यम और अधम ये तीनों प्रकार की गतियाँ (जन्म) प्राप्त होती हैं। मन ही मनुष्यों को अच्छे बुरे कर्मों में प्रवृत्त करता है। सभी कर्मों का प्रारंभ मन द्वारा ही जीवात्मा करता है। जैसे किसी दुष्ट मनुष्य ने एक छोटी बच्ची को देखकर वासना का विचार किया तो यह मन द्वारा एक पाप कर्म हो गया। अब इस विचार को यदि वाणी में ले आया और उस बच्ची को दुराचार जैसी बातें कह दी तो ये और भी बड़ा पाप हो गया। अब यदि वाणी से कही बात को शरीर से कर दिया तो यह सबसे बड़ा पाप हो गया।

इस प्रकार से मन, वचन और शरीर से मनुष्य पाप कर्म करता है और पुण्य कर्म भी इन्हीं से करता है। जैसे यदि आप किसी सुनसान स्थान से जा रहे हैं और वहां कुछ दुष्ट मिलकर एक लड़की के साथ छेड़छाड़ कर रहें हैं। यदि इस स्थिति में आपने मन में सोचा कि इस लड़की के साथ ऐसा नहीं होना चाहिए तो यह मन द्वारा पुण्य कर्म है। यदि सोची हुई इस बात को आपने चिल्लाकर कह दिया कि ऐसा मत करो तो यह अधिक पुण्य की बात है। अब यदि आपने अपने शरीर से उन दुष्टों के साथ लड़कर उस लड़की को छुड़ाने का प्रयास किया तो शरीर से सबसे बड़ा पुण्य कर्म हुआ। इस प्रकार मन, वचन तथा शरीर द्वारा ही सभी पाप पुण्यों को जीवात्मा करता है।

कुछ पापी लोग अथवा किसी बुराई को नहीं छोड़ने की इच्छा वाले लोग कहते हैं कि यह मन ही सब कुछ करवाता है। वो कहते हैं कि हम नहीं करना चाहते हैं किन्तु मन ऐसा होने नहीं देता है। वास्तव में, मन एक जड़ पदार्थ है जैसे हमारा यह शरीर एक जड़ पदार्थ है। हम इसे जैसे चलाना चाहें यह वैसे ही चलता है। इसी कारण संसार में अच्छे बुरे व्यक्ति तथा

अच्छे बुरे कार्य होते रहते हैं। कुछ लोग मन को सही दिशा में चलाते हैं और कुछ लोग उसे गलत दिशा में दौड़ाते हैं। जैसे विद्यालय में गणित की कक्षा चल रही है। एक विद्यार्थी का मन कहीं और देखकर अध्यापक जोर से उसका नाम चिल्लाता है। विद्यार्थी तुरंत अपने मन को वापिस कक्षा में ले आता है। अर्थात् मन का संचालन जैसे चाहे वैसे हम कर सकते हैं। बाद में अध्यापक कहता है कि अपने मन को कक्षा में लगाओ। इस बात से आप समझ सकते हैं कि मन को लगाने वाले आप अर्थात् जीवात्मा ही है। यदि मन को दुराचार में लगाओगे तो वह वहीं लग जायेगा और यदि मन को सदाचार में लगाओगे तो वह तुरंत वहां लग जायेगा।

जब जीवात्मा अपने मन को बार बार किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि पर लगाता है तो धीरे धीरे उसकी वाणी तथा शरीर भी वहां अवश्य ही लग जायेगा। इसलिए मन को सदा अच्छी बातों तथा विचारों में लगाना चाहिए। जे.एन.यू तथा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी आदि से देशद्रोही और आतंकवादी इसी प्रकार से निकलते हैं। वहां पर पढाई जाने वाली बातें, कम्युनिष्ट प्रोफ़ेसर तथा छात्रों की संगत, दबाव अथवा प्रेम द्वारा (जो जैसे बदले उसके लिए वैसे हथियार) अच्छे अच्छे बच्चों के मन में बार बार एक ही प्रकार की बातें डाली जाती हैं। धीरे धीरे उन अच्छे बच्चों की वाणी तथा कार्यों में वे बातें दिखाई देने लगती हैं। इस प्रकार से एक अच्छा देशभक्त बच्चा कब देश के विरुद्ध सोचने लगा और कार्य करने लगा इसका पता उसको स्वयं भी नहीं लगता है।

मैं कितने बड़े बड़े यूट्यूबर को जानता हूँ जो कभी सीधे साधे देशभक्त हुआ करते थे किन्तु अब हिन्दुओं के विरुद्ध जहर उगलते हैं, उनकी परम्पराओं तथा संस्कृति पर सवाल उठाते रहते हैं। वहीं दूसरी ओर मुस्लिम तथा

ईसाईयों पर अपना मुंह बंद रखते हैं। इसका कारण यह है कि उनको देखने तथा उनका साथ देने वाले लोग यही चाहते हैं। एक प्रकार से वो गुलाम है क्योंकि वो दूसरों द्वारा संचालित होते हैं। फिर पैसा, ताकत, बड़े बड़े लोगों से जान पहचान आदि होने के बाद उनको उस कार्य में मजा आने लगता है और बस इसी प्रकार से किसी भी ऊपर बढ़ने वाले व्यक्ति की शुरुआत होती है जो मृत्युपर्यंत चलती रहती है। इसी सिद्धांत से एक शराबी, मांसाहारी, बलात्कारी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी आदि को भी स्वयं समझ लेवें। मन से प्रारंभ होने वाले दोषों को बलपूर्वक नहीं रोका जाता है तो वह शरीर से अवश्य होंगे और फिर आप उनका बचाव करने के लिए भांति भांति के तर्क तथा प्रमाण प्रस्तुत करके गलत को सही सिद्ध करने लगोगे। ऐसा ही संसार में होता है।

महर्षि मनु ने मन द्वारा किये गये अशुभ कर्म तीन प्रकार के कहे हैं। दूसरे के धन तथा पदार्थों को अपने अधिकार में लेने का विचार करना, मन में किसी का बुरा करने का सोचना, और मिथ्या (झूठ, गलत) विचार तथा संकल्प करना जैसे सच को झूठ और झूठ को सच बनाने आदि जैसे धोखे तथा चालबाजी के विचारों का आना।[210]

मन के बाद आते हैं वाणी से किये गये कर्म। महर्षि मनु ने वाणी से किये अशुभ कर्म चार प्रकार के कहे हैं। कठोर वचन बोलकर किसी को कष्ट देना, झूठ बोलना, किसी की किसी प्रकार की चुगली करना, किसी पर झूठा लांछन लगाना अथवा अफवाहें उड़ाना आदि।[211] इसमें कुछ बातों पर बुद्धिपूर्वक स्वयं भी सोचकर निर्णय करना होता है। जैसे किसी अंधे को 'ओ

---

[210] परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्.... (मनुस्मृति अध्याय 12, श्लोक 5)

[211] पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः ..... (मनुस्मृति अध्याय 12, श्लोक 6)

अंधे' कहकर पुकारना निस्सन्देह सत्य है किन्तु कठोर वचन होने के कारण अशुभ कर्म है। इन सभी अशुभ कर्मों के अशुभ फल मिलेंगे।

वाणी के बाद आते हैं शरीर से किये गये कर्म। शरीर से किये गये अशुभ कर्म तीन प्रकार के माने गये हैं। किसी के धन आदि विभिन्न पदार्थों को चोरी, डकैती, रिश्वत आदि से ग्रहण करना, वेदों द्वारा कर्तव्य के रूप में बताई गयी हिंसा के अतिरिक्त हिंसा करना (शास्त्र में बताई हिंसा - युद्ध में शत्रु हिंसा, दुष्ट राक्षसी प्रवृत्ति के मनुष्य की हिंसा, हिंसक पशु की हिंसा आदि), दूसरे के स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध बनाना आदि।[212]

मन से किये हुए अशुभ कर्मों का फल मानसिक दुःख, वाणी से किये अशुभ कर्मों का फल वाणी से दुःख, शरीर से किये कर्मों का फल शरीर से दुःख आदि के रूप में मिलता है। जो मनुष्य शरीर से चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि जैसे दुष्ट कर्म करता है उसको अगले जन्म में वृक्ष आदि स्थावर जाति में जन्म मिलता है, वाणी से किये पापकर्मों से पक्षी और मृग आदि तथा मन से किये दुष्ट कर्मों से निम्न कोटि का मनुष्य शरीर मिलता है।

योगदर्शन के दूसरे पाद में इस विषय को बहुत ही सुन्दरता तथा सरलता से समझाया गया है। योगदर्शन का ही एक सूत्र है कि -

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः[213]

---

[212] अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् (मनुस्मृति, अध्याय 12, श्लोक 7)।

[213] योगदर्शन, साधनपादः सूत्र 13।

अर्थात् जब तक जीवात्मा में पांच क्लेश[214] रूपी मूल विद्यमान रहते हैं तब तक उनका फल जाति, आयु और भोग के रूप में मिलता रहता है।

जाति = पशु, पक्षी, वृक्ष, मनुष्य आदि तथा इनमें अनेकों कुत्ते, बिल्ली, गाय, हाथी, शेर, सांप, सूअर, गीदड़, चिड़िया, तोते, बकरी, मुर्गा, कीट, पतंग आदि असंख्य योनियाँ है। अतः जाति प्रत्येक के कर्म के आधार पर मिलती है। आयु = जीवनकाल कितना रहेगा तथा भोग = सुख, दुःख आदि। अतः जीवन में सब हमें अपने किये कर्मों के अनुसार मिलता है। अब वर्तमान में हम जैसे कर्म करेंगे उनका फल भी हमें अवश्य मिलेगा। अथर्ववेद में कहा गया है कि -

वशामेवामृतमाहुर्वशां मृत्युमुपासते।
वशेदं सर्वमभवद् देवा मनुष्या३ असुराः पितर ऋषयः ॥[215]

भावार्थ : ईश्वर शक्ति से प्राणी अपने कर्म अनुसार मोक्ष और मृत्यु अर्थात् सुख-दुःख पाते हैं। वही ईश्वर शक्ति समस्त जगत् में व्यापक है, जितेन्द्रिय विचारशील पुरुष उस शक्ति का अनुभव करते हुए सदा अच्छे शुभ कर्म करने में प्रवृत रहते हैं। सभी देव (दिव्य गुणों वाले), मनुष्य (मननशील), असुर (बुद्धिमान), पितर (पालन करने वाले) और ऋषि (सूक्ष्मदर्शी लोग) आदि में जो भी प्राणी हैं उन सबमें ईश्वर व्यापक है और ये सभी श्रेष्ठजन उसे सर्वत्र व्यापक देखते हैं।

---

[214] मोक्ष विषय में इनको समझाया गया है।

[215] अथर्ववेद काण्ड 10, सूक्त 10, मंत्र 26।

हमारे किये हुए फल उस समय मिलते हैं जब देश, काल, निमित्त और साधन इन चारों का मेल होता है। कर्म स्वयं ही अपना फल धारण किये हुए होता है और सही समय, स्थान तथा साधन के उपस्थित होने पर जीवात्मा को उनका फल मिलता रहता है। जिस प्रकार संसार में मनुष्यों को अच्छे कार्यों हेतु पुरस्कार तथा बुरे कार्यों हेतु दंड का विधान करने हेतु जज होते हैं जो निर्णय करते हैं वैसे ही जीवात्मा के कर्मों का फल देने का कार्य ईश्वर करता है। मनुष्यों के निर्णयों में त्रुटी होती है किन्तु ईश्वर न्यायकारी है। जिसने जब जितनी मात्रा में जैसा कर्म किया है उसे वैसा ही उतनी ही मात्रा में वैसा ही फल भी मिलता है। अब वो फल कब, कहाँ, कैसे तथा कितना मिलेगा यह ईश्वर का कार्य है अतः पूर्णतः वही जानता है।

कर भला होगा भला, अंत भले का भला,

आज सबकुछ है तेरा, कल का है किसको पता।

जैसा कोई बीज है बोता वैसी चढ़ती बेल यहाँ,

कैसा राजा कौन भिखारी सब कर्मों का खेल यहाँ।[216]

अब इस कर्म फल व्यवस्था पर प्रश्न खड़ा करते हुए मुस्लिम तथा इसाई लोग कहते हैं कि अगला जन्म होता ही नहीं है अतः यह कर्मफल व्यवस्था की सभी बातें झूठी हैं। मैं दो बड़े ही सुन्दर उदाहरणों के द्वारा इनका उत्तर दूंगा। पहली घटना है महान क्रांतिकारी वीर सावरकर जी से जुड़ी हुई।

[216] यह मेरा प्रिय बॉलीवुड का गीत है।

I got today a communication from the Government saying that the decision of the Court that my two sentences shall run consecutively was final and the Government saw no reason to alter it. A gentleman had come to me personally to report the contents of the communique. Adopting its technical language, he remarked jocularly, "My dear Savarkar, the Government had, at last, decided that you were to run your first life-sentence first, and your second life-sentence after it, that is, you have to take a second life to run it full." To which I replied in the same vein, "Yes, indeed, but I have, at least, the consolation that for this purpose, it has subscribed to the Hindu doctrine of re-birth, and had disowned the Christian doctrine of resurrection."[217]

विनायक दामोदर सावरकर को 1911 में दो जीवन की सजा ईसाईयों ने सुना कर काले पानी भेज दिया था। जिस समय यह सजा सुनाई गयी थी उस समय ब्रिटेन में अधिकतम 14 वर्ष की सजा थी और भारत में अंग्रेज ईसाईयों ने अधिकतम 25 वर्ष की सजा की थी। किन्तु सावरकर को ईसाईयों ने दो जन्म की अर्थात् 50 साल की सजा सुना दी थी। सावरकर जी ने सरकार से पूछा था कि उसकी दोनों जन्म की सजा एक साथ चलाई जाएं ताकि दोनों 25 साल में ही समाप्त हो जाएं किन्तु सरकार ने कहा कि पहले एक जन्म की समाप्त होगी फिर दूसरे जन्म की सजा चलेगी। सरकार का यह निर्णय सुनाते हुए एक इसाई अधिकारी ने मजाकिया अंदाज में

---

[217] V. Savarkar, *'My transportation for life'*, Chapter – In the Gaol at Byculla, p. 27.

सावरकर से कहा कि **“तुमको अपनी सजा पूरी करने के लिए दूसरा जन्म लेना होगा।”** सावरकर ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि **“बिलकुल सही, किन्तु मेरे पास तुम्हारे लिए सांत्वना है कि तुमने मुझे लम्बी सजा देने हेतु हिन्दुओं के पुनर्जन्म के सिद्धांत को अपना लिया है और ईसाईयों के पुनरुत्थान के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया है।”**

वास्तव में, ईसाईयों और मुस्लिमों में यह मान्यता है कि प्रलय के समय अर्थात् क़यामत के दिन सभी मुर्दों को जीवित किया जायेगा और उनका हिसाब किताब किया जायेगा। ये और बात है कि वह प्रलय और क़यामत कब होगी यह किसी को नहीं पता है। इसी लिए ये लोग मुर्दों को जलाते नहीं है बल्कि दफनाते हैं ताकि शरीर क़यामत तक ठीक ठाक रहे। आज सभी जान गये हैं कि शरीर को भले ही लकड़ी अथवा लोहे में बंद करके दबाया जाये वह कुछ ही वर्षों में नष्ट हो जाता है। भूमि के सुक्ष्मजीवी तथा अन्य भौगोलिक परिस्थिति उसे समाप्त कर देती हैं। जब शरीर ही नहीं बचेगा तो इनका भगवान क़यामत के दिन हिसाब किताब किसका करेगा ? अब यदि ये लोग कहेंगे कि हिसाब किताब आत्मा का होगा तो इनको वैदिक धर्म की मान्यता को पूर्ण रूप से स्वीकार करना होगा।

संसार करोड़ो वर्षों से चला आ रहा है और करोड़ों वर्षों तक आगे भी चलेगा। मुस्लिम तथा इसाई कहते हैं कि मरने के बाद आत्मा करोड़ों वर्ष तक क़यामत के दिन तक धरती में गड़ी रहेगी। अब एक आत्मा को एक बार जन्म मिलेगा और फिर क़यामत तक इंतजार करना होगा तो यह मूर्खता का सिद्धांत है। यदि एक आत्मा एक ही जन्म लेती है तो फिर संसार में किसी को कुत्ता, बिल्ली, मुर्गा, बकरी, सांप, पेड़, दरिद्र, अपंग किस आधार पर बनाया ? यह तो ईश्वर ने अन्याय कर दिया कि एक आत्मा को धनवान

मनुष्य बना दिया एक आत्मा को भूख से मरने के लिए भिखारी का शरीर दे दिया। जब इन आत्माओं ने पहले कोई कर्म किये ही नहीं थे तो इनको जन्म किस आधार पर मिला ? अतः मुस्लिम तथा ईसाईयों की मान्यताओं पर अनेकों ऐसे प्रश्न खड़े होते हैं जिनका उत्तर ना धर्म के आधार पर मिल सकता है और ना ही विज्ञान के आधार पर मिल सकता है।

वास्तव में, पुनर्जन्म का सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक और न्यायकारी है। जो लोग यह कहते हैं कि पुनर्जन्म नहीं होता है वो संसार में चल रही घटनाओं की जानकारी नहीं रखते हैं। प्रत्येक देश में सेकड़ों ऐसी घटनाएँ होती हैं कि किसी 5-6 वर्ष के बच्चे को अपने पुराने जीवन के स्थान, माता-पिता, घर आदि की याद आ जाती है। न्यूज़ चैनल पर ऐसे बच्चों की वीडियो तक दिखाई जा चुकी है। लगभग 5-6 घटनाओं का तो स्वयं मुझे पता है। हरियाणा के जींद जिले में एक बच्चे ने ढाई साल की आयु में अपने पिछले जन्म की सभी बातें बताई तो घर तथा गाँव वाले आश्चर्य में पड़ गये थे।[218]

संसार में इस प्रकार की घटनाएँ अपने आप नहीं होती हैं बल्कि ईश्वर इनके द्वारा लोगों को समझाना चाहता है कि पुनर्जन्म होता है अतः पाप कर्म मत करो क्योंकि उनका फल आपको ही मिलना है। कुछ लोग कह सकते हैं कि सब मनुष्यों को पिछले जन्मों का याद क्यों नहीं रहता है ? थोड़ा बुद्धिपूर्वक सोचना यदि सबको पिछले जन्मों का पता चल जायेगा तो क्या ये संसार चल पायेगा ? बिलकुल नहीं, क्योंकि सभी पिछले जन्म के सगे सम्बन्धियों के कारण कोई भी वर्तमान जीवन जी नहीं पायेगा। पिछले जन्म में किसी की माँ बीमार होगी, किसी की पत्नी सुन्दर होगी, किसी की बच्ची अकेली होगी,

[218] पुनर्जन्म पर हिन्दू vs मुस्लिम vs इसाई क्यों ? पहली बार पुनर्जन्म से पर्दाफाश |
Rahul Arya, *Thanks Bharat YoutTube* 11 February 2018.

किसी का परिवार भूख से तड़प रहा होगा, कोई राजा के घर से होगा आदि। संसार में सर्वत्र अव्यवस्था फ़ैल जाएगी। वैसे भी मनुष्य का सामर्थ्य तो यह स्मरण रखने का भी नहीं है कि 10 दिन पहले प्रातः 10 बजकर 10 मिनट पर वह क्या कर रहा था ? आप पहले ही समझ चुकें हैं कि मनुष्य अल्पज्ञ है। सर्वज्ञ तो केवल ईश्वर ही है। अतः यह व्यवस्था पूर्णतः न्यायकारी तथा तर्कसंगत है। जिसने जैसे कर्म किये उसको वैसा ही फल मिलता है। जब तक कर्म नहीं होता फल भी नहीं मिलता है। यजुर्वेद में पुनर्जन्म को न्यायकारी सुन्दर व्यवस्था कहा गया है।[219]

इस विषय से एक रोचक घटना और जुड़ी हुई है। एक मुस्लिम तथा वैदिक धर्मी का संवाद चल रहा था।[220] वो मुस्लिम मौलाना बार बार कह रहा था कि पुनर्जन्म होता ही नहीं है। वैदिक धर्मी ने सभी तर्क तथा प्रमाण दे दिये किन्तु मौलाना नहीं माना और कुतर्क करता रहा। वैदिक धर्मी ने बुद्धिपूर्वक कह दिया कि **"मौलाना, तुम नहीं मानोगे पुनर्जन्म को क्योंकि तुम्हारे बाप दादा पहले जन्मों में हरामखोर थे।"** यह बात सुनकर मौलाना आग बबूला हो गया और कह पड़ा कि **"पहले जन्मों में हरामखोर तुम्हारे बाप-दादा होंगे, हमारे नहीं।"** यह कहते ही मौलाना शास्त्रार्थ हार गया और अपना माथा पीटने लगा क्योंकि उत्तेजना में उसने पूर्व जन्म की बात कह डाली। वास्तव में, पुनर्जन्म की व्यवस्था पूर्ण वैज्ञानिक होने से सर्वोत्तम है इसीलिए सब कुछ जानने वाले महाबुद्धिमान ओम् ने यह न्यायकारी व्यवस्था बनाई है।

---

[219] यजुर्वेद , अध्याय 4, मंत्र 15।

[220] नाम बताने की आवश्यकता नहीं है।

अतः ना कोई दिन बुरा होता ना ही कोई रात, ना ही कोई ग्रह बुरा होता है और ना ही कोई नक्षत्र बुरा होता है। बुरे होते हैं तो मनुष्यों के कर्म जिनके कारण उनको दुःख झेलने पड़ते हैं। अतः किसी शनि, राहु, केतु आदि से मत डरो बल्कि बुरे कर्मों से डरो। इस प्रकार कायर होकर जीने से मर जाना अच्छा है।

जिन लोगों पर राष्ट्र की रक्षा का दायित्व है वो लोग सूफी परम्पराओं वाले गुरुघंटालों, सैय्यद, पीर, पैगम्बर, मजार आदि के स्थानों पर मस्तक झुकाये खड़े हैं। संसार बनाने वाले परमपिता को छोड़कर सभी लोग आज धर्म के नाम पर दर दर भटक रहें हैं। जो उन्नति चाहते हो तो ओम् द्वारा वेदों में दिए कर्मों को अपनाकर जीवन जियो अन्यथा पतन निश्चित है।

संसार में कोई भी आसान अथवा छोटा मार्ग नहीं होता है। सहज मार्ग के नाम पर मोक्ष की बात करने वालों से बचें और पुरुषार्थ करके धर्म के कार्य करें। बुरे कार्यों को छोड़ते रहें क्योंकि किये हुए पाप क्षमा नहीं होते हैं। यह सत्य है कि सत्य कर्म करने में बहुत समस्या आती है किन्तु उनका परिणाम बहुत सुखकारक होता है।

श्रीकृष्ण जी गीता में कहते है कि -

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। [221]

---

[221] श्रीकृष्ण गीता (भगवद्गीता, यथार्थगीता आदि अनेकों गीता होने तथा सबमें मंत्र संख्या भिन्न भिन्न होने के कारण श्लोक संख्या नहीं दी गयी है)।

अर्थात् धर्म के कर्म प्रारंभ में विष के समान लगते है किन्तु अंत में अमृत के समान उनका परिणाम होता है।

कुछ लोग कह देते है कि वो अपनी कुछ बड़ी बड़ी बुराइयाँ जानते हैं किन्तु उनको छोड़ें कैसे ? महर्षि मनु ने इसका बहुत ही अच्छा मार्ग बताया है।

यथा यथा मनस्तस्य दुष्कृतं कर्म गर्हति।
तथा तथा शरीरं तत्तेनाधर्मेण मुच्यते॥[222]

अर्थात् "यदि कोई मनुष्य किसी दुष्कर्म अर्थात् बुरी आदत से छुटकारा चाहता है तो मन से उस दुष्कर्म की खूब भर्त्सना (बुराई) करे। जैसे जैसे मनुष्य मन से उस दुष्कर्म की निंदा करेगा वैसे वैसे उस दुष्कर्म से छूटता चला जायेगा।"

कोई भी प्राणी दुःख नहीं चाहता है। अपनी बुरी आदतों में दुःख देखने लग जाओगे तो धीरे धीरे वह बुराई अपने आप छुट जाएगी। जैसे कोई शराब पीता अथवा मांस खाता है और उनको छोड़ना चाहता है। इस स्थिति में शराब तथा मांस की हानि देखें तथा उनसे मिलने वाले दुःखों पर विचार करें। सदैव शराब तथा मांस को बुरा कहते रहो और समझते रहो। सदा उनमें दुःख ही दुःख देखते रहो। इस स्थिति में आने के बाद यदि आपने शराब न पीने तथा मांस न खाने का संकल्प कर लिया तो वह निश्चित रूप से छुट जाएंगे। इसके साथ साथ अच्छी संगत बहुत महत्वपूर्ण है। आप ऐसे लोगों में बैठिये और बात कीजिये जो शराब नहीं पीते और शाकाहारी हैं। इसी प्रकार से सब बुराई मनुष्य आसानी से छोड़ सकता है।

[222] मनुस्मृति, अध्याय 11, श्लोक 229।

अतः संसार बनाने के उपरांत (बाद) ईश्वर नियमों के आधार पर सृष्टि का संचालन करना प्रारंभ करता है। जीवात्माएं भी कर्मफल तथा पुनर्जन्म आदि नियमों से बंधी हुई हैं। इसी कारण संसार व्यवस्थित रूप से चल रहा है।

5.2 सब कृष्ण लीला ?

प्राचीन समय में धर्म की गूढ़ बातें भी एक साधारण व्यक्ति को पता होती थी किन्तु आज धर्म की साधारण बातें भी एक पढ़े लिखे व्यक्ति को पता नहीं होती है। वैदिक मान्यता के अनुसार कर्म करना हमारा कार्य है। ईश्वर ने हमें कर्म करने में स्वतंत्र छोड़ा हुआ है। जैसे भारत का संविधान है। संविधान में लिख दिया कि ये कार्य करोगे तो ये सजा मिलेगी। अच्छा कार्य करोगे तो तुम्हें भारत रत्न मिलेगा अथवा ये उपहार मिलेगा आदि। जब कोई गलत कर्म करता है तो कर्म करने के बाद पुलिस पकड़ती है या बिना कोई कर्म किये ही पुलिस पकड़ लेती है? मैंने किसी का मर्डर नहीं किया और पुलिस मर्डर के आरोप में उठा ले जाएगी और सजा दिलवा देगी ऐसा थोड़े ही होता है। हाँ, मानवीय भ्रष्टाचारी व्यवस्था में कुछ अपवाद हो सकते हैं किन्तु कानून तो कर्म करने के बाद ही सजा देने वाला बनाया हुआ है। अतः सभी देशों ने अपने नागरिकों को कर्म करने की स्वतंत्रता दी हुई है। आप खुलकर व्यापार कर सकते हैं किन्तु उसमें धोखाधड़ी करोगे तो उसका फल कानून में सजा के तौर पर लिखा है। इसी प्रकार से ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था है। जैसे मनुष्यों ने अपने अपने देश, जाति आदि के संविधान बनाए हैं वैसे ही ईश्वर ने मनुष्यों का संविधान अर्थात् वेद बनाया है। वेद में सभी मनुष्यों को

बता दिया गया है कि ऐसा कर्म अच्छा है जो आपको करना है और ऐसा बुरा कर्म है जो नहीं करना है। उसके बाद ईश्वर ने कह दिया कि अब आप कर्म करने में स्वतंत्र हो। वास्तव में, जब तक हम कर्म करने में स्वतंत्र नहीं होंगे तब तक ईश्वर हमें फल भी नहीं दे सकता है। क्यों ? क्योंकि हमने तो कोई कर्म किया ही नहीं। इसीलिए कर्म करने में सभी स्वतंत्र छोड़े गये हैं। सभी जीवात्माओं को फिर करने योग्य और ना करने योग्य कर्म भी बता दिए गये हैं। जो वेद नहीं पढ़ पाता है तो उसको बुद्धि दे दी है और प्रत्येक कार्य में ईश्वर हमें हृदय में सूचना भी देता है कि जो कार्य हम कर रहें हैं वह ठीक है या नहीं।

इसके बाद कर्म करने की स्वतंत्रता के कारण ही ईश्वर को फिर अधिकार मिल जाता है कि यदि बुरा कर्म हुआ तो दंड देने का और अच्छा कर्म हुआ तो उसका अच्छा फल देने का। कर्म करने की स्वतंत्रता देने से पूर्व ईश्वर को भी अधिकार नहीं है हमें फल देने का। ईश्वर को भी अधिकार तब है जब हमने स्वतंत्र रह कर कोई कर्म किया है। भारत के दंडनायकों को दंड देने का अधिकार मिला हुआ है। वो अधिकार तब मिला हुआ है जब हम कर्म करने के लिए स्वतंत्र हैं। दुकान खोलकर सामान बेचने की स्वतंत्रता है किन्तु मिलावटी सामान बेचेंगे तो दंड मिलने का विधान भी है। अतः जो भी कर्म करते हैं वह हम स्वयं करते हैं, कोई करवाता नहीं है। शराब पीते हैं तो हम स्वयं दोषी हैं। कोई किसी निर्दोष को मार रहा है, बलात्कार, भ्रष्टाचार, लूटमार कर रहा है तो वह स्वयं कर रहा है। यदि कोई कह देवें कि मैंने तो शराब पी रखी थी और उसके कारण हो गया बलात्कार तो क्या उसको छोड़ देना चाहिए ? कोई कह दे कि मैंने नहीं किया किसी ने करवाया तो

क्या उसको छोड़ देना चाहिए ? बिलकुल नहीं, क्योंकि उसके शरीर, अंग-प्रत्यंग, मन आदि को स्वयं वह चला रहा है।
कुछ समय पूर्व दिल्ली के रोहिणी में मेरा कार्यक्रम चल रहा था। मैं कर्मफल व्यवस्था आदि के विषय में ही चर्चा कर रहा था। एक बुजुर्ग व्यक्ति ने खड़े होकर इस विषय से सम्बंधित मुझसे दो प्रश्न किये थे।

प्रथम प्रश्न - कर्म करना आदमी के हाथ में है ही नहीं। जो कुछ हो रहा है सब भगवान की लीला है। वही कर्म करवाता है।

उत्तर - यदि आप ध्यान से सुनते तो ये बात मेरी पहली कही बातों में आ गयी थी। चलिए पुनः दूसरे शब्दों में समझते हैं। कोई कुत्ता बराक ओबामा का बन गया और कोई कुत्ता सड़क पर अपाहिज घूम रहा है। यह सब कर्म के अनुसार है। एक ही बाप के चारों बेटे अलग अलग है क्योंकि वो उनके कर्म तथा स्वभाव थे पिछले जन्म के। अब जैसे आप कर्म करोगे उनके फल आपको आगे मिलेंगे। कुछ कर्मों के फल यहीं मिल जाएंगे कुछ के अगले जन्म में। जैसे बिना बुद्धि के तथा बिना परीक्षण किये नकली दूध पी लोगे तो उसका फल तुरंत स्वास्थ्य खराब होकर मिल जायेगा। अब जिसने वह नकली दूध दिया उसको उसका फल तुरंत नहीं मिलेगा। किये हुए कर्म से बच कोई नहीं सकता है। कोई लंगड़ा हो जायेगा, कोई राजा, कोई रंक। यह सब हमारे ही कर्मों के अनुसार फल मिलते हैं।
यदि हम कर्म करने वाले ना हों तो सब राजा ही राजा होने चाहिए या सब दरिद्र ही दरिद्र होने चाहिए। ध्यान पूर्वक समझिए कि यदि हमारे कर्मों के अनुसार फल नहीं मिला तो ईश्वर अन्यायकारी हुआ कि नहीं ?

यदि सब कुछ ईश्वर की लीला है तो क्या बलात्कार भी ईश्वर ही करवा रहा है। दूसरे सब पाप संसार में हो रहें हैं वह सब भी ईश्वर ही करवा रहा है। तो सजा भी ईश्वर को ही मिलनी चाहिए। फिर क्यों कोई अपाहिज पैदा होता है ? क्यों किसी को अधिक दुःख तथा किसी को अधिक सुख है ? यह सब पूर्णतः न्यायकारी व्यवस्था है अर्थात् सभी को अपने किये हुए कार्यों का ही फल मिलता है।

हम ये सिद्ध कर चुके हैं कि ईश्वर न्यायकारी है। न्याय कब होता है ? जिसने जितनी मात्रा में जैसे कर्म किये हैं उतनी ही मात्रा में उतना ही उसको वैसा ही फल मिले। तभी उसे न्याय कहते हैं। अतः ईश्वर न्यायकारी है इसी लिए उसने हम सब मनुष्यों को कर्म करने की स्वतंत्रता दी है।

दूसरा प्रश्न - कर्म कैसे बनता है ?

उत्तर - कर्म बनता है हमारे क्रियाकलापों से। मन द्वारा प्रेरित क्रियाकलाप ही कर्म कहलाते हैं। यह इसकी साधारण सी परिभाषा है। इसे सरल भाषा में समझिये। जैसे मैं बोल रहा हूँ तो यदि मैं आपको अगर कुछ अच्छी बात बता रहा हूँ, सत्य बात बता रहा हूँ तो यह मेरा अच्छा कर्म है। यदि मैं आपको गुमराह कर रहा हूँ, गलत बात बता रहा हूँ तो यह मेरा बुरा कर्म है। ये अच्छा अथवा बुरा कर्म करने में मैं स्वतंत्र हूँ इसलिए ईश्वर भी फिर फल देने में स्वतंत्र है। यदि अच्छा किया तो ईश्वर उसका अच्छा फल मुझे देगा। यहाँ ईश्वर ने अन्याय बिलकुल नहीं किया है। हमें बुद्धि इसीलिए दी गयी है ताकि हम प्रत्येक कर्म बुद्धि से भला-बुरा, सुख-दुःख, हानि-लाभ आदि विचार करके ही करें।

तीसरा प्रश्न - क्या अच्छा बुरा सब ईश्वर ही करवाता है मनुष्य से ?

उत्तर - वैसे तो संक्षेप में ये विषय मैंने पहले ले लिया है किन्तु इसको थोड़ा गहनता से समझाने का प्रयत्न करता हूँ ताकि आपके ज्ञान में वृद्धि होवें। सज्जनों, एक वो लोग हैं जो भगवान को नहीं मानते हैं। ऐसे लोगों को नास्तिक बोलते हैं। दूसरे वो लोग होते हैं जो ईश्वर को मानते तो हैं लेकिन एक बहुत ही घटिया प्रकार की परंपरा को लेकर आगे बढ़ते हैं। अलग अलग सभी मत-पंथ, सम्प्रदायों में ऐसे खतरनाक लोग हैं। वो कहते हैं कि जो कुछ हो रहा है वो यहोवा, अल्लाह, भगवान करवा रहा है। सब ईश्वर करवा रहा है हम कुछ नहीं कर रहे हैं, सब भगवान की माया है।

इसका अर्थ ये हुआ कि चोरी, निर्दोषों की हत्याएं, बलात्कार, भ्रष्टाचार, व्याभिचार आदि सबकुछ भगवान करवा रहा है। मनुष्य ने अपनी बुराइयों के बचाव का बहुत अच्छा उपाय निकाला है किन्तु यह उपाय सच में काम नहीं करता है क्योंकि इन सब बुराइयों और झूठ का दंड अवश्य मिलने वाला है। कर्म हुआ है तो फल अवश्य मिलेगा। सामान्य संसार की आँखों में धूल झोंकी जा सकती है किन्तु सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान **ओम्** के साथ कोई धोखा नहीं कर सकता है।

मैंने देखा है कि अनेकों बार सामान्य धर्मात्मा लोग भी कह बैठते हैं कि **"जो हो रहा है अच्छा हो रहा है, सब भगवान का खेल है, हम तो केवल उसके मोहरे हैं लेकिन चाल वही चलता है।"** लेकिन जब इन लोगों का कोई परिवार वाला डॉक्टर के हाथों गलती से अथवा जान बुझकर मर जाता है तब ये सब लोग उस अस्पताल को तोड़ने फोड़ने लगते हैं। उस समय ये

लोग क्यों नहीं कहते कि जो हो रहा है सब अच्छा हो रहा है और ये डॉक्टर ने नहीं भगवान ने किया है।

यदि सब कार्य ईश्वर ही करवाता है तो क्यों नहीं उसी से अपना खाना बनवाते हो ? क्यों नहीं उसी से अपना घर साफ़ करवाते हो ? अब कुछ लोग कहते हैं कि हम तो निमित्त मात्र है। हमारे द्वारा ही ईश्वर सब कार्य करवाता है। इस बात में भी दम नहीं है क्योंकि ईश्वर को अपने कार्य करने के लिए निमित्त की आवश्यकता पड़े तो वह ईश्वर अर्थात् सर्वशक्तिमान कैसा ? हम जैसे जीवों को अपने कार्य करने के लिए शरीर आदि की आवश्यकता पड़ती है ईश्वर को नहीं। ये तो वही बात हो गयी की चोरी करके दोषी चोर कोतवाल को ही दोषी ठहराने लग जायें। जिस प्रकार से किसी निर्दोष की हत्या के आरोप में बंदूक को सजा नहीं दी जाती है बल्कि बंदूक चलाने वाले को ही दंड दिया जाता है वैसे ही स्वतंत्र रहकर जीव कर्म करता है और जीव ही अपने कर्मों का अच्छा-बुरा फल भोगता है।

विचार करके देखिये कर्म करने की स्वतंत्रता के इस सिद्धांत को तोड़कर कुछ स्वार्थी लोगों ने कैसे सनातन धर्म को मलीन करके छोड़ दिया है। जो गलत काम लोगों तो स्वयं करने होते हैं वो सभी श्रीराम, श्रीकृष्ण, शिवजी, हनुमान जी के चरित्र में डाल दिए गये। ग्रंथों में मिलावट की गयी, नए नए ग्रन्थ रचे गये और समाज में प्राचीन कहकर स्थापित कर दिए गये। सब के सब गलत कार्य महान योगी, ऋषि-महर्षियों, महापुरुषों तथा ईश्वर पर लगा दिए गये ताकि उनकी बुराई छुप सके। कितना सरल होता है स्वयं को बदलने की अपेक्षा दूसरों को बुरा बताकर अपनी बुराई का बचाव करना, यह आप मेरे ऊपर के कथन से भली भांति समझ सकते हो।

कुछ लोग जानते होंगे कि प्रत्येक 7 से 10 वर्षों में शरीर के पूरे के पूरे सेल्स बदल जाते हैं अर्थात् हमारा शरीर हर 7-8 वर्षों में नया हो जाता है। जब यह सेल्स बदलने की और बनने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है अथवा रुक जाती है तो बुढ़ापे के कारण मनुष्य शरीर का अंत हो जाता है। हमारे सेल्स बदलने के साथ ही साथ हमारा शरीर तो पूरा का पूरा नया हो जाता है किन्तु कौन सा वो तत्व है जो इस शरीर में रह कर इस शरीर को निरंतर चलाता रहता है। वेदों में उसे ही आत्मा कहा है अर्थात् वो "मैं" ही इस शरीर में एक स्थान पर स्थापित होकर इसे चलाता है। जैसे इस शरीर के द्वारा हम एक स्थान पर बैठकर बहुत बड़े हवाई जहाज को चला सकते हैं, एक स्थान पर बैठकर बहुत बड़ी रेलगाड़ी को चला सकते हैं, ट्रक को चला सकते हैं वैसे ही जीवात्मा (मैं) इस शरीर को चलाने वाला है। जीवात्मा ही शरीर में रहकर इससे कार्य कर रहा है। अपनी ईच्छा से शरीर के अंगों आदि को दिशा निर्देश देकर भिन्न भिन्न क्रियाओं को करता है। ईश्वर ने जीवात्मा को शरीर देकर उसे इस शरीर का मालिक बनाया है ताकि वह अपनी ईच्छा से कार्य कर सकें।

इसको थोड़ा वैज्ञानिक भाषा में समझने का प्रयास करें। जब शरीर को मृतशरीर कहते हैं तब भी शरीर के सेल्स जीवित होते है। वो सेल्स अचानक से नहीं मरते हैं। वो 24 से 48 घंटे तक जीवित रहते हैं। विचार करें कि शरीर के सेल्स अभी जीवित है तो कौन सा ऐसा तत्व शरीर से निकल गया कि शरीर को मृत कहने लगे। सेल्स तो जी रहे है अभी। अतः शरीर मृत तब होता है जब आत्मा उस शरीर से निकल जाती है अर्थात् जब वह शरीर आत्मा की ईच्छा अनुसार कार्य करने में असफल हो जाता है।

अतः यह आत्मा (मैं) ही है जो शरीर से ईच्छानुसार कर्म करती है और ईश्वर के अधीन होकर अपने कर्मों के फल भोगती है।

इसी सिद्धांत के कारण संसार में अच्छे तथा बुरे लोग सदैव होते हैं। सुख और दुःख सदा होता है। इसी के साथ ही एक और सिद्धांत चलता है और वो है पुरुषार्थ करके फल प्राप्त करने का सिद्धांत। कुछ लोग कह सकते हैं कि कर्म की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए थी। ईश्वर ही सब कार्य करता तो सब कार्य अच्छे ही अच्छे होते और कोई दुःख नहीं होता। वास्तव में ये लोग निकम्मे तथा आलसी प्रवृत्ति के होते हैं क्योंकि बिना बिना परिश्रम के तो ईश्वर ने यह संसार भी नहीं बनाया है, बिना परिश्रम के तो जीवात्मा अपना भोजन चबा भी नहीं सकता है। तो फिर बिना परिश्रम के सभी अयोग्य आत्माओं को सुख ही सुख देने वाला ईश्वर न्यायकारी कैसे हो सकता है ? यदि बिना मेहनत तथा पुरुषार्थ के सबको सब पदार्थ मिल जाते तो संसार में किसी भी पदार्थ आदि का कोई महत्त्व ही नहीं रहता। बिना कर्म के सब अच्छा ही अच्छा करता तो ईश्वर अन्यायकारी सिद्ध होता। ईश्वर न्यायकारी है इसीलिए उसने संसार में पुरुषार्थ की व्यवस्था की है।

अतः समस्त संसार के लोगों को इस अटल सत्य में विश्वास करके मानवता तथा प्राणिमात्र के भले के लिए कार्य करने चाहिए। सारा संसार एक ही पिता (ओम्) की संतान है। सभी जीव दूसरे जीवों के प्रति प्रेम, वात्सल्य, सहानुभूति, सहयोग, समर्पण सदा रखें। यदि कोई दुष्ट व्यक्ति प्राणियों को दुःख पहुंचा रहा है तो उसे शरीर से मुक्त कर देना चाहिए। यही ईश्वर ने वेदों में अच्छे मनुष्यों को आज्ञा दी है। ईश्वर कहते हैं कि -

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः ॥[223]

अर्थात् हे मनुष्यों ! अपना सामर्थ्य (इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्य) बढ़ाओ, सारे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ, सभ्य, मानवतावादी) बनाओ, यदि कोई दुष्ट निर्दोषों को मारे तथा कष्ट पहुंचाएं तो उसका सर्वनाश कर दो ताकि वह दुष्ट अपने बुरे कर्मों से मानवता की अधिक हानि न कर पाएं।

वैदिक मान्यता है कि हजारों दुष्टों को दंड देना पाप नहीं किन्तु किसी एक अच्छे धर्मात्मा को सताना और हानि पहुँचाना पाप कहलाता है। मैं समझता हूँ कि अब आप कर्मफल के सिद्धांत को समझकर अपने पहले किये हुए बुरे कर्मों के विषय में अवश्य विचार कर रहें होंगे। पहले किये हुए बुरे कर्मों से बचने का उपाय खोज रहें होंगे।

चौथा प्रश्न - क्या गंगा स्नान तथा तीर्थ आदि से पाप मुक्ति हो जाती है ?

उत्तर - उत्तराखंड में देवप्रयाग नामक स्थान जो ऋषिकेश से बद्रीनाथ के मार्ग पर ऊपर पहाड़ों में स्थित है, वहां पर मैं बहुदा जाता रहता हूँ। वहां पर अनेकों छोटे छोटे सुंदर गाँव हैं जो गंगा नदी पर स्थित हैं। देवप्रयाग में ही भागीरथी (गंगा) और अलकनंदा नदी मिलती है। उस स्थान पर गंगा की सुन्दरता देखकर मन में आनंद की तरंगे बहने लग जाती है। किन्तु जब आप ऋषिकेश, हरिद्वार, बनारस और प्रयागराज में धर्म के नाम पर मोक्ष प्राप्ति की ईच्छा हेतु आधी जली हुई लाशों को नदी में प्रवाहित होते देखते हो तब निर्मल और पवित्र गंगा के मस्तक पर कचरे का मुकुट रखा हुआ प्रतीत होता है। ना जाने कैसी कैसी और कितनी मात्रा में धर्म के

---

[223] ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 63, मंत्र 5।

नाम पर करोड़ों लोगों की गंदगी पवित्र गंगा नदी में बहा दी जाती है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि धर्मशास्त्रों में कितनी बड़ी मात्रा में मिलावट हुई है। जो कभी अधर्म हुआ करता था कुछ लोगों की चालाकियों से अब वो धर्म बन चुका है।

आज एक बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने मान लिया है कि गंगा स्नान से पाप छूट जाते हैं। जबकि यह बात वेद और गीता के विरुद्ध है जो हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ हैं। आर्यों के धर्म में स्पष्ट मान्यता है कि किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं जाता है। जिसने भी कर्म किया है उसको फल अवश्य मिलेगा। कुछ ईसाईयों ने भोले लोगों को यह कहकर भी मुर्ख बना लिया है कि तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए जायेंगे तुम जीसस का नाम ले लो। कितना सरल है झूठ-प्रपंच, लोभ-लालच के द्वारा लोगों के विचार बदलकर समाज के व्यवस्थित ढांचे को हिला देना।

विचार करके देखिये यदि कुछ बुरे कार्य जाने अनजाने हमसे हुए हैं और उनका फल हमें मिलेगा तो क्या हमने कुछ अच्छे कार्य नहीं किये हैं? यदि किये हैं तो उनका अच्छा फल भी तो हमें मिलेगा। यदि सब लोग यह सोचने लग जायें कि पाप क्षमा हो जाते हैं तो सोचिये सब लोग स्वार्थी और पापी होकर छल-कपट से दूसरों को सताकर जीवन जीना प्रारंभ कर देंगे। वास्तव में ऐसा हो भी रहा है।

विचार करिए यदि कोई न्याय करने वाला न हो तो क्या संसार चल सकता है। कुछ लोग तो यह तक कह देते हैं कि हम तुम्हारे पाप अपने ऊपर ले लेंगे अथवा तुम्हारे नाम से इतने हजार मन्त्रों का जाप करेंगे। आप ही बताइए

क्या ये हो सकता है कि भोजन स्वामी करे और पेट सेवक का भर जाये। ऐसे ही कुछ लोगों ने कह दिया और प्रचारित कर दिया कि गंगा स्नान से पापों से मुक्ति मिलकर मोक्ष का आनंद प्राप्त होता है। मोक्ष प्राप्ति कैसे होगी इसका वैदिक उपाय तो उसी स्थान पर करेंगे जहाँ मोक्ष पर प्रश्न होगा किन्तु गंगा स्नान के विषय का समाधान आप यहीं खोज सकेंगे।

सबसे बड़ा प्रश्न उठता है कि यदि गंगा स्नान से पाप छूटते हैं तो वो पाप गंगा के साथ बहते हुए समुन्द्र में चले जायेंगे और समुन्द्र से बादल उनको वापिस उठाकर वर्षा के द्वारा हमारे ऊपर फिर से पटक देंगे। फिर पाप तो मूल रूप से हमारे ही ऊपर रहे। ये तो हुई तार्किक बात।

अब सामान्य तौर पर एक मोटी बात ये भी आती है कि यदि किसी व्यक्ति ने 10 लोगों को मार दिया और उसने गंगा स्नान किया तो क्या वो पाप मुक्त होगा ? यदि ऐसा हुआ तो ईश्वर अन्यायकारी हुए क्योंकि परमात्मा ने उस हत्या करने वाले को अगर पापमुक्त किया तो वह फिर से पाप करेगा और गँगा स्नान करके फिर से पापमुक्त हो जाएगा। अब परमात्मा उन व्यक्तियों के लिए अन्यायकारी हो जायेंगे जिसको उस व्यक्ति ने मारा है। ये सभी सिद्धांत ढोंग-पाखण्ड के अंतर्गत आते है। ये सिद्धान्त हमारे वेद शास्त्रों के विपरीत हैं तथा उल्टा हमारे धर्म पर ही कुठाराघात का रहें हैं।

यदि पाप करने वाले को स्मरण रहे कि कर्मफल तो भुगतने पड़ेंगे आज नहीं तो कल तब कोई व्यक्ति पाप करने की हिम्मत नहीं करेगा। आपने जीवन के बीते हिस्से में यदि कुछ गलत किया है तो उससे सीख लेकर भविष्य में वह गलती दुहराने से बचना है। **“If you feel sorry for a mistake**

avoid to commit it again." सही अर्थो में पाप से मुक्ति का सरल उपाय यही है। कोई तीर्थ आपके किये हुए पापों को नहीं मिटा सकता है।

जो गुरुघंटाल धर्म के नाम पर मोक्ष बेच रहें हैं वे स्वयं तो महापापी होकर नीच गति को पाएंगे ही किन्तु आपको भी साथ ले जाएंगे। अतः वेद ईश्वर की वाणी है । इसी के सिद्धांतों के अनुसार मनुष्यों को आचरण करना चाहिए जिससे सबकी उन्नति हो और विश्व में शांति की स्थापना हो। बिना पुरुषार्थ के किसी को कोई पदार्थ नहीं प्राप्त होता है। अतः सुख की कामना करने वाले सभी मनुष्यों को निरंतर पुरुषार्थ (महनत) करते रहना चाहिए। बहुत से लोग संसार में कहते हैं कि वही होता है जो भाग्य में लिखा होता है। मनुष्य कितनी भी मेहनत कर ले किन्तु उसे अंत में भाग्य का ही मिलेगा। प्रश्न उठता है कि इनमें से क्या बड़ा है ?

पांचवां प्रश्न – पूर्वार्ध (किस्मत) बड़ा है या पुरुषार्थ (महनत) बड़ा है ?

उत्तर - आज कितने ही लोग ऐसे हैं जो अपनी किस्मत (पूर्वार्ध) चमकाने हेतु पीर-पैगम्बर, मजार, सैय्यद, चर्च व अन्य पाखंडियों के पास जाते हैं। उनके बताए हुए उपाय करने में अपना समय व धन खोते रहते हैं। निश्चित रूप से उन लोगों को किस्मत किसे कहते है और ये कैसे बनती है इस बात का ज्ञान नहीं है। योगदर्शन में आता है कि -

'ते ह्लादपरितापफलाः पुण्यापुण्यहेतुत्वात्'[224]

---

224 योगशास्त्र, साधनपाद, सूत्र 14।

अर्थात् शुभ और अशुभ कर्मों के कारण ही जाति, आयु और भोग के द्वारा जीवात्मा को हर्ष और शोक, सुख और दुःख प्राप्त होते हैं।

अतः पूर्व जन्म में हमने जो अच्छे-बुरे कर्म किये हैं उन्हीं के कारण हमारा वर्तमान जीवन है। उन्हीं पूर्व जन्म के संचित कर्म फलों के कारण ही कोई राजा के घर जन्म लेता है तो कोई दरिद्र के घर, कोई विद्वान के यहाँ उत्पन्न होता है तो कोई मुर्ख के यहाँ उत्पन्न होता है। जो लोग अपने पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के फलों को बदलने के लिए इधर-उधर पाखंड में घूमते हैं वो निश्चित जान लीजिये कि जो कर्म हम कर चुके हैं उसका फल अवश्य ही मिलेगा, आप या अन्य कोई टाल नहीं सकता है। **प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षयः** अर्थात् पहले किये हुए कर्म भोगने से ही समाप्त होते हैं। इन पहले किये हुए कर्मों को ही किस्मत कहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि जब सब किस्मत से मिल रहा है तो मेहनत (पुरुषार्थ) क्यों करें ?

यदि आपने बुद्धि पूर्वक पढ़ा होगा तो विचार करके देखिये कि ये पूर्वार्ध (किस्मत) बने कैसे है ? इसको समझने के लिए किसान का उदाहरण लेते हैं। दो किसान होते हैं, एक बड़ा पुरुषार्थी होता है और एक बड़ा ही आलसी होता है। पुरुषार्थी किसान ने खेत में अनाज उगाया और दिन-रात खेत में मेहनत की। बाद में उसका घर अन्न से भर गया। दूसरी ओर आलसी किसान ने खेत में मेहनत बिलकुल नहीं की और उसके पास अनाज की कमी हो गयी।

विचार कीजिये यह अंतिम परिणाम पुरुषार्थ पर आधारित रहा अथवा पूर्वार्ध पर रहा। पुरुषार्थी किसान ने जो महीनों तक खेत में पुरुषार्थ किया उसी का फल उसको प्राप्त हुआ है। अब वो आलसी किसान कहने लगे कि मेरी

किस्मत अच्छी नहीं है तो क्या उसका ऐसा कहना उचित होगा ? इस उदाहरण से एक बात आपको समझ में आ गयी होगी कि पूर्वार्ध (किस्मत) पुरुषार्थ (मेहनत) से ही बनते हैं अर्थात् किस्मत महनत करने से ही बनती है।

ऐसे ही आज जो आप पुरुषार्थ करेंगे वह कल का पूर्वार्ध होगा। जिन लोगों ने पहले पुरुषार्थ किया था आज अपने पूर्वार्ध (किस्मत) के कारण अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे हैं किन्तु यदि अब पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो निश्चित रूप से उनका भविष्य अच्छा नहीं होगा।
सज्जनों बुद्धिपूर्वक विचार करोगे तो समझ में आएगा कि पुरुषार्थ ही बड़ा है क्योंकि यह वर्तमान जीवन में भी हमको आगे बढ़ाता है और स्वर्णिम भविष्य को भी तैयार करता है।

विचार करें कि एक कुत्ता अमेरिका के राष्ट्रपति का है और एक कुत्ता बीमार होकर सड़ी हुई गलियों में घूम रहा है। एक बच्चा दरिद्र के घर तो दूसरा धनवान के घर पैदा हो जाता है। ऐसा नहीं है कि दरिद्र के घर पैदा हुए बच्चे के साथ अन्याय हुआ है बल्कि उनके पहले किये अच्छे-बुरे कर्मों के आधार पर (पुरुषार्थ के आधार पर) ही उनको वर्तमान जन्म मिला है।

अब सभी मनुष्यों को अच्छे-बुरे कर्म करने की पूरी स्वतंत्रता है तो वर्तमान जीवन में वे जैसे कर्म करेंगे उनका वर्तमान और भावी जीवन वैसा ही हो जायेगा। कल्पना कीजिये यदि राजा का बेटा अच्छे कर्म नहीं करता, बड़ा अन्यायकारी है और आलसी भी तो निश्चित रूप से वह वर्तमान जीवन में भी दूसरे राजाओं द्वारा दुःख प्राप्त करेगा और उसका भविष्य तो निश्चित रूप से

अंधकारमय ही रहेगा। दूसरी ओर दरिद्र का पुत्र दिन रात अच्छे कर्म करता है और राजा बनने के लिए पुरुषार्थ करता है तो उसका वर्तमान भी अच्छा होगा और भविष्य भी उज्जवल बन जायेगा। अतः सदैव शुभ कर्मों में ही बुद्धि को लगाकर आगे बढ़ते रहें। पुरुषार्थ ही सुख प्राप्ति का एकमात्र साधन है। यह बात शास्त्र द्वारा तो सिद्ध हो ही रही है बल्कि बुद्धि द्वारा भी तर्कयुक्त है। इसके अतिरिक्त अन्य पाखंड आदि में घूमकर आप अपना अमूल्य धन और समय व्यर्थ में ही नष्ट करते हैं।
अब कुछ लोगों को अपने बुरे पूर्वार्ध के कारण जीवन में अन्यों की अपेक्षा बहुत अधिक कष्ट झेलने पड़ते हैं। उस समय उनके मन में प्रश्न उठता है कि कोई तो उपाय होगा इन कष्टों से बाहर निकलने का।

छठा प्रश्न - दुःखों से छूटने का क्या उपाय है ?

उत्तर - जिसने शरीर धारण किया है उसको दुःख न हो ऐसा संभव ही नहीं है। चाहे कोई राजा हो या रंक, धनी हो अथवा निर्धन, विद्वान हो अथवा मूर्ख, दुःख तो शरीर धारण करते ही साथ लग लेता है। यदि दुःख नहीं मिलना होता तो मोक्ष ही प्राप्त हो जाता किन्तु हमें शरीर प्राप्त हुआ है। अब मोक्ष कब, कैसे और किसको प्राप्त होता है वह मैंने अलग विषय में लिख दिया है।

सज्जनों एक क्षण के लिए विचार तो करो कि यदि भूख न लगी हो तो क्या भोजन करने का आनंद है ? हमें कोई भी अवसर सुखकारक तभी लगा जब हमने उसी अवसर पर दुःख का अनुभव पहले कभी किया होता है। अतः सुख है क्योंकि आपने दुःख का अनुभव किया है। यदि दुःख का अनुभव ही नहीं होगा तो सुख किसे कहते है यह प्रश्न ही नहीं उठेगा। अतः जब भी कोई

दुःख आयें तो डरना नहीं है। यह मनुष्य शरीर डर डर कर जीने के लिए नहीं बल्कि स्वतंत्र होकर अच्छे अच्छे कार्य करते हुए उन्नति प्राप्त करने के लिए मिला है। दुःख आते ही सबसे पहले मनुष्य घबरा जाता है। उस डर का लाभ कुछ स्वार्थी उठाकर अधर्म को धर्म कहकर आपको ठगना प्रारंभ कर देते हैं। संसार में नये नये गुरुओं और धर्मों की स्थापना और प्रचलन का मूल कारण यही है। बीमारी के समय तो सब डाक्टर बन जाते हैं और उपचार बताने लग जाते हैं। यदि आपको पता है कि कर्म फल के अनुसार आपको सुख व दुःख होते हैं तो आपका डर निकल जायेगा। ऐसा भी नहीं है कि आपने बहुत बुरे कर्म किये हैं इसलिए अन्यों से अधिक दुःख आपको मिल रहे हैं। आपको मनुष्य शरीर मिला है यही दर्शाता है कि आपने अच्छे कर्म भी किये थे। अतः दुःख से डरना नहीं है बल्कि उसका सामना सहज भाव से करना है। जिस दिन आप सुख-दुःख में एक समान रहने वाले हो जायेंगे तो आपको दुःख से लड़ने की एक अद्भुत शक्ति प्राप्त हो जाएगी। आप अन्य लोगों का मार्गदर्शन करने लग जायेंगे। कोई भी छोटा मोटा दुःख होते ही पीर-मजार, दरगाह आदि पर जाने की अपेक्षा ईश्वर का स्मरण स्वयं करने लग जाओ आपको असीम आनंद प्राप्त हो जायेगा। **ओ३म् का मानसिक जप अत्यंत ही प्रभावशाली है।**

वैसे तो कर्म फल व्यवस्था बहुत विस्तृत और गूढ़ है किन्तु सामान्य व्यक्ति कुछ मुख्य बातों को भी धारण कर ले तो जीवन में सुख वर्षा ही होगी। मैं सदैव कहता हूँ कि दुःख अच्छे हैं। क्यों अच्छे है ? क्योंकि पहले किये हुए कर्मों का फल मिल रहा है, फिर बाद में नहीं मिलेगा क्योंकि अभी मिल रहा है। आप जानते ही हैं कि किये हुए कर्म का फल तो मिलना ही है तो कल क्यों आज क्यों नहीं। अतः दुःख से भागो नहीं बल्कि दुःख को आमंत्रित

करो। ये तो अच्छी बात है कि हमारे गलत कर्मों का फल निकल रहा है। बल्कि आपको तो चाहिए कि जल्दी जल्दी दुःख आवें और जल्दी जल्दी निकले। ये दुःख इसलिए भी अच्छे हैं क्योंकि ये हमें स्मरण करवाते रहते हैं कि इस जीवन में बुरे कर्म करने से बचना है।

वैसे तो दुःख तीन प्रकार के होते हैं किन्तु यहाँ मैंने पूर्वजन्म के कर्म फल का ही उल्लेख किया है। इसका ये अर्थ नहीं है कि कोई व्यक्ति चोरी करके दुःख आमंत्रित करने लग जायें तो वह अच्छा है अथवा दिन-रात व्याभिचार करके अपने शरीर का नाश करके दुःख आमंत्रित करने लग जायें। इसे मूर्खता की श्रेणी में समझा जायेगा।

ऐसा नहीं है कि आपको प्राप्त हो रहे सभी दुःखों का कारण आपके पहले किये हुए कर्म ही हैं। हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति के बुरे कर्म के कारण आपको दुःख प्राप्त हो जाएं। एक उदाहरण से समझते हैं। यदि आप प्रातः काल सड़क के किनारे भ्रमण कर रहें हैं। एक शराब पीकर गाड़ी चलाने वाला आकर आपको टक्कर मार देवें तो यह आवश्यक नहीं की यह आपके बुरे कर्म का फल है। कर्म करने की स्वतंत्रता के कारण उस शराबी ने एक नया बुरा कर्म कर दिया है। किन्तु उस शराबी के बुरे कर्म के कारण दुःख आपको हुआ। अतः न्यायकारी ईश्वर आपकी जो हानि हुई है उसकी क्षतिपूर्ति (भरपाई) आगे कर देगा और उस शराबी को उसका बुरा फल मिल जायेगा।

संसार का कोई भी प्राणी यह नहीं कह सकता है कि मुझे अधिक दुःख क्यों है और उसे अधिक सुख क्यों है ? यह सब हमारी ही महनत का परिणाम है।

5.3 मोक्ष प्राप्ति कब व कैसे

आपने देखा होगा कि संसार में संपत्ति जैसे धन, बैंक बैलेंस, आभूषण, भूमि आदि सबसे बड़ी वस्तु के रूप में स्थापित हो गई है। आज समाज में संपत्ति का स्थान इतना ऊँचा हो गया है कि माँ-पिता भी बहुत छोटे दिखने लगे हैं। वृद्धावस्था आश्रमों का जमाना आ गया है। संपत्ति के लिए बड़े बड़े झगड़े होते हैं। बड़े बड़े युद्ध पहले भी हुए हैं, अब भी हो रहे हैं और भविष्य में भी होंगे। अनेकों बुराइयाँ तो संपत्ति कमाते हुए या संपत्ति की रक्षा करने के कारण ही आ जाती हैं।

महर्षि दयानंद ने इससे भिन्न छः प्रकार की असली संपत्ति के विषय में लिखा है[225] जिसको धारण करके मनुष्य स्थाई सुख की ओर बढ़ जाता है। मोक्ष प्राप्ति (स्थाई सुख) के चार साधन हैं।

1. **विवेक** - सत्य असत्य, धर्म अधर्म, कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का निश्चय करके इनको एक दूसरे से अलग जान लेना ही विवेक है।

2. **वैराग्य** - जो विवेक से सत्य असत्य आदि को जाना है उसमें से सत्य का ही ग्रहण करना तथा असत्य का त्याग कर देना। पृथ्वी से लेकर परमेश्वर तक के पदार्थों के गुण, कर्म तथा स्वभाव को जानकार केवल ईश्वर की ही उपासना में तत्पर रहना तथा ईश्वर के विरुद्ध कभी न चलना ही वैराग्य है।

[225] महर्षि दयानन्द सरस्वती, *'सत्यार्थ प्रकाश'*, नौवां समुल्लास।

3. **षट्क संपत्ति** अर्थात 6 प्रकार की संपत्ति बताई गई है।

- **शम -** हम दैनिक यज्ञ में आचमन करते हुए बोलते हैं कि ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा अर्थात् पवित्र होकर, सत्य आचरण करके ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न उठता है कि हम पवित्र कैसे होंवे ? महर्षि दयानंद लिखते हैं कि **"अन्तः करण से हमें धर्माचरण करना है, पापाचरण का त्याग करना है।"** यही शम नामक पहली संपत्ति है।
- **दम -** अर्थात् अपनी इन्द्रियों को बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों में ही लगाना दम कहाता है। जिस संपत्ति के पीछे संसार भाग रहा है वह असली संपत्ति नहीं बल्कि यह शास्त्र में बताई हुई संपत्ति ही एकत्र करनी चाहिए।
- **उपरति -** दुष्ट कर्म (गलत कार्य) करने वाले लोगों से सदा दूर रहना अर्थात् उनका संग कभी न करना ही उपरति है।
- **तितिक्षा -** चाहे निंदा, स्तुति, हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष शोक को छोड़कर ईश्वर प्राप्ति के साधनों में ही लगे रहना तितिक्षा कहाती है।
- **श्रद्धा -** वेदादि सत्य शास्त्रों के ज्ञानी आप्त सत्य आचरण करने वाले तथा सत्य उपदेश करने वाले महाशयों के वचनों पर विश्वास करना ही श्रद्धा है।
- **समर्पण -** चित्त की एकाग्रता अर्थात् चंचलता अनावश्यक विनोद (हंसी मजाक) आदि से दूर रहें।

4. **मुमुक्षुत्व -** जैसे एक प्यासे को बिना जल के कुछ भी अच्छा नहीं लगता है वैसे ही विना मुक्ति के किसी में भी प्रीति न होना ही मुमुक्षुत्व कहलाता है।

इसको एक साथ समझना चाहो तो "जब भी शम और दम को धारण करें तब श्रद्धापूर्वक पालन करें। चाहे समाज आगे या पीछे से हमारी कितनी भी बुराई करे उस पर ध्यान नहीं देवें। अपने श्रेष्ठ पूर्वजों की बातों को पूर्ण श्रद्धा से शब्द प्रमाण मानकर मन की एकाग्रता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। धर्माचरण से युक्त होकर सदैव पापाचरण से दूर रहकर मुक्ति में ही मन, बुद्धि तथा आत्मा को लगाने से मुक्ति की सिद्धि होती है।"

आजकल लोगों के मन की एकाग्रता थोड़े समय भी नहीं बन पाती है। बहुत से लोग धार्मिक कार्यक्रमों में कुछ अच्छा सीखने जाते हैं अथवा ईश्वर का ध्यान लगाने के लिए बैठे होते हैं किन्तु ध्यान घर के कार्यों, लोगों तथा बातों में लगा लेते हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मोक्ष प्राप्त करने के चार साधनों में से तीसरा साधन यही बताया है इसके लिए हमें किसी संपति के चक्कर में नहीं पड़ना है। यही असली संपत्ति है जिसको एकत्र करने के लिए ही सभी मनुष्यों को पुरुषार्थ करना चाहिए। इन छः असली संपत्तियों को धारण करते ही हमारा अन्तःकरण शुद्ध व सुन्दर हो जायेगा।

आपने देखा होगा संसार की प्रत्येक वस्तु सुन्दरता की ओर आकर्षित होती है। हम पहाड़ों पर, झरनों के स्थानों पर जाते हैं। उनकी सुन्दरता निहारते, चित्र लेते हैं। हम ऐसा क्यों करते है ? क्योंकि ऐसा करने से मन प्रसन्न होता है। ऐसा करने से पता चलता है कि परमात्मा ने कितना सुन्दर संसार बनाया है। पुरुष स्त्री की ओर तथा स्त्री पुरुष की ओर आकर्षित होती है। ये तो हुई बाहरी सुन्दरता की बात। अब यदि मनुष्य केवल इस बाहरी सुन्दरता में ही रूचि रखेगा तो निश्चित रूप से स्वयं को तथा संसार को किसी न किसी रूप में हानि पहुंचाएगा।

यदि मनुष्य उपरोक्त छः संपत्तियों को धारण करें तो उनकी आंतरिक सुंदरता बढ़ जाएगी। इन संपत्तियों को धारण करते ही भले आप करोड़ों रुपयें अर्जित करें। भले भौतिक धन भी आपके पास हो किन्तु इस अध्यात्म ज्ञान का अभाव नहीं होना चाहिए अन्यथा आपकी वह भौतिक संपत्ति आपका ही विनाश करने में लगी रहेगी।

इस विषय पर मुंशी प्रेमचंद जी की एक कहानी बहुत ही सुन्दर प्रकाश डालती है। एक बार एक शिकारी के पास एक तोता होता है। शिकारी तोते को बेचने बाजार में जाता है किन्तु उसे तोते का सही भाव नहीं मिलता। तब किसी ने बताया कि राजा के पास ले जाओ वे इसे खरीद लेंगे। शिकारी तोते को लेकर राजा के पास चला गया। राजा को तोता पसंद आने के कारण तोते को खरीद लिया गया। अब तोता तो बड़ा अच्छा था परन्तु जिस पिंजरे में रखा गया था वह पिंजरा बहुत पुराना था। राजा ने एक बहुत ही सुन्दर पिंजरा बनवाने के लिए अच्छे अच्छे कारीगर बुलवाएं। सबका ध्यान सुन्दर पिंजरा बनाने पर ही था। अनेकों पिंजरे बनाएं गये किन्तु राजा को कोई

पसंद नहीं आया। फिर अंत में एक पिंजरा राजा को अच्छा लगा। इस पिंजरे के कार्य में कई दिन लग गये। तब तक तोते पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। सभी का ध्यान सुन्दर पिंजरे (बाहरी आवरण) पर ही लगा रहा। जब कई दिनों बाद नए पिंजरे के साथ तोते के पास गये तो वह मरा हुआ था क्योंकि उसको न किसी ने दाना दिया और न ही पानी।

यह तोते की कहानी बड़ी सरलता से हमें आंतरिक सुन्दरता की आवश्यकता समझा रही है। मनुष्य को भी आंतरिक सुन्दरता ही धारण करनी चाहिए जो ऊपर बताए गये मोक्ष के साधनों से प्राप्त होती है।

पंडित लेखराम वैदिक धर्म के बड़े प्रचारकों में से एक थे। इसी कारण उन्हीं से धर्म की शिक्षा लेने के बहाने एक मुस्लिम ने चाकुओं से उनके प्राणों का अंत भी कर दिया था। आंतरिक सुन्दरता को समझने के लिए उनके जीवन की एक घटना बड़ी शिक्षादायक है। पंडित लेखराम जी की एक फोटो बड़ी प्रचलित है जिसमें उनके दाढ़ी है और सर पर पगड़ी है। उनकी एक और फोटो है जिसमें पगड़ी तो है परन्तु दाढ़ी नहीं है। आपको उसी समय का एक किस्सा सुनाता हूँ।

एक बार लेखराम जी प्रचार के लिए स्वामी श्रद्धानंद जी के पास गए हुए थे। उस समय प्रचार के लिए परिस्थिति इतनी अनुकूल नहीं होती थी तो वे 2 दिन तक नहा नहीं पाए थे। कपड़े भी मलीन हो गये थे तो वो स्वामी श्रद्धानंद के पास गये और उनसे साफ वस्त्र मांगे और नहाने चले गये। नहाकर उन्होंने नीचे से साफ़ वस्त्र पहन लिए और ऊपर से वही मलीन वस्त्र पहन लिए। स्वामी श्रद्धानंद ने कहा कि “तुम रहे तो वही के वही।” पंडित

जी गाँव के व्यक्ति थे इसलिए स्वामी जी ने ऐसा कहा था। तब लेखराम जी का अद्भुत दर्शन दिखाई दिया और उन्होंने कहा कि मैं बाहरी आवरण पर ध्यान नहीं देता हूँ। शरीर के साथ साफ़ कपड़ा लगा हुआ है अतः मैं बीमार नहीं होऊंगा। ऊपर से भले ही कपड़ा मैला हो।

इसी प्रकार का एक उदाहरण लाल बहादुर शास्त्री जी का भी आता है जब उनको विदेशी यात्रा पर जाना था। उनका कोट थोड़ा सा फटा हुआ था। साथ वालों ने कहा कि आप देश के प्रधानमंत्री हैं अतः आपके लिए एक नया अच्छा कोट सिलायेंगे। तब उन्होंने कहा कि देश का पैसा मैं अपने निजी स्वार्थ के लिए खर्च नहीं करूँगा। जहाँ से कोट थोड़ा फटा है वहां पर ऐसा ही एक कपड़ा लगा दो यह ठीक हो जायेगा।

इसका ये अर्थ नहीं है कि मैं आपको फटे हुए अथवा मलीन कपड़े धारण करने और भौतिक धन को फैंक देने की बात कह रहा हूँ। वह सब देश, काल और परिस्थिति पर निर्भर करता है कि आप कैसे रहते हैं। यदि आवश्यकता है तो आप अपना स्वयं का हवाई जहाज प्रयोग में ला सकते हैं किन्तु यदि आवश्यकता नहीं है तो 100 रूपये भी व्यय (खर्च) नहीं करने चाहिए भले ही वो धन आपने पुरुषार्थ करके अर्जित किया हो। कुछ लोग शराब की पार्टियों आदि स्थानों पर धन लुटाते हैं। जब कोई उनको समझाता है तो कहते हैं कि किसी के बाप का धन नहीं है मैंने कमाया है। विचार करिए यदि आपने कमाया है तो क्या आप उससे बम बनाकर देश में लोगों को मार सकते है ? भले ही धन आपने पुरुषार्थ से अर्जित किया हो किन्तु उसका दुरूपयोग करना विनाशकारी है।

एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि मोक्ष कैसे प्राप्त हो ? धार्मिक लोगों के मन में मोक्ष का विषय एक रहस्य बना रहता है। धर्मग्रंथों के ज्ञान के अभाव में कोई भी मोक्ष के नाम पर भोले लोगों को मूर्ख बना देता है। मोक्ष के नाम पर कितने ही दुष्ट लोग महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते हैं तथा कितने ही लोगों का लाखों रुपया हर (ठग) लेते हैं। कुछ ही समय पहले देशद्रोह व अपने आश्रम में 5 महिलाओं की हत्या का दोषी रामपाल पैसों में मोक्ष बांटता था। पांच लाख में छोटा मोक्ष और दश लाख में बड़ा मोक्ष। कैसी विपरीत हवा बह रही है कि जो स्वयं सदियों तक नरक[226] में रहने के कार्य कर रहे हैं अब वो मोक्ष का व्यापार करने लगे हैं। कुछ मंदबुद्धि लोग मोक्ष के नाम पर हो रहे व्यापार को देखकर कहने लग जाते हैं कि ये मोक्ष ही इन समस्याओं की जड़ है इसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। विचार तो करिये कि संसार में एक तो मोक्ष की मान्यता है जो दूसरों का भला करके प्राप्त किया जाता है और दूसरा जन्नत है जो दूसरों की जान लेकर प्राप्त होने की मान्यता पर आधारित है। कौन सी मान्यता अच्छी व मानवीय गुणों से भरी हुई है ? अब यदि किसी की आंख में कुछ कचरा या मिट्टी आदि चला गया और उसमें पीड़ा हो रही हो तो क्या अब उस आंख को ही फोड़ देना चाहिए ? यह मूर्खता की बात ही कही जा सकती है। पशु उत्पन्न होते हैं, बड़े होते हैं, खाते-पीते हैं, बच्चे पैदा करते हैं, सोते हैं, श्वास लेते हैं आदि। मनुष्य भी यदि जीवन में धन अर्जित करके, विवाह करके व बच्चे पैदा करके मर रहा है तो पशु और मनुष्य में क्या कोई भेद रह जाता है ?

---

[226] अब आप जान गये होंगे कि स्वर्ग और नरक यहीं पृथ्वी पर ही है और कर्मों का अच्छा बुरा फल यहीं भोगना पड़ता है। मोक्ष में जीवात्माएं सर्वव्यापक ईश्वर के आनंद में रहती हैं। अतः कोई भी आसमानी स्वर्ग, नरक, जन्नत, हूरें आदि नहीं है।

विचार करिये कि मनुष्य को यह बुद्धि क्यों मिली है ? निश्चित रूप से यह बुद्धि एक महान उद्देश्य के लिए मिली है अर्थात् सृष्टि की रचना करने वाले को जानने के लिए तथा उसके समीप (उपासना) जाने के लिए ही मिली है। यह बुद्धि ही मनुष्य जीवन के उद्देश्य को जनाती है और उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मार्ग खोजने में सहायता करती है । अतः इस बुद्धि का सदैव सदुपयोग करते हुए जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने में ही इसे लगाना चाहिए।

योगशास्त्र में महर्षि पतंजलि ने एक सूत्र दिया है जिसका पालन करके परम आनंद अर्थात् मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

अविद्याऽस्मिता रागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः ।।

- साधनपाद, सूत्र 3

1. **अविद्या -** सदा न रहने वाले शरीर को सदा रहने वाला जानना और सदा रहने वाले ईश्वर में अनित्य बुद्धि, मल-मूत्रादी से भरे शरीर को ही शुद्ध व पवित्र जानना और सत्यविद्या, धर्म, सत्संग आदि में अपवित्र बुद्धि, काम-क्रोधादि दुःख देने वाले व्यवहारों (कार्यों) में सुख मिलने की आशा और शम, दम, संतोष आदि सुखस्वरुप

व्यवहारों में दुःख बुद्धि करना एवं जड़ पदार्थों में चेतन भाव[227] और चेतन पदार्थों में जड़भाव रखना[228] - यह चार प्रकार की अविद्या है।

2. **अस्मिता** - आत्मा (दृष्टा) और बुद्धि अथवा चित्त (दर्शनशक्ति) इन दोनों को एक ही मानने का नाम अस्मिता है।[229]
3. **राग** - सुख भोगने के उपरांत चित्त में उस सुख के पुनः भोगने की अभिलाषा का नाम राग है।[230]
4. **द्वेष** - दुःख भोगने के पश्चात् चित्त में जो घृणा भाव (संस्कार) रह जाता है वही द्वेष है।[231]
5. **अभिनिवेश** - मृत्यु दुःख से भय का नाम अभिनिवेश है।

जब तक इन पांच कलेशों से मनुष्य अपने को नहीं छुड़ाता तब तक मोक्ष नहीं प्राप्त होता है। इन अविद्या आदि पांच कलेशों के विद्यमान (उपस्थित) रहने तक उसका फल (जाति - पशु, पक्षी, मनुष्य आदि और आयु - जीवनकाल तथा भोग) से सुख-दुःख का चक्र सदा चलता रहता है।[232] इनको छुड़ाने का उपाय क्रियायोग है अर्थात् तप (कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों करते रहना), स्वाध्याय (सत्य शास्त्रों का निरंतर अध्ययन) और ईश्वरप्रणिधान (ईश्वर की भक्ति विशेष में आत्मा को लगायें रखना)। इन पांचों

---

[227] मूर्ति, नदी, नालों, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों में भगवान ढूँढना आदि।

[228] मन आदि पदार्थों को चेतन समझना। मन जड़ पदार्थ है अतः उसको जैसे चलाना चाहोगे वो ऐसे ही चलेगा, वह अपने आप नहीं दौड़ता है बल्कि उसको दौड़ाने वाले आप स्वयं है।

[229] आत्मा तथा बुद्धि भिन्न भिन्न है। आत्मा ही बुद्धि के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है अथवा अज्ञानी रहना चाहता है। बुद्धि स्वयं कुछ नहीं करती है बल्कि आत्मा ही उससे सब कुछ करवाती है।

[230] किसी पदार्थ (धन, स्त्री, बच्चे, गाड़ी आदि) से सुख मिलने के बाद बार बार उनसे सुख भोगने की इच्छा ही राग है।

[231] किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि से दुःख प्राप्ति के बाद उनसे द्वेष (घृणा) रखना।

[232] योगदर्शन साधनपादः सूत्र 13।

कलेशों को क्रियायोग निर्बीज समाधी द्वारा समाप्त किया जा सकता है ।[233] यही एक उपाय है मोक्ष के परमानन्द को भोगने का। इसके अतिरिक्त कोई आपको सरल मार्ग का झांसा देता है तो निश्चित रूप से वह आपको ठग रहा है।

प्रश्न - मरते समय कितना दर्द होता है ? मृत्यु का भय कैसे समाप्त हो सकता है ताकि अभिनिवेश नामक क्लेश से दूर हो सकें।

उत्तर - एक बार मेरे मित्र अमित आर्यावर्त ने यह प्रश्न किया था कि मरते समय कितनी पीड़ा होती है ? मैं समझता हूँ अधिकांश लोगों को इस प्रश्न का उत्तर जानने की जिज्ञासा होती है क्योंकि एक दिन सभी का अंत होना है। इस प्रश्न का सीधा उत्तर संभव नहीं है। मृत्यु समय में कष्ट कितना होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि मृत्यु का कारण क्या है। जैसे एक तो स्वाभाविक मृत्यु है जो वृद्धावस्था में होती है और दूसरी बालक अथवा युवावस्था में किसी बीमारी, हथियार, सांप, शेर आदि द्वारा अथवा वाहन आदि से टक्कर में हो जायें। ये दोनों अलग अलग अवस्थाएँ है।

पहले स्वाभाविक विषय में बात करते हैं। जैसे किसी पेड़ पर कोई पत्ता पक जाता है, पीला हो जाता है तो हवा का थोड़ा भी झोंका उस पत्ते को गिरा देता है। ऐसे ही कोई फल है, वो पक जाता है तो आपका हाथ जैसे ही उस फल को स्पर्श करता है वो फल टूट कर नीचे गिर जाता है। अतः जो स्वाभाविक मृत्यु है अर्थात् शतायु (सौ वर्ष) या उसके आस पास जब हम रहते हैं, बुढ़े हो जाते हैं। वहां पर यदि हम मृत्यु को प्राप्त होते हैं अर्थात्

[233] योगदर्शन साधनपादः सूत्र 1, 2।

स्वाभाविक मृत्यु, तो उसमें कष्ट अत्यंत न्यून होता है। हमें वेदना या दुःख अधिक नहीं होता है। स्वाभाविक मृत्यु में दुःख या वेदना अत्यंत न्यून होती है क्योंकि शरीर के जो अंग प्रत्यंग हैं उनमें वृद्धावस्था के समय शक्ति बहुत कम रह जाती है। जब उनमें शक्ति नहीं है तो वेदना कैसे होगी। इस अवस्था में मस्तिष्क का सम्बन्ध शरीर से सरलता पूर्वक छूट जाता है। आप सब जानते ही हैं कि मस्तिष्क का सम्बन्ध शरीर के जिस हिस्से से छूट जायें उस हिस्से में अनुभूति (महसूस होना) समाप्त हो जाती है। लकवा एक ऐसा ही रोग है उसमें शरीर के किसी हिस्से का मस्तिष्क के साथ सम्बन्ध छूट जाता है। फिर उस हिस्से में दर्द आदि की अनुभूति समाप्त हो जाती है। अतः स्वाभाविक मृत्यु के समय पर हमें कष्ट नहीं होता। कुछ लोगों ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया होगा। जब एक वृद्ध व्यक्ति मरता है तो उसकी एक एक इन्द्रिय का सम्बन्ध मस्तिष्क से छूटना प्रारंभ होता है। उसको आँखों से दिखना कम होता जायेगा, सुनना समाप्त हो जायेगा धीरे धीरे शरीर की जीवनीय शक्ति पूर्णतः समाप्त हो जाती है। अतः स्वाभाविक मृत्यु ही उत्तम है। इसीलिए हमारे ऋषि महर्षियों ने परंपरा बनाई थी कि व्यायाम करना है, सौ वर्ष तक जीवित रहना है, यज्ञ करना है, ध्यान-उपासना, प्राणायाम आदि करने हैं। इस प्रकार से हम लंबे काल तक जीवित रहेंगे और जब स्वाभाविक मृत्यु आएगी तब हमें दुःख नहीं होगा। वेदना कष्ट, जो भी संसार में होता है वो सब नहीं होगा।

अब उस मृत्यु पर आते हैं जो स्वाभाविक मृत्यु नहीं है। किसी सड़क हादसे, सांप के काटने, शेर आदि पशुओं से, किसी हथियार से अथवा किसी भी प्रकार से कोई अन्य बीमारी आदि के द्वारा मृत्यु में विलंभ होता है तो अवश्य ही कष्ट होता है, वेदना होती है, दुःख होता है। इस प्रकार के दुःख या तो

हमारे गलत कर्मों के कारण प्राप्त होते हैं अथवा किसी अन्य मनुष्य ने एक नया गलत कर्म करके हमें पूर्णायु से पूर्व ही मार दिया अथवा अन्य दुःख हमें पहुँचाया है तो उसकी क्षतिपूर्ति ईश्वर अवश्य करेगा। हमारा जो नुकसान हुआ है ईश्वर उनकी भरपाई करके हमारे साथ न्याय करेगा।

अस्तु, इस प्रकार की अस्वभावित मृत्यु में पीड़ा अर्थात् दुःख स्वाभाविक मृत्यु की अपेक्षा अधिक होगा। किन्तु यहाँ भी ईश्वर ने हम पर दया की है। जैसे ही हमारे शरीर की पीड़ा अत्यधिक बढ़कर एक सीमा को पार कर जाती है तो मस्तिष्क तुरंत ही हमें मुर्छित कर देता है। शरीर के इन गुणों से जीवात्मा समय समय पर लाभ उठाती रहती है। यह ऐसे ही है जैसे क्लोरोफोम सुंघाकर डाक्टर हमें बेसुध करके ऑपरेशन करता है। ईश्वर ने मस्तिष्क का पूरे शरीर के साथ सम्बंध ही ऐसा बनाया है। शरीर की रचना ही ऐसी की है। अतः कभी भी मृत्यु से डरना नहीं है, चाहे वो स्वाभाविक हो अथवा अस्वाभाविक हो। यदि वेदना थोड़ी अधिक हो तो आप चिंता मत करिये। इसीलिए ऋषि महर्षियों ने आर्षग्रन्थों में सदैव बताया है कि मृत्यु से भय कैसा ? मृत्यु से भय नहीं होना चाहिए। मृत्यु सब को आनी है तो इसे कभी भी किसी प्रकार का भय निश्चित रूप से नहीं होना चाहिए। यदि पीड़ा भी होगी तो प्रसन्नतापूर्वक सहन करने वाला ही श्रेष्ठ है।

किसी भी प्रकार की पीड़ा के समय दो प्रकार के भाव बनाकर रखें। पहला कि अच्छा है हमारे पिछले बुरे कर्मों के फल हमें अब मिल रहें है आगे नहीं मिलेंगे। दूसरा भाव ये रखें कि यदि यह दुःख हमारे कर्मों के कारण नहीं किन्तु किसी अन्य ने हमें दिया है तो ईश्वर हमारे दुःख की क्षतिपूर्ति (हानि की भरपाई) अवश्य ही करेगा चाहे वह इस जीवन में हो अथवा अगले जीवन

में हो। स्मरण रखें कि जीवात्मा को ना कोई मार सकता है, ना जला सकता है, ना काट सकता है, ना डुबो सकता है, ना बोतल में बंद कर सकता है, इसका कुछ नहीं कर सकता है।
श्रीकृष्ण जी यही कहते हैं कि -

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और वायु सूखा नहीं सकती है। मृत्यु तो केवल शरीर को आती है, आत्मा अजर, अमर, अभय, नित्य है।

वहीं अथर्वेद में आता है कि **मा बिभेर्न मरिष्यसि** अर्थात् डर मत, तू मरेगा नहीं। इसीलिए डर और भय ये आपको नीचे ही गिराएंगे। मोक्ष विषय में आपने पांच क्लेशों के विषय में पढ़ा होगा। पांचवा क्लेश है अभिनिवेश अर्थात् मृत्यु से भय। मनुष्य को पांच क्लेशों के कारण ही सभी दुःख होते हैं। अतः इस अभिनिवेश नामक क्लेश से बचकर आप अनेकों दुःखों से दूर हो सकते है।

आप मृत्यु से कभी मत घबराइये। ये मानवतावादी वैदिक धर्म की शिक्षा है जो हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी, नास्तिक के लिए समान रूप से लाभकारी है। यह विषय प्रत्येक के लिए महत्वपूर्ण है। लगभग सभी का प्रश्न रहता है कि मृत्यु के समय हम कष्ट सहन कर पाएंगे अथवा नहीं।

कितना कष्ट होता होगा। अतः स्वाभाविक मृत्यु हो अथवा अस्वाभाविक मृत्यु हो कभी भी चिंता नहीं करनी है।

सज्जनों एक और मृत्यु होती है जो केवल महायोगी ही धारण कर सकते हैं। उस मृत्यु का नाम ईच्छामृत्यु है। भीष्मपितामह, योगिराज श्रीकृष्ण, महर्षि दयानंद आदि ने इस मृत्यु का वरण किया था। श्रीकृष्ण जी की मृत्यु के विषय को महाभारत के अध्याय में विस्तार से लिखेंगे। महर्षि दयानंद ने आज से लगभग 137 वर्ष पूर्व 30 अक्टूबर 1883 को अपना शरीर त्याग दिया था। मानवता के शत्रुओं ने उनको आदि शंकराचार्य की भांति अनेकों बार (लगभग 17 बार) विष दिया था। अंत में जब उनको लगा कि अब इस शरीर में जीवन को आगे बढ़ाने का सामर्थ्य नहीं रहा तो उन्होंने सेकड़ों लोगों की उपस्थिति में यह कहते हुए कि **"प्रभु! तूने अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।"** अपने पांचों प्राणों और उपप्राणों को खींच कर तथा शरीर से बाहर निकाल कर शरीर त्याग दिया था। एक महायोगी की ऐसी ईच्छामृत्यु देखकर वहां खड़ा एक नवयुवक गुरुदत्त विद्यार्थी इतना प्रभावित हुआ कि लाहौर लौटते ही योगशास्त्र का अध्ययन प्रारंभ कर दिया। बाद में इन्हीं पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने महर्षि दयानंद के कार्यों को आगे बढ़ाया था। इनकी पुस्तक The Terminology Of The Vedas को ब्रिटेन की ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी की पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया था।

अतः शरीर होते हुए भी अमरता की प्राप्ति तो महान योगी आत्माएं ही कर सकती हैं। मृत्यु पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय योगी बनना ही है। किन्तु सामान्य समाज भी मृत्यु के भय से ऊपर उठ जावें इसी उद्देश्य हेतु यह लेख लिखा गया है। इस मृत्यु के भय से मनुष्य ना जानें कितने पाप

कर्म कर बैठता है। वास्तव में मृत्यु सुखकारक है। पुरे दिन चला हुआ एक पथिक जब थककर थोड़ी देर विश्राम करता है तो उसको आनंद आता है और शरीर में पुनः शक्ति का संचार हो जाता है वैसे ही मृत्यु विश्राम करने का एक पड़ाव मात्र है। उसके उपरांत पुनः एक नया, सुंदर और बलवान शरीर प्राप्त होगा।

विचार कीजिये जब दुष्ट लोग जन्नत आदि के लालच में सेकड़ों निर्दोषों को मार देते हैं तो क्या सज्जन लोग मानवता की रक्षा हेतु दुष्टों का सामना करते हुए मृत्यु का वरण नहीं कर सकते हैं ?

प्रश्न - क्या मच्छर और चूहे मारना पाप है ? कैसे निर्णय करें कि यह पाप है अथवा पुण्य है ?

उत्तर - ये विषय केवलमात्र मच्छर मारने से सम्बंधित नहीं लिख रहा हूं अपितु बारह सौ पैतीस वर्ष का भारत का इतिहास इस विषय में छिपा हुआ है। पहले हम मच्छर मारने पर आते हैं। बहुत से लोगों का यह प्रश्न रहता है। मोक्ष विषय में आप पांच क्लेशों के विषय में पढ़ चुके हैं। उन पांच क्लेशों को स्मरण रखते हुए किये गये क्रियाकलाप निश्चित रूप से पाप से दूर हटाने वाले हैं। उन पांच क्लेशों में ही एक क्लेश द्वेष भी आपने पढ़ा है। जब बात आती है किसी को मारने की, तो उत्तर यही होगा कि द्वेषपूर्वक किसी को नहीं मारना चाहिए। जैसे इस्लाम में अथवा ईसाइयत आदि में दूसरे मत के लोगों को मारने की, उनको जलाने की, तडपाने की शिक्षाएं है वे द्वेषपूर्ण है। अतः इस प्रकार द्वेष के अधीन होकर किसी भी जीव को मारना पाप है।

इसको मैं एक उदाहरण से समझाता हूं। मेरे हाथ पर मच्छर बैठा और मैंने उसको मार दिया, क्यों ? क्योंकि वो मुझे काट रहा था। वो पाप नहीं है क्योंकि अपनी रक्षा के लिए किसी प्राणी का शरीर विच्छेद करना पाप नहीं है। यदि इसको पाप कहेंगे तो अकारण निर्दोषों को सताने वाले और उनकी हत्या करने वालों को पुण्य आत्मा मानना पड़ेगा। यही वैदिक धर्म की सभी मनुष्यों को सीधी शिक्षा है कि यदि कोई अकारण आपके शरीर को हानि पहुँचाने का प्रयास करे तो आत्मरक्षा में उनके प्राण हर लेने चाहिए। वैदिक धर्म की इस शिक्षा को आज संसार के सभी देशों ने अपने संविधान में स्थान दिया है। अब मच्छर मेरे हाथ पर बैठा और मैंने उसको आत्मरक्षा में मार दिया यहाँ तक बात ठीक है। लेकिन आत्मरक्षा का बहाना लेकर किसी बिजली वाले साधन आदि (रैकेट) से सब मच्छरों को जलाते हुए घूमना अर्थात् मनोरंजन का उपाय खोजना अत्यंत पाप कर्म है। किसी जीव के शरीर को तभी समाप्त किया जा सकता है जब हमारे पास अत्यंत सशक्त कारण हो। बिना कारण अथवा छोटे-मोटे कारण में किसी जीव की हत्या अत्यंत निंदनीय कर्म कहलायेगा। इस शिक्षा को हम एक हथियार के रूप में प्रयोग में नहीं ला सकते है।

कुछ लोग गाली दे कर मारते हैं। मान लीजिये 5 मित्र बैठे हुए बात कर रहे हैं। आस पास मच्छर घूम रहे हैं। उनमें से किसी एक मित्र ने उसके ऊपर बैठे हुए मच्छर को गन्दी गाली दी और बहुत जोर से मार डाला। अब उस व्यक्ति ने आत्मरक्षा में मच्छर को मारा है किन्तु फिर भी उसने पाप कर्म किया है। आस पास बैठे मित्रों को हंसाने, दिखाने अथवा प्रभावित करने वाला उसका स्वभाव बन जायेगा। अब वो मच्छर नहीं अपितु मनुष्यों पर भी अपने उसी स्वभाव का प्रदर्शन करेगा।

दूसरा मच्छर को गाली देकर वाणी से भी पाप कर्म कर दिया। धीरे धीरे यह स्वभाव संस्कार बन जायेगा। कोई भी कर्म बार बार होता रहे तो वो संस्कार बन जाता है । इसी प्रकार कुछ लोग दूसरों को आंखें फोड़कर, हाथ-पैर काटकर, जीवित का हृदय निकाल कर आदि प्रकार से असहनीय पीड़ा देकर मारते हैं। इस प्रकार मारना अत्यंत निंदनीय और घटिया पाप कर्म है भले ही जिसको आप मार रहे हैं वो दुष्ट व्यक्ति क्यों न होवें। इस प्रकार मारने से हमारे अच्छे, सभ्य मानवीय गुण जैसे दया, करुणा, प्रेम, वात्सल्य, सेवा आदि नष्ट होने प्रारंभ हो जाते हैं। स्वार्थ के लिए दूसरे प्राणियों को मार मार कर खाना भी इसी श्रेणी में आता है। एक प्रसिद्ध उदहारण यहाँ पर दिया जा सकता है। स्वतंत्रता सेनानी नाथूराम गोडसे ने एक दूसरे स्वतंत्रता सेनानी मोहनदास करमचंद गाँधी के प्राण उनकी कुछ देश विरोधी गतिविधियों के कारण हर लिए थे। प्राण लेने से पूर्व नाथूराम गोडसे ने मोहनदास गाँधी के पैर स्पर्श करे और बिना द्वेष के दयाभाव से उनपर गोलियां चलाई थी। इसी प्रकार महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाया था कि तुमको अपने सगे-सम्बन्धियों के प्राण धर्म की रक्षा के लिए लेने हैं अपने व्यक्तिगत द्वेष अथवा वैर-विरोध के कारण नहीं। ईसाईयों के भारत से जाने के पश्चात् भारत और पाकिस्तान के बीच तीन बड़े युद्ध हुए हैं। आपने अनेकों ऐसी घटनाएँ सुनी होंगी कि पाकिस्तान के सैनिकों ने भारतीय सैनिकों की आंखें फोड़कर उनके शरीर के सेकड़ों टुकड़े करके तडपा तडपा कर मार दिया। ऐसी वीडियो (चलचित्र) आपने देखी होंगी जब पाकिस्तान के सैनिक भारतीय सैनिकों के सिर को फुटबाल बना कर खेल रहे थे। यह सत्य है कि युद्ध में सैनिक किसी भी देश का क्यों न हो उसका कर्तव्य विरोधियों के प्राण लेना ही है। पाप-पुण्य उस समय राजा और राजा को सुझाव देने वाले लोगों पर ही होता है। किन्तु जिस प्रकार क्रूरता पूर्वक

और अपमान जनक तरह से पाकिस्तानी सैनिक अधिकांश ऐसी घटनाएँ करते हैं तो वे अत्यंत पाप कर्म करते हैं। क्योंकि वह घटिया कर्म उसने स्वयं किया है। दूसरी ओर आपने देखा होगा कि भारतीय सैनिक विरोधियों को मारकर भी रीति अनुसार क्रियाकर्म आदि करते हैं। क्रूरता दिखाने से कोई बलवान नहीं हो जाता है। भारतीय सैनिक विश्व के सबसे मजबूत और निडर सैनिकों में गिने जाते हैं जबकि उनमें मानवतावादी गुण भरे होते हैं। मैं सदैव कहता हूँ कि यदि दुष्टों का संहार भी करना है तो भी दया भाव से अन्यथा एक दुष्ट मरेगा और दूसरा दुष्ट मारने वाले के रूप में जीवित हो जायेगा। कुछ लोग इसका विरोध दबी आवाज में करते रहते हैं। मेरा ये भी मत है कि भारतीय सेना में ईसाईयों का चलाया हुआ मांस और शराब बन कर देनी चाहिए। इससे कुछ आंतरिक पाप कर्म कम होंगे। इसका सबसे अच्छा उपाय है कि सेना में ध्यान-योग तथा धर्म की शिक्षा अनिवार्य की जायें ताकि किसी दुष्ट की हत्या करते समय उनको नशीले पदार्थों की आवश्यकता न पड़े।

बहुत से सैनिक मानते हैं कि किसी की जान लेना निंदनीय कर्म है इसीलिए शराब और मांसाहार करके अपने मानवीय गुणों को दूर करने का प्रयास करते हैं। यदि उनको मेरी यह धर्म की व्याख्या पढाई जावे तो उनको पता लग जायें कि किसी की जान लेना अधर्म नहीं बल्कि दुष्ट की जान द्वेष पूर्वक लेना अधर्म है। अतः दुष्ट (दुश्मन) को मारने का कार्य एक सैनिक को कभी भी निंदनीय नहीं जानना चाहिए। यदि सैनिक युद्ध में दुश्मन की जान नहीं लेगा तो दुश्मन देश जीत कर प्रजा को असहनीय दुःख देगा तथा लाखों की हत्याएं एकसाथ कर देगा। अतः सैनिक एक दुश्मन की जान लेकर अथवा लड़ते हुए अपनी जान देकर सैकड़ों निर्दोषों को बचाता है।

इसी प्रकार बहुत से डाक्टर भी अपने कार्य को अत्यंत थकाने वाला और दुःख भरा मानते हैं। बहुत से सर्जन डाक्टर नशे की लत का शिकार होते हैं क्योंकि उनको मनुष्य के शरीर की चीर-फाड़ करनी पड़ती है। मैं ऋषिकेश के एम्स अस्पताल में गया हुआ था। वहां एक डाक्टर मेरे परिचित थे। उन्होंने मुझे बताया कि डाक्टर बनने की पढ़ाई करने वाले बच्चों में से अस्सी प्रतिशत से अधिक कोई ना कोई नशा करते हैं। रात को फिर पार्टियाँ आदि चलती हैं। वो मुझे उस रात अपने पास ही रोकना चाहते थे ताकि मैं सब देख सकूँ किन्तु वहां रुकने के स्थान पर मुझे आगे देवप्रयाग के गांवों में जाने की अधिक रूचि थी।

इसी प्रकार लोग आजकल चूहों को भी बड़े ही तडपा तडपा तडपा कर मारते हैं। उनको मारने के नए नए तरीके लाये जाते हैं। कुछ लोग चूहों को पिंजरे में पकड़ कर कड़ी धूप में छोड़ देते हैं। चूहे धूप में भूख, प्यास और गर्मी से धीरे धीरे मरते हैं। कुछ लोग उनको मारने वाले ही पिंजरे ला रहे हैं। चूहों को विष खिलाकर मारना आजकल आम बात हो गयी है। सच बात ये है कि यदि घर में स्वच्छता होगी, स्थान स्थान पर खाने-पीने का समान और पहनने के वस्त्रादि नहीं पड़े होंगे तो चूहे उस घर में नहीं रहेंगे। चूहे ना आयें इसके लिए 10-15 घर मिलकर एक बिल्ली को पाल सकते हैं। जिस घर में कभी कभी बिल्ली आएगी चूहे वहां नहीं रहेंगे। यदि घर में फिर भी चूहे हैं तो उनको पकड़ कर दूर स्थानों आदि में छोड़ कर आना चाहिए। बासी भोजन कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि चूहे आदि से अथवा अन्य प्रकार से वह भोजन विष का रूप ले लेता है। इससे प्लेग जैसी महामारी फैलती है।

अतः कभी भी द्वेष पूर्ण हत्या नहीं करनी चाहिए जैसे पाकिस्तान के सैनिक यह सोचकर हत्याएं करें कि ये भारत का है तो वह पाशविक कृत्य हुआ। हाँ, कोई अपने राष्ट्र की रक्षा अर्थात् आत्मरक्षा हेतु प्राण लेता है वही क्षत्रिय कहलाता है। ये गला काट देना, उससे फुटबाल खेलना आदि मानवता के विरुद्ध है। ऐसी हत्या राष्ट्र की रक्षा के लिए नहीं अपितु द्वेष के लिए हुई। इसको यदि आप थोड़ा सा और समझना चाहते हैं तो ऐसे समझें कि जब बारह सौ पैंतीस वर्ष की गुलामी भारत के अलग अलग हिस्सों पर रही तो विदेशियों ने निर्दोष लोगों को केवल इस लिए मारा क्योंकि ये हिन्दू थे। यह सर्वविदित है कि आर्य देश ने उनपर आक्रमण नहीं किया। आर्यों (हिन्दुओं) का उनसे कोई झगड़ा नहीं था। उन आक्रान्ताओं ने यह कह कह कर कर मारा कि तुम मूर्तिपूजक हो, तुम मुशरिक हो, तुम हिन्दू हो, तुम काफिर हो, तुम नीच हो। इसको कहते हैं द्वेषपूर्वक मारना। मुस्लिम आक्रान्ता केवल कुरान का अनुसरण करके निर्दोषों की हत्याएं करते हैं। सिद्ध हो रहा है कि इस्लाम कोई मनुष्यों का धर्म नहीं है बल्कि ये मनावता को समाप्त करने के लिए एक सेना मात्र है। ऐसे ही मुस्लिमों के बाद जब इसाई आये तब उन्होंने भारतीयों को इसलिए मारा कि ये भारतवाले हैं और गुलाम हैं।

यह विषय मच्छर अथवा चूहे तक सीमित नहीं है। इससे बहुत बड़ी शिक्षा प्राप्त होती है। वेद आज्ञा देता है कि **दस्यूनव धूनुष्व** (अथर्व 19/46/2) अर्थात् **"जो दस्यु (दुष्ट) हैं, जो राक्षस हैं, दुराचारी व्याभिचारी हैं, बलात्कारी, डाकू-लूटेरे हैं उनको धुन डालों।"** यजुर्वेद में पुनः कहा गया है कि **प्रमृणीहि शत्रून्** अर्थात् शत्रुओं को मूलसहित समाप्त को दो। अतः सभी मानवतावादी लोगों को कायर और शक्तिहीन मनुष्य की भांति दुष्टों से डरकर नहीं जीवित रहना चाहिए। यदि कोई आपकी, आपके परिवार,

समाज और राष्ट्र की शांति भंग करके अत्याचार कर रहा है तो उसके विरुद्ध स्वर बुलंद करना चाहिए। थोड़े से दुष्ट लोग एक होकर लाखों-करोड़ों को लूट लेते हैं। बुद्धिमत्ता इसी में है कि सज्जन लोग भी मिलकर अपनी रक्षा स्वयं करें।

प्रश्न - संसार में पाप बढ़ रहा है तो भी मनुष्यों की जनसंख्या क्यों बढ़ रही है ? कर्मफल व्यवस्था में तो पाप करने वालों को मनुष्य शरीर नहीं मिलना चाहिए फिर कैसे इतने मनुष्य पैदा हो रहे हैं ?

उत्तर - मुस्लिमों में जो कुरान पर और हजरत मुहम्मद पर इमान ले आएगा उसको जन्नत नसीब होती है। ईसाईयों में जो यीशु मसीह की शरण में चला जायेगा उसके सब पाप क्षमा हो जायेंगे और उसको स्वर्ग मिलेगा। नास्तिक लोग अच्छा बुरा कुछ मानते ही नहीं और ना ही उनके अनुसार अच्छे बुरे कर्मों का कोई फल मिलता है, इसलिए ताकत बढ़ाओ और कमजोरों पर आजमाओ, के सिद्धांत को नास्तिक मानते हैं। इन तीनों विचारधाराओं के कारण संसार में करोड़ों की हत्याएं हो चुकी हैं और करोड़ों अभी अपनी मौत की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बाकि संसार में अनेकों छोटे मोटे मत-पंथ इन्हीं से न्यूनाधिक मिलते जुलते ही फैले हुए है।
इन सबसे भिन्न एक मनुष्यों की वैदिक विचारधारा है। उसका सिद्धांत है कि अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा फल मिलेगा और बुरे कर्म करेंगे तो बुरा फल मिलेगा। यह फल इस जन्म और अगले जन्मों में हमें मिलेगा। इस विचारधारा की विस्तृत तार्किक व्याख्या मैं पहले के विषयों में भिन्न भिन्न स्थानों पर कर चुका हूँ। अतः वैदिक विचारधारा वालों से पूछा जाता है कि

आज संसार में पाप बढ़ रहे हैं। अतः पुनर्जन्म की मान्यता के अनुसार तो धरती पर मनुष्यों की जनसँख्या कम हो जानी चाहिए किन्तु पाप के साथ साथ जनसँख्या भी बढ़ रही है। ये कैसे हो रहा है ?
अपने को बड़े बड़े विद्वान कहलवाने वाले और यूनिवर्सिटी आदि में पढ़ाने वाले लोग नौजवानों और विद्यार्थियों से ऐसे ऐसे प्रश्न पूछते हैं। जब वो उत्तर नहीं दे पाते तो उनको धर्म से हटाने के लिए अपनी पहले से तैयार कथानक (स्क्रिप्ट) से उनको प्रभावित करते हैं। उसके उपरांत उन नौजवानों को नास्तिकता की ओर अथवा किसी अन्य विचारधारा की ओर बहा देते हैं।

सज्जनों यह प्रश्न ही गलत है। इस प्रश्न को बनाने में अत्यंत साधारण बुद्धि का प्रयोग किया गया है। इन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत को उतना ही लिया जितना इनके स्वार्थ को पूरा कर सकता था। इन्होंने एक बात तो समझ ली कि अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा फल मिलना चाहिए और फिर से मनुष्य आदि का शरीर मिलता है। यदि कोई बुरे कर्म करेगा तो उसे पशु-पक्षी, वृक्षादि का शरीर मिलता है। ये बात तो इन्होंने ले ली। किन्तु वह दूसरा जन्म (शरीर) इसी पृथ्वी पर मिलेगा ये किस धर्म ग्रंथ में लिखा है ? ये बात इन्होंने अपनी बुद्धि से बना ली है और प्रश्न बना लिया।

सृष्टि को बनाने वाले ने असंख्य पृथ्वी लोक बनायें हैं। इस ब्रह्मांड में असंख्य लोक है जहाँ पर जीवन है। हमारी आकाश गंगा का नाम मिल्की वे है। उसी के अंदर हमारा सौर मंडल है जिसमें यह पृथ्वी है। हमारी मिल्की वे आकाश गंगा में कितने बिलियन सौर मंडल हैं इसका अब तक पता नहीं चल पाया है। मिल्की वे के पास वाली आकाश गंगा का नाम एंड्रोमेडा है। उस एंड्रोमेडा आकाश गंगा में यदि कोई जाना चाहे तो 3 लाख किलोमीटर

प्रति सेकंड की गति से 22 लाख साल से भी अधिक लग जाएंगे। अब ऐसी ऐसी असंख्य आकाश गंगाएँ ब्रह्मांड में हैं और प्रत्येक आकाश गंगा में असंख्य सौर मंडल हैं। हमारे सौर मंडल के सबसे पास वाला सौर मंडल अल्फा सेंचुरी है। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि वह बिलकुल हमारे सौरमंडल जैसा है जहाँ पृथ्वी भी है।

अतः हमारे कर्मों के अनुसार हमें पूरे ब्रह्मांड में कहीं भी जन्म मिल सकता है क्योंकि पूरा ब्रह्मांड एक ही सर्वव्यापक ने बनाया है। यदि किसी के कर्म बहुत अच्छे होंगे तो उसको प्रदुषण से युक्त, मार-काट, अशांति, बीमारी, अव्यवस्था आदि वाली पृथ्वी पर जन्म क्यों मिलेगा ? इस विषय को थोड़ा अच्छे से समझाने से पूर्व में वेद के एक प्रमाण द्वारा ब्रह्मांड की अनंतता सिद्ध कर रहा हूँ।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।[234]

अर्थात् ब्राह्मण को बनाकर धारण करने वाले ईश्वर ने ही सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा अन्तरिक्ष में फैले हुए सब लोक-लोकांतर पूर्व की भांति ही बनाये हैं।

मैंने प्रथम विषय ईश्वर से सम्बंधित ही लिखा है जहाँ मैंने सिद्ध किया है कि ईश्वर सर्वव्यापक है और कैसे उसने सृष्टि की रचना की है। अब चूँकि ईश्वर सर्वव्यापक है तो किसने कैसा कर्म किया है वो केवल वही जानता है।

[234] अथर्ववेद कांड 5, सूक्त 30, मंत्र 8।

उसके लिए उसको किसी दूसरे की अथवा किसी पुस्तक में लोगों के अच्छे-बुरे कर्म लिखने की आवश्यकता नहीं है। वह जानता है कि किस जीवात्मा को उसके कर्मों के आधार पर ब्रह्मांड में किस स्थान पर और किस जाति में जन्म देना है। जाति से अर्थ मनुष्य, पशु-पक्षी, वृक्षादि से है। कुछ लोग कहते हैं कि हम क्यों नहीं जान सकते हैं ? इसका कारण है कि आत्मा सर्वव्यापक नहीं है और ना ही उसके पास ईश्वर की भांति अनंत सामर्थ्य है। हम अल्पज्ञ है अर्थात् हमारे ज्ञान की एक सीमा है। हम तो यही नहीं जान पाएंगे कि 1 माह पूर्व चैत्र माह के प्रथम रविवार को प्रति मिनट क्या-क्या कार्य किये। अतः सर्वव्यापक सर्वज्ञ ईश्वर ही सब कुछ जान सकता है और उसके अनुसार सबको उनके कर्मों के फल देता है।

कर्म फल की व्यवस्था बहुत ही सूक्ष्म है। पूर्ण रूप से उसको हम मनुष्य नहीं जान सकते हैं। यदि एक व्यक्ति ने जीवन में पचास प्रतिशत अच्छे और पचास प्रतिशत बुरे कर्म किये हैं तो उसको मनुष्य जन्म मिलेगा। किन्तु उसका जन्म बहुत अच्छे स्थान व अच्छी परिस्थिति आदि में नहीं होगा। यदि बुरे कर्म अच्छे कर्मों से अधिक किये हैं तो भोग योनियों में (वहां केवल भोगते हैं अर्थात् अच्छे-बुरे कर्म नहीं करते हैं) पशु-पक्षी आदि बनकर बुरे कर्मों का फल भोगकर पुनः जब पाप-पुण्य बराबर हो जाते हैं तो मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है।

पुण्य कर्म पाप कर्मों से जितने अधिक होते जायेंगे अगला जन्म उतना ही उत्तम होगा। ऐसे पुण्य कर्म करने वालों का जन्म सर्वोत्तम लोक में ही होगा जहाँ आज भी ऋषि-महर्षि होंगे, प्रदुषण, भूख, अनाचार, व्याभिचार, लूट, मारकाट नहीं होगी। यह सब पुरुषार्थ से ही संभव होगा, चमत्कार से अथवा केवल मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि पूजा स्थलों पर जाने से कोई विशेष लाभ

नहीं है। जनसँख्या का बढ़ना मनुष्यों के कारण है ईश्वर के कारण नहीं है क्योंकि ईश्वर ने मनुष्यों को कर्म करने की स्वतंत्र दी है। कर्म करने की स्वतंत्र के विषय को "क्या पाप पुण्य सब कृष्ण लीला है" में समझा आया हूँ। ये सब समझाने की दृष्टि से आपको बताया है। सर्वोत्तम कर्म करने वाले तथा पांच क्लेशों को समाधि द्वारा समाप्त करने वाले ही मोक्ष के आनंद को भोगते हैं।

देखिये शरीर कोई भी किसी प्रकार का जब भी आपको शरीर मिलेगा तो दुःख उसके साथ जुड़ा होता है चाहे ऋषि महर्षि ही क्यों न हो। ये शरीर मिला है तो दुःख जुड़ेगा ही जुड़ेगा इसके साथ। इसीलिए मोक्ष में पूर्णरूप से दुःखों की निवृत्ति हो जाती है तो वो मोक्ष होता है। मोक्ष के विषय को पूर्व ही समझा दिया गया है वही देख लेवें।

प्रश्न - संसार की सबसे कीमती वस्तु कौन सी है ?

उत्तर - आजकल समाज में लोग आभूषणों के पीछे पड़े है कि महंगे से महंगे आभूषण उसे मिल जावें। यदि महंगे आभूषण मिल जाये तो और महँगे की तृष्णा करते हैं। जितना धनी व्यक्ति होगा उतना ही महँगा आभूषण चाहेगा। सारा संसार आभूषण के पीछे पड़ा है लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे ऋषियों ने असली गहना (आभूषण) किसे कहा है ? ऋषियों ने असली आभूषण सेवा भाव को कहा है। महर्षि भर्तृहरि ने कहा है कि **"सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः"** अर्थात सबसे उत्तम गहना है सेवाभाव जिसको प्राप्त करने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता हैं, योगीजन भी इस गहने को धारण करना कठिन है। उन्हें भी बहुत श्रम के बाद ये गहना प्राप्त होता है। यह गहना हीरे, मोती, सोना व चाँदी से भी श्रेष्ठ है। क्यों न हम भी

सेवारूपी गहना धारण करें। जब कोई व्यक्ति बीमार हो अथवा संकट में हो तब यदि उसका लाभ हमारे माध्यम से हो जाये तो सोने पर सुहागा हो जाता है।

हमने वर्ष 2015 में अपने क्षेत्र में गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए कक्षाएं प्रारंभ की थी। इस कार्य में नौजवानों ने हमारा सहयोग किया तो बड़ा आनन्द आया। यदि आप कही दान करते हैं, किसी गुरुकुल अथवा गौशाला आदि में व जब आप किसी भूखे को भोजन देते होंगे, किसी ठंड से कांपते व्यक्ति को चद्दर देते होंगे या अन्य किसी क्षेत्र में सेवारूपी कार्य करते हैं तब निश्चित रूप से आप आनंद की अनुभूति करते होंगे। किन्तु सेवा करना इतना भी सरल नहीं, जैसे ही आप अच्छा कार्य शुरू करते हैं वैसे ही लोग बाधा उत्पन्न करने लग जाते हैं। दूसरी ओर यदि आप गलत कार्य कर रहे हैं या कुछ नहीं कर रहे तब कोई कुछ नहीं कहेगा। उदाहरण स्वरुप यदि आप कुछ जीव-जंतुओं की रक्षा हेतु अथवा कटती हुई गाय की रक्षा हेतु आवाज उठाओगे तो विरोधी तुरंत आपके मार्ग में पत्थर लेकर खड़े हो जायेंगे। इसलिए महर्षि भृर्तहरि ने कहा कि योगीजन भी सेवा रुपी गहना कठिनता से धारण कर पाते हैं।

अब इसे एक शास्त्रीय उदाहरण से समझाने हेतु एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक आता है –

“मुनेरपि वनस्थस्य स्वानि कर्माणि कुर्वतः।
उत्पद्यंते त्रयः पक्षा मित्रोदासीनशत्रवः॥”[235]

[235] महर्षि भर्तृहरि नीति श्लोक।

अर्थात् यदि कोई मुनि वन में अकेला रहकर ईश्वर स्तुति, प्रार्थना और उपसना कर रहा है, उसका किसी से कोई लेना देना नहीं है। फिर भी तीन प्रकार के लोग उसके आस पास आ जाएंगे । **प्रथम मित्र** । **दुसरे उदासीन**[236] यानी किसी से कोई लेना देना नही। **तीसरे शत्रु**। मतलब यदि आप कोई अच्छा काम शुरू करेंगे तो आपको तीन प्रकार के लोग मिलेंगे। जब लोग आपकी आलोचना करेंगे तब आप अच्छा काम छोड़ देंगे तो आपके शत्रु सफल हो जायेंगे। किन्तु हमें अपने मार्ग पर उसी तरह अटल रहना चाहिए जैसे पत्थर कितनी भी आँधी आने पर अपना स्थान नहीं बदलता है।

इस सेवारूपी गहने को किस किस ने धारण किया एक उदाहरण से समझाता हूँ। अकबर ने अपने शासनकाल में भारत की बहुत सी जगह जैसे प्रयाग, थानेसर, काशी, मथुरा आदि जगह पर बड़े-बड़े धार्मिक स्थलों पर बड़े पैमाने पर कत्लेआम कराया। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत में उस समय जो छोटे छोटे राजा थे वे महँगे से महँगे आभूषण अकबर को भेंट करने लगे ताकि उनका राज्य सुरक्षित रहे। उन राजाओं में सोना, चांदी, हीरे व मोती आदि भेजने की होड सी मची थी। आजकल भारत के बहुत से लोग सोचते हैं कि भारत की सबसे कीमती चीज यानी कोहिनूर हीरा ब्रिटेन चला गया। उससे अमूल्य वस्तु तो भारत की कोई है ही नहीं। संसार भी यही मानता है कि कोहिनूर हीरा आभूषणों का आभूषण है। किन्तु कजली प्रांत जो मालाबार के पास था वहाँ के राजा ने बहुत ही श्रेष्ठ व अदभुत चीज अकबर के लिए भेजी थी और वो था एक अनोखा चाकू जो किसी का गला

---

[236] उदासीन - कोई गाय काटे अथवा मनुष्य काटे इनको कोई अंतर नहीं पड़ता है, इन्हें वर्तमान में सेक्युलर भी कहा जाता है।

काटने के लिए नहीं बल्कि अनेकों बिमारियों के उपचार अर्थात् इलाज़ के लिए था। उस चाकू को कजली के सर्वेश्रेष्ठ वैद्यों ने धातुओं के अनोखे मिश्रण से तैयार किया ताकि यदि किसी के शरीर में किसी तरह की सूजन आई हो तो चाकू को उस जगह पर रगड़ने से सूजन समाप्त हो जाएगी। अन्य अनेकों बिमारियों हेतु भी वह चाकू अद्भुत कार्य करता था। चाकू में प्रत्यक्ष में तो कोई गुण नहीं था। उस महान वस्तु से आप जान सकते हैं कि हमारी संस्कृति कितनी उच्च रही थी। जब सारा संसार विनाशकारी वस्तुओं की खोज करने की प्रतिस्पर्धा कर रहा है वही वैदिक धर्म से जुड़े हुए लोग मनुष्यों की रक्षा वाली सामग्री का ही निर्माण करने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। उस समय पर उस चाकू के प्रयोग से अकबर ने खुद के परिवार के 200 लोगों को रोगमुक्त किया था। आप कल्पना कीजिए कितना उच्च कोटि का प्रशिक्षण हमारे वैद्यों का रहा होगा। शेख अबुल फ़ज़ल इतिहास के सबसे चापलूस लेखकों में से एक है। उसने अकबरनामा पुस्तक लिखी थी। उसमें अकबर की महानता दिखाने का प्रयास किया व हिन्दुओं को पिछड़ा हुआ सिद्ध करने का प्रयास किया। इतना होते हुए भी उनसे इस चाकू वाली घटना का 69वें प्रकरण में (जहाँ कालिंजर दुर्ग की विजय का वर्णन किया है) उल्लेख किया है। वह आगे लिखता है कि **"कजली प्रान्त के राजा भगवा वस्त्र ही धारण करते थे।"**[237] उन्होंने वो चाकू इसलिए भेंट किया था ताकि अकबर को ज्ञात कराया जाए कि सनातन परंपरा मे वैद्यों का ज्ञान कितना उच्च कोटि का है।

कुछ लोग इस सत्य सत्य ऐतिहासिक घटना को प्रमाणयुक्त होते हुए भी यह कहकर स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि यह घटना आयुर्वेद की महानता को

---

[237] अकबरनामा, अबुल फ़ज़ल, कालिंजर दुर्ग की विजय।

सिद्ध करने हेतु अत्यंत कारगर है। उनको यह बात भी अच्छी नहीं लगती कि वैदिक शास्त्रों अथवा आर्यों की महानता वाली कोई भी घटना सर्वसाधारण में प्रसिद्धि पायें। इस महान वैदिक परंपरा का आज भी एक प्रत्यक्ष उदाहरण है जो कि आर्यों की उच्च कोटि की शिक्षा का अनुमान प्रमाण है। दिल्ली के महरौली में हजारों वर्षों से खड़ा लोह स्तम्ब, जिसमें जंग का नामोनिशान भी नहीं है। आज हजारों टन लोहे से बने मजबूत पुल भी 30-40 साल में ही ढेह जाते हैं। खुले में रखा लोहा कितनी ही अच्छी गुणवत्ता वाला क्यों न हो 1 महीने में जंग का शिकार होने लग जाता है। यह सर्वविदित है कि वैदिक लोग गौमूत्र से धातुओं को शुद्ध किया करते थे। आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा और औषधियों द्वारा सदियों से मानवता की सेवा होती रही है।

एक अन्य उदाहरण आपको देता हूं। आजकल गाँव देहात के लोगों को अनपढ़ कह दिया जाता है जबकि आज भी गाँव में आपको कुछ लोग ऐसे मिल जाएंगे जो अदभुत औषधियों की जानकारी रखते होंगे। पहले छोटे छोटे राजा हुआ करते थे। पूर्वकाल में एक राजा की पत्नी को प्रसव में समस्या हो रही थी। बच्चा पेट में उल्टा लेटा हुआ था। वैद्य की औषधि से भी बच्चा सीधा नहीं हुआ। आजकल तो पेट चीर करके बच्चा निकाल लेते हैं। पहले जितना होता था शल्य चिकित्सा से वैद्य बचते थे। तभी एक सामान्य सा व्यक्ति अपने पशुओं का चारा लेकर वहाँ से गुजर रहा था। उसने देखा कि राजा के घर के बाहर तो भीड़ लगी है जब उसने कारण पूछा तब किसी ने बच्चे के संदर्भ मे बात बताई। बच्चा गर्भ में उल्टा है यह बात केवल वैद्य और राजा जानते थे। तब उस सामान्य दिखने वाले व्यक्ति ने कहा कि वो उपचार कर सकता है। किंतु उसके फ़टे कपड़े देखकर लोगों ने उसका मजाक बनाया। सेवाभाव के कारण उसने कहा कि तुम रानी की

कलाई पर एक धागा बांध लाओ यदि तुम मुझे अंदर नही जाने देना चाहते हो। तब राजा की अनुमति से एक सैनिक ने उसकी योग्यता देखने के लिए कह दिया कि ठीक है हम लाते हैं तुम बाहर प्रतीक्षा करो। सैनिक ने धागा बिल्ली की कलाई पर बाँधा और लेकर दे दिया। तब उस व्यक्ति ने यह कह कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया कि इसके पेट में तो चूहे दौड़ रहे हैं, इसे कुछ खाने को दो। कितनी उच्च इसकी वैद्यता रही होगी जो केवल एक धागे से बिल्ली की होने की बात बता दी। अबकी बार रानी की कलाई पर बाँधा धागा लाया गया। वह व्यक्ति समझ गया रानी का बिस्तर नरम है, शारारिक परिश्रम किया नहीं होगा व कुछ भोजन सम्बन्धी दोषों के कारण बच्चा पेट मे उल्टा हो गया है। उसने राजा को बताया की बच्चा पेट में उल्टा है। राजा ये बात पहले से ही जानता था अतः उसने हाथ जोड़कर उपाय पूछा। व्यक्ति ने कुछ देर सोचकर बिस्तर के एक विशेष कोने में बहुत ज्यादा तेज ध्वनि करने को कहा और यह भी समझा दिया कि इस बात का रानी को पता न चले। सेवकों द्वारा ऐसा ही किया गया। बहुत तेज आवाज के कारण रानी अचानक बिस्तर पर उछल पड़ी और बच्चा सीधा हो गया व सामान्य पैदा भी हो गया। किन्तु आज हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यदि कोई भी माता-बहना निजी अस्पताल जाती है तब 90 प्रतिशत संभव है कि उसका ऑपरेशन ही किया जाएगा और ये सब बहुत जल्द करके दवाई भी घर तक भेज दी जाती है ताकि आगे चलकर बच्चेदानी का भी ऑपरेशन कर देंगे। ऐसे कृत्रिम रूप से पैदा हुआ बच्चा कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकता है। इसका विस्तार से उल्लेख किसी आयुर्वेद के विषय में कभी करूँगा।

सेवाधर्म से ही हम अपनी व अपने राष्ट्र की उन्नति कर सकते हैं। राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा एक धर्म और भी है और वो है –

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः[238]

अर्थात् हे श्रेष्ठ मनुष्यों ! अपना सामर्थ्य बढ़ाइए, सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाइये । इसके साथ साथ यदि मार्ग मे कोई बाधा आये तो बाधा उत्पन्न करने वाले दुष्टों का संहार कीजिये । एकता के साथ आगे बढिए जैसा कि हमारे महापुरुष सदैव से करते आये हैं। यदि हम दुष्टों से अपनी रक्षा नही करेंगे तो दुष्ट हमारा सर्वनाश कर देंगे।

5.4 मूर्तिपूजा सही या गलत ?

अधिकांश लोग जानने के इच्छुक रहते हैं कि वेदों में मूर्तिपूजा पर क्या बताया गया है । कौन से वो वेद के मन्त्र हैं जो मूर्तिपूजा के विषय में जानकारी देते हैं और क्या वेदों के अनुसार मूर्तिपूजा करना सही है अथवा यह एक बुराई है ? यह विषय अत्यंत ही संवेदनशील है और जिन जिन महापुरुषों ने इस विषय पर लेखनी उठाई है उन सबको समाज का कड़ा विरोध झेलना पड़ा है। इस कड़ी में सर्वप्रथम आदि शंकराचार्य का नाम आता है जिन्होंने जैनियों को शास्त्रार्थ में हरा करके उस समय उनकी मूर्तिपूजा को चुनौती दी थी। यह सर्वविदित है कि उनको अनेकों बार विष देकर अंत में अल्पायु में ही मार दिया गया था उनकी मृत्यु उपरांत उनको भी शिव का अवतार ठहरा कर अनेकों वेद विरुद्ध मान्यताओं को स्थापित कर दिया गया जो आज तक चली आ रही हैं।

वेदों में परमात्मा का स्वरूप यथा प्रमाण –

[238] ऋग्वेद मंडल 9, सूक्त 63, मंत्र 5।

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यस: ।[239]

अर्थात् उस ईश्वर की कोई मूर्ति (प्रतिमा) नहीं जिसका महान यश है ।

वेनस्त पश्यम् निहितम् गुहायाम ।[240]

अर्थात् विद्वान पुरुष ईश्वर को अपने हृदय में देखते है ।

अन्धन्तम: प्र विशन्ति येऽसम्भूति मुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽ उसम्भूत्या-रता: ।।[241]

अर्थात् जो लोग ईश्वर के स्थान पर जड़ प्रकृति या उससे बनी मूर्तियों की पूजा उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (दुःख) को प्राप्त होते हैं ।

वेद मन्त्रों के प्रमाण के बाद अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वेद ईश्वर की वाणी है । ईश्वर है या नहीं ? ईश्वर है तो कैसा और कहाँ है ? मैंने पुस्तक के प्रारंभ में सर्वप्रथम तर्क और प्रमाण के आधार पर इन्हीं विषयों का समाधान किया है । आप जान चुके हैं कि संसार का बनाने वाला सर्वत्र व्यापक है । संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ ईश्वर न हो ।

प्रश्न उठता है कि जब ईश्वर प्रत्येक पदार्थ, स्थान व कण-कण में उपस्थित है तो मूर्तियों में भी तो है । अतः क्यों न मूर्ति में ईश्वर को मानकर उसकी पूजा की जायें ? आइये एक उदाहरण द्वारा इस विषय को समझने का प्रयास

---

[239] यजुर्वेद अध्याय 32 , मंत्र 3 ।

[240] यजुर्वेद अध्याय 32 , मंत्र 8 ।

[241] यजुर्वेद अध्याय 40, मंत्र 9 ।

करते हैं। मान लीजिये एक आतंकवादी ने 10 निर्दोष लोगों को मार डाला। अतः ईश्वर तो उस आतंकी में भी है। क्या उस आतंकी को सजा देने से ईश्वर को सजा होगी ? बिलकुल नहीं क्योंकि ईश्वर केवल उस आतंकी में नहीं बल्कि उसके अंदर-बाहर, दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे, उसको सजा देने वाले में भी तथा जिस पदार्थ (रस्सी, बन्दुक आदि) से सजा दी जाएगी उन सबमें ही है। इसलिए ईश्वर को किसी एक स्थान पर ही विशेष रूप से महत्त्व देना बुद्धिहीनता है। यह तो वही बात हो गयी कि एक चक्रवर्ती सम्राट को एक छोटी सी झोंपड़ी का स्वामी मान लिया जायें। ईश्वर पत्थरों में भी है यह सत्य है किन्तु दो पत्थरों को आपस में टकरायेंगे तो इसका ये अर्थ निकलना कि ईश्वर की टक्कर हो रही है, मूर्खता है क्योंकि ईश्वर कण कण में उपस्थित होकर भी सब पदार्थों से सर्वथा भिन्न है। ये तो वही बात हो गयी कि कोई कहे कि मेरी मुट्ठी में ईश्वर आ गया है।

कुछ लोग कह देते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से उसको किसी एक वस्तु आदि में मानकर ही उसकी पूजा की जा सकती है। यदि ऐसा है तो पत्थर, लोहा, लकड़ी, शीशा, मिट्टी आदि से मनुष्य-पशुओं आदि की आकृति (शक्ल) जैसी ही मूर्तियां क्यों बनाई जाती हैं ? हमने एक ही ईश्वर के अलग अलग नामों के अनुसार अलग अलग मूर्तियाँ बनाई हैं। इस विषय को 33 करोड़ देवी-देवताओं वाले विषय में समझ लेना। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर की मूर्ति बनाने के बाद वह उस मूर्ति में विशेष रूप से आ जाता (स्थापित) है। यह बात भी सत्य नहीं है। जैसे कोई कहे कि राम विवाह में आया इसका अर्थ है कि राम पहले वहां नहीं था इसीलिए कहीं से आया है। यदि हम कहें कि ईश्वर मूर्ति में आया तो वह ईश्वर नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर तो पहले ही सब पत्थरों, पहाड़ों, नदियों आदि सब में उपस्थित है तो

कहाँ से वो आयेगा ? इस बात को ईश्वर विषय में अच्छे से समझाया जा चुका है। कुछ लोग कहते हैं कि भावना में भगवान है। मानो तो ईश्वर ना मानो तो पत्थर है। इसको बड़े ही सुंदर प्रकार से महर्षि दयानंद सरस्वती नहीं समझाया है। वे लिखते हैं कि **"यदि मिट्टी में चीनी की भावना कर ली जायें तो क्या वह चीनी हो जाएगी ?"** सज्जनों, ईश्वर की ऐसी गलत व्याख्याओं और मान्यताओं के कारण संसार की अपार हानि हो चुकी है। **यह बात अक्षरशः सत्य है कि कण कण में ईश्वर है किन्तु यह बात पूर्णतः असत्य है कि कण कण ही ईश्वर है।** आज संसार अनाथ की भांति भटक रहा है जिसको अपने पैदा करने वाले पिता का कुछ पता नहीं है और उसके स्थान पर किसी और को ही पिता मान बैठा है।

झाँसी जनपद के ककवारा गाँव के पास एक कुतिया महारानी का मंदिर है जहाँ आस पास के गाँव के लोगों में मन्नत मांगने और उसकी पूजा करने की परंपरा बना दी गयी है। ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान वेदों को न समझने के कारण आज छोटे-बड़े करोड़ों भगवान हो गये और प्रतिदिन नए नए भगवान पैदा हो रहे हैं। इसी पाखंड के कारण लोग वेद की कर्म फल व्यवस्था को भूल चुके हैं। पुरुषार्थ और पूर्वार्ध का ज्ञान मनुष्यों को रहा ही नहीं अपितु ढोंग-पाखंड, आलस्य-प्रमाद और चमत्कार ही मनुष्य का सहारा बन गये हैं। एक बच्चे को एक मीठा पदार्थ खाने को दें और एक कड़वा पदार्थ देवें। बच्चा सदैव मीठे पदार्थ को ही खायेगा। इससे यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से सुखप्रद सरल मार्ग को ही चुनता है। आज मनुष्य ने सरल मार्ग अर्थात् अधर्म को धर्म मान लिया है। यह अब उनके संस्कारों में इतना भीतर तक पहुँच गया है कि इसको निकालना अत्यंत कठिन है।

प्रश्न उठता है कि फिर ईश्वर को प्राप्त कैसे करें ? इसकी विशेष व्याख्या तो मुक्ति विषय में की गयी है। सज्जनों ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् महाबुद्धि वाला और सब कुछ जानने वाला है किन्तु मनुष्य अल्पज्ञ अर्थात् साधारण बुद्धिवाला और अल्पज्ञान वाला है। अल्पज्ञ मनुष्य सर्वज्ञ ईश्वर को सब जगह प्राप्त नहीं कर सकता है। ईश्वर को हम वहीं प्राप्त कर सकते हैं जहाँ ईश्वर हमारे अर्थात् आत्मा के अंदर स्थित है। ध्यान-समाधी की अवस्था में आत्मा के द्वारा ही ईश्वर को पाया जा सकता है क्योंकि ईश्वर आत्मा में ही हमारे सबसे अधिक निकट है। अतः दूर-दूर, स्थान-स्थान पर ईश्वर के लिए भटकना वेद विरुद्ध तथा बुद्धि के विरुद्ध है। जिस प्रकार भूख लगने पर भोजन सामने होते हुए भी हजारों मील भोजन के लिए भटकना बुद्धिमत्ता नहीं उसी प्रकार आत्मा के निकट ईश्वर तत्त्व को प्राप्त करने के स्थान पर बाहर पदार्थों में ईश्वर को खोजना भी बुद्धिमत्ता नहीं है। अतः ईश्वर की प्राप्ति हेतु प्रतिदिन दो समय ध्यान लगायें। यदि कोई गाड़ी वाला हमें कुछ दूरी तक बिना मूल्य लिए बिठा लेता है तो भी हम उसका धन्यवाद करते हैं। ईश्वर ने हमें सब कुछ दिया है और हमसे बदले में कुछ नहीं लिया है। अतः प्रतिदिन दो समय ईश्वर का धन्यवाद अर्थात् उसके नाम का (ओम्) जप अवश्य करें। इससे भी हमारा ही लाभ होगा तथा आत्मिक शांति प्राप्त होकर दुःखों से छुटकारा मिलेगा। ओम् की कृपा सदैव आप पर बनी रहेगी। इसी प्रकार से ईश्वर की पूजा करनी चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि मूर्ति पूजा (अर्थात् जड़ वस्तुओं को ईश्वर मानकर पूजना) बहुत प्राचीन है। रामायण में श्री राम ने शिवलिंग की पूजा अर्चना की थी। यह बात सत्य नहीं है क्योंकि श्रीराम संध्या काल ईश्वर की (ईश्वर के अनेक नामों में से शिव भी एक नाम है अर्थात् कल्याण करने वाला)

उपासना करते थे। बाद के समय में जब मूर्तिपूजा प्रचलित और प्रतिष्ठित हो गयी तब सृष्टि बनाने वाले शिव को एक विशेष आकृति के साथ जोड़ दिया गया और रामायण आदि अनेक ग्रंथों में आये हुए ईश्वर के विभिन्न नामों के साथ अलग अलग आकृतियाँ जोड़ दी गयी और प्रचारित कर दी गयी। जानता हूँ कुछ लोग इस बात को मानने से मना कर देंगे। यदि उनकी यह बात मान भी ली जायें कि मूर्तिपूजा बहुत प्राचीन है तो भी क्या प्राचीनता सत्य का प्रमाण है ? यदि हाँ तो चोरी आदि भी प्राचीन समय से चली आ रही हैं तो क्या वो भी ठीक है ? आजकल प्राचीन शिव मंदिर, प्राचीन काली मंदिर, प्राचीन मस्जिद अथवा प्राचीन चर्च लिखकर ये दिखाने की होड़ लगी रहती है कि यहाँ तो भगवान पक्का है क्योंकि यह प्राचीन है। कुछ लोग तो प्राचीन लिखकर सड़क तथा रेलवे स्टेशन पर मस्जिद बनायें बैठे हुए हैं। सज्जनों सत्य को तर्क और तथ्यों के आधार पर सिद्ध किया जाता है प्राचीनता के आधार पर नहीं।

भारत में मूर्ति-पूजा जैनियों ने लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व से अपनी मूर्खता से चलाई। जिससे उस समय तो आदि शंकराचार्य (shankaracharya) ने निजात दिला दी। परंतु उनके मरते ही उनको भी शिव का अवतार (Shiva’s Avatar) ठहरा कर पेट-पूजा आदि होने लगी। इसी मूर्ति-पूजा के कारण ही भारत में क्रूर इस्लाम (islam) की स्थापना हुई तथा भारत को परतंत्रता का मुँह देखकर अवनति के गर्त में गिरना पड़ा। अब भी यदि इस्लाम से बचना चाहते हो। मुसलमानों, इसाइयों से दुनिया को बचाना चाहते हो तो श्री राम, श्री कृष्ण के समान आर्य (श्रेष्ठ) बनों।

सृष्टि की सबसे पुरानी पुस्तक वेद में एक निराकार ईश्वर की उपासना का ही विधान है। चारों वेदों के 20589 मंत्रों में कोई ऐसा मंत्र नहीं है जो मूर्ति पूजा का पक्षधर हो।

वेदों के प्रमाण देने के बाद किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं परंतु आदि शंकराचार्य, आचार्य चाणक्य से लेकर महर्षि दयानन्द तक सब विद्वानों ने इस मूर्तिपूजा की हानियों को देखते हुए इसका सत्य आम जन को बताया था।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यन्ति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥[242]

अर्थात् जो आंख से नहीं दीख पड़ता और जिस से सब आंखें देखती हैं। उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। और जो उस से भिन्न सूर्य, विद्युत और अग्नि आदि जड़ पदार्थ हैं उन की उपासना मत कर।

यष्यात्म बुद्धि कुणपेत्रिधातुके।

स्वधि ... स: एव गोखर: ॥[243]

अर्थात् जो लोग धातु, पत्थर, मिट्टी आदि की मूर्तियों में परमात्मा को पाने का विश्वास तथा जल वाले स्थानों को तीर्थ समझते हैं वे सभी मनुष्यों में बैलों का चारा ढ़ोने वाले गधे के समान हैं।

---

[242] केनोपनिषद, कांड 1, श्लोक 6।

[243] ब्रह्मवैवर्त्त।

जो जन परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य की उपासना करता है। वह विद्वानों की दृष्टि में पशु ही है।[244]

प्रतिमा स्वल्पबुद्धिनां सर्वत्र समदर्शिनः।[245]

अर्थात् मूर्ति-पूजा मूर्खों के लिए है जबकि बुद्धिमान लोगों के लिए ईश्वर सर्वत्र व्यापक है।

आप देख चुके हैं कि मूर्तिपूजा वेदों में नहीं बताई गयी है और महर्षि मनु वेदों के विषय में लिखते हैं -

नास्तिको वेदनिन्दकः ॥ – मनु० अ० २, श्लोक 11[246]

अर्थात् जो वेदों की निन्दा (अपमान), त्याग, विरुद्धाचरण करता है वह नास्तिक कहाता है।

बुद्धिमान इतने प्रमाणों व तर्क से समझ गये होंगे कि मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध और शास्त्र विरुद्ध है। जो वेद को नहीं मानता वो सही अर्थों में नास्तिक है भले ही वह ईश्वर को सदैव ढूंढने मंदिरों, मस्जिदों अथवा चर्चों में जाता हो। एक पक्षी को भी पता होता है कि कोई मूरत उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। कोई किसी मनुष्य की मूर्ति पर पेशाब कर देता है, बीट कर देता है उससे डरता नहीं है। कोई मूर्ति का शेर हमें खा नहीं सकता है। कोई मूर्ति का कुत्ता काट नहीं सकता तो मनुष्य की मूर्ति मनोकामना कैसे पूरी करती है?

---

[244] शतपथ ब्राह्मण 14/4/2/22।

[245] चाणक्य नीति अध्याय 4 श्लोक 19।

[246] डॉक्टर सुरेन्द्र कुमार भाष्य, (मनुस्मृति, अध्याय 1, श्लोक 130)

मार्च 2016 में मुझे काशी विश्वनाथ जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मंदिर में जाकर मैं एक कुँए के पास खड़ा हो गया। वहां बहुत सारे पंडित घूम रहे थे। मैंने एक पंडित जी से कुँए के इतिहास के विषय में पूछा तो उसने मुझे आश्चर्यजनक उत्तर दिया। उसने कहा जब औरंगजेब ने काशी विश्वनाश पर हमला किया था तो शिव जी ने इसी कुँए में छलांग लगाई थी। काशी विश्वनाथ के पंडित से ऐसा अपमानजनक उत्तर सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। ऐसा नहीं है कि उस पंडित ने मुझे गलत बताया वहां किसी भी पंडित से पूछते हैं तो यही उत्तर मिलता है। कुँए के पास खड़े होकर देखने से पुरानी मंदिर की दीवारों के ऊपर बनी मस्जिद स्पष्ट दिखाई देती है। वास्तव में जिसे ये पंडित शिवजी कह रहे हैं वो एक शिवलिंग था जिसे औरंगजेब ने ज्ञानव्यापी कुँए में फेंक दिया था। यदि सही में महायोगी शिवजी होते तो उस विदेशी आक्रांता औरंगजेब और उसकी अत्याचारी सेना को देखते ही देखते नष्ट कर देते किन्तु महायोगी शिव जब थे तब थे। अब तो काशी के लोगों को ही शिव बनना था किन्तु वो तो ये सोच रहे थे कि जब शिव ही डरकर कुँए में भाग गये तो वो क्या करेंगे। इस मूर्ति पूजा ने राष्ट्र के लोगों में कायरता और आलस्य का संचार करने के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया है। मथुरा, काशी, थानेसर, प्रयाग, हरिद्वार, सोमनाथ आदि सभी धार्मिक स्थलों पर कत्लेआम हुए और अपार धन सम्पति लूट ली गयी किन्तु आर्यों ने इस बुराई को अब तक नहीं छोड़ा और अब तो साईं जैसे मुस्लिम को भी भगवान बना बैठे हैं। यदि श्रीराम, श्रीकृष्ण, शिवजी जैसा कोई होता तो निश्चित रूप से दुष्ट इतना साहस नहीं कर पाते किन्तु लोग तो मूर्ति को ही श्रीराम, श्रीकृष्ण और शिवजी समझ बैठे और परिणाम सबके सामने है। इन ऐतिहासिक घटनाओं को इतिहास से सम्बंधित अध्याय में विस्तार से लिया जायेगा।

आज मक्का मदीना मूर्तिपूजा का सबसे बड़ा केंद्र बना हुआ है जहाँ 58 देशों के लोग एक मूर्ति को शैतान कहकर पत्थर मारते रहते हैं। यदि आज आर्य लोग उसी एक सृष्टि के बनाने वाले ओ३म् को ही ईश्वर माने और अन्य सब त्याग देवें तो निश्चित रूप से सारे संसार को इनकी एकता और ताकत के सामने नतमस्तक होना पड़ेगा। किन्तु यह कार्य वर्तमान में तो संभव दिखाई नहीं दे रहा है।

मूर्ति-पूजा के पक्ष में कुछ लोग थोथी दलीलें देते हैं। वे घोर स्वार्थी व नास्तिक हैं तथा अनीति के पक्षधर व मानवता के कट्टर दुश्मन हैं। जिस प्रकार उल्लू को दिन पसंद नहीं होता, चोरों को उजेली रात पसंद नहीं होती इसी प्रकार स्वार्थियों को मूर्ति-पूजा का खंडन पसंद नहीं होता। कुछ धर्म प्रिय सच्चे लोग भी सत्य बताने वालों को धर्म खत्म करने वाला तक कह देते हैं और कहते हैं जो चल रहा है चलने दो। अत: हमें उन भूलों से बचना होगा जिनके कारण आर्य देश गुलाम हुआ। मंदिरों को तोड़ा गया, धन लूट लिया गया, मंदिरों की मूर्तियों को मस्जिदों की सीढ़ियों में चुनवाया गया, स्त्रियों को दो-दो कौड़ी में अरब के बाजारों में बेचा गया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में मूर्तिपूजा की सोलह बड़ी हानियाँ गिनवाई है। इस विषय पर उस अतिरिक्त जानकारी को पढ़ना भी विशेष लाभकारी है।

अत: वेद-विरुद्ध मूर्ति पूजा को छोड़कर वैदिक ईश्वर जो निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिशाली व एक है उसकी मिलकर सभी लोग प्रीतिपूर्वक योगाभ्यास के द्वारा उपासना/पूजा करें। जब हमारा एक ईश्वर होगा, एक भाषा, एक लक्ष्य होगा तभी उन्नति संभव है अन्यथा कुछ हाथ नहीं लगेगा।

अंत में अपनी लिखी एक कविता द्वारा इस विषय पर अपने भावों को शब्द दे रहा हूँ –

झाड़-कंकड़ भूत-खंडहर के हमें भय खा रहे हैं,

नित्य नूतन मोक्ष दाता पंथ बनते जा रहे हैं ॥

कौन समझाएगा हिन्दू उठ खड़ा हो चल डगर,

बच जायेगा तू अकेला ताक में बैठा अगर,

वीभत्स अत्याचारों का इतिहास दौहराया जाएगा,

बच नहीं पायेगा हिन्दू वो समय फिर आएगा ॥

कहे राहुल आर्य हिन्दुओं से यदि यूँही समय गवांएगा,

धर्मरक्षा तो छोड़िये परिवार सुरक्षित ना रह पाएगा ॥

5.5 सर्वश्रेष्ठ धर्म पर व्याख्यान

- सोनीपत, हरियाणा

आज आप देश के किसी भी कोने में चले जाइये आपको केवल चरित्रहीनता ही दिखाई देगी। पूर्व, पश्चित, उत्तर, दक्षिण किसी भी दिशा में छोटे से बड़े लोगों आदि सभी में पाप ने जड़ बना ली है। जैसे मक्खी शहद में डूब जाती है वैसे ही राष्ट्र पाप में डूबा हुआ है। जैसे मक्खी शहद में डूबकर मर जाती है वैसी ही राष्ट्र भी मृतप्रायः हो चुका है। चारों ओर राक्षसी प्रवृत्तियां फैली हुई हैं तथा दुष्ट अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं। पाप कर्म तो इस स्तर तक पहुँच चुके हैं कि मात्र 10 रूपये के लिए हत्याएं हो जाती है। व्यापारी व्यापार में लूट रहा है, दुकानदार दुकान से लूट रहा है, नौकरी वाला भ्रष्टाचार कर रहा है, राजनीति वाले देश लूट रहे हैं, अध्यापक विद्यार्थियों को लूट रहे हैं, डॉक्टर बीमारों को लूट रहें हैं। चारों ओर लूटतंत्र कार्य कर रहा है।

मचा कोहराम है चारो दिशाओं में,
नहीं है शांति अब, कुछ हवाओं में ।।

किसी ने क्या सुन्दर पंक्तियाँ लिखी हैं कि अब हवाओं में पहले सी बात नहीं है, शांति समाप्त हो चुकी है, भाईचारा दिखाई नहीं देता है। अनेकों समझदार व विद्वान लोग बड़े बुजुर्ग आदि कहते हैं कि विद्यालयों में चरित्र की शिक्षा देने से ही सुधार संभव है। मुझे लगता है कि यह उपाय अब 21वीं सदी में काम नहीं करेगा क्योंकि सर्वत्र चरित्रहीनता को बढ़ावा देने वाले कारण उपस्थित है। जब तक चरित्रहीनता को बढ़ावा देने वाले कारणों को

समाप्त नहीं किया जायेगा तब तक चरित्र की दो चार बताई हुई बातें अपना कोई प्रभाव नहीं रखेंगी।

इसको एक उदाहरण द्वारा समझिये। आपने आधा कीचड़ से भरा हुआ गिलास लिया है। यदि कीचड़ से आधे भरे हुए गिलास में ऊपर से साफ़ पानी डालोगे तो क्या होगा ? ऐसा करने से सारा का सारा पानी गन्दा हो जायेगा। यदि आपको साफ़ पानी चाहिए तो पहले गिलास से कीचड़ साफ़ करना पड़ेगा। इसलिए बुराइयों के कारण को समाप्त किये बिना अच्छाई की स्थापना नहीं की जा सकती है।

आज राष्ट्र में फैली अधिकांश समस्याओं के दो मूल कारण हैं -

- मानवतावादी वैदिक धर्म की शिक्षाओं से दूर होना।
- इस्लाम व ईसाइयत की शिक्षाओं को धारण करना।

आज मैं व्याख्यान दे रहा हूँ तो आपको यह सब सामान्य लग रहा होगा परन्तु जब आप गाँव के हालातों पर चर्चा करते होंगे तो सुनते होंगे कि एक व्यक्ति ने शराब पीकर ये कर दिया, किसी छोटी बच्ची का बलात्कार हो गया, एक निर्दोष को मार दिया गया, कोई लड़की अथवा लड़का घर छोड़कर भाग गया, किसी ने किसी को गन्दी गालियाँ दी आदि आदि।

वास्तव में, धर्म से दूर होकर अधर्म की शिक्षाओं को अपनाने के कारण ही मनुष्यों में मानवता समाप्त होती जा रही है। जब तक हम दूसरे प्राणियों के दुःख में दुःख और सुख में सुख नहीं देखेंगे तब तक हम शोषण की व्यवस्था से बाहर नहीं निकल सकेंगे।

जब मैं कहता हूँ कि धर्म से अलग होकर इस्लाम तथा ईसाइयत की शिक्षाओं के कारण ही समाज का इतना पतन हुआ है तो कुछ लोग इसमें शंका करने लगते हैं। कुछ लोग पूछते है कि राहुल आर्य जी क्या इस्लाम और ईसाइयत में कुछ भी अच्छी बात नहीं है ? कुरान और बाइबिल में कुछ तो अच्छा होगा ?

तब मैं कहता हूँ कि बिलकुल इनसे भी मनुष्यों को अनेकों शिक्षाएं मिलती हैं। कुरान से शिक्षा मिलती है कि आप चाहे चोरी, दुराचार, व्याभिचार, हत्याएं, चाहे कोई भी गलत काम करें बस आप "ला इलाहा इलल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"[247] पढ़ लो, आप नमाज़ी बन जाओ, कुरान को खुदा की पुस्तक मान लो, अल्लाह को खुदा मान लो, मुहम्मद को पैगम्बर मान लो और जिहाद करो तो आपको जन्नत मिल जाएगी। अल्लाह का पैगाम संसार के लोगों तक पहुँचाने के लिए कितने भी मुशरिकों की बलि चढ़ानी पड़े इस्लाम में खुली छूट है। अनेकों बुराइयों को कुरान बढ़ावा देती है। कुछ लोग कहते हैं कि कुरान में शराब पीना मना है किन्तु उन लोगों को ये नहीं पता कि जन्नत में तो शराब आदि पदार्थों की नदियाँ बह रही हैं। यहाँ पर शराब पीने को मना किया है ताकि बिना नशे के सभी मुस्लिम जिहाद कर सकें। लेकिन जिहाद का नशा शराब के नशे से हजारों गुणा अधिक होता है और उसके हानिकारक प्रभाव भी शराब से हजारों गुणा अधिक हैं।

बाइबिल वालों के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। सभी जानते हैं कि गाँव गाँव, गली गली घूमकर लोगों के रोग ठीक करने के बहाने

[247] पहला कलमा मुस्लिम बनने के लिए। अर्थात् अल्लाह ही संसार बनाने वाला है और मुहम्मद ही उसका आखरी रसूल (पैगम्बर) है।

तथा उनके पापों को क्षमा करवाने के बहाने कैसे लोगों को इसाई बना रहे हैं। इनके अनुसार आप यदि यहोवा को खुदा मान लेते हैं तथा जीसस को यहोवा का पुत्र मान लेते हैं तो आपके सात क्या सात सौ खून भी माफ़ हो जाएंगे। इसका अर्थ स्पष्ट है कि इन दोनों मतों की शिक्षाएं ही प्रत्येक बीमारी की जड़ हैं। जब तक ये दोनों मत भारत में नहीं आये थे तब तक साधारण समाज में अच्छी शिक्षाओं का प्रचार था। इस विषय को थोड़ी देर में अच्छे से लूँगा।

अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि जिसने स्वेच्छा से इस्लाम और ईसाइयत धारण किया है उन लोगों का क्या ? देखिये, अनुमान प्रमाण से ये प्रतीत होता है कि जिन्होंने लोभ-लालच में धर्म परिवर्तन किया उन्होंने तो प्रत्यक्ष पाप कर किया है। कुछ लोगों ने मृत्यु के भय से धर्म परिवर्तन किया है तो उनको अभिनिवेश नामक क्लेश के कारण दुःख होगा किन्तु अंतःकरण से वो नहीं चाहते थे अतः मन की पवित्रता जब तक होगी तब तक पापों से बचे रहेंगे। किन्तु जिन लोगों ने स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कर लिया वो लोग कौन होते हैं ? वास्तव में, स्वेच्छा से इस्लाम और ईसाइयत में जाने वाले अपराधी किस्म के लोग होते हैं। पहले भी जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म छोड़ा था वे अपराधी किस्म के लोग ही थे। वैसे स्वेच्छा से इस्लाम और ईसाइयत में जाने वाले लाखों में से कोई एक होता है। अधिकांश लोग लोभ, लालच तथा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन करते हैं। स्वेच्छा से आज भी जो इस्लाम और ईसाइयत में जा रहे हैं वे सभी अपराधी किस्म के लोग ही होते हैं। कैसे ?

मान लो किसी अपराधी ने हत्या कर दी, तो वह छुपेगा कहाँ ? वह वहीं छुपेगा ना जहाँ उसे छुपने का स्थान मिलेगा अर्थात् जहाँ उसको शरण मिलेगी। जो लोग अपराध करते थे उन्होंने सनातन धर्म इसलिए छोड़ा ताकि वहां छुप सके। वो मानते थे कि पाप करके मुस्लिम या इसाई बनने से भी जन्नत मिलेगी, हूरें मिलेंगी। अतः इन दोनों मतों में अपराधी किस्म के लोग ही जाते हैं जो पाप करके फिर उनका बुरा फल भोगने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। वो सोचते हैं कि मुस्लिम या इसाई बन जाएंगे तो पाप क्षमा कर दिए जाएंगे और कुरान तथा बाइबिल के अनुसार ही उन्हें कर्मों का फल मिलेगा। अतः अपने किये हुए कर्मों से डर कर पीछा छुड़ाने वाले कायर भी होते हैं। इनको संभवतः पता नहीं है कि हजारों वर्षों तक स्वयं मुहम्मद को पेड़-पौधे, कुत्ते, बिल्ली, सूअर आदि अनेकों जातियों में जन्म मिलेगा क्योंकि उनकी लिखी कुरान पढ़कर जब तक हत्याएं होंगी तब तक तो उसको मनुष्य जन्म पुनः मिलेगा नहीं। जो ईश्वर की व्यवस्था में स्वयं अपने फल भोग रहा हो वो आपके क्या क्षमा करवाएगा। लोग अपना मन बहलाने के लिए अपने जैसे भगवान के पास चले जाते हैं अथवा नया अपने जैसा भगवान बना लेते हैं।

कितने ही पापी तथा अपराधी किस्म के लोगों ने धर्म परिवर्तन नहीं किया और सनातन धर्म में रहकर ही श्रीराम, श्री कृष्ण, शिव जी आदि को नशेड़ी, चरित्रहीन, चोर, रणछोड़, भांगी, मनमौजी, नचैया, रासलीला रचैया सिद्ध कर दिया। जो पाप स्वयं करने थे वो सब महापुरुषों पर जड़ दिए। अतः आज सनातन धर्म में भी अनेकों महापापी गुरुघंटाल तथा उनके व्यापार को संचालित करने वाले लोग हैं।

अतः अब प्रश्न खड़ा होता है कि गलत कार्य तो हिन्दू भी करते हैं। हिन्दुओं में भी तलाक हो रहे हैं, माताओं बहनों से दुर्व्यवहार हो रहा है, शराबखोरी, रिश्वत आदि सभी बुराई हिन्दुओं में भी हैं। मैं कहता हूँ बिलकुल सही किन्तु क्या हमारे शास्त्रों में ऐसा करने को कहा गया है ? नहीं, बल्कि ऐसे कृत्य पाप कहे गये हैं और इनका फल बुरा ही मिलेगा। जबकि दूसरी और कुरान और बाइबिल तो खुली छूट दे रहे हैं।

हिन्दुओं के ग्रंथों में तो कहा गया है कि -

"आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्"

अर्थात् हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम अपने लिए दूसरों से अपेक्षा रखते हैं। यदि हम चाहते हैं कि दूसरा हमें गाली न दे, हमें न मारे, हमारा हाथ न काटे तो हमें भी दूसरे के साथ वही व्यवहार करना चाहिए। अब जिस प्रकार की शिक्षा हमारे धर्म ग्रंथ में दी गई है वैसी शिक्षा कहीं और दी गयी हो तो बताइए। हिन्दू में तो कहा जाता है -

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा

अर्थात् आचरणहीन मनुष्य को तो वेद भी शुद्ध नहीं कर सकते हैं।

दुर्भाग्य से आज के पण्डे पुजारियों ने धर्म के नाम पर पाखंड फैला दिया कि एक बार गंगा स्नान कर लो सारे पाप धुल जाएंगे। ये सब काल्पनिक पुराणों की कहानियां हैं जैसे कुरान और बाइबिल की मूर्खतापूर्ण बातें और किस्से हैं। आज हिन्दुओं के 90 प्रतिशत कथावाचक और गुरुघंटाल मुस्लिमों से प्रभावित हैं और सूफी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। आधे से अधिक गुरु घंटालों ने सत्संग और आश्रमों की आड़ में व्याभिचार के अड्डे खोल रखे हैं। जब मैंने सर्वप्रथम सार्वजानिक मंचों पर इनको वैदिक धर्म पर शास्त्रार्थ

की चुनौती दी तब सभी पाखंडी मिलकर मेरे ही विरुद्ध षड़यंत्र करने लगे। रामायण की कथा में अल्लाह की कव्वालियाँ करवाते हैं। वास्तव में, हिन्दू आज जिन परम्पराओं को धर्म मानकर आगे बढ़ रहा है उनमें से अधिकांश शकों, हूणों, मुस्लिम, इसाई आदि से समय समय पर आई बातें ही हैं। पिछले 2 हजार वर्षों में आर्यों के शुद्ध वैदिक धर्म में बड़े पैमाने पर घालमेल हो चुका है। पुनः मानवता की रक्षा के लिए श्रीराम, श्रीकृष्ण, शिवजी द्वारा जिस धर्म की समाज में समय समय पर स्थापना की गयी थी उसी को धारण करने की आवश्यकता है।

जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है वैसे ही हिन्दुओं पर भी संगत का असर हुआ है। कैसे ? जब से इसाई और मुस्लिम हमारे देश में आये तब से हिन्दुओं ने यह बुरे काम करने प्रारंभ कर दिए। इसे कहा गया है संगत का असर। हमारे बड़े बुजुर्गों ने एक कहावत चलाई थी कि **"सौ चूहों को खाकर बिल्ली हज को चली।"** इस कहावत से हमें बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। यहाँ पर हज शब्द का प्रयोग ही हमारे पूर्वजों ने क्यों किया ? इसका कारण है कि सौ सौ हिन्दुओं को मारने वाले को गाजी और सैय्यद की उपाधि दी जाती थी। कहावत का असली अर्थ है कि सैकड़ों निर्दोषों की हत्या करके हज जाने का क्या लाभ है ?
आज दुर्भाग्य से उन्ही सैय्यदों की मजारों पर हिन्दू समाज मत्था टेकता है। उत्तर भारत के सैकड़ों हजारों गाँव में सैय्यद मिलेंगे। जहाँ सैय्यदों का राज था वहां कोई भी नई दुल्हन विवाह करके आती थी तो पहली रात सैय्यद के यहाँ जाना पड़ता था। अब सैकड़ों वर्षों के बाद भी अनेकों गाँवों में यह परम्परा वैसे ही चल रही है। जिस गाँव में सैय्यद है, उस गाँव में कोई नई दुल्हन विवाह करके आती है तो उसको उसी दिन सैय्यद को दर्शन देने होते

हैं। ये तो वही बात हो गयी कि पहले जहाँ जबरदस्ती लेकर जाये जाते थे वहां अब स्वेच्छा से जाने लगे हैं। आपके गाँव में भी मैंने पता किया है एक सैय्यद है । बुरा मत मानना किन्तु लज्जा आनी चाहिए ऐसी घटिया मानसिकता को आज तक नहीं छोड़ा है। गाँव के यहाँ उपस्थित नौजवानों को मिलकर ऐसी सैय्यद को उखाड़ फैंकना होगा।

वास्तव में, जो सनातन धर्म की शिक्षाओं को नहीं मानता है उनको आर्य अथवा हिन्दुओं में क्यों गिना जाता है ? मुझे ये बात समझ ही नहीं आती है। सनातन धर्म में तो ये नियम है कि यदि कोई पाप कर्म (नीच) करना है तो उसकी आर्य की पहचान छीन ली जाती है तथा उसे दस्यु कहा जाता है। अतः यदि कोई वैदिक नाम रखकर पाप करता है तो वो वैदिक धर्मी नहीं है वो दस्यु है। कुछ लोग कहेंगे कि जब कोई हिन्दू पाप कर्म करे तो दस्यु और मुस्लिम या इसाई करें तो उनमें धर्म क्यों ढूंढे ? इसका कारण यह है कि मुस्लिम या इसाई तब तक मुस्लिम अथवा इसाई ही रहते हैं जब तक वे अल्लाह और यहोवा में विश्वास करते हैं तथा कुरान व बाइबिल पढ़ते हैं। उनके यहाँ वैदिक धर्म जैसे न्यायकारी तथा कठोर नियम नहीं हैं। अतः बुरे कर्म करने वाला कभी भी कोई हिन्दू नहीं होता है।

अब मैं समझाने का प्रयास करूँगा कि कैसे भारतीयों पर संगत का असर हुआ है जिसके कारण उनका चाल चलन बदल गया है। 11वीं सदी का एक मुस्लिम इतिहासकार इद्रीसी अपने भूगोल के ग्रन्थ में लिखता है कि **“प्राकृतिक रूप से भारतीयों का झुकाव न्याय की ओर है और वे कभी किसी कार्य में न्यायच्युत नहीं होते हैं।”** वह भारतीय आर्यों को ईमानदार, वचन का पक्का, चरित्रवान कहता है।

13 वीं सदी में आया शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्ला लिखता है कि **“भारतीयों की जनसँख्या बालू कण की भांति असंख्य है। वे हिंसा और छल कपट से मुक्त हैं और न तो वे जीवन से डरते हैं और न ही मृत्यु से डरते हैं।”** वास्तव में, भारतीयों को पता था कि अच्छे कर्म ही करने हैं ताकि अच्छा ही उनका फल मिले। इसी लिए सारा संसार भारतीयों के मानवीय सिद्धांतों का मान सम्मान करता है।

16वीं सदी में अबुल फ़जल अपनी आईने अकबरी में लिखता है कि **“हिन्दू लोग धार्मिक, सहनशील, नम्र, प्रसन्नमुख, न्यायप्रिय, त्यागी, अपरिग्रही, व्यापारी और व्यवहारकुशल, सत्यनिष्ठ एवं सत्यप्रशंसक, कृतज्ञ तथा असीम प्रभुभक्त होते हैं। उनमें जो सैनिक वृत्ति है उन्हें यह पता भी नहीं है कि युद्ध से भागना किसे कहते हैं।”**

इसलिए मैंने कहा था कि हमारे आर्य लोग बहुत ही सज्जन और सभ्य होते थे किन्तु संगत के असर के कारण आज भारत की यह स्थिति है।

अब बात करते हैं मैक्समूलर की, जिसने हिन्दुओं के अनेकों ग्रंथों तथा शास्त्रों में बहुत अधिक मूर्खतापूर्ण बातें लिख डाली है। इनके कारण हिन्दू शास्त्रों के प्रति लाखों लोगों का मोहभंग हुआ है। इतने षड्यंत्रों के बाद भी वो एक बार ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी, जो दुनिया की टॉप यूनिवर्सिटी में गिनी जाती है, उसमें भाषण दे रहा था। पढ़े लिखे बच्चे बैठे थे जो आई.ए.एस आदि करके भारत आना चाह रहे थे। वहां मैक्समूलर कहता है कि **“1000 ई. तक भारत में गुणों की भरमार थी, परन्तु 1000 ई. के बाद कि मैं कह नहीं सकता हूँ। यदि किसी बच्चे को डरा दिया जाये तो वह अवश्य ही झूठ बोलेगा।”**

इसी प्रकार जब करोड़ों लोगों को भयत्रस्त किया गया तब वे अवश्य झूठ का सहारा लेने लगे। अतः बुरी संगत ही इन सब बुराइयों की जड़ है। इस विषय से सम्बंधित व्याख्यान में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठा।

प्रश्न - यदि कोई बुराई भारतीयों में नहीं थी तो श्रीकृष्ण ने झूठ, छल कपट का सहारा क्यों लिया था ? महाभारत में अश्वत्थामा झूठ से मारा गया था।

उत्तर - इस विषय को एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करते हैं। यदि आप कहीं जा रहें हैं। आपके सामने से एक गाय भागी जा रही हैं और उसके पीछे से एक आदमी हाथ में छुरा लिया आता है। वह आपसे गाय किस दिशा में गयी ऐसा पूछने लगता है। उस स्थिति में आप क्या करेंगे ? सत्य कहेंगे अथवा असत्य कहेंगे ? महाभारत में एक प्राचीन काल का ऐतिहासिक व्याख्यान आता है। कौशिक मुनि जो सत्यनिष्ठ थे, एक बार वन से कहीं जा रहे थे। उनके सामने से चार से पांच लोग जो बहुत डरे हुए थे भाग कर आगे निकल गये। पीछे से डाकू आये और कौशिक से उन व्यक्तियों के बारे में पूछा। कौशिक ने बिना सोचे समझे उत्तर दे दिया। उन डाकुओं ने उन सामान्य लोगों की बहुत दुर्गति की थी। इसी कारण आगे महाभारत में आया है कि कौशिक को इसके कारण पाप का फल भोगना पड़ा।

इस कहानी से हमें धर्म का बहुत सा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। क्या कौशिक को झूठ बोलकर उन लोगों को बचा लेना चाहिए था ? यदि कौशिक ने सच बोला तो उसको पाप का फल क्यों मिला ? वास्तव में, यहाँ प्रश्न सच अथवा झूठ का है ही नहीं ? यहाँ वाणी से सत्य अथवा असत्य का प्रश्न नहीं था

अपितु हमें बुद्धिपूर्वक सही तथा गलत का स्वयं चुनाव करना था। हमने देख लिया कि गाय भागी हुई गयी है और पीछे छुरा लेकर एक दुष्ट उसको मारने के लिए आ रहा है। अब वो हमसे कुछ पूछे तो यहाँ प्रश्न सत्य बोलने अथवा असत्य बोलने का नहीं है अपितु सही कर्म करने अथवा गलत कर्म करने का है। इन दोनों में बहुत भेद है। इस स्थिति में हमें उस गाय वाले को भटका कर गाय की जान बचानी चाहिए वही धर्म है।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए ठीक निर्णय लिए थे। जिनको लोग सच और झूठ अथवा छल और कपट कहते हैं वे कर्तव्यों में गिने जाते हैं सच झूठ में नहीं। धर्म के गूढ़ रहस्य जानकर ही श्रेष्ठ लोगों की रक्षा हो सकती है अन्यथा दुष्ट लोग संसार को शमशान बना देंगे। सच बोलना ठीक है या गलत ? निश्चित रूप से ठीक है। ऐसे ही किसी निर्दोष की जान बचाना ठीक है या गलत ? अर्थात् यह भी ठीक है। अतः सत्य बोलना भी ठीक है और किसी निर्दोष की जान बचाना भी ठीक है। यदि दोनों ही ठीक हैं तो यह क्यों कहते हो कि श्रीकृष्ण ने झूठ बोला था। वास्तव में, श्रीकृष्ण जी केवल सत्यवादी ही नहीं अपितु सत्यकामी भी थे। निर्दोषों की रक्षा करना और धर्म की स्थापना करना सत्यकाम है, वही श्रीकृष्ण जी ने किया था। यह केवल समझने का अंतर है।
हम स्वयं अपने महापुरुष को कह देते हैं माखनचोर। अरे, जिसके स्वयं के घर में सैकड़ों हजारों गाय हो वह माखन चोरी क्यों करेगा ? उन्होंने कभी कोई छल कपट नहीं किया और उनकी केवल एक ही पत्नी अर्थात् रुक्मणी थी। उनकी सोलह हजार एक सौ आठ पत्नियों की बातें सर्वथा झूठ है। ऐसी ऐसी बातें करने वाले कथावाचकों और गुरुघंटालों को लज्जा आनी चाहिए। उन माताओं बहनों को भी सुधारना चाहिए जो ऐसे लज्जित लोगों

के पास जाकर श्रीकृष्ण जैसे धर्मज्ञ, नीतिज्ञ, सत्यवादी, योगी के चरित्र को धूमिल करते हैं। हमारे सभी महापुरुषों का चरित्र एकदम उजला है और उसमें दाग लगाने वाले कभी भी मुझसे शास्त्रार्थ करके समाधान कर सकते हैं।[248]

वस्तुतः कुछ निर्णय देश, काल तथा परिस्थिति के कारण भी लेने पड़ते हैं। ऐसे कार्य सामान्य स्थिति में करने अधर्म हैं किन्तु विशेष परिस्थिति में करने धर्म होते हैं। जैसे भोजन एकदम शांतचित्त होकर अच्छे प्रकार से बैठकर खाना चाहिए। किन्तु यदि युद्ध चल रहा है अथवा आप कोई खिलाड़ी आदि हैं तो आपको चलते चलते अथवा दौड़ते दौड़ते भी भोजन करना पड़ सकता है। यह आपद्धर्म कहलाता है। अर्थात् आपातकाल में बहुत से कार्य धर्म की रक्षा के लिए तथा कर्तव्यों के निर्वहन के लिए करने होते हैं।[249] इस प्रकार से धर्म की व्याख्या बहुत विस्तृत है। सामान्य स्थिति में किसी के प्राण लेना पाप है किन्तु कर्तव्यों के निर्वहन के लिए तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए आपद्धर्म में किसी के प्राण लेना धर्म बन जाता है।
हिन्दुओं को केवल दो ही बातें याद रह गयी। पहली धर्म और दूसरी अधर्म। हिन्दू लोग आपद्धर्म को भूल गये और केवल प्रत्येक स्थिति में शत्रुओं से केवल सैद्धांतिक लड़ाई लड़ने के कारण हारते रहे। इसी कारण राष्ट्र को गुलामी झेलनी पड़ी। अतः धर्म और अधर्म के आगे एक आपद्धर्म भी होता

[248] जो लोग कहते हैं कि मेरा पता नहीं है उनको यह तो सदा पता रहता है कि मेरा अगला कार्यक्रम कहाँ होने वाला है। अतः सदैव सभी का स्वागत है।

[249] जैसे भारत के एक हिन्दू जासूस को देश की रक्षा के लिए पाकिस्तान में जाकर मुस्लिम बनना पड़ सकता है, नमाज पढ़नी पड़ सकती है आदि आदि। यह कार्य उसने देश की रक्षा के लिए किया है अर्थात् यह आपद्धर्म है। सामान्य परिस्थिति में नमाज आदि पढ़ना अधर्म है क्योंकि ईश्वर तो सर्वव्यापक है तथा उसका नाम ओम् है जिसको ध्यान समाधी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

है । आज 21वीं सदी में आपद्धर्म की अत्यंत आवश्यकता है । केवल सिद्धांतों की बात करके आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। आपद्धर्म में सिद्धांतों की रक्षा हेतु यदि उन सिद्धांतों को तोड़ना भी पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए किन्तु उद्देश्य पवित्र हो और पाप करने की इच्छा न होवे। आपके कार्यों से अन्य प्राणियों की हानि न हो अथवा अत्यंत न्यून हो और पुण्य बहुतों का होवे।

प्रश्न - यदि भारत के लोग चरित्रवान थे तो द्रौपदी के साथ भरी सभा में गलत क्यों हुआ ? इसी से सम्बंधित एक प्रश्न यह भी है कि श्रीराम ने केवल अपनी एक पत्नी के लिए इतना बड़ा युद्ध छेड़ दिया क्या वह उचित था ?

उत्तर – आप ऊपर कर्मफल व्यवस्था के सिद्धांत को समझ चुके हैं। अतः जीवात्मा अच्छे बुरे कर्म करने में स्वतंत्र है। इसी कारण संसार में अच्छे बुरे लोग भी सदा होते हैं। किन्तु महत्वपूर्ण ये होता है कि समाज में अच्छे बुरे लोगों का अनुपात क्या है ? जिस समय दुर्योधन आदि ने द्रौपदी का चीरहरण किया था उस समय सभा में बैठे अधिकांश लोग उस कृत्य से सहमत नहीं थे। महाभारत पढ़ते हैं तो पता चलता है कि उस समय का अधिकांश भारतीय समाज दुर्योधन और उसके साथियों को धिक्कार रहा था। नगरों में इस गलत कर्म की निंदा हो रही थी। इससे पता चलता है कि उस समय के भारतीय समाज की क्या मानसिकता और अवधारणा थी। एक द्रौपदी का चीरहरण हुआ तो पूरे देश में उसकी घोर निंदा हुई थी। यह निश्चित रूप से एक बड़ा पाप था किन्तु फिर भी दुर्योधन आदि ने इससे अधिक सीमा लांघने का साहस नहीं किया। वहीं दूसरी और आज 5-5 वर्ष की बच्चियों का बलात्कार इस देश में आम बात हो गयी है। यह अंतर है

वैदिक समाज और अवैदिक समाज में। वैदिक समाज में बुराई और बुरे लोगों की भी एक सीमा होती है क्योंकि अच्छाई और अच्छे लोगों की संख्या अधिक होती है। आज इस्लाम और ईसाइयत जैसे मतों के प्रचार के कारण तथा उनकी शिक्षाओं के प्रभाव के कारण अपराध चरम पर हैं। कहाँ तो एक महिला के साथ केवल मात्र दुर्व्यवहार होने पर सारा समाज एकत्र हो जाता था और कहाँ प्रतिदिन हजारों महिलाओं की अस्मिता लूटी जाती है और समाज मूकदर्शक बना देखता रहता है। आज पुलिस प्रशासन तथा राज व्यवस्था असहाय होकर देख रही है किन्तु उस समय धर्म की रक्षा हेतु राजा से भी लड़कर न्याय प्राप्त किया जाता था। विचार कीजिये उस समय महिलाएं कितनी सुरक्षित होंगी क्योंकि राजा को भी पाप के लिए दंड देकर श्रेष्ठ उदाहरण समाज में स्थापित किये गये थे। अतः सामान्य व्यक्तियों का साहस ऐसे समाज में निंदनीय कार्य करने का कभी नहीं होता है।

इसी प्रकार रामायण के विषय में लोग बोलते हैं कि सीता के लिए श्री राम ने हजारों को मरवा दिया। ऐसा कहने वालों को लज्जा भी नहीं आती है।[250] वह केवल एक माता सीता की बात नहीं थी बल्कि सम्पूर्ण नारी जाति के मान सम्मान की बात थी। यदि रावण को ऐसे ही छोड़ देते तो रावण से प्रेरणा लेकर हजारों वर्ष तक लाखों करोड़ों स्त्रियों पर अत्याचार करने वाले दुष्ट इकट्ठे हो जाते। समाज में ऐसी अप्रिय और निंदनीय घटनाओं को रोकने के लिए तथा एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए ही श्रीराम ने रावण का वध किया था।

[250] दुर्भाग्य है कि ऐसा प्रश्न खड़ा करने वाले फिर महिलाओं के अधिकारों तथा सुरक्षा की बड़ी बड़ी बातें सोशल मीडिया पर करने लग जाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में आपने देखा होगा कि पश्चिम बंगाल में बड़े बड़े हिंदूवादी नेताओं की हत्याएं बड़े स्तर पर हुई हैं। केरल में पॉपुलर फ्रंट ऑफ़ इंडिया जैसे आतंकवादी संगठन हिन्दू नेताओं को मार रहे हैं। ये लोग हिन्दुओं की आवाज उठाने वाले नेताओं को ही क्यों मार रहे हैं ? इसका कारण यह है कि यदि नेता को ही मार देंगे तो सामान्य जन अपने आप चुप बैठ जायेगा। वे सोचने लग जाएंगे कि जब नेता को ही मार दिया तो वह किस खेत की मूली हैं। ठीक इसी प्रकार से यदि धार्मिक तथा पवित्र आत्मा लोग दुष्टों के नेताओं को मार देंगे तो लाखों दुष्टों का उत्साह भंग हो जायेगा और वे भय के कारण अपना मार्ग बदल लेंगे। ठीक इसी प्रकार से श्रीराम ने रावण को दंड दिया ताकि सम्पूर्ण देश में जो बुरे काम करने वाले लोग हैं वह बुरा काम नहीं करेंगे। यदि केवल एक अपनी पत्नी की बात होती तो वह बस उसे ही बचाते किन्तु उन्होंने अपनी पत्नी से पहले सुग्रीव की पत्नी को भी बाली से बचाया था और बाली का वध करके कहा था कि मेरे भाई भरत के राज्य में मनुस्मृति का संविधान है जिसके अनुसार दूसरे की पत्नी को बलपूर्वक उठाने वाले के लिए मृत्युदंड का विधान है।[251]

जब श्रीराम को युद्ध में विजय प्राप्त हुई तब भी समाज में अच्छे लोग बहुतायत में थे तथा दुष्टों को दंड देने में पूर्णतः समर्थ थे। इस्लाम तथा ईसाईयत में एक पैगम्बर लूत की कहानी आती है। यह पैगम्बर कुरान तथा बाइबिल वालों अर्थात् दोनों का बराबर था। उस पैगम्बर की दो बेटियां थी। उन दोनों बेटियों की सगाई तय हो चुकी थी। एक दिन लोगों के हमले से बचने के लिए लूत अपनी दोनों बेटियों के साथ एक गुफा में जा छिपा। उन

[251] किष्किन्धाकांड, सर्ग 13 (मनुस्मृति के आठवें अध्याय के दो श्लोक रामायण में आये हैं, अर्थात् मनुस्मृति ही लाखों वर्षों से मनुष्यों का संविधान है)

बेटियों ने अपने पिता को शराब पिलाकर उसी के साथ सम्भोग किया और बच्चे पैदा किये ।[252] मैं मानता हूँ कि संसार में इनसे बड़े दुराचारी और व्याभिचारी लोग कौन हैं ? अरे, वैदिक धर्म की प्रधानता जब देश दुनिया में थी तो रावण जैसे पापियों के पाप की भी एक सीमा थी। आज कुछ नीच परम्परा को मानने वाले भी श्रेष्ठ परम्पराओं के वाहक लोगों पर प्रश्न उठा रहे हैं। क्या इन लोगों को भली प्रकार से उत्तर देने का कार्य नौजवानों को नहीं करना चाहिए ? निश्चित रूप से नौजवानों को आगे आकर विद्या ग्रहण करनी चाहिए। इस पुस्तक को लिखने का मेरा यही उद्देश्य है कि नौजवानों को धर्म के गूढ़ रहस्य पता हो जावें ताकि किसी दुष्ट में उनके समक्ष खड़े होंगे की हिम्मत न हो पाये।

जब तक मैंने यूट्यूब पर आकर जाकिर नाइक जैसों को खुली चुनौती नहीं दी तब तक मुल्ले-मौलवियों तथा पादरियों ने सनातन धर्म को नीच कहने तथा सिद्ध करने के भरसक प्रयास किये। केवल 3 वर्ष के अन्दर अन्दर यूट्यूब से इन सभी दुष्टों का नाम और निशान थैंक्स भारत परिवार ने मिटा दिया है। जब यूट्यूब आदि पर दुष्टों ने घुटने टेक दिए तथा पाकिस्तान की मुस्लिम लड़कियों ने भी मेरा समर्थन कर दिया तब मैंने यूट्यूब को छोड़कर धरातल पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया था।

कल्पना कीजिये कि यदि मुस्लिमों की धार्मिक पुस्तक कुरान का कोई अंग्रेजी भाषा अथवा संस्कृत भाषा में तर्जुमा अर्थात् भाष्य कर दे और सारी मुस्लिम जाति फिर उसे ही कुरान मानने लग जायें तो क्या वो असली

---

[252] इसी कारण बाइबिल में बाप बेटी का विवाह जायज ठहराया गया है। (1 कुरिन्थियों अध्याय 7, आयत 36-38)

कुरान मानी जाएगी ? ऐसे ही यदि ईसाईयों की बाइबिल कोई संस्कृत में लिख देवें तो क्या सारे इसाई उस संस्कृत वाली बाइबिल को ही असली मान लेंगे ? ऐसा कभी नहीं होगा। लेकिन दुर्भाग्य से संसार की एक महान जाति है आर्य अर्थात् हिन्दू। इनके साथ ठीक ऐसा ही हुआ। इनके धर्म ग्रन्थ अर्थात् वेदों को मेक्समूलर, कीथ आदि अनेकों विदेशियों ने अपनी भाषाओं में लिख दिया। उन्हीं को देखकर कुछ देश वाले स्वघोषित विद्वानों ने फिर अपनी भाषा में लिख दिया। फिर उसे ही वेद कहकर बेचा गया और पढ़ाया गया।

सोचकर देखिये क्या ऐसी जाति को धर्म का ज्ञान हो सकता है ? मैं मानता हूँ बिलकुल भी नहीं। इसीलिए आज भारत देश के अधिकांश हिन्दू अपने धर्म से दूर हो चुके है अथवा नाम मात्र ही उसका दिखावा करने हेतु मंदिर आदि में जाना ही धर्म समझ बैठे हैं। गुलामी के समय में धर्मग्रंथों और धर्म में आई गलत बातों को आजादी मिलने के बाद हटाना तो दूर हम उन्हीं को धर्म समझ बैठे जो वेदों में अधर्म है। मैं जानता हूँ कि बहुत सारे प्रश्नों के मेरे उत्तर आपको आश्चर्यजनक लगेंगे अथवा लगते होंगे क्योंकि किसी ने कभी ऐसा बताया नहीं और आपने पढ़ा भी नहीं। आप ये भी जानते है कि मैं प्रत्येक विषय पर तर्क व प्रमाण के आधार पर अपने प्राचीन सत्य ज्ञान को जो ऋषि महर्षियों तथा विशुद्ध वेदों का ज्ञान है उसको ही आपके समझ रखता हूँ। अतः बुद्धिपूर्वक इस पुस्तक के विषय पढ़ें और फिर समझे निश्चित रूप से हजारों-लाखों वर्षों की मानवीय सभ्यता का इतिहास और संसार के अनेकों रहस्यमयी प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर आप खोजने में समर्थ हो जायेंगे ऐसा मेरा मानना है।

5.6 वैचारिक लड़ाई कैसे लड़ें ?

21वीं सदी में लड़ाई हथियारों से अधिक विचारों की है। यह विचार ही हैं जो किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा कौम को निर्दोषों को मारने की प्रेरणा दे सकते हैं अथवा किसी व्यक्ति तथा कौम को मानवता की रक्षा करने की प्रेरणा दे सकते हैं। भारत में वैचारिक लड़ाई अपने चरम पर पहुँच चुकी है। आज देश में दो प्रकार की विचार धाराएं आमने सामने हैं। एक वो लोग हैं जो भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, इतिहास तथा महापुरुषों में विश्वास करते हैं तथा दूसरे वो लोग हैं जो सभ्यता, संस्कृति तथा इतिहास से उन बातों को निकालते हैं जो देशभक्तों का मनोबल तोड़े। यदि इतिहास में ऐसा कुछ नहीं होता तो ये लोग शास्त्रों में तथा इतिहास में जबरदस्त मिलावट कर देते हैं । उदाहरण स्वरुप रोमिला थापर जैसी घोर पक्षपाती इतिहासकार जिसने भारत के पूरे इतिहास को विकृत कर दिया है और विद्यालयों में उसी की इतिहास की पुस्तकों को पाठ्यपुस्तक माना गया है। इन लोगों की सबसे बड़ी ताकत है राष्ट्रवादियों से बात बात पर प्रश्न पूछना तथा मिलावटी तथा पक्षपाती लेखकों के तथ्य देकर देशभक्तों का अपमान करना। देश की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति में विश्वास करने वाले लोगों की सबसे बड़ी कमी है कि वो बहुत जल्दी भावुक होकर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करते हैं। यही तो वो लोग चाहते हैं। प्रश्न पूछने की उनकी तैयारी पूरी होती है। उनके प्रश्न यूनिवर्सिटी में ऐसे तैयार किये जाते हैं जैसे लेब में नई नई दवाएं तैयार होती हैं। इन लोगों की विशेषता होती है कि ये कभी भी किसी एक प्रश्न पर टिके नहीं रहते हैं। जैसे ही आप एक बात का उत्तर देते हैं ये दूसरा विषय उठा लेते हैं ताकि आपको मानसिक रूप से परेशान किया जा सके। ऐसे लोगों से निपटने के लिए देशभक्त लोगों को

कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना होगा। प्रश्न उत्तर द्वारा किसी भी हल तक पहुँचने के कुछ नियम होते है। अतः कुछ साधारण नियमों का विशेष ध्यान रखें।

1. प्रश्न पूछने वाले से पहले उसकी मान्यता अवश्य पूछें। इनकी सबसे बड़ी ताकत यही होती है कि ये लोग आप क्या मानते हैं यह तो बताते नहीं जबकि आपकी मान्यता पर प्रश्न खड़ा कर देते हैं। अतः इनकी मान्यता स्पष्ट पूछ लेवें ताकि प्रश्न उत्तर करते समय आप भी इनसे प्रश्न पूछ सकें।

2. बार बार नए प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास न करें। इसका कारण यह है कि पहले एक प्रश्न का हल होना चाहिए। जब आप इनको सही उत्तर देने लगते हैं तो ये लोग तुरंत दूसरे प्रश्न पर पहुँच जाते हैं। जब तक एक प्रश्न पर ये अपनी गलती स्वीकार न कर लें तब तक आगे न बढ़ें अन्यथा ऐसे लोग अपने साथ साथ आपके जीवन का भी अमूल्य समय नष्ट कर देंगे।

3. प्रथम तो ये लोग सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए प्रश्न नहीं पूछते हैं यह आप निश्चित जान लीजिये। इनका उद्देश्य केवल आपको नीचा दिखाना तथा आपके पूर्वज व संस्कृति पर हमला करना होता है। अतः यदि आप उनके प्रश्न का ठीक उत्तर दे भी देंगे तो ये लोग गलती स्वीकार नहीं करेंगे किन्तु यदि ये आपके उत्तर को मानकर ये कहें कि चलो अब दूसरे प्रश्न का उत्तर दो तो आप उनको रोक देना। उनके एक प्रश्न का हल करने के बाद जब वे अपनी गलती स्वीकार कर लेवें

तब एक प्रश्न आप उनसे   पूछिए। आप बार बार किसी प्रश्न का उत्तर क्यों देते है ? क्या वो लोग न्यायकर्ता है और आप कोई अपराधी है ?

4. इनकी एक और विशेषता होती है कि ये अपनी मान्यता पूछने पर भी नहीं बताते हैं। पूछने पर कहते हैं कि हम तो कुछ नहीं मानते हैं। जो अच्छा है वही मान लेते हैं। ऐसा कहकर यह आपके हाथ काट देते हैं। ऐसे लोगों से आप तो कुछ प्रश्न कर ही नहीं सकते हैं। लोगों की भलाई की बातें करना, लोकतंत्र की बातें करना, सभ्यता व संस्कृति को थोथा कहना इनकी विशेषता है किन्तु जब आप इनसे प्रश्न पूछेंगे कि श्रेष्ठ समाज किन मान्यताओं से बनेगा तो ये लोग कोई समाधान नहीं दे पाते हैं। यदि मुंह खोल भी देंगे तो आप तुरंत इनकी चालाकी पकड़ सकते हैं। अतः ऐसे लोगों को समाधान देने के लिए पूछे ताकि आप उनसे प्रश्न पूछ सकें। यदि ये कुछ मानते ही नहीं है तो आपसे प्रश्न क्यों पूछ रहें है ? अतः ऐसे लोगों से चर्चा करते समय अपनी और सामने वाली की मान्यता स्पष्ट रखें अन्यथा ये लोग आपको किसी एक विषय पर ठहरने ही नहीं देंगे।

5. देशभक्त लोगों को कभी भी बचाव पक्ष में नहीं रहना चाहिए। इस प्रतीक्षा (इंतजार) में नहीं रहना चाहिए कि पहले हमें कोई कुछ बोलेगा अथवा पूछेगा तब हम उनको उत्तर देंगे। सदा विरोधी पर उससे पहले वैचारिक धावा बोलना चाहिए क्योंकि यदि आप नहीं करेंगे तो वे अवश्य करेंगे। यह सत्य है कि **"attack is the best form of defence"** अर्थात् रक्षा करने का सबसे अच्छा तरीका है स्वयं धावा बोलना। इसीलिए कभी भी रक्षात्मक नहीं होना चाहिए। एक प्रत्यक्ष

उदाहरण देता हूँ। कांग्रेस सरकार में जब देश रक्षात्मक प्रणाली से चल रहा था तो देश में इतने बम्ब धमाके होने लग गये थे कि लोग घरों से बाहर निकलने से डरते थे। देश के सुरक्षित से सुरक्षित स्थानों पर भी बम विस्फोट होने लगे थे। सरकार की ओर से पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए आक्रामकता कभी नहीं दिखाई गयी। बीजेपी की मोदी सरकार बनने के बाद 6 वर्षों में एक भी बम धमाका सुनने को नहीं मिला है। आतंकवादी केवल कश्मीर तक सिमट कर रह गये और वहां भी उन्होंने जब सैनिकों पर हमले किये तो उन देश के दुश्मनों को कुचल देने के सीधे आदेश दिए गये। पाकिस्तान की ओर से की गयी फायरिंग का जवाब सदैव हवाई हमलों तथा सर्जिकल स्ट्राइक द्वारा किया गया। डोकलाम विवाद पर चीन के सैनिकों को पीछे हटना पड़ा था। देश पर हमला करने से पहले ही आतंकवादियों पर सैनिकों ने हमला किया। वास्तव में कमजोर को सब दबाते हैं और ताकतवर से सब घबराते हैं। बहुत बार अध्यापक भी कक्षा के सबसे सीधे साधे बच्चे को पीटकर ही पूरी कक्षा के सामने डर बनाता है। अतः जब लड़ाई वैचारिक हो तो विरोधी विचार वालों पर स्वयं धावा बोलते रहो ताकि उनको आपके ऊपर धावा बोलने का कम समय मिले और वो उसी में उलझे रहें। मैंने देखा है देशभक्त तथा अच्छे लोग सदा अपने धर्म, सभ्यता, संस्कृति पर उठने वाले सवालों पर तुरंत रक्षात्मक स्थिति में आ जाते हैं। आपकी यह कमजोरी ही विरोधियों की ताकत है।

6. अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है। मेरा अनुभव है कि देशभक्त तथा अच्छे लोग विरोधियों के सामने तो रक्षात्मक हो

जाते हैं और अपनी ही विचारधारा वाले व्यक्तियों में कमी ढूंढने लगते हैं। किसी एक देशभक्त की एक दो कमियों पर सारा धर्म का ज्ञान दे डालते हैं और देशद्रोहियों पर रक्षात्मक हो जाते हैं। आपको अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। बिना सोचे समझे सोशल मीडिया के युग में कहीं भी कुछ भी नहीं बोलना अथवा लिखना चाहिए। मैंने देखा है कि दो भाई भाई किसी विषय को लेकर सोशल मीडिया पर लड़ पड़े। उसके बाद उनमें असल जीवन में भी दूरी बन गयी। यदि आपस में विचार न मिलें तो विरोध करने के स्थान पर एक दूसरे की उपेक्षा (ignore) कर सकते हैं। बातों को पचाना सीखें।

7. इन लोगों की सबसे बड़ी ताकत होती है आपका अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा इतिहास से अनजान होना। वास्तव में जब तक आपको अपने सही इतिहास, सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म के विषय में ज्ञान नहीं होगा तब तक इस वैचारिक लड़ाई में हम जीत नहीं सकते हैं। कोई भी चार बातें जानने वाला आएगा तथा आपको निरुत्तर कर देगा। सब जानते हैं कि आजकल के बच्चों को घर से माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि से अपने इतिहास, सभ्यता, संस्कृति की बातें जानने को नहीं मिलती हैं। इसी कारण आज नौजवानों में स्वर्णिम इतिहास का कोई ज्ञान नहीं है। जब ये नौजवान कॉलेज में पढ़ने जाते हैं तो एक षड़यंत्र के तहत इतिहास तथा धर्म से सम्बंधित प्रश्न देशद्रोही मानसिकता वाले लोग पूछते हैं। मिलावटी इतिहास तथा मनघडंत तथ्य देकर अच्छे नौजवानों का मुंह बंद करके कहते हैं कि बस यही है आपका धर्म, सभ्यता तथा संस्कृति। धीरे धीरे उस नौजवान की अपनी संस्कृति से श्रद्धा हट जाती है और इस प्रकार एक

नया कम्युनिष्ट अथवा धर्म निरपेक्ष व्यक्ति तैयार हो जाता है। यह तरीका आज देश के लिए सबसे अधिक घातक है क्योंकि नौजवानों को पता ही नहीं चलता कि कब उनके विचार बदल गये। इस प्रकार की लड़ाई का केवल एक ही समाधान है और वो है अपने इतिहास, धर्म, सभ्यता तथा संस्कृति की प्रमाणिक तथा गहन जानकारी होना। उसके बाद आपके सामने खड़ा होने की कोई हिम्मत नहीं कर पायेगा।

आपको विद्यावान बनाने के इस कार्य हेतु ही मैंने सोशल मीडिया से अवकाश ले लिया था। किसी भी प्रकार से आपको धर्म, सभ्यता, संस्कृति तथा स्वर्णिम इतिहास की गूढ़ बातें सरलता से समझाना ही मेरा उद्देश्य है। मेरी आने वाली प्रत्येक पुस्तक को सदैव अपने पास रखें। मेरी पुस्तकों में दिए तर्क, तथ्य तथा प्रमाण हर समय सभी प्रकार से आपकी रक्षा करेंगे। किसी भी विषय से सम्बंधित प्रमाण आप मेरी पुस्तकों से कभी भी देख सकेंगे। हजारों अमूल्य पुस्तकों का ज्ञान आपको अत्यंत संक्षेप में देने का प्रयास मैंने किया है जिसमें बहुत समय तथा पुरुषार्थ मेरा लगा है।

अब समय आ गया है कि अच्छे लोगों को एक होकर ही बुराई का विरोध करना होगा। बुरे लोग बुराई करके भी एक हो जाते हैं और करोड़ो लोगों की सहानुभूति भी प्राप्त कर लेते हैं। आपने देखा होगा कि कुछ बच्चे उद्दंड (शरारती) होते हैं। पहले वे दूसरे बच्चे को थप्पड़ मार देते हैं और फिर अपने आप ही पहले रोने लग जाते हैं। रोने से उनको घर के लोगों की सहानुभूति मिल जाती है। आज कट्टर इस्लामियों का भी यही सिद्धांत है। अंतर केवल इतना है कि बच्चा थप्पड़ तक सीमित था किन्तु ये सीधा गोली मारते हैं, बम फोड़ते हैं। उसके बाद अल्पसंख्यक का राग अलापते है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि पर प्रचारित करवाया जाता है कि ये तो बेचारे भटके हुए नौजवान बच्चे हैं, बहक गये हैं। इनको सुधारा जा सकता है। आज दंड व्यवस्था दम तोड़ चुकी है।

ऐसे समय में अपनी, अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा आपको स्वयं ही करनी है। धर्म के नाम पर भविष्य में लड़ाई बहुत तेज होने वाली है। अतः धर्म के सही ज्ञान द्वारा ही आप किसी विरोधी का मुंह बंद कर सकते हैं। धर्म के द्वारा आप सर्वांगीण उन्नति कर सकते हैं। इस पुस्तक में दिए ज्ञान को कंठस्थ करने वाले के सामने बड़े से बड़ा गुरुघंटाल, मुल्ला-मौलवी और पादरी कुछ मिनट भी नहीं ठहर सकता है। एक एक विषय को शास्त्रीय प्रमाण तथा तर्क के आधार पर स्थापित किया गया है ताकि सैकड़ों वर्षों तक नौजवान पीढ़ी धर्म तथा ईश्वर के झगड़े से निपट सके। मेरा इस पुस्तक को लिखने का यही उद्देश्य है कि प्रत्येक धर्म को जानने का इच्छुक नौजवान इस पुस्तक को अवश्य पढ़े तथा सदा अपने पास रखें। मेरा निश्चित मत है कि इस पुस्तक को पढ़ने वाले का मस्तक किसी भी सभा में नीचा नहीं हो सकता है।

लाखों लोगों को सत्य मार्ग दिखाने वाले राहुल आर्य तर्क, तथ्य तथा प्रमाण के आधार पर अपनी बात प्रस्तुत करने हेतु प्रसिद्ध हैं। राहुल आर्य देश, धर्म तथा इतिहास के विवादस्पद तथा हानिकारक विषयों के समाधान देश-विदेश में घूम घूम कर प्रचार कर रहें हैं। अब तक के अपने अनुभवों, ज्ञान तथा जानकारियों के आधार पर राहुल आर्य जी सैकड़ों लेख लिख चुके हैं तथा हजारों व्याख्यान दे चुके हैं। वर्ष 2012 में इन्होंने 16 वर्ष की आयु में प्रथम पुस्तक लिखी थी। वर्तमान में राहुल आर्य ने "सर्वश्रेष्ठ कौन ?" पुस्तक लिखकर ईश्वर, धर्म, धर्मग्रन्थ तथा इतिहास पर फैली हजारों मान्यताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करके धार्मिक और ऐतिहासिक क्रांति ला दी। इस पुस्तक में कितना ज्ञान का भंडार होगा यह कहने की आवश्यकता नहीं है। यह पुस्तक भारत ही नहीं विश्व के प्रत्येक भाग में रहने वाले मनुष्यों को अवश्य पढ़नी चाहिए।

इस पुस्तक से सेकड़ों गूढ़ रहस्यों तथा प्रश्नों के उत्तर आपको मिलेंगे जो संभवतः आपको मृत्यु तक कहीं अन्य प्रकार से कभी न मिलेंगे। इस पुस्तक को बुद्धिपूर्वक पढ़ने वाले का आध्यात्मिक, भौतिक, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक ज्ञान नई नई ऊंचाईयां छूने लगेगा। प्राचीन भारत की महानता का आश्चर्यजनक दर्शन भी आपको जानने को मिलेगा। हम आपसे आशा करते हैं कि आप राहुल आर्य की इस पुस्तक को क्रय (खरीदें) करें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें ताकि राहुल आर्य अपना सर्वस्व मानवता की सेवा में अर्पित कर सके।